ओ३म्

८६वाँ

वार्षिक विवरण

१६८८-८६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

डा० वीरेन्द्र अरोड़ा

कुलसचिव,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

जुलाई, १९८९ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :

जै ।। प्रिन्टर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
कार्यवाहक कुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री आर० पी० सहगल (१ मई, १९८९ तक)
	—डा० बी०सी० सिन्हा (२ मई, १९८९ से)
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० जे० एस० सेंगर
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

———

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

———

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापनाकाल के ८९ वर्ष पूरे कर रहा है। वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, पुराविद्या, राष्ट्रसेवा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय के स्नातकों द्वारा की गई सेवाएँ स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य हैं। विश्वविद्यालय के संस्थापक अमरहुतात्मा कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भारतीय पुनर्जागरण और स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ थे। वही एक ऐसे दीपाधार थे जिनके प्रेम और ज्ञान की रोशनी ने हिन्दू और मुसलमान राष्ट्रभक्तों को समानरूप से प्रभावित किया तथा पराधीन भारत में पाश्चात्य शिक्षा की आँधी में अविचल खड़े रहकर भारतीय जीवनमूल्यों और आदर्शों पर आधारित शिक्षा का क्रान्ति-बिगुल बजाया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अनुसंधान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था है जिसकी प्रशंसा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, महाकवि रवीन्द्रनाथ तथा महामना मदनमोहन मालवीय जैसे शिक्षाविद् मुक्तकंठ से करते रहे हैं। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के पश्चात कला, विज्ञान और वैदिक विषयों में उच्चतम अध्ययन और अनुसंधान के अलावा गुरुकुल ने ग्रामोद्धार, प्रसार कार्य, प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में शिक्षा की प्रासंगिता बनाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायताराशि से इस वर्ष संस्कृत विभाग में महाभाष्यकार पतंजलि पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन आफ कालेजेज डा० सूबेसिंह राणा तथा समापन प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी. एस-सी. ने किया। जीवविज्ञान विभाग के तत्वावधान में "बदलता पर्यावरण एवं जन्तु संरक्षण" विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें भारतीय विश्वविद्यालयों के लगभग ६५ वैज्ञानिक-प्राध्यापकों ने भाग लिया। इसी प्रकार गणित विभाग में वैदिक गणित की परम्पराएँ एवं अनुप्रयोग तथा आधुनिक विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी में गणित के अनुप्रयोग पर दो सिम्पोजियम आयोजित हुए। राष्ट्रीयस्तर का यह आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

फरवरी, ८६ में राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का सफल आयोजन हुआ। इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग २०० छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। डा० सतीशचन्द्र, निदेशक, भारत सरकार ने इस शिविर का उद्घाटन किया तथा समापन पर श्री जगदम्बिका पाल, मन्त्री शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। इस शिविर का संयोजन डा० जयदेव वेदालंकार, को-आर्डिनेटर, राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया। योग विभाग का कार्य भी अत्यन्त सन्तोषजनक रहा।

कुलपतिजी ने इस वर्ष ख्यातिलब्ध विद्वानों को आमन्त्रित कर उनके व्याख्यानों से विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को लाभान्वित कराया। इस क्रम में इसी विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा पंजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द पीठ के निदेशक डा० रामनाथ वेदालंकार, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० रामकरण शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० बृजमोहन चतुर्वेदी, सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य डा० लक्ष्मीनारायण दूबे, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पुष्पा बंसल, पंजाब विश्वविद्यालय की अंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा डा० निर्मला मुखर्जी, न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रभा शर्मा, प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री डा० बी. जी. झिंगरन, तथा प्रयाग विश्वविद्यालय के डा० चट्टोराज के सारगर्भित व्याख्यान हुए।

गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट, वैदिक पथ तथा प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञान प्रकाशित हुए। इन पत्रिकाओं में से कुछ के ज्ञानवर्द्धक विशेषांक भी निकले। विश्वविद्यालय के श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र से इस वर्ष "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" सन्दर्भ-ग्रन्थ अंग्रेजी में प्रकाशित किया। इससे पूर्व प्रकाशन केन्द्र के दो प्रकाशन वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन तथा शोध सारावली विद्वानों में बहुचर्चित हो चुके हैं।

राष्ट्रीय छात्रसेना, प्रौढ़ सतत् शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना तथा क्रीड़ा विभाग की गतिविधियाँ भी सुचारू रूप से संचालित हुईं। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित प्रतियोगिताओं का उद्घाटन प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने किया। विद्यार्थियों ने संस्कृत दिवस, युवा दिवस, हिन्दी दिवस, त्रिभाषा वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा वृक्षारोपण एवं मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों में सोत्साह भाग लिया। अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में

भी हमारे छात्र भाग लेते रहे। इतिहास विभाग के छात्र ऐतिहासिक सरस्वती यात्रा पर गए। अध्ययन की दृष्टि से यह यात्रा छात्रों के लिए लाभकारी सिद्ध हुई। हमारे विद्वान प्राध्यापक इस वर्ष विदेश यात्रा पर भी गए। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने अमेरिका, डा० इन्द्रायण ने कनाडा, डा० बी० डी० जोशी ने फिनलैंड तथा डा० पी० पी० पाठक ने स्वीडन जाकर विद्वतापूर्ण व्याख्यान देकर एवं प्रपत्र वाचन कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए हमारे मध्य माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी, पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार पधारे। विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति एवं इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को निधनोपरान्त उनकी अमूल्य सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह जी ने डा० विद्यालंकार की पत्नी को उत्तरीय तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया। वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार को विश्वविद्यालय को सर्वोच्च पूजोपाधि विद्यामार्तण्ड प्रदान की गई तथा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार डी०ए०वी० कालेज न्यास के प्रधान प्रो० वेदव्यास को भव्य समारोह के बीच प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन-प्रकाशन तथा विभिन्न विश्व-विद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या, पाठ्यक्रमों तथा आयोजनों में भाग लेकर अपने पद की गरिमा बढ़ाई है। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में इन विद्वानों के व्यक्तिगत क्रिया-कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते रहे हैं।

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

दीक्षान्त के लिए परिधान ग्रहण करते विश्वविद्यालय के अधिकारी वाएं से-- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पूर्व कुलपति और आचार्य गुरुकुल कांगड़ी; प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एवं कार्यवाहक कुलपति, प्रो० शेरसिंह जी कुलाधिपति; श्री ब्रह्मदत्त जी पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार मुख्य अतिथि; डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव तथा डा० श्यामनारायण सिंह, उपकुलसचिव।

दीक्षान्त भवन में आयोजित दीक्षान्त पूर्व यज्ञ का भव्य दृश्य—गुरुकुल के पदाधिकारी तथा आचार्यवृन्द यज्ञ प्रारम्भ करते हुए।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नए पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८८ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन: धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंगलैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अत: गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आयी इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप

मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय

२ साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएं इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव

सबको खटकता रहा। १६२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १६२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १६२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १६०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १६३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १६४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १६४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १६५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १६५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १६५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १६६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १६६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम० ए०

कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुई। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था)भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजो विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर. सी शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय को शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८८ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल को पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ो को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजोतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहाँ स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर(वेदालंकार में)त्रिवर्षीय पाठ्य-

क्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत बेद और संस्कृत में एम० ए० और पी-एच० डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम० ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच० डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी० एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलोजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलोजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू० जी० सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्व-विद्यालय का एक अगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसके निकट-भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़

रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलत हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों - परिदृष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत चार वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्त-र्विश्वविद्यालयोय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों का आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत पांच वर्षों से चल रहा है। दो वर्षों से अंग्रेजो विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा' का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनोक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हुए। गंगा समन्वित योजना एव हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

— रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी (पैट्रोलियम मन्त्री, भारत सरकार) माताओं, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्यभूमि में आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई में जूझने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता थे। राष्ट्रभक्त युवकों तथा युवतियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन और नवीन ज्ञान-विज्ञान का समन्वय कर, उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात किया। उन्हीं से प्रेरणा लेकर बाद में शान्ति निकेतन और काशी विद्यापीठ जैसे शिक्षण-संस्थान स्थापित हुए। आज उसी महापुरुष की तपस्यास्थली में नवदीक्षित स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नव-स्नातक गुरुकुल को अपनी माता की तरह आदर और प्रेम देंगे तथा स्वामी जी के बताये सिद्धान्त पर चलकर, अपने राष्ट्र और समाज की उन्नति चाहते हुए, सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिए प्रयत्न करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओं ! इस वर्ष दीक्षान्त के लिए हमारे मध्य उत्तर-प्रदेश की प्रखरमेधा और केन्द्रीय सरकार के पैट्रोलियम राज्य मन्त्री माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी उपस्थित हैं। आप निष्ठावान आर्यसमाजी, दूरदर्शी राजनेता, कर्मठ, समाजसेवी, उच्चकोटि के शिक्षा-शास्त्री, राजनीतिशास्त्र के पण्डित, भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य के पोषक तथा गुरुकुल के अत्यन्त हितैषी हैं। उत्तर प्रदेश के वित्त-मन्त्री के रूप में आपने बड़ी ख्याति अर्जित की और अब केन्द्रीय सरकार को आपका रचनात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है। मैं माननीय राज्यमन्त्री जी का हार्दिक आभारी हूं कि उन्होंने अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी हमारे बीच पधार कर हमारा गौरव बढ़ाया है।

दीक्षान्त के अवसर पर कुलपताका के आरोहण के लिए उपस्थित पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह, माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी, कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, श्री प्रो० धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रो० वेदव्यास आदि महानुभाव।
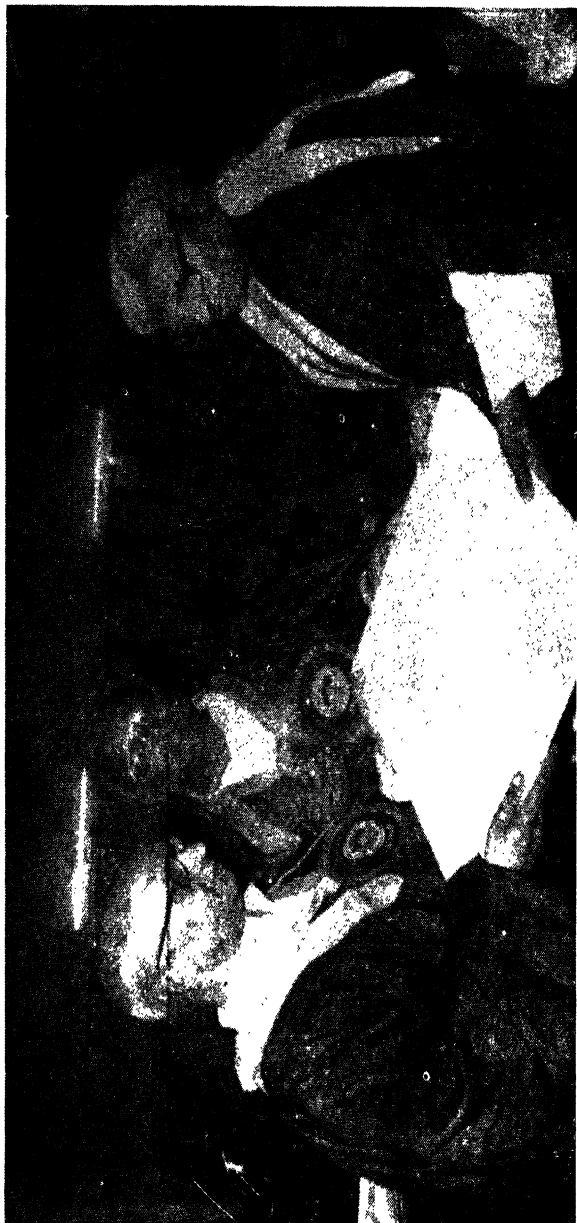
सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० रामनाथ जी वेदालंकार को विद्यामार्तण्ड की पूजोपाधि प्रदान करते हुए कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार तथा कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ।

दीक्षान्त भवन की ओर जाते हुए नव-स्नातक

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास के कुछ बिन्दुओं का उल्लेख करना भी मैं आवश्यक समझता हूँ। विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, इतिहास जैसी पुराविद्याओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है, वहाँ कम्प्यूटर जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन और अध्यापन का कार्य भी सुचारू रूप से सम्पन्न कर रहा है। प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम, योग प्रशिक्षण तथा कमर्शियल मैथडस् आफ कैमिकल एनेलिसिस जैसे व्यवसायोन्मुख डिप्लोमाओं का प्रशिक्षण देकर वह समाज और देश की मौलिक आवश्यकताओं को भी पूरा कर रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों द्वारा हमारे स्नातक, राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा में भी जुड़े और ग्रामसुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण में संलग्न होकर शिक्षा को व्यवहारिक रूप दे सके। इससे आशा बनती है कि वे स्वामी श्रद्धानन्द और गांधी जी के विचारों को साकार रूप देने में पीछे नहीं हटेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से इस वर्ष संस्कृत विभाग में महाभाष्यकार पतंजलि पर त्रिदिवसीय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं डीन आफ कालेजेज, डा० सूबेसिंह राणा ने तथा समापन स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती डी-एस० सी० ने किया। इसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनेक विद्वानों ने पधार कर निबन्धों का वाचन किया। विशिष्ट व्याख्यान के लिए सम्पूर्णानन्द वि० वि० के कुलपति डा० रामकरन शर्मा, डा० रामनाथ जी वेदालंकार, पंजाब वि० वि० के डा० वेदप्रकाश उपाध्याय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० बृजमोहन चतुर्वेदी पधारे। विभाग के अध्यक्ष डा० योगेश्वरदत्त शर्मा अपने सहयोगियों के साथ अखिल प्राच्य विद्या संगोष्ठी में भाग लेने के लिये विशाखा-पत्तन गये। मुझे कहते हुए हर्ष होता है कि १९९० में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या संगोष्ठी का आयोजन गुरुकुल में होगा।

वेद विभाग में वैदिक यज्ञ-याज्ञ विधान (वैदिक कर्म-काण्ड) और संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए वैदिक डिप्लोमा शुरु किया गया तथा वैदिक संग्रहालय को अत्याधुनिक बनाने के विषय में कार्य किया गया। वैदिक प्रयोग-शाला में अलंकार से एम० ए० तक प्रयोगात्मक वैदिक कक्षा भी प्रारम्भ की गई। इस वर्ष वेद विभाग में डा० रामनाथ वेदालंकार आदि कई अन्य विद्वानों के व्याख्यान हुए।

हिन्दी विभाग में सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा राष्ट्रीय प्रोफेसर डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, रोहतक वि० वि० के हिन्दी विभागा-ध्यक्ष डा० पुष्पा बन्सल, रेल मन्त्रालय के हिन्दी सलाहकार श्री बलदेव वंशी

के उपयोगी व्याख्यान हुए तथा फिजी से विशेषरूप से हिन्दी-अध्ययन के लिए पधारे हुए छात्र श्री नेतराम शर्मा ने फिजी में हिन्दी शिक्षण के लिए हिन्दी पर एक पुस्तक की रचना की। विभाग को सुचारू गतिविधि के लिए हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० बिष्णुदत्त राकेश ने उल्लेखनीय कार्य किया। विभाग के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए जनसम्पर्क किया तथा अनेक आयोजनों में भाग लिया। मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने विभागीय उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। विभाग के प्राध्यापक डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने इण्डियन काउन्सिल आफ सोशल साइन्स रिसर्च, नई दिल्ली के तत्वावधान में रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा करके प्रस्तुत कर दिया।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग डा० बिनोद चन्द्र सिन्हा की अध्यक्षता में प्रगति की ओर उन्मुख है। इस वर्ष विभाग में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अवकाशप्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चन्द्र प्रकाश का 'प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान हुआ। विभाग ने एक सरस्वती-यात्रा का भी आयोजन किया। इस यात्रा में थानेश्वर, दिल्ली, आगरा, मथुरा तथा खजुराहों के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारकों का अध्ययन किया गया। थानेश्वर में भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे उत्खनन कार्य का अवलोकन भी विद्यार्थी और अध्यापकों ने किया। विभाग ने निकट-भविष्य में उत्खनन की योजना बनाई है और इसका प्रारूप सर्वेक्षण विभाग को भेज दिया है। सरस्वती यात्रा के संयोजक डा० जबरसिंह सेंगर और डा० श्यामनारायण सिंह थे।

सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक पुरातत्व संग्रहालय, विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। सिन्धु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक की विभिन्न पुरातन वस्तुयें, प्रतिमायें, कलाकृतियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं मुद्रायें यहाँ संकलित हैं। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष में स्वामी की पादुकाएं, वस्त्र, कमण्डल, दुर्लभ चित्र तथा पत्र आदि सुरक्षित हैं। उत्तर प्रदेश की सहायता राशि से जहाँ कलावीथिका के लिए सोलह प्रदर्श पटल बनवाये गये वहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित लगभग २०० छायाचित्र राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली से क्रय किये गये। राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त अनुदान राशि से पाण्डुलिपि के संरक्षण के लिए काष्ठ एवं परिशोधित अयश धूमण प्रकोष्ठों का निर्माण कराया गया। फिजी के निवासी तथा हमारे छात्र श्री नेतराम जी शर्मा ने छह ताम्र एवं रूपक मुद्रायें भेंट कीं। संग्रहालय निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर के निर्देशन एवं संग्रहालय के अध्यक्ष सूर्यकान्त श्रीवास्तव के तकनीकी ज्ञान से संग्रहालय विकास की ओर उन्मुख है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय दर्शनीय है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की एक लाख से अधिक पुस्तकें संकलित हैं। शोध-कार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में संग्रहित संस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य, धर्म-दर्शन, आर्य समाज और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों का अध्ययन करते हैं। सातवीं पंचवर्षीय योजना में अनुदान आयोग ने नवोनतम पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के क्रय के लिए ११ लाख रुपयों का अनुदान स्वीकृत किया था। इस वर्ष ३६५६ नई पुस्तकें क्रय की गईं, ४५४ पत्रिकाय मंगाई गई जिनमें ४१ पत्रिकायें विदेशी हैं। वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की ७५०० पुस्तकों की बिबलियोग्राफी तैयार की गई जो ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो गई। दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिये प्लेन पेपर कापियर मशीन खरीदी गई। पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार के निर्देशन में २६०० पुस्तकों का वर्गीकरण तथा २५१७ का सूचीकरण किया गया। आलोच्य वर्ष में २४,१०० पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग किया गया।

विश्वविद्यालय छात्रावास के नवीनीकरण के साथ प्रतिदिन संध्या एवं अग्निहोत्र की व्यवस्था की गयी तथा विश्वविद्यालय के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रति सप्ताह सामूहिक अग्निहोत्र की व्यवस्था की गयी जो सुचारू रूप से सम्पन्न हुई। परिसर में प्रति सप्ताह वैदिक पारिवारिक यज्ञ समिति के आयोजन आर्य विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए किये जाते रहे। इन साप्ताहिक आध्यातम सत्संग के आयोजन के लिए वित्ताधिकारी श्री राजेन्द्र प्रसाद सहगल बधाई के पात्र हैं। डा० अम्बुजकुमार शर्मा और डा० ईश्वर भारद्वाज के निर्देशन में क्रीड़ा एवं योग विभाग ने पर्याप्त उन्नति की। लखनऊ, मेरठ, दिल्ली, कुरुक्षेत्र,आगरा तथा कानपुर में आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे छात्र सम्मिलित हुए तथा योग विभाग में योग चिकित्सा केन्द्र की स्थापना के साथ योग के एकवर्षीय और चतुर्मासीय पाठ्यक्रम भी विधिवत् सम्पन्न हुए।

प्रौढ़ सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम का संचालन डा०अनिल कुमार, सहायक निदेशक के तत्वावधान में सफलतापूर्वक चला आ रहा है। विभाग की प्रगति से संतुष्ट होकर अनुदान आयोग ने इस विभाग को ६० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अतिरिक्त ३ जनशिक्षण निलयम्,३ सतत शिक्षा परियोजनाएँ तथा १ जनसंख्या शिक्षा क्लब स्वीकार किया है। ५५ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का संचालन हरिद्वार और उससे लगे ग्रामीण शिक्षा क्षेत्रों में किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डा० जयदेव वेदालंकार तथा डा० ए० के० चोपड़ा देख रहे हैं।

फरवरी '८९ में राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण शिविर डा० जयदेव वेदालंकार, समन्वयक के संचालन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के २०० छात्र एवं छात्राओं ने ग्राम जमालपुर एवं जगदीशपुर में रात-दिन सड़कों का निर्माण, औषधि वितरण, साक्षरता अभियान आदि कार्यों को किया।

इसके उद्घाटन समारोह के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जगदम्बिका पाल, मंत्री शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश सरकार पधारे थे। उन्होंने विशिष्ट व्याख्यान में विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग की प्रशंसा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन करके इस विश्वविद्यालय ने अपनी गौरवपूर्ण परम्परा का निर्वाह किया है। डा० सतीश चन्द्र, निदेशक भारत सरकार ने इस शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक विशाल रैली का आयोजन किया गया।

गत जून में दर्शन विभाग के तत्वावधान में माननीय डा० के० सच्चिदानन्द मूर्ति, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली का वैदिक दर्शन विषय पर डा० जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष दर्शन विभाग के संयोजकत्व में एक विशिष्ट व्याख्यान सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से उन्हें प्रशस्ति-पत्र व शाल भेंट की गई। डा० मूर्ति ने अपने व्याख्यान में दर्शन विभाग की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए, राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन के लिए, साथ ही विश्वविद्यालय की प्रगति पर, प्रसन्नता व्यक्त की। डा० जयदेव वेदालंकार एवं डा० यू० एस० बिष्ट ने इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस के पाण्डिचेरी अधिवेशन, १९८८ में सक्रिय भाग लिया। डा० विजयपाल शास्त्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रिफ्रेसर्स कोर्स पूर्ण किया।

प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय प्रगति की ओर उन्मुख है। भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, गणित, कम्प्यूटर, जन्तुविज्ञान, तथा वनस्पतिविज्ञान में उच्चतर अध्ययन और जन्तु विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान तथा गणित में शोध-कार्य चल रहा है। इस वर्ष गणित विभाग में वैदिक गणित परम्परायें एवं अनुप्रयोग तथा आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी में गणित के अनुप्रयोग पर दो सिम्पोजियम आयोजित हुए। अखिल भारतीय स्तर की विज्ञान सोसायटी, विज्ञान परिषद् के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध गणितशास्त्री प्रोफेसर जे० एन० कपूर ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस आयोजन में दो दर्जन आमन्त्रित भाषण हुए तथा ६० शोध-पत्र प्रस्तुत

हुए। प्रो० त्यागी और प्रो० डा० एस० एल० सिंह को इसकी सफलता का श्रेय जाता है। प्रो० त्यागी के निर्देशन में प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध-पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है जिसके विनिमय में युगोस्लाविया, पाकिस्तान, पोलैण्ड और वियतनाम आदि से गणित एवं विज्ञान की उत्कृष्ट शोध-पत्रिकायें प्राप्त हो रही हैं। श्री एच० एल० गुलाटी ने डा० फिल० उपाधि हेतु अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। भौतिकविज्ञान विभाग श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को यू० जी० सी० द्वारा संचालित कार्यक्रम दिखाने के लिए विभाग में टी० वी० जैसे उपकरण भी उपलब्ध हैं तथा बी० एस-सी० तृतीय वर्ष में प्रोजेक्ट वर्क का प्रावधान किया गया है। इससे विद्यार्थियों को आधुनिक इलैक्ट्रोनिक यंत्र सीखने का अवसर मिला है।

भौतिकी विभाग के प्राध्यापक डा० पी०पी० पाठक ने स्वीडन के उप्शाला विश्वविद्यालय में आयोजित वायुमण्डलीय विद्युत पर आठव अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा जर्मनी में बॉन विश्वविद्यालय के रेडियो ऐस्ट्रोनोमिकल इन्स्टीट्यूट में यज्ञ द्वारा वर्षा (रेन मेकिंग बाई यज्ञ) पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया। रसायन विभाग के अध्यक्ष डा० रामकुमार पालोवाल के निर्देशन में रसायन विभाग में कर्मशियल मेथड्स ऑफ कैमिकल एनेलिसिस डिप्लोमा नियमित अध्ययन के साथ सफलतापूर्वक चल रहा है और इसमें विद्यार्थियों द्वारा प्रवेश की माँग निरन्तर बढ़ रही है। जन्तुविज्ञान विभाग प्रो० बी० डी० जोशी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। हिमालय शोध परियोजना के प्रमुख-अन्वेषक प्रो० बी० डी० जोशी ने परियोजना की अन्तिम रिपोर्ट भारत सरकार को भेज दी है। विभाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० चट्टोराज का महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ तथा 'बदलता पर्यावरण एवं जन्तु संरक्षण' विषय पर एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें भारतीय वि०वि० के लगभग ६५ वैज्ञानिक-प्राध्यापकों ने भाग लिया।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक, मुख्य अन्वेषक वनस्पति विज्ञान विभाग, गुरुकुल के निर्देशन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत लैक्टिन परियोजना तथा हिमालय आर्किड्स की पर्यावरण शोध योजना भी सफलतापूर्वक चल रही है। विभाग के अध्यक्ष प्रो० विजयशंकर ने वनस्पति विभाग को प्रगति की ओर ले जाने में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम मिलाकर चल रहा है।

आर्य बन्धु एवं बहनों !

विश्वविद्यालय के शोधात्मक कार्यक्रम, शैक्षिक प्रगति तथा आर्य

विचारधारा और भारतीय विज्ञान को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय से नियमित पत्र-पत्रिकायें निकल रहे हैं। इनमें आर्यभट्ट के सम्पादक डा० विजयशंकर, वैदिक पथ के सम्पादक डा० राधेलाल वार्ष्णेय, गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक डा० जयदेव वेदालंकार तथा प्रह्लाद के सम्पादक डा० विष्णुदत्त राकेश के प्रयास सराहनीय हैं। मैंने भी जन-सामान्य तक वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द के विचारों को सुगमता के साथ पहुँचाने के लिए सरल, सुबोध रूप में अनेक पुस्तिकाओं का प्रकाशन कराया जो लाखों की संख्या में जिज्ञासुओं में वितरित की जा चुकी हैं। दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी मंत्र-पुस्तिकाओं से पाठकों को विशेष लाभ मिल रहा है। इन पुस्तकों की देश-विदेश से संस्तुतियाँ प्राप्त हो रही हैं तथा कई भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इनका अनुवाद हो रहा है, जैसे कन्नड़, अंग्रेजी, उर्दू आदि। डा० लूथरा यूमा (आरिजना) से यह आग्रह किया गया है कि इन विचारों को कैसेट्स के रूप में भी तैयार किया जाय, इसके लिए जो भी सहायता अपेक्षित होगी मैं भेजूँगा।

अंग्रेजी विभाग प्रोफेसर डा० राधेलाल वार्ष्णेय के निर्देशन में आशातीत प्रगति कर रहा है। विभाग में डा० निर्मल मुखर्जी, प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग, पंजाब वि०वि० का व्याख्यान "ए पेसेज मोर देन इण्डिया" विषय पर हुआ। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर सेमिनार पेपर्स पढ़े। डा० वार्ष्णेय ने बी०एच० ई०एल० में आयोजित क्षत्रीय अंग्रेजी अध्यापकों की अध्यापन-सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए एक त्रिदिवसीय अंग्रेजी कार्यशाला का आयोजन कराया। रुड़की विश्वविद्यालय तथा बी० एस० एम० कालेज रुड़की में हुई दो शोध संगोष्ठियों में डा० वार्ष्णेय एवं विभागीय सहयोगियों ने भाग लिया।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाज सेवा मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र-निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना तथा ज्ञान की खोज के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं और आप महानुभावों का प्यार और सहयोग पाकर हम इसी प्रकार आगे बढ़ते रहेंगे। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन का बल लेकर राष्ट्रीय जीवन में उतरें और सफलता प्राप्त करें, यही मेरा आशीर्वाद है।

गुरुकुल की उक्त उपलब्धियों के लिये मैं सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर की कृपा और अपने ज्ञानी विद्वान् संन्यासियों के आशीर्वाद को कारण समझता

हूँ तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, उ०प्र० सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् तथा शिक्षा पटल के मान्य सदस्यों के आर्थिक, बौद्धिक और मानसिक सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर हर प्रकार का अमूल्य सहयोग देकर हमारा मार्ग-दर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने में समय-समय पर हमारी सहायता की।

इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके पुरुषार्थ और लगन से ये सब उपलब्धियाँ प्राप्त हो सकीं। कुलसचिव, उपकुलसचिव एवं वित्ताधिकारी और उनके विभागीय सहयोगियों को भी मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ।

इस वर्ष पी-एच०डी० की ७, एम. ए. की ६९, एम. एस-सी. की १५, बी. एस-सी. की ६४ तथा अलंकार की १७ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं। आईये एक बार कहें—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत॥

आपका अपना ही
रामप्रसाद वेदालंकार
कुलपति

१४ अप्रैल, १९८९

———

दीक्षान्त भाषण

द्वारा

माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी

पेट्रोलियम राज्य मन्त्री, भारत सरकार

ज्ञान मनुष्य को अपने अस्तित्व और मानव-जीवन के उद्देश्यों के बारे में कुसंस्कारों से मुक्त करता है। मानव-प्रकृति के विषय में सत्य को प्रकट करता है। वास्तव में मनुष्य का अस्तित्व विचारशक्ति पर आधारित है। मनुष्य खोज करके ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

मानव-जीवन का मूल प्रेरणास्रोत स्वतन्त्रता है। स्वतन्त्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है, परन्तु उन तमाम परिस्थितियों में परिवर्तन लाना है जो मनुष्य के विकास में बाधक हैं। शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में निहित संभावनाओं का विकास है।

एक विचारशील प्राणी होने के कारण मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता है। वह एक व्यक्ति के रूप में भी कार्य कर सकता है क्योंकि विचार करने का यंत्र अर्थात मस्तिष्क व्यक्तिगत होता है, सामूहिक नहीं। संसार में बड़े-बड़े परिवर्तन विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा विकसित विचारों के कारण ही हुए हैं। यह विचार एक मानवसमाज को प्रेरित करते हैं और ऐसे परिवर्तन का कारण बनते हैं जिससे मानव-समाज के विकास में आने वाली बाधाएं दूर हों।

यह कहा जा सकता है कि आदर्श शिक्षा, समाज के पुनर्गठन के लिए तथा प्रगति सुनिश्चित करने के लिए आधारभूत आवश्यकता है। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

परस्पर सहयोग करके और समाज में उचित समन्वय स्थापित करके मनुष्य ऐसा समाज बनाता है, जो प्रत्येक व्यक्ति तथा पूरे समाज के विकास के लिए द्वार खोल देता है। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का मुख्य उद्देश्य यही था अर्थात् व्यक्तित्व के विकास के साथ एक आदर्श समाज का संगठन जिसे महर्षि दयानन्द ने "आर्य समाज" का नाम दिया। आर्य समाज एक संकुचित कल्पना नहीं थी।

गुरुकुल के यशस्वी स्नातक, पूर्व कुलपति एवं कुलाधिपति तथा सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को निधनोपरान्त उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। स्व० डा० विद्यालंकार जी की पत्नी सम्मान ग्रहण करने मंच पर उपस्थित हुईं। भावविभोर और विह्वल कर देने वाले इस दृश्य पर सभी के नेत्र सजल हो उठे। चित्र में कार्यवाहक कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी प्रशस्तिपत्र तथा कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी उत्तरीय प्रदान करते हुए।

संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा स्थापित आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित प्रो० वेदव्यास जी को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए माननीय प्रो० शेरसिंह, कुलाधिपति तथा प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, कार्यवाहक कुलपति।
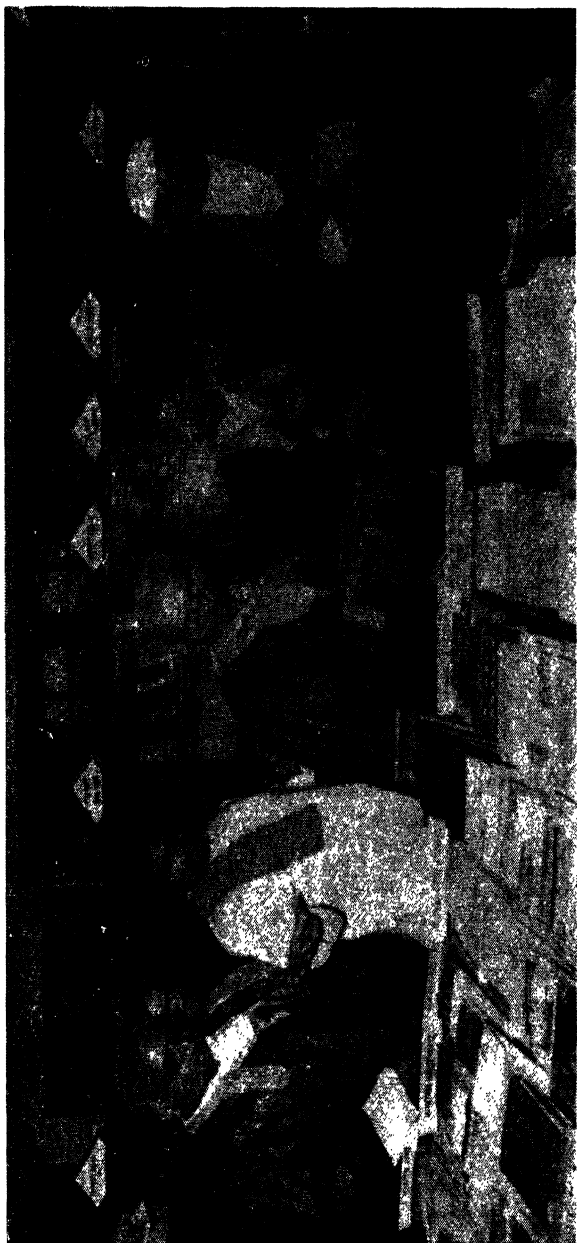
पुस्तकालय में नवागत पुस्तकों और विश्वविद्यालय प्रकाशन का अवलोकन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी तथा कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी।

सत्य की खोज के द्वारा व्यक्ति और मानव-समाज के विकास में बाधाओं को दूर करना हमारे मूल प्रेरणास्रोत हैं। प्रकृति के बारे में निरंतर बढ़ती हुई जानकारी मनुष्य को इस दिशा में ले जाती है। सामूहिकरूप से अथवा व्यक्तिगतरूप से मनुष्य का प्रत्येक कार्य निरन्तर बढ़ती हुई मात्रा में ज्ञान प्राप्त करके व्यक्ति और समाज के विकास में आने वाली समस्त बाधाओं को दूर करना है। एक आदर्श शिक्षा-प्रणाली का यह उद्देश्य होना चाहिए।

मनुष्य नियमों के अनुसार कार्य करने वाली प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, अतः उसका तर्कसंगत और नैतिक होना अवश्यम्भावी है। इस कार्य में भी शिक्षा सबसे बड़ी सहायक बनती है।

गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली का महत्व पाश्चात्य देशों में भी स्वीकार किया गया है, आवासीय शिक्षासंस्थाएँ गुरुकुलीय प्रणाली का पाश्चात्य स्वरूप हैं। वर्तमान गुरुकुलीय शिक्षापद्धति में पाश्चात्य देशों में प्रचलित आवासीय शिक्षा-संस्थाओं की अनुकरणीय एवं हमारे परिप्रेक्ष्य में संगत विशेषताओं को यदि आत्मसात किया जाए, तो न केवल हमारी गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली अधिक समृद्ध होगी, राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरूप अपने आपको विकसित भी कर सकेगी। नवोदय विद्यालयों का वर्तमान प्रयोग गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली को उपयोगिता एवं महत्व की स्वीकृति है।

वर्तमान शिक्षाप्रणाली में गुरु-शिष्य के मध्य सुन्दर एवं सुखद संबंध स्थापित करने की आवश्यकता पर जितना भी बल दिया जाए,कम है। गुरु-शिष्य के संबंध के समुचित विकास के बिना शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता है। शिक्षा के स्तर में गिरावट एवं अनुशासनहीनता से न केवल विद्यार्थियों की, अपितु राष्ट्र की भारी क्षति हो रही है। विद्यार्थी देश का भावी निर्माता एवं कर्णधार है। शिक्षा-दीक्षा में किसी प्रकार की बाधा, अवनति, अनुशासनहीनता, चारित्रिक न्यूनता अथवा अकर्मण्यता नितांत अवांछनीय है। इन सब समस्याओं के निराकरण में अध्यापकों, अभिभावकों एवम् समाज के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग आवश्यक है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली एवम् गुरु-शिष्य के सम्बन्धों का विकास इन सभी समस्याओं के निराकरण की दिशा में सार्थक कदम बन सकते हैं।

आज भारतवर्ष की अधिकांश समस्याओं का एक मौलिक कारण राष्ट्रीय भावना का अभाव है। सांप्रदायिक भावना, जातीय भेदभाव, जातीय संघर्ष, प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय विद्वेष, भाषा संबंधी विवाद इन सभी के मूल में राष्ट्रीय एकता, समन्वय की भावना एवं राष्ट्रीय भावना का न होना है। राष्ट्र की प्रगति

के लिए यह आवश्यक है कि हमें भारतवासी होने का गर्व एवं भारतीय होने का गौरव हो।

समाज में व्याप्त सांप्रदायिक-जातीय संघर्षों, असहिष्णुता, स्वार्थपरता एवं कर्तव्य की उपेक्षा जैसी व्यापक कुरीतियों पर उदारता एवं सह-अस्तित्व की भावना से विजय प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य जन-मानस में यह भाव जाग्रत करना है कि प्रत्येक धर्म समन्वय, सद्भावना एवं सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाता है। प्रकृति स्वयं सह-अस्तित्व एवं समन्वय का ज्वलंत उदाहरण है। नव-स्नातकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे एक नये स्वस्थ समाज को सृजित करें जिसमें विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को स्थान न हो।

वैदिक संस्कृति विश्व में भारत का गौरव रही है। वैदिक संस्कृति का आधार ज्ञान व कर्म का समन्वय था। संस्कृत भाषा के सम्यक् ज्ञान के बिना इस असीम आगार से लाभान्वित होना संभव नहीं है।

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। भारतीय भाषाएँ अपनी मौलिक शब्दावली के लिए संस्कृत पर निर्भर हैं। एक अनुमान के अनुसार उर्दू भाषा के ८० प्रतिशत शब्दों का स्रोत सस्कृत है। यही नहीं, मलयालम भाषा के शब्दों में से ९० प्रतिशत एवं तेलगू भाषा के शब्दों में से ६० प्रतिशत शब्द संस्कृत में निहित हैं।

संस्कृत को केवल प्राचीन ग्रंथों, वेदों एवं उपनिषदों की भाषा की संज्ञा देना अनुचित है। व्याकरण की वैज्ञानिकता एवं शब्दों के सौष्ठव के कारण आज संस्कृत का उपयोग कंप्यूटर्स के क्षेत्र में किया जा रहा है। अमरीका में टेक्सास विश्वविद्यालय में संस्कृत-आधारित एक वृहत् कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कंप्यूटर्स के माध्यम से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के लिए विकसित किये जा रहे साफ्टवेयर में संस्कृत भाषा को मूल भाषा के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। अनुवादित भाषा का पहले संस्कृत में अनुवाद किया जाता है और उसके बाद संस्कृत को अपेक्षित अनुवादित भाषा में परिवर्तित किया जाता है। मुझे विश्वास है कि संस्कृत की उच्चशिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होने के कारण यह महाविद्यालय संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन एवं आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर रहेगा।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना पुरातन व आधुनिक शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय करने के लिए की गई थी। संस्कृत साहित्य के साथ आधुनिक विज्ञान का इसमें स्थान है। मातृभाषा हिन्दी को माध्यम बनाकर इसे जन-साधारण के

लिए सुलभ बनाया गया तथा यह आधुनिक ज्ञान के विषय में नये साहित्य की रचना में प्रेरक बनी।

इस विश्वविद्यालय ने पर्यावरण सम्बन्धी तथा गंगा समन्वित योजना में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

आज सारे संसार की यह आवश्यकता है कि मानव समाज विज्ञान के रचनात्मक रूप से लाभान्वित होते हुए, उन संकटों के प्रति सावधान रहे जो सारे मानव समाज का विनाश कर सकते हैं। यह तभी सम्भव है जब पुरातन मूल्यों पर आधारित एक मानव संस्कृति का विकास हो। इस दिशा में भारत सारे ससार को दिशा दे सकता है। क्योंकि हमारा देश व राष्ट्र वैचारिक सहिष्णुता पर आधारित है। यहाँ पुरातन मूल्यों से आधुनिक ज्ञान को जोड़ना सम्भव है।

मुझे विश्वास है कि इस कार्य में गुरुकुल अगुवाई करने में समर्थ है।

मेरी शुभकामना है कि यहाँ के नव-स्नातक उन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करें जहाँ पुरानी पीढ़ी सफल नहीं हो सकी और प्राप्त की गई उपलब्धियों का संरक्षण करने में समर्थ हों।

मेरा अनुरोध है कि आप इसे शिक्षा की समाप्ति न समझते हुए, शिक्षा का प्रथम सोपान समझें और निरंतर अपनी शैक्षिक योग्यता विकासोन्मुखी रखें। समाज में वर्तमान कुरीतियों को दूर करने के लिए दृढ़ संकल्प होकर आप जीवन में प्रवेश करें।

कभी भी पुरुषार्थ से विमुख न हों। विपत्तियों और कठिनाइयों से कभी भी विचलित न हों। दृढ़ निश्चय ही आपकी सफलता की कुंजी होगी। आत्म-निर्भरता एवं आत्म-विश्वास की भावना से सदा उन्नतिपथ पर अग्रसर हों। साध्य की प्राप्ति के लिये साधन की पवित्रता बनाए रखें।

—ब्रह्मदत्त

१४ अप्रैल, १९८९

वेद तथा कला महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यायय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत साहित्य	१	२	२	५

२—कला महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
हिन्दी	१	१ (रिक्त)	३	५
दर्शनशास्त्र	१ (रिक्त)	१	३	५
अंग्रेजी	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२ (१ रिक्त)	१	२	५

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल, लिपिक
(२) ,, बलबीर सिंह भृत्य
(३) ,, रतनलाल भृत्य
(४) ,, रामसुमित माली

४—कला महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज योग प्रशिक्षक
(२) ,, लाल नरसिंह नारायण प्रयोगशाला सहायक
(३) ,, हंसराज जोशी लिपिक
(४) ,, अशोक कुमार डे लिपिक

(५) श्री कुँवर सिंह — भृत्य
(६) ,, हरेन्द्र सिंह — भृत्य
(७) ,, प्रेमसिंह — भृत्य
(८) ,, रामपद राय — भृत्य
(९) ,, सन्तोष कुमार राय — फील्ड अटैन्डेन्ट
(१०) ,, मान सिंह — चौकीदार
(११) ,, जग्गन — सफाई कर्मचारी

५—इस वर्ष सत्रारम्भ दिनांक १९-७-८८ से हुआ। दिनांक ०१-०८-८८ से महाविद्यालय में कक्षाएँ विधिवत् आरम्भ हुई। अलंकार तथा विद्याविनोद में इस वर्ष छात्र-संख्या निम्न प्रकार से थी :—

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	२	२	०४
विद्याविनोद	कला वर्ग	२२	४	२६
वेदालंकार		१	१	०२
विद्यालंकार		४२	९	५१

६—इस वर्ष सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक सोमवार को प्रातः साप्ताहिक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ आदि का आयोजन किया जाता रहा, जिसमें सभी शिक्षक, छात्र तथा कर्मचारी सम्मिलित हुए।

७—दिनांक १५-८-८८ को स्वतन्त्रता-दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया।

८—दिनांक २५-८-८८ को संस्कृत-दिवस मनाया गया। इसकी अध्यक्षता मान्य कुलपति जी ने की तथा इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा० रामकरण शर्मा, भूतपूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय थे।

९—दिनांक २७-१०-८८ को विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पुनरीक्षण समिति आयी। उक्त समिति दिनांक ३०-१०-८८ तक विश्वविद्यालय में रही। सभी विभागों द्वारा अपने-अपने विभाग की विकास-योजनाएँ समिति के समक्ष प्रस्तुत की गईं।

१०—दिनांक २१-११-८८ को न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, इलाहाबाद का

'प्राचीन भारत में न्याय-व्यवस्था' विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान हुआ, जिसमें सभी शिक्षक एवं छात्र उपस्थित हुए।

११– दिनांक २३-१२-८८ से ०१-०१-८९ तक राष्ट्रीय सेवा योजना का वार्षिक शिविर डा० जयदेव वेदालंकार, कोआर्डिनेटर एवं डा० ए० के० चोपड़ा, प्रोग्राम आफिसर के निर्देशन में ग्राम श्यामपुर, जिला बिजनौर में आयोजित किया गया। इसमें वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्रों ने सक्रिय भाग लिया।

१२—गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दिनांक २३-१२-८८ से २९-१२-८८ तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८८ को प्रातः श्रद्धानन्द द्वार से शोभा-यात्रा निकाली गई जो बाद में श्रद्धाञ्जलि सभा में परिवर्तित हुई। इस अवसर पर संस्कृत त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता तथा योग, शरीर सौष्ठव, कबड्डी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया।

१३– दिनांक २६-०१-८९ को गणतन्त्र-दिवस समारोह सोल्लासपूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण आचार्य एवं उप-कुलपति ने किया।

१४—दिनांक १६-०२-८९ को संस्कृत विभाग के अन्तर्गत प्रोफेसर बृजमोहन चतुर्वेदी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का एक विशिष्ट व्याख्यान हुआ जिसमें संस्कृत, वेद, हिन्दी एवं दर्शन के सभी प्राध्यापक व छात्र सम्मिलित हुए।

१५—दिनांक १४-०३-८९ से १६-०३-८९ तक संस्कृत विभाग के तत्वावधान में 'महाभाष्यकार पतंजलि' पर एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये व वाचन किये।

१६—इस वर्ष भी वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्र विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेने विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में गए तथा पर्याप्त पुरस्कार प्राप्त किए।

१७—इस सत्र में वेद एवं कला महाविद्यालय के छात्र हाकी, क्रिकेट, बैडमिन्टन,

कुश्ती, कबड्डी, तैराकी आदि की उत्तर प्रदेश स्तरीय व उत्तर क्षेत्र स्तरीय अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने गये।

१८—दिनांक २४-४-८९ से वेद एवं कला महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ आरम्भ हुईं तथा दिनांक १६-५-८९ को भलीभाँति सम्पन्न हुईं।

१९—दिनांक १९-५-८९ से १८-७-८९ तक वेद एवं कला महाविद्यालय में ग्रीष्मावकाश घोषित किया गया।

—**रामप्रसाद वेदालंकार**
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सन् १९०० में स्थापना के साथ ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जब १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्व-विद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति एवं पं० रामनाथ वेदालंकार, आदि कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
एम० ए०	वैदिक साहित्य	०६	०४	१०
अलंकार	,,	४३	१०	५३
विद्याविनोद	,,	२४	०६	३०
				९३

विभागीय उपाध्याय

१-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार – प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति
२-डा० भारत भूषण विद्यालंकार – वेदाचार्य, एम०ए०, पी-एच०डी० रीडर
३-डा० सत्यव्रत राजेश – शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी० प्रवक्ता
४-डा० मनुदेव बन्धु – एम०ए०, पी-एच०डी० प्रवक्ता

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१. श्री रामप्रसाद वेदालंकार

(अ) प्रकाशित पुस्तकें :-

अब तक प्रकाशित पुस्तकें-३६, एक पुस्तक "अनन्त की ओर" का अंग्रेजी में अनुवाद। ४ अनुवाद हुए जिनमें से एक प्रकाशित हुआ।

इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकें -

१-महान विदुर के महान उपदेश (परिवर्तित संस्करण)
२-केनोपनिषद्

उपर्युक्त पुस्तकों में से स्वाध्याय-प्रेमियों के आग्रह पर कुछ पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए। इसके साथ-साथ बड़े आग्रहपूर्वक लिखित पुस्तकों के साथ कैसेटस् की भी माँग की गई है।

१-वैदिक साहित्य सेवा पर दो विशेष पुरस्कार – १९८१, १९८३

२-विश्व वेद परिषद् से (साहित्य सेवा) पर "वेदरत्न" की मानद उपाधि प्राप्त-१९८४

सेमिनार/संगोष्ठी

१. दिनांक १४-१६ मार्च ८९ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में "महाभाष्यकार पतंजलि" पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और वक्तव्य दिया।

२. दिनांक १०-११ फरवरी ८९ को गणित विभाग के तत्वावधान में विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया के प्रथम वार्षिक अधिवेशन एवं 'वैदिक गणित परम्पराएँ एवं अनुप्रयोग' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में एक विशिष्ट व्याख्यान दिया।

३. १० अप्रैल ८९ को होम्योपैथिक डाक्टर्स एसोशियेशन के सहारनपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय भाषण दिया।

४. ८ मई ८९ को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 'वेद मानवजीवन के प्रेरणा स्रोत' विषय पर संगोष्ठी में विशेष व्याख्यान दिया।

लेखादि

अनेक पत्रिकाओं में कुछ लेख व पुस्तकों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए।

वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

एक ओर पुस्तकों और लेखों के माध्यम से वेद, उपनिषद् आदि के रहस्यों को सरल, सरस एवं भावात्मक शैली में स्पष्ट करने का प्रयास किया, दूसरी ओर भारतवर्ष के अनेक नगरों, संस्थाओं द्वारा आयोजित विशाल समारोहों में वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक, विद्वतापूर्ण भाषण दिए।

१. ११ जून ८८ से २७ जुलाई ८८ तक अमेरिका में लास एंजलिस, अरिजाना प्रान्त के ह्यूमा शहर आदि कई स्थानों पर विभिन्न वैदिक विषयों व योग सम्बन्धी विषयों पर व्याख्यान दिया।

२. १ मार्च ८९ से ६ मार्च ८९ तक टंकारा (गुजरात) में वैदिक आध्यात्म, वैदिक परिवार, वैदिक समाज आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

३. १९ मई ८९ को वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, धर्मपुरा कालोनी, यमुनानगर में आयोजित यज्ञ सम्मेलन में भाग लिया।

४. २४ मई को बिराटनगर (नेपाल) में वैदिक नारी और परिवार-निर्माण में उनका योगदान, वैदिक यज्ञ और समाज में उसकी उपयोगिता आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

५. इसके अतिरिक्त दिल्ली, गुड़गांव, कोटा (राजस्थान) आदि की विभिन्न आर्य सभाओं में वैदिक विषयों पर व्याख्यान दिए।

६ दैनिक मिलाप संदेश में भी वेदमंत्रों पर कभी-कभी व्याख्या की जाती है।

२-भारतभूषण विद्यालंकार, रीडर

शैक्षिक योग्यता - विद्यालंकार, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान) वेदाचार्य,
पी-एच०डी०

शैक्षणिक अनुभव -

स्नातक स्तर - २३ वर्ष

स्नातकोत्तर - २३ वर्ष

सत्र ८८-८९ में-

१. ओरियन्टल कान्फ्रेंस विशाखापत्तनम में भाग लिया तथा शोध-पत्र पढ़ा।

आगामी वर्ष के लिए गुरुकुल काँगड़ी में आमन्त्रित किया।

२. सोनोपत में छात्रों को दर्शन एवं पौर्णमास तथा अग्नाधान एवं नवसस्येष्ठि नामक श्रोतयोग दिखायें।

३. संस्कृत विभागान्तर्गत सेमिनार में भाग लिया।

४. विभिन्न प्रान्तों में वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

५. नेपाल में हिन्दु संस्कृति रक्षा सम्मेलन में भाग लिया एवं वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार किया।

६. विभाग में डा० रामनाथ वेदालंकार के भाषण का संयोजन।

७ योग का एकवर्षीय कोर्स किया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण कार्यों को विधिवत् पूर्ण किया।

३-डा० सत्यव्रत राजेश, प्रवक्ता

शैक्षणिक कार्य -

१. अलंकार द्वितीय वर्ष, एम०ए० प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष, पी-एच०डी० के छात्रों को निर्देशन।

२. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र की शिक्षापटल की मीटिंगों में सदस्य के कारण भाग लिया।

३. अखिल भारतीय वेद संगोष्ठी के अधिवेशन में चण्डीगढ़ सैक्टर-१६ में भाग लिया तथा निबन्धवाचन।

४. गु०कां०वि०वि०, हरिद्वार की ओर से गुरुकुल भैंसवाल में पर्यवेक्षक कार्य।

५. अनेक पत्रिकाओं में लेख।

६. पूना, कोल्हापुर, गाँधीनगर, इचलकरंजी, सांगली, धुलिया तथा चालीसगांव (महाराष्ट्र), अहमदाबाद, गांधीधाम, बड़ौदा तथा ध्रांगध्रा (गुजरात), बेलगाम (कर्नाटक) एवं हरियाणा, उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

७. वैदिक प्रयोगशाला तथा वैदिक संग्रहालय का निदेशन।

४. डा० मनुदेव बन्धु, प्रवक्ता

शैक्षणिक योग्यता - एम०ए०-वेद, संस्कृत, हिन्दी; आचार्य, पी-एच०डी०

(क) लेखन तथा प्रकाशन

१. भाष्यकार दयानन्द

२. वेदमन्थन

३. मानवता की ओर

४. चरित्र-निर्माण

५. बृहदारण्यकोपनिषद : एक अध्ययन (प्रेस में)

६. वेदोऽखिलोधर्ममूलम्, आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई।

(ख) प्रकाशित लेख

१. महर्षि यास्क और निरुक्त

२. दयानन्द वेद भाष्यकार सूक्ष्मेक्षिका

३. आचार्य दयानन्द का आचार्यत्व

४. महर्षि दयानन्द की दार्शनिक उद्भावनाएं

५. वर्णव्यवस्था और अस्पृश्यता

६. स्वार्थ और परार्थ

विविध व्याख्यान

(क) चार राष्ट्रीय कान्फ्रैन्स में सक्रिय भाग लिया तथा निबन्धवाचन किया।

(ख) अनेक वेद सम्मेलनों और संस्कृत सम्मेलनों में निबन्धवाचन किया।

(ग) आर्य समाज के विभिन्न मंचों से वेद, दयानन्द दर्शन तथा भारतीय दर्शन पर भाषण दिये।

इस वर्ष विभाग में वैदिक यज्ञ-याज्ञ विधान (वैदिक कर्मकाण्ड) और

संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए एकवर्षीय डिप्लोमा शुरु किया गया है तथा वैदिक संग्रहालय को अधिक उपयोगी एवं सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया। वैदिक प्रयोगशाला में अलंकार कक्षाओं से एम० ए० तक वैदिक अध्ययन को प्रयोगात्मक बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

इस वर्ष समय-समय पर विभाग में डा० रामनाथ जी वेदालंकार, भूतपूर्व आचार्य एवं उप-कुलपति के वेद विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुए।

—रामप्रसाद वेदालंकार

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रमुख अंग रहा है। इस विभाग के उपाध्यायों एवं छात्रों का गुरुकुल के यश को अभिवृद्ध करने में प्रशंसनीय योगदान रहा है। प्रायः संस्कृत के छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी वाग्मिता की अमिट छाप अंकित की है ! इस विभाग के अनेक मेधावी छात्र आज विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्तुत्य शिक्षक के रूप में कार्य रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भी इस विभाग के छात्रों का चयन हो चुका है। संस्कृत विभाग का संपोषण एवं विकास डा० रामनाथ जी वेदालंकार जैसे संस्कृत-जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रशंसनीय पद्धति के साथ हुआ है।

विभागीय उपाध्याय—

१. डा० योगेश्वरदत्त शर्मा — प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष (१६ जौलाई ८८ को कार्यभार ग्रहण किया तथा १२ मई ८६ को अपने पूर्व स्थान पर चले गए।)

२. डा० निगम शर्मा — रीडर

३. आचार्य वेदप्रकाश — रीडर एवं अध्यक्ष

४. डा० रामप्रकाश शास्त्री — प्रवक्ता

५. डा० महावीर अग्रवाल — प्रवक्ता

विभागीय कार्य-विवरण—

विभाग में २० अगस्त ८८ को संस्कृत-दिवस सोल्लास मनाया गया, जिसमें समस्त पंचपुरी के संस्कृत विद्वान उपस्थित हुए।

८ अक्टूबर ८८ को विभाग की शोध-समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें विषय-विशेषज्ञ के रूप में डा० शिवशेखर मिश्र, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय तथा डा० राममूर्ति शर्मा, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय उपस्थित हुए।

विभाग के प्रतिभासम्पन्न छात्र (हरिशंकर, जयेन्द्र, राजेश, विद्यानिधि, ताराचन्द) विभिन्न विश्वविद्यालयों से वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा संस्कृत संभाषण प्रतियोगिताओं में विजयी होकर आए।

विभाग में निम्न विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान हुए :

१. डा० रामनाथ जी वेदालंकार	(पूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी वि० वि०)
२. डा० पुष्पेन्द्रकुमार	(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली वि० वि०)
३. डा० वेदप्रकाश उपाध्याय	(रीडर संस्कृत विभाग, चण्डीगढ़ वि० वि०)
४. डा० बृजमोहन चतुर्वेदी	(अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली वि० वि०)

इस वर्ष विभाग के दो छात्रों को पी-एच०डी० की उपाधि से अलंकृत किया गया, जिनके नाम निम्न हैं—

१. श्री मणिराम त्रिपाठी

२. श्री सत्यदेव

विभाग में एक अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री के संयोजकत्व में हुआ जिसका कार्यक्रम सभी के द्वारा प्रशंसित रहा।

विभाग में १४-१६ मार्च ८९ को महाभाष्यकार पतञ्जलि पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें लगभग दस विश्वविद्यालयों के उच्चस्तरीय विद्वानों ने भाग लेकर अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

विभाग में समय-समय पर संस्कृत भाषण में पाटव प्राप्त करने के लिए छात्रों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षण में आचार्य वेदप्रकाश तथा डा० महावीर का योगदान विशेषरूप से प्रशंसनीय है।

विशाखापत्तनम् में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें संस्कृत विभाग से डा० योगेश्वरदत्त शर्मा एवं डा० महावीर अग्रवाल सम्मिलित हुए। दोनों ही विद्वानों ने अपने शोध-पत्रों का वाचन किया तथा कुलपति महोदय के उस पत्र को प्रस्तुत किया जिसमें आगामी सम्मेलन गुरुकुल काँगड़ी में करने का निमंत्रण दिया गया था। परिणामस्वरूप कुलपति महोदय के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए सम्मेलन की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से सन् १९९० में होने वाले अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन का स्थल गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पुण्यभूमि को स्वीकार कर लिया।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१. **नाम** - निगम शर्मा, रीडर - संस्कृत

२. **योग्यता** - एम०ए०, एल०टी०, साहित्याचार्य, पी-एच०डी०

३. **पता** - संस्कृत-विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

४. **विशेष योग्यता** - एम०ए० में प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान, स्वर्णपदक, कविता, लेख आदि पर अनेक पुरस्कार।

५. **भाषायें** - संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू।

६. **अध्यापन - अनुभव**
स्नातक - स्नातकोत्तर
२७ वर्ष - २७ वर्ष
} १९६२-६३ एस० डी० कालेज मुजफ्फरनगर
१९६३ से गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

७. **शोध -निर्देशन** १-लघुशोध-प्रबन्ध—५
२-सात को पी-एच०डी० मिल चुकी है।
३-दो ने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिये हैं।
४-छः पी-एच०डी० के लिए कार्यरत।
५-दस पी-एच०डी० छात्रों का मूल्याङ्कन।
६-चौदह ग्रन्थों का मूल्याङ्कन(शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार)

८. **विशिष्ट संगोष्ठी** - १-ध्वनेरुद्भवो विकासश्च, कुरुक्षेत्र वि० वि०
२-मल्लिनाथः—विश्वसंस्कृतम्—वाराणसी
३-वेद एवं भाष्यकारः—पंजाब वि०वि०, चंडीगढ़
४-हिमालयः—गढ़वाल वि० वि०, श्रीनगर
५-कालिदासे ऋग्वेदस्य प्रभावः—कालिदास जयन्ती उज्जैन
६-ऋग्वेदे परिवार स्वरूपम्—प्रभाताश्रमः, मेरठ
७-भाष्यकारः पतञ्जलिः—गुरुकुल काँगड़ी

९. **शोध-लेख** - ९० से अधिक प्रकाशित।

१० **विशेष** - ६० से अधिक छात्र उच्च पदों पर कार्यरत।

११. अभिनन्दन ग्रन्थों में विशेष लेख

१-आचार्य गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी २-श्री पोतदार (पूना वि० वि०)
३-डा० निरूपण जी ४-श्री प्रभुदत्त स्वामी

१२. **विशिष्ट स्थानों पर व्याख्यान** - १-सभापतित्व, उत्तर बंगाल वि०वि० सिलीगुड़ी, २-मेरठ वि०वि० प्रादेशिक संस्कृत अकादमी, ३-विद्वत् परिषद् बरेली, ४-भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार, ५-निर्धन निकेतन, हरिद्वार, ६-गरीबदासीय संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार, ७-गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, ८-प्रतिवर्ष विद्यार्थी वैजयन्ती पुरस्कार आदि लाते हैं।

१३. वर्ष १९८८-८९ का कार्य-विवरण

१) १२ जनवरी ८८, बी०एच०ई०एल०, शिशु निकेतन—सभा अध्यक्षता
२) १३ जनवरी ८८, प्रभाताश्रम, मेरठ—सभा अध्यक्षता
३) ६ फरवरी ८८, डी०पी०एस०—प्रमुख वक्ता
४) १२ फरवरी से १९ फरवरी तक वानप्रस्थ आश्रम में वेद विषय पर विशेष व्याख्यान।
५) ६, ७ मार्च लाजपत कालेज साहिबाबाद, गाजियाबाद
६) १२, १३ मार्च ८८, निर्धन निकेतन हरिद्वार – व्याख्यान
७) १९, २० मार्च ८८, भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार
८) २५ मार्च ज्वालापुर महाविद्यालय
९) ११ अप्रैल ,, ,, वेद सम्मेलन
१०) १२ ,, ,, ,, संस्कृत सम्मेलन
११) १३ ,, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१२) १८ ,, वानप्रस्थ आश्रम
१३) १, २ अक्टूबर, दयानन्द पीठ चण्डीगढ़ वि०वि०—वेदस्य सार्वभौमता
१४) ११ नवम्बर भिक्षानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बुलन्दशहर
१५) १४ ,, संस्कृत परिषद् हरिद्वार 'रसनिष्पत्तिः'
१६) २४ ,, विक्रम वि० वि० उज्जयिनि—सभापतित्व किया।
१७) २८, २९, ३० नवम्बर, निर्धन निकेतन हरिद्वार

१८) आर्य समाजों में विशेष व्याख्यान दिये।

१४. इस वर्ष दो छात्रों ने (श्रीमती सुखदा तथा श्रीमती राजेन्द्र कौर) अपना शोध- प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

१५. आकाशवाणी प्रसारण रामपुर -१-काव्य पाठ
२-विशिष्ट भाषण

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

शोध-लेख प्रकाशन — "वैदिक संहिताओं में लोक-परिकल्पना" नामक शोध-लेख पावमानी शोधपत्रिका में प्रकाशित हुआ। "ऋग्वेदे पारिवारिकादर्शः" नामक संस्कृत का शोध लेख गुरुकुल पत्रिका के शोध विशेषाङ्क में प्रकाशित हुआ। उक्त लेख पुनः संस्कृत की शोध पत्रिका "आदर्श" में प्रकाशित हुआ।

विद्वत् गोष्ठी में भाग — १ अक्टूबर ८८ को गुरुकुल प्रभात आश्रम में आयोजित शोध गोष्ठी में भाग लिया तथा शोधपत्र का वाचन किया।

२८, २९, ३० नवम्बर को ऋषि संस्कृत महाविद्यालय में मेरठ मंडलीय संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उक्त सम्मेलन में विशिष्ट व्याख्याता के रूप में सम्मिलित होकर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिए।

१७ दिसम्बर ८८ को गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में संस्कृत सम्मेलन में विशिष्ट वक्ता के रूप में संस्कृत-भाषण किया जिसकी विद्वानों द्वारा प्रशंसा की गई।

भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर में संस्कारों की महत्ता पर दो विशेष व्याख्यान दिए।

११, १२ अप्रैल ८९ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में शिक्षा सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन में व्याख्यान दिए।

२८ अप्रैल ८९ को देवबन्द में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर संस्कृत की महत्ता पर व्याख्यान दिया।

शोध निर्देशन - इस वर्ष निर्देशन में श्री मणिराम त्रिपाठी तथा श्री सत्यदेव को शोध उपाधि प्राप्त हुई है। वर्तमान में सात शोधार्थी निर्देशन में अनुसंधान कार्य कर रहे हैं।

संयोजन कार्य - २० अगस्त ८८ को संस्कृत-दिवस समारोह का संयोजन किया।
२९, ३० दिसम्बर ८८ को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण-प्रतियोगिता का सयोजन किया।

प्रतिष्ठात्मक कार्य - ३०, ३१ जनवरी ८९ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित मेरठ मंडलीय संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत प्रतियोगिता में निर्णायक पद पर कार्य किया।

१० अप्रैल से १५ अप्रैल तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उत्सव पर आयोजित विशेष यज्ञ में मंत्र प्रवाचक के रूप में कार्य किया।

सांस्कृतिक प्रचार - विभिन्न धार्मिक संस्थानों, शिक्षण संस्थानों एवं प्रचार प्रतिष्ठानों में समय-समय पर पहुँच कर लगभग १०० व्याख्यान वेद, धर्म, दर्शन एवं संस्कृति को लक्ष्य करके दिए। विशेषकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में ही व्याख्यान दिए गए।

डा० रामप्रकाश शर्मा

शोध निर्देशन - अनेक शोधार्थी शोध निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं। अपना शोध-कार्य पूर्ण करके श्री तारानाथ मनाली ने अपना शोध-प्रबन्ध मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर दिया है।

डा० महावीर अग्रवाल प्राध्यापक - संस्कृत

योग्यता - एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी०

विशिष्ट शोध-गोष्ठियों में प्रतिनिधित्व -

१) अखिल भारतीय प्राच्य विद्या संगोष्ठी विशाखापत्तनम में ५ से ६ जनवरी ८९ तक आयोजित सम्मेलन में भाग लिया एवं 'वैदिकी सृष्टिः' विषय पर शोध लेख पढ़ा।

२) स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान, प्रभात आश्रम मेरठ में शोध संगोष्ठी के अन्तर्गत 'ऋग्वेद पारिवारिक कल्पना' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

३) महर्षि दयानन्द वि० वि० रोहतक में २५ से २७ मार्च तक आयोजित शोध-

संगोष्ठी में 'अश्वघोष के साहित्य में दार्शनिक तत्व' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४) गुरुकुल गौतम नगर, देहली में अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत में विशिष्ट व्याख्यान दिया।

५) देहली पब्लिक स्कूल, बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में मुख्य अतिथि के रूप में 'प्राचीनकाल में गुरु-शिष्य परम्परा' विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रकाशित शोध लेख

१) वाल्मीकि रामायण का अङ्गीरस।

२) संस्कृत गीति मन्दाकिनी।

३) भारतीय संस्कृतेः गायकः महाकवि कालिदासः

४) वैदिकी सृष्टिः

५) ऋग्वेद में पारिवारिक कल्पना

शोध-निर्देशन

वर्ष १९८८-८९ में एक छात्रा ने लघुशोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

विशिष्ट व्याख्यान

१) जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू में "कालिदास के काव्यों में भारतीय संस्कृति" विषय पर व्याख्यान दिया।

२) एन०ए०एस० कालेज मेरठ में संस्कृत परिषद् में मुख्य अतिथि के रूप में विशिष्ट व्याख्यान दिया।

देहली, जम्मू, कानपुर, मेरठ, देहरादून, हरिद्वार, रुड़की आदि नगरों में विशेष समारोहों में लगभग ६० व्याख्यान दिये। श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अन्तर्गत समायोजित 'अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता' में सह-संयोजक का कार्य किया। गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० के वार्षिकोत्सव पर "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" का संयोजन किया।

संस्कृत-छात्रों को विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं हेतु तैयार किया, जहाँ से वे अनेक पुरस्कार लेकर आये।

—वेदप्रकाश शास्त्री
विभागाध्यक्ष

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) स्थापना—१९१० ई० में।

(२) स्थापना-अध्यक्ष—स्व० आचार्य सुखदेव दर्शनवाचस्पति।

दर्शन विभाग में अलंकार, एम० ए० और पी-एच० डी० तक अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। अपने-अपने विषय के विद्वान प्राध्यापक, जो भारतीय दर्शनों के मौलिक ग्रन्थों के विशिष्ट विद्वान् और पाश्चात्य दर्शनों के भी विद्वान् हैं, विभाग में सेवारत हैं।

दर्शन विभाग के छात्र, परीक्षा में अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत माध्यम रख सकते हैं।

(३) यह विभाग १९८२ से राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन करता रहा है।

(१) राष्ट्रीय-शिक्षा कार्यशाला—१९८२

(२) राष्ट्रीय सेमिनार—"मानवीय मूल्य और समाज में अन्तःसम्बन्ध" १९८४; उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन।

(३) "विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान"—विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का ३० वाँ वार्षिक अधिवेशन १९८६।

(४) राष्ट्रीय संगोष्ठी—विषय—"भर्तृहरि एवं विटगिन्स्टाइन का भाषादर्शन" एवं उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का अधिवेशन-१९८७। इन समस्त राष्ट्रीय संगोष्ठियों का निदेशकत्व डा० जयदेव वेदालंकार ने किया। उक्त संगोष्ठियों के शोधपत्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। १९८८ में भी विभाग ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिये आवेदन किया था, परन्तु अर्थाभाव में सम्पन्न नहीं की जा सकी।

(४) आई० ए० एस० और पी० सी० एस० के मार्गदर्शन की व्यवस्था—

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के

लिये निःशुल्क अध्यापन एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी० एच० ई० एल० एवं हरिद्वार के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(५) छात्र संख्या—

विद्याविनोद—२५
अलंकार —१०
एम० ए० —१६
पी-एच०डी०— ५

योग—५६

(६) वर्तमान स्टाफ—

(१) डा० जयदेव वेदालंकार—रीडर-अध्यक्ष।
(२) डा० विजयपाल शास्त्री—प्राध्यापक
(३) डा० त्रिलोकचन्द—प्राध्यापक
(४) डा० यू० एस० बिष्ट—प्राध्यापक

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दो पद प्रोफेसर के स्वीकृत किये हैं।

(७) प्राध्यापकगण

१-डा० जयदेव वेदालंकार—

पद—रीडर-अध्यक्ष।

नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर फरवरी ८४ से।

योग्यताएँ—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान) दर्शनाचार्य, सिद्धान्तभूषण, पी-एच० डी०, डी० लिट्०।

१९८८ में शोधकार्य

(१) 'भारतीय दर्शनों में प्रमाण परिक्रमा'' शोध ग्रन्थ की पाण्डुलिपि

तैयार की गई है।

शोध लेख—

(१) "वैदिक शासन पद्धति"—गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।
(२) "वह इतिहास का दीपक बुझ गया"।
(३) "आचार्य शंकर के दर्शन का वैदिक-आधार" भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार—शंकराचार्य शोधग्रन्थ में प्रकाशित।
(४) "वैदिक संस्कृति के कतिपय सूत्र" दिव्यानन्द शारदा फाउन्डेशन

प्रकाशित शोधग्रन्थ—महर्षि दयानन्द की विश्व-दर्शनों को देन
—उपनिषदों का तत्त्वज्ञान
—महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त
—भारतीय दर्शन की समस्याएँ

शोधपत्र वाचन—ऑल इण्डिया फिलॉसोफिकल कांग्रेस के पाण्डेचुरी अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया एवं शोधपत्र वाचन किया—विषय—"वैदिक दर्शन"।

अन्य दार्शनिक विषयों पर भाषण—वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, जून ८८ में आठ भाषण।

अज्ञान दूर करने के वैदिक उपाय
उपनिषदों का दर्शन
भारतीय दर्शनों में मोक्ष के साधन
नैतिक मूल्य और समाज
कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य
यज्ञ का दार्शनिक रूप
ज्ञान और कर्म मीमाँसा
सांख्य का पुरुष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश (हैदराबाद) के तत्त्वावधान में अगस्त में भाषण :–

१५ अगस्त और अहिंसा दर्शन

अज्ञान को दूर करने के दार्शनिक उपाय

आर्यसमाज त्रैतवाद

वैदिक दर्शन में तत्त्व-मीमांसा

वेद में मुक्ति का स्वरूप

मूल्यों का संरक्षण

पुरुषार्थ चतुष्टय

धर्म और दर्शन

मुक्ति से पुनरावर्तन

मासिक शोध पत्रिका – गुरुकुल पत्रिका का सम्पादन

इस वर्ष चार विशेषांक प्रकाशित किये गये।

एन० एस० एस० के समन्वयक पद पर डा० वेदालंकार को अवैतनिक रूप में नियुक्त किया। राष्ट्रीय एकीकरण शिविर—१९ फरवरी ८९ से २७ फरवरी ८९ तक—राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वावधान में डा० जयदेव वेदालंकार के आयोजकत्व में राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ५ प्रान्तों के २०० छात्र एवं छात्राओं ने सक्रिय भाग लिया। दो ग्रामों में सड़क एवं स्वास्थ्य विषय में कार्य सम्पन्न किये गये।

राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत—अखिल भारतीय दर्शन परिषद् की ओर से स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार डा० वेदालंकार को उनके शोध ग्रन्थ—"भारतीय दर्शन की समस्यायें" पर प्रदान किया गया है।

(२) डा० विजयपाल शास्त्री

पद—प्रवक्ता, दर्शन शास्त्र

नियुक्ति तिथि—७-२-८१

योग्यता—एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी, दर्शनशास्त्र) साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदान्ताचार्य। वर्ष १९८८-८९ के सत्र में निम्नलिखित शोधलेख पत्रिकाओं और पुस्तकों में प्रकाशित हुए—

(१) शंकर और बुद्ध का साधनमार्ग—गुरुकुल पत्रिका अप्रैल ८८

(२) "वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार" (डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक पर समालाचना)

उक्त लेख "वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं समाज दर्शन" पुस्तक में प्रकाशित हुआ।

(३) ख्यातिवाद (दार्शनिक लेख) ⎫ गुरुकुल पत्रिका
(४) कीदृशं ब्रह्म जगतः कारणम्? ⎬ जून-सितम्बर १९८८
(दार्शनिक संस्कृत लेख) ⎭

(५) प्राचीन भारते वैदिक्यर्थ व्यवस्था—गुरुकुल पत्रिका अक्तूबर-नवम्बर ८८।

(६) आचार्य शंकर और उनका गीता-भाष्य

(७) आचार्य शंकर और सांख्य योग

उक्त दोनों लेख "भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार श्री जगद् गुरु आद्य शंकराचार्य" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए। यह पुस्तक डा० विष्णुदत्त राकेश के सम्पादकत्व में वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई।

(८) **पंचाहुति विद्या**—(१)गुरुकुल पत्रिका दिसम्बर-मार्च ८९

२—गुरुकुल पत्रिका के सहायक सम्पादकत्व पर कार्य किया।

३—इनके निर्देशन में सुरेन्द्रकुमार शोधछात्र ने "भारतीय दर्शनों में अहिंसा-तत्त्व का तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण" इस शीर्षक से लिखित शोध-प्रबन्ध पी-एच० डी० परीक्षा के अन्तर्गत मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किया।

४—रिफ्रेशर कोर्स

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अन्तर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित १३-२-८९ से १४-३-८९ तक दर्शनशास्त्र विषयक रिफ्रेशर कोर्स पूर्ण किया।

(३) डा० त्रिलोकचन्द्र—

योग्यतायें—एम० ए०, पी-एच० डी०

नियुक्ति—१९८२

योगदर्शन पर आर्य वानप्रस्थाश्रम में आठ व्याख्यान दिये।

(१) आर्यसमाज ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद में २४ दिसम्बर ८८ से ३१ दिसम्बर ८८ तक योग दर्शन पर व्याख्यान।

(२) "योग व संगीत से नशों से मुक्ति" ६-७-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(३) "योग से उच्च रक्तचाप व हृदयरोग का उपचार सम्भव" २८-७-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(४) "योग से मस्तिष्क व फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है" ११-८-१९८८ को दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित।

(४) डा० **उमरावसिंह बिष्ट**—प्राध्यापक-नियुक्ति १९८६

योग्यतायें—एम० ए० संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र, पी०-एच० डी०

कार्य - ऑल इण्डिया फिलासाफिकल कांग्रेस के पाण्डेचुरी अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया। शोधपत्र वाचन किया। विषय Epestimology of Bharthihari.

शोधलेख—काण्ट का शुभ और अशुभ का प्रत्यय—गु० पत्रिका में प्रकाशित

—डा० जयदेव वेदालंकार
विभागाध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ

१. श्री ओम्प्रकाश मिश्र	प्रोफेसर
२. ,, चन्द्रशेखर त्रिवेदी	रीडर एवं अध्यक्ष
३. ,, सतीशचन्द्र धमीजा	प्राध्यापक
४. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	प्राध्यापक
५. श्री लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक एवं इंचार्ज
६. ,, कुँवरसिंह नेगी	प्रयोगशाला अटेन्डैण्ट

नोट :- डा० हरगोपाल सिंह प्रोफेसर ३० जून १९८८ को अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। उनका पद रिक्त पड़ा हुआ है। विज्ञापन बहुत पहले चला गया था परन्तु उक्त पद पर अब तक नियुक्ति नहीं की जा सकी।

इस सत्र (१९८८-८९) में मनोविज्ञान की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का निम्नलिखित संख्या में प्रवेश हुआ :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	२२
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	७
अलङ्कार प्रथम वर्ष	—	२२
अलङ्कार द्वितीय वर्ष	—	७
एम०ए० (प्री.)	—	१९
एम०ए० (फा.)	—	०१

पिछले सत्र की अपेक्षा इस सत्र में मनोविज्ञान विषय लेने वाले छात्रों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई। पूरे सत्र में अध्ययन-अध्यापन सुव्यवस्थित रूप से चलता रहा, यद्यपि प्रोफेसर का एक पद रिक्त पड़ा रहा परन्तु विभागीय सदस्यों विशेषतः प्रो० सतीशचन्द्र धमीजा व श्री लाल नरसिंह नारायण के

सहयोग से इस कमी को पूरा करने में बड़ी सुविधा हुई। प्रारम्भ से ही महिलाओं एवं सैनिकों को स्नातकोत्तर कक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से परीक्षाएँ देने की सुविधा रही है। कु० संगीता शुक्ला ने एम०ए० (फा.) परीक्षा १९८९ हेतु एक लघु शोध प्रबन्ध 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का व्यक्तित्व चरों पर प्रभाव' विषय पर डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रस्तुत किया। विभाग में ६ अनुसंधित्सु पी-एच०डी० उपाधि हेतु पञ्जीकृत हैं और विभिन्न सामयिक विषयों पर संतोषजनक शोधकार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विजिटिंग कमेटी विश्वविद्यालय की गतिविधियों का सिंहावलोकन करने आई। मनोविज्ञान विभाग की ओर से क्षेत्रीय समस्याओं के संदर्भ में कई योजनाएँ कमेटी के सामने प्रस्तुत की गईं जिन पर विचारोपरान्त समुचित आर्थिक अनुदान प्रदान किए जाने का उत्शीलन किया गया।

विभागीय सदस्यों की शैक्षणिक गतिविधियाँ :-

१. गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने प्रोफेसर ओम्प्रकाश मिश्र को पाठ्यक्रम समिति एवं शोध समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया है। प्रोफेसर मिश्र ने विभागीय प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान किया तथा राजकीय आयुर्वेदिक कॉलिज गुरुकुल कांगड़ी में 'आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति एवं मनोविज्ञान' विषय पर आयोजित गोष्ठी में सक्रिय भाग लिया। ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशन नजीबाबाद से सामाजिक पर्यावरण विषय पर एक वार्ता भी मिश्र जी ने प्रस्तुत की।

२. श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने मनोविज्ञान विषय को लोकप्रिय बनाने हेतु स्थानीय जनता एवं स्नातक महाविद्यालयों में व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करके विभाग की स्नातकोत्तरीय कक्षाओं में छात्रों की सख्या में उल्लेखनीय वृद्धि कराई। अन्य सभी विभागीय शिक्षकों/सदस्यों के सहयोग से प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें अधिक सफलता नहीं मिल सकी। इसका प्रमुख कारण अनुदान राशि की कमी रहा।

३. प्रो० सतीशचन्द्र धमीजा विश्वविद्यालय की ओर से अन्तर्विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता में मेरठ गए और टीम का नेतृत्व किया। छात्रोपयोगी पाठ्यक्रमानुसार अद्यतन जानकारी से युक्त विषय से संबद्ध पुस्तकें क्रय करने में पुस्तकालयाध्यक्ष की सहायता की। अपने निर्धारित Work Load के अतिरिक्त एक प्रश्न-पत्र स्नातक-कक्षाओं में अत्यन्त कुशलता एवं योग्यता के साथ छात्रों को पढ़ाया। श्री धमीजा जी ने आवश्यकतानुसार सदैव अपना सहयोग दिया है।

४. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव विभाग में कनिष्ठ प्राध्यापक हैं। अपनी अध्ययनशीलता एवं लगन के फलस्वरूप उनकी निम्नलिखित शैक्षणिक उपलब्धियाँ हैं।

(i) Indian Council of Social Science Research New Delhi के तत्वावधान में Leadership Style and Effectiveness—A Comparative Study of Private and Public Organisations रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा करके दिसम्बर १९८८ में प्रस्तुत कर दिया है।

(ii) औद्योगिक मनोविज्ञान पर एक पुस्तक प्रकाशित कराई है।

(iii) विभिन्न उच्चस्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में सत्रान्तर में ४ शोध-पत्र प्रकाशित कराए हैं।

(iv) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ पाँच शोध-पत्र प्रेषित कर रखे हैं।

(v) ICSSR, New Delhi से स्वीकृत Researh work प्रकाशनाधीन है।

(५) चूँकि विभाग में एक प्रोफेसर का पद रिक्त पड़ा है अत: शिक्षणकार्य में कठिनाई हो रही थी। श्री लालनरसिंह नारायण लैब असिस्टैण्ट व इन्चार्ज हैं तथा प्रथम श्रेणी में एम० ए० (मनोविज्ञान) परीक्षा उत्तीर्ण हैं। आवश्यकता पड़ने पर इन्होंने सदैव शिक्षणकार्य में भी हाथ बँटाया है। सत्र १९८८-८९ में भी इन्होंने अलङ्कार कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में 'वैदिक गणित' पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री लालनरसिंह नारायण ने वाडियो फिल्म का निर्देशन व सम्पादन भी किया।

(६) श्री कुँवरसिंह नेगी लैब अटेन्डेण्ट हैं। विभाग के स्थापनाकाल से ही वह लगभग २८/२९ वर्ष से सेवारत हैं और अत्यन्त आज्ञाकारी एवं विभागीय हित में कार्य करने वाले विश्वासपात्र कर्मचारी हैं।

— चन्द्रशेखर त्रिवेदी

अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहने की दिशा में सफल रहा। विभाग में इस समय एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर निष्ठापूर्वक अपने अध्ययन-अध्यापन का कार्य पूर्ण सजगता के साथ सम्पन्न कर रहे हैं।

विभागीय प्राध्यापक :—

(१) डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम० ए०, पी-एच० डी०—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

(२) डा० जबरसिंह सेंगर—एम० ए०, पी-एच० डी०—रीडर।

(३) डा० श्यामनारायण सिंह—एम० ए०, पी-एच० डी०, एल-एल० बी०—रीडर।

(४) डा० काश्मीरसिंह भिण्डर—एम ए०, पी-एच० डी०—लेक्चरर।

(५) डा० राकेशकुमार शर्मा,—एम० ए०, पी-एच० डी०—लेक्चरर।

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध छात्रों की संख्या—

एम० ए० प्रथम वर्ष	१७
एम० ए० द्वितीय वर्ष	१४
शोध छात्र	१३

शोध-कार्य—विभाग में वर्तमान समय तक २३ महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य हो चुका है। इस वर्ष दीक्षान्त समारोह में दो शोधार्थियों को पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया गया। उक्त दोनों शोधार्थियों ने डा० श्यामनारायण सिंह के कुशल निर्देशन में अपना शोध-कार्य सम्पन्न किया। प्रथम डा० सुखबीर सिंह जिनका शोध विषय "पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की मृण्मूर्तियों एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन" है। द्वितीय डा० जसवीरसिंह मलिक का शोध विषय "प्राचीन भारत में पौरोहित्य" है। इस वर्ष डा० विनोदचन्द्र

सिन्हा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के निर्देशन में श्री आर्येन्द्र ने अपना "प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध" नामक शोध प्रबन्ध पूर्ण करके विश्वविद्यालय में जमा करा दिया है। उपर्युक्त के अतिरिक्त विभाग में उच्च स्तर का शोध-कार्य हो रहा है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थी अपने शोध-कार्य को सम्पन्न करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं।

नाम	विषय	निर्देशक
१—जितेन्द्रनाथ	दी ध्यानी बुद्धाज प्रानम एण्ड बुद्धिस्ट एवेयर इन इण्डियन आर्ट	डा० विनोदचन्द्रसिन्हा
२—डाली चटर्जी	प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालकरणों का चित्रण।	,, ,,
३—सुधाकर शर्मा	बुद्धिस्ट स्कल्प्चर अण्डर द पालाज	,, ,,
४—डा० विनोद शर्मा	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास	,, ,,
५—श्रीमती रश्मि सिन्हा	प्राचीन भारत में समाजवाद	,, ,,
६—फैयाज अहमद	गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	डा० जबरसिंह सेंगर
७—सुरेश चन्द	पश्चिम उ० प्र० में चौहान जाति का इतिहास	,, ,,
८—श्रीमती मधुबाला	महाभारतकालीन युद्ध प्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र।	,, ,,
९—जगदीशचन्द्र ग्रोवर	ब्राह्मी स्कल्पचर्स अण्डर द पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
१०-ऋषिपाल आर्य	प्राचीन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व	,, ,,
११—रजनी सेंगर	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (वैदिककाल से गुप्तकाल तक)	,, ,,
१२—भारत भूषण	गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० कश्मीरसिंह
१३—विनोद कुमार शर्मा	प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थाएँ	,, ,,

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित लेख—

वर्तमान सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार लेख प्रकाशित हुये। प्रथम लेख "**वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन** नामक पुस्तक में डा० सत्यव्रत की प्रेरक कृति "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व"; द्वितीय

भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य नामक पुस्तक में शंकर और भारतीय संस्कृत; तृतीय **गुरुकुल पत्रिका** के "प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन" शोध विशेषांक में हड़प्पा **संस्कृति में नगर** व्यवस्था; चतुर्थ **प्रह्लाद विशेषांक** (युगीन शिक्षा पर शोध पत्रों का संकलन) में "गांधी और गुरुकुल शिक्षा"। वर्तमान समय तक डा० सिन्हा की १० पुस्तकें तथा ५० शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के तीन शोध लेख निम्नतः प्रथम "प्राचीन भारत की मुद्रायें" द्वितीय अंक सितम्बर १९८८ **प्रह्लाद** में, द्वितीय म्यूजियम आउट रीच प्रोग्राम **वैदिक पाथ अंक सितम्बर** से दिसम्बर १९८८ में तथा तृतीय युगों-युगों में नारी **प्रह्लाद** में प्रकाशित हुये।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा के इस सत्र में तीन शोध लेख निम्नतः प्रथम "गुप्त कौन थे" **गुरुकुल पत्रिका** में; द्वितीय "सावरनिटी इन वैदिक पीरियड" **वैदिक पाथ** में तथा तृतीय "प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप-**प्रह्लाद** विशेषांक (युगयुगीन शिक्षा पर शोध-पत्रों का संकलन) में प्रकाशित हुये।

विभाग द्वारा शैक्षणिक गतिविधियाँ—

इस सत्र के दिसम्बर माह में न्यायमूर्ति श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा का "प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था" पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ। माह मार्च में एक सरस्वती यात्रा का आयोजन डा० सेंगर एवं डा० श्यामनारायण सिंह के नेतृत्व में हुआ, जिसमें छात्रों ने थानेश्वर, दिल्ली, मथुरा, आगरा, ग्वालियर, झांसी एवं खजुराहो का भ्रमण किया। अध्ययन की दृष्टि से यह यात्रा विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त लाभकारी रही। विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर ने इस वर्ष २६ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक होने वाले आल इण्डिया म्यूजियम कांफ्रेन्स में भाग लिया। न्यू म्यूजियोलोजी की गोष्ठी में डा० सेंगर ने अपने विचार भी रखे। प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन पर पिछले वर्ष सम्पन्न हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी मे पढ़ जाने व ले शोध-पत्रों को शोध-लेख विशेषांक के रूप में इस सत्र में डा० जयदेव के सौजन्य से प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार पिछले वर्ष विभाग में हुई राष्ट्रीय गोष्ठी "युगयुगीन शिक्षा" के शोध- लेखों को "प्रह्लाद" में शोधपत्र विशेषांक के रूप में डा० विष्णुदत्त राकेश के सौजन्य से प्रकाशित किया गया।

विभाग के प्राध्यापक डा० कश्मीरसिंह भिण्डर ने आल इण्डिया रेडियो

नजीबाबाद में परिचर्चा में भाग लिया, जिसका विषय "साम्प्रदायिकता" था। रुड़की में हुई धार्मिक गोष्ठी जिसका विषय **सिख धर्म का योगदान व महत्व** एवं निर्मल सम्प्रदाय के सौजन्य से कुरुक्षेत्र में हुये धार्मिक सम्मेलन में सिख धर्म पर हुई परिचर्चा में भाग लिया। इसके अतिरिक्त डा० भिण्डर ने शाहबाद मारकंडा में सनातन हिन्दू सभा द्वारा आयोजित गोष्ठी में "गुरुग्रन्थ साहिब में राम महिमा" पर तीन व्याख्यान दिये।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ—

विश्वविद्यालय में स्थित पुरातत्व संग्रहालय जो कि विभाग का एक अभिन्न अंग है, उसके निदेशक पद पर डा० जबरसिंह सेंगर कार्य कर रहे हैं। विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव का कार्यभार कुशलतापूर्वक देख रहे हैं। डा० कश्मीरसिंह ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सहायक परीक्षाध्यक्ष की भूमिका को गरिमा के साथ सम्पन्न किया। विभाग के लेक्चरर डा० राकेशकुमार शर्मा विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर के पद पर कुशलता से कार्य कर रहे हैं। इसी सन्दर्भ में वे इस वर्ष तीन माह का प्रशिक्षण भी ले चुके हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य को विभाग के सभी सदस्यों ने पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न किया है।

—डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा

विभागाध्यक्ष

———

पुरातत्व संग्रहालय

पुरातत्व संग्रहालय विश्वविद्यालय के पास गत ८२ वर्षों से देश की संस्कृति के धरोहर के रूप में विद्यमान है। सिन्धु सभ्यता से लेकर १९वीं शताब्दी की विभिन्न वस्तुएं संग्रहालय को विभिन्न वीथिकाओं में दर्शन एवं उच्च अध्ययन के लिये नियोजित की गयी हैं। विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट के अतिरिक्त संग्रहालय को अन्य शासकीय संस्थाओं से भी अनुदान प्राप्त होता रहा है। सन् १९८८-८९ के इस सत्र में संग्रहालय को उ० प्र० शासन द्वारा एवं भारत सरकार के मानव संसाधन विभाग-राष्ट्रीय अभिलेखागार से अनुदान प्राप्त हुये।

१- उत्तर प्रदेश सरकार से १५ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इस अनुदान राशि से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित लगभग २०० छायाचित्र राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय नई दिल्ली से क्रय किये गये। इसके अतिरिक्त प्रस्तर कक्षा के लिये कुछ काष्ठ आधार भी तैयार करवाये गये।

२- उत्तर प्रदेश राज्य के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुर सिंह द्वारा प्रदत्त एक लाख की राशि से संग्रहालय कक्ष में कला वीथिका हेतु प्रदर्श पटल निर्मित करवायें गये हैं। इस वीथिका के पूर्ण होने में अभी लगभग ७५ हजार रुपये के व्यय का अनुमान है। वर्ष १९८८-८९ के वित्त वर्ष में १५ हजार रुपये की राशि और उपलब्ध हुई है। इस राशि से कला वीथिका की पेंटिंग की माउन्टिंग सम्बन्धी कार्य प्रगति पर है।

३- राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त ३० हजार रुपये की अनुदान राशि से तथा १० हजार रुपये विश्वविद्यालय द्वारा दिये गये धन से पाण्डुलिपियों की संरक्षण प्रक्रिया हेतु एक काष्ठ एवं १० परिशोधित अयन परिकोष्ठों का निर्माण कराया गया है। इसी राशि से वायु निशेषण पंखे एवं पाण्डुलिपियों के संरक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित रसायन भी क्रय किये गये हैं। यह उपलब्धि संग्रहालय की अति विशिष्ट उपलब्धि है। इस व्यवस्था के अनुसार पाण्डुलिपियों का संरक्षण संग्रहालय में ही किया जाना संभव हो गया है।

इस वर्ष पुरातत्व संग्रहालय को फीजी राष्ट्र के भारतीय मूल के निवासी श्री नेतराम जी शर्मा द्वारा ६ ताम्र एवं रूपक मुद्रायें भेंटस्वरूप प्राप्त हुई हैं।

इस वर्ष दर्शकों की संख्या ६४७९ रही है। संग्रहालय आने वाले कुछ दर्शकों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :-

१-सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार (सीनेट सदस्य)

२-श्रीमती कुसुम स्वरूप, अध्यक्ष, आल इण्डिया वीमेन्स कांफ्रेंस लखनऊ शाखा।

३-श्री के० एस० मूर्ति, उपाध्यक्ष वि०वि० अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

४-श्री गोपाल जी त्रिवेदी, कुलपति राजेन्द्र कृषि वि०वि० समस्तीपुर बिहार।

५-बी०ए० केहरजो, महालेखाकार, आडिट-१ उ०प्र० इलाहाबाद।

६-पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भू०पू० परिदृष्टा, गु०का० वि० वि० हरिद्वार।

७-श्री सुरेन्द्र लाल, क्यूरेटर ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी लन्दन।

इसके अतिरिक्त अक्टूबर मास में श्री आर० एस० चितकारा भूतपूर्व निदेशक यूनिवर्सिटीज की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिव्यू कमेटी के सदस्यों ने भी संग्रहालय का निरीक्षण किया। प्रायः सभी महानुभावों ने संग्रहालय संकलन एवं भावी विकास के प्रति अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये। सामान्यतः संग्रहालय दर्शकों के लिये प्रातः १० बजे से सायं ४-३० तक खुला रहता है। ग्रीष्मकाल में दर्शकों को सुविधा हेतु कुछ अवधि के लिये संग्रहालय का समय विश्वविद्यालय कार्यालय के अनुरूप प्रातः ७ बजे से दोपहर १ बजे तक किया जाता है।

वर्तमान में संग्रहालय के विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं :-

१-डा० जबरसिंह सेंगर	निदेशक
२-श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
३-डा० सुखबीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
४-श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ	संग्रहालय सहायक
५-श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
६-श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
७-श्री ओमप्रकाश	भृत्य
८-श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार
७-श्री गुरुप्रसाद	माली
१०-श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के अधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य इस प्रकार हैं

निदेशक

आल इण्डिया म्यूजियम कॉंफ्रेंस गोहाटी के अधिवेशन में दिनाँक २६ से २६ दिसम्बर १६८८ में भाग लिया। न्यू म्यूजियोलोजी की गोष्ठी में अपने विचार भी व्यक्त किये।

२- प्राचीन भारत की मुद्रायें नामक लेख प्रह्लाद पत्रिका के सितम्बर १६८८ के अंक में प्रकाशित हुआ।

३- म्यूजियम्स आउट रीच प्रोग्राम नामक लेख आंग्ल भाषा में वैदिक पाथ जर्नल के अंक सितम्बर से दिसम्बर १६८८ में प्रकाशित हुआ।

४- युगों-युगों में नारी—प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

५- छात्रों को मास मार्च १६८६ में प्राचीन मोनूमेंट्स, खुदाई स्थल आदि प्राचीन स्थलों का दृश्यावलोकन अध्ययन की दृष्टि से कराने गये।

क्यूरेटर :- (संगोष्ठियाँ)

१- सितम्बर १६८८ में राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली एवं मैक्समूलर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार "दि इण्डस वैली सिविलाइजेशन" में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। इस संगोष्ठी में राष्ट्र के लगभग ३५ सिन्धु-संस्कृति के विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था।

२- विश्वभारती विश्वविद्यालय शान्ति निकेतन के तत्वावधान में सम्पन्न इण्डियन आर्कियोलॉजीकल सोसायटी एवं इण्डियन सोसायटी फार प्री-हिस्टोरिक एवं क्वार्टरली स्टडी की वार्षिक बैठक एवं आयोजित संगोष्ठी में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

इस संगोष्ठी में निम्नलिखित लेख प्रस्तुत किये :-

अ- Some more Copper objects from Sheorajpur

ब- Number

फरवरी १६८८ में बिहार पुराविद् परिषद पटना के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "आर्कियोलॉजी आफ ईस्टर्न इण्डिया" में आमन्त्रित विद्वान के रूप में विश्वविद्यालय की ओर से भाग लिया। संगोष्ठी में निम्न-लिखित लेख प्रस्तुत किया।

Sringewerepur : A Meeting Place of East and West.

लेखन एवं प्रकाशन

१- झेलेम के आँचल में :—श्री सोमनाथ मरवाहा के संस्मरण गुरुकुल पत्रिका अंक जून-अगस्त १९८८, पृष्ठ ११-२०

२- सिन्धु सभ्यता में स्थानीय स्वशासन को अवधारणा, गुरुकुल पत्रिका शोध पत्र संकलन विशेषांक, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर १९८८, पृष्ठ ८२से ८७।

३- ए नोट आन द सोल एण्ड सीलिंग फ्राम भारद्वाज आश्रम, वैदिक पाथ ग्रन्थ ५२, अंक १ मार्च १९८९

४- दैनिक जनसत्ता नई दिल्ली के रविवारीय परिशिष्ट हेतु "हरिद्वार: ऐतिहासिक एवं पुरातत्व परिप्रेक्ष्य" नामक लेख आमन्त्रण पर लिख कर प्रेषित किया।

प्रकाशन

क्लासीकल राईटिंग आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर, स्वामी श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार १९८८।

सहायक क्यूरेटर

निदेशक के आदेशों का कार्यपालन करते हुये संग्रहालय में नियोजन हेतु निम्नलिखित कार्य किये :-

१- मुद्रा कक्ष के सिक्कों का कालानुसार वर्गीकरण करके दर्शकों की सुविधानुसार दर्शक पटल में नियोजित किये।

२- पाषाण प्रतिमा कक्ष में भी कालानुसार वर्गीकरण करके दर्शकों की सुविधा के लिये काष्ठ आधारों पर मूर्तियों का पुनर्नियोजन किया।

३- श्रद्धानन्द कक्ष के पुनर्नियोजन में सक्रिय योगदान दिया।

४- संग्रहालय में संग्रहीत लगभग ३०० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त अनुदान राशि का उपयोग कर एक काष्ठ एवं १० स्टील फ्यूमीगेशन चेम्बर बनवाने का कार्य सम्पन्न करवाया। साथ ही हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की सुरक्षार्थ कैमिकल्स आवश्यकतानुसार क्रय किये गये।

"पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी में संग्रहीत मृण्मूर्तियाँ एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन" नामक शोध कार्य पर विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

मुख्यमन्त्री द्वारा प्राप्त १ लाख की धनराशि से पेंटिंग गैलरी के शोकेसज बनवाने में तकनीकी सहायता एवं देख-रेख आदि कार्य सम्पन्न करायें। माउन्टिंग कार्य हेतु वे प्रयत्नशील हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय सहायक के साथ स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष में वर्गीकरण के अनुसार छायाचित्रों को लगवाकर तकनीकी निर्देशन कर नया रूप दिया गया। वेद संग्रहालय के शोकेसेज बनवाने में भी तकनीकी सहायता देकर वहाँ के शोकेसेज भी बनवाये। इसी प्रकार पुस्तकालय में वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की अनुक्रमणिका तैयार कराने में प्रमुख योगदान रहा, जो विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

संग्रहालय सहायक

संग्रहालय सहायक ने इस वर्ष संग्रहालय में निम्न कार्य किये :-

१- स्वामी श्रद्धानन्द वीथिका के लिये क्रय किये गये छाया-चित्र एवं संकलित छायाचित्रों का कालानुक्रम वर्गीकरण करके वीथिका पुनर्नियोजन का काय किया।

२- प्लास्टर कास्ट वीथिका का कालानुक्रम के अनुसार नियोजित किया।

३- राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली द्वारा २० माह शार्ट टर्म इन सर्विस ट्रेनिंग आफ म्यूजियालोजी का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र बी ग्रेड में प्राप्त किया।

आर्कियोलोजी आफ भावनगर, डिस्ट्रिक्ट गुजरात स्टेट, लगभग १५वीं शताब्दी से ई.पू. पूर्व शताब्दी तक ईस्वी सन् के प्रारम्भ तक विषय पर एम०एस० विश्वविद्यालय बड़ौदा से पी-एच०डी० की डिग्री प्राप्त की।

लेख

श्रद्धानन्द वीथिका, प्रह्लाद, अंक सितम्बर १९८८ में पृष्ठ ६०-६१ पर प्रकाशित हुआ।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रो०एवं अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, डा० श्यामनारायण सिंह, डा० कश्मीरसिंह एवं डा० राकेश शर्मा ने भी समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देशन देकर संग्रहालय को विकास की ओर अग्रसर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संग्रहालय लिपिक एवं अन्य सहयोगियों द्वारा दर्शकों की सुविधा के लिये विभिन्न वीथिकाओं में प्रकाश एवं हवा के लिये पंखों के लगवाने का कार्य अन्य

प्रभारियों के सहयोग से किया। संग्रहालय की साफ-सफाई में तथा दर्शकों को मार्गदर्शन कर सुविधा देने में संग्रहालय के सभो चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का कार्य विशेषरूप से सराहनीय रहा। संग्रहालय भवन के आस-पास के क्षेत्र में पर्यावरण को ध्यान में रखते हुये माली द्वारा विशेषरूप से पुष्पों एवं सदाबहार वृक्षों से संग्रहालय परिसर सुसज्जित किया गया। यदि अनुदान की राशि बढ़ा दी जाये, तो प्रकाश, सौन्दर्यीकरण आदि कार्यों को कराकर संग्रहालय के स्वरूप में निखार लाया जा सकता है।

डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक

———

अंग्रेजी विभाग

अंग्रेजी विभाग इस वर्ष उत्तरोतर प्रगति पर रहा। विभग में अनेक छात्र अधुसन्धान कर रहे हैं। इस वर्ष भी नए छात्रों का पंजीकरण हुआ। विभाग में एम० ए० के छात्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई। विभाग Certificate Course in English भी चला रहा है।

विभाग में इस वर्ष पंजाब यूनिर्वासिटी चण्डीगढ़ की अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर तथा भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती निर्मला मुखर्जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने-"ए पैसेज मोर दैन टू इण्डिया" नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

विभाग में निम्नलिखित आचार्य काम कर रहे हैं।

१) डा० आर० एल० वार्ष्णेय—एम० ए०, पी-एच० डी०, पी० जी० सी० टी०, डिप० टी०।

—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२) श्री एस० एस० भगत - एम० ए०

—रीडर

३) डा० नारायण शर्मा—एम० ए, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०

—रीडर

४) डा० श्रवणकुमार—एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०

— प्रवक्ता

५) डा० अम्बुजकुमार शर्मा—एम० ए०, एम० फिल, पी-एच० डी०

— प्रवक्ता

डा० आर० एल० वार्ष्णेय ने वैदिक पाथ का सम्पादन किया। उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए। इस वर्ष उनकी दो पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

डा० वार्ष्णेय ने बी० एस० एम० कालेज रुड़की में "Tagore" तथा

"Renaissance" पर व्याख्यान दिये तथा E. M. B. BHEL के तत्वावधान में त्रिदिवसीय English Teachers की Workshop का संचालन किया। यह वर्कशाप English Language Teaching पर थी।

डा० नारायण शर्मा ने वर्ष में निम्नलिखित कार्य किए—

(i) अपने पद से सम्बन्धित सभी कर्त्तव्य।

(ii) नवम्बर १९८८ में मेरठ विश्वविद्यालय में टालस्टाय पर एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए एवं उसमें एक रिसर्च पेपर पढ़ा।

(iii) मार्च १९८९ में बी० एस० एम० कालेज रुड़की में एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए एवं उसमें एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया व पढ़ा।

(iv) अप्रैल १९८९ में रुड़की विश्वविद्यालय में एक सेमिनार में आमन्त्रित हुए। उसमें भाग लेकर एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया और पढ़ा।

(v) फरवरी १९८९ में नई दिल्ली में साहित्य एकाडमी का वार्षिकोत्सव हुआ "फैस्टिवल आफ लैटर्ज" के नाम से। इन्हें इसमें आमन्त्रित किया गया। छुट्टी सम्बन्धित समस्या उत्पन्न होने से वहाँ नहीं जा सके।

(vi) इसके अतिरिक्त प्रकाशन हेतु दो रिसर्च पेपर्स पर काम किया जा रहा है।

डा० श्रवणकुमार शर्मा ने निम्नलिखित कार्य किए—

(i) मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'लियो टालस्टाय' पर हुई गोष्ठी (नवम्बर १९-२०,१९८८) में भाग लिया तथा एक शोधपत्र "Tolstoy's Quest for Spiritual Perfection" पढ़ा जो प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया।

(ii) बी० एस० एम० कालिज रुड़की द्वारा आयोजित 'Twentieth Century Literature' पर हुई गोष्ठी (मार्च-१२, ८९) में भाग लिया तथा एक शोध-पत्र 'The Vedic Sagacity in Wasteland' पढ़ा जो 'गुरुकुल पत्रिका' में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है।

(iii) रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी "Nature, Technology and Society Kanada". (April 3, 4, 5, 1989) में भाग लिया तथा एक शोध-पत्र 'Archibald Lampman's Treatment of Nature' पढ़ा।

(iv) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० द्वारा आयोजित 'महाभाष्यकार पातञ्जलि' पर हुई गोष्ठी में भाग लिया।

(v) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० के "वैदिक पाथ" जून अंक में एक शोध-पत्र 'The Rig. Vedic Echo in Aurobindo's Savitri' प्रकाशित हुआ।

(vi) गुरुकुल काँगड़ी वि० वि० के "वैदिक पाथ" में एक शोध-पत्र "Huxley's Theme of Non-attachment & Srimad Bhagavadgita" प्रकाशित हुआ।

(vii) गुरुकुल काँगडो वि० वि० की गुरुकुल पत्रिका जून, जुलाई, अगस्त अंक में एक शोधपत्र " Social Realism in Kamala Markandaya' प्रकाशित हुआ।

(viii) M. D. Univ. Research Journal of Arts में एक शोधपत्र Tagore's Adolescent Mind अप्रैल अंक में प्रकाशित हुआ।

(ix) गु० का० वि० वि० के वैदिक पाथ March अंक में एक शोध पत्र "The Bhagvadgita & Matthew Arnold" प्रकाशित हुआ।

(x) पंजाब वि० वि० के रिसर्च बुलेटिन में एक शोध पत्र 'Hegelian Dialectic in Arnold's Elegies' स्वीकार किया गया है।

(xi) गु० कां० वि० वि० की गुरुकुल पत्रिका में एक शोध पत्र "The Vedic Sagacity in the Wasteland" प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है।

(xii) गु० कां० वि० वि० के वैदिक पाथ में चार Book-Review प्रकाशित हुए।

(i) Influence of Bhagavadgita on Literature written in English, edi. by T. R. Sharma.

(ii) Images of India in World Literature, ed. by.
-Rita Sil

(iii) Indo-English literature by Prof. R. L. Varshney.

(iv) Savitri. by R. K. Singh

अन्य विभागीय बन्धु अपने विभागीय कर्त्तव्यों को पूरा करते रहे हैं तथा वैचारिक गोष्ठियों एवं सेमिनारों में भाग लेते रहे। डा० अम्बुजकुमार शर्मा का एक पेपर "Relevance of the Vedas in Modern Times" वैदिक पाथ में छपा। श्री सदाशिव भगत का एक लेख Sri Aurobindo पर वैदिक पाथ के मार्च १९८९ में अंक में प्रकाशित हुआ।

—प्रो० आर० एल० वार्ष्णेय
विभागाध्यक्ष

———

हिन्दी विभाग

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का यह सौभाग्य है कि इसके स्थापना-काल में शाहपुरा हिन्दी पीठ पर तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा प्रतिष्ठित हुए। हिन्दी व्याकरण दर्शन के उद्भावक और प्रख्यात भाषाशास्त्री आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने भी कुछ समय तक यहाँ अध्यापन कार्य किया। विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने पर गुरुकुल में तुलसी साहित्य के विशेषज्ञ डा० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। उनके सहयोगियों में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान तथा शैली विज्ञान के विशेषज्ञ डा० सुरेशकुमार विद्यालंकार (सम्प्रति प्रोफेसर केन्द्रीय हिन्दी सस्थान, आगरा) तथा मध्यकालीन साहित्य और साहित्यशास्त्र के विशेषज्ञ डा० विष्णुदत्त राकेश ने विभाग की उन्नति में रचनात्मक सहयोग दिया। सम्प्रति डा० विष्णुदत्त राकेश विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य एव अध्यक्ष हैं। गुरुकुल के हिन्दी विद्यार्थी भारत के उच्च शिक्षणालयों में उच्च-स्तरीय हिन्दी अध्यापन तथा शोध का कार्य करा रहे हैं। हिन्दी विभाग को शोध के क्षेत्र में भी विशेष उपलब्धियाँ हैं। हिन्दी प्रचार-प्रसार, साहित्य सृजन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में आर्य समाज और गुरुकुल काँगड़ी के अवदान का शोधस्तरीय मूल्यांकन का कार्य भी विभाग में प्रारम्भ हुआ है। शोध सारावली में उपाधिप्राप्त प्रबन्धों का सारांश छप चुका है तथा कुछ शोध ग्रंथ भी विभिन्न प्रकाशन प्रतिष्ठानों से प्रकाशित हुए हैं।

विभाग के प्राध्यापक :

(१)	डा० विष्णुदत्त राकेश	एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्० साहित्यवाचस्पति, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
(२)	रीडर	रिक्त
(३)	डा० ज्ञानचन्द्र रावल	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
(४)	डा० भगवानदेव पाण्डेय	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
(५)	डा० संतराम वैश्य	एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

इस वर्ष नियमित अध्यापन तथा अनुसन्धान कार्य के अतिरिक्त विभाग

के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दी प्रचार तथा लेखनकाय में रुचि ली। फीजी से हिन्दी अध्ययनार्थ आए छात्र नेतराम शर्मा की पुस्तक 'हिन्दी प्रदीप' का फीजी में विमोचन हुआ। वहाँ के हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए श्रीयुत शर्मा ने यह पुस्तक हिन्दी विभाग के सहयोग से तैयार की है। अहिन्दी-भाषी क्षेत्र वारंगल से आए छात्र बशीर अहमद ने हिन्दी प्रचार का कार्य किया। हिन्दी विभाग के प्राध्यापकों ने इस दिशा में सफल मार्गदर्शन किया।

सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य तथा लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पुष्पा बसल तथा हिन्दी के प्रख्यात कवि और आधुनिक साहित्य के विशेषज्ञ डा० बल्देव बंशी के विशेष व्याख्यानों का आयोजन हिन्दी विभाग में हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी कविता, आधुनिक कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ तथा मेरी रचना प्रक्रिया पर क्रमशः उक्त तीनों महानुभावों ने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० त्रिभुवनसिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित तथा पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के हिन्दी रीडर डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा विश्व-विद्यालय में शोध समिति की बैठक तथा परीक्षाकार्य के सिलसिले में पधारे। विद्यार्थियों ने शोधसम्बन्धी समस्याओं पर इन विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शैक्षणिक दृष्टि से विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश का कार्य उल्लेखनीय है। भारतीय विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों के सुप्रसिद्ध संगठन 'भारतीय हिन्दी परिषद्' के लखनऊ अधिवेशन में निर्वाचित कार्यकारिणी के डा० राकेश सदस्य चुने गए। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार की पाठ्यक्रम पर आधारित कोश निर्माण सम्बन्धी बैठक में परामर्श-दाता के रूप में भाग लिया। आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्रसिद्ध शोध केन्द्र वृन्दावन शोध संस्थान में 'मधुरोपासना के स्रोत' विषय पर व्याख्यान दिया। आर० सी० ए० बालिका महाविद्यालय मथुरा में अनुदान आयोग की फेलोशिप योजना के अन्तर्गत तंत्र वाङ्मय से सम्बद्ध संगोष्ठी का उद्घाटन-भाषण दिया। बी० एस० एम० स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की में आयोजित जयशंकर प्रसाद जन्मशती समारोह का उद्घाटन किया तथा 'प्रसाद की इतिहास और आलोचना दृष्टि' पर व्याख्यान दिया। गुरुकुल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर आयोजित शिक्षा सम्मेलन का संचालन-संयोजन किया। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह तथा उद्घाटन डा० धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। प्रह्लाद पत्रिका के शिक्षा विशेषाङ्क का

सम्पादन किया। 'भारतीय अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना के आधार जगद्गुरु श्री आद्यशंकराचार्य' शीर्षक शोधग्रंथ का सम्पादन किया। उत्तर और दक्षिण भारत के शीर्षस्थ विद्वानों के शोध लेखों से संवलित इस ग्रन्थ का विमोचन इलाहाबाद कुंभ के अवसर पर विराट् सम्मेलन में हुआ। ग्रंथ के सम्पादन के लिए इस अवसर पर जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी लोकेशानन्द जी गिरि ने डा० राकेश को उत्तरीय प्रदान कर उनका भावभीना अभिनन्दन किया। चारों वेदों के चुने हुए सौ वेद मंत्रों का 'वेद प्रभा निर्झर' नाम से पद्यानुवाद किया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित उ० प्र० नागरिक परिषद् लखनऊ की जिला शाखा हरिद्वार की समिति में सदस्य मनोनीत हुए। इसके अतिरिक्त शोध पत्रिकाओं और साहित्यिक ग्रन्थों में शोध लेख प्रकाशित हुए। अब तक आपके १४ उत्कृष्ट आलोचना ग्रन्थ और लगभग १०० शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं। स्वामी श्रद्धानंद अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र के निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय की आप सराहनीय सेवा कर

विभाग के प्राध्यापक डा० भगवानदेव पाण्डेय के निर्देशन में शोधार्थी अशोककुमार शर्मा को उनके शोध प्रबन्ध 'दिनकर साहित्य के प्रेरक एवं प्रभावक तत्व' पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई। अन्य प्राध्यापक डा० संतराम वैश्य ने प्रह्लाद के लिए पुस्तक समीक्षा लिखी। विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया के सिम्पोजियम तथा संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 'महाभाष्यकार पतञ्जलि संगोष्ठी" के आयोजन और व्यवस्था में सक्रिय भाग लिया। कु० अपर्णा पालीवाल ने डा० वैश्य के निर्देशन में 'विष्णु प्रभाकर का निबन्ध साहित्य' विषय पर अपना लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। डा० ज्ञानचन्द्र रावल ने अध्यापन कार्य सुचारू रूप से सम्पादित किया।

— **डा० विष्णुदत्त राकेश**
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् जौलाई १९८८ को नये सत्र के लिये खुला। इस वर्ष बी.एस-सी. प्रथम वर्ष में छात्रों का प्रवेश साक्षात्कार के द्वारा किया गया।

कालेज में इस समय कुशल शिक्षक महानुभाव कार्यरत हैं तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारी भी कार्यरत हैं। कालेज में इस समय छात्रों की संख्या निम्न है -

	कक्षा	ग्रुप	संख्या	विशेष
१-	बी०एस-सी० (प्रथम वर्ष)	गणित	७२	सन् १९८८-८९ में विज्ञान
२-	—,,—	बायो	३०	महाविद्यालय में
३-	—,,—	कम्प्यूटर	२०	छात्रों की संख्या
४-	पी०जी०डिप्लोमा Chemistry	Chemistry	१०	२५० थी।
५-	एम०एस-सी० प्रथम वर्ष-गणित	गणित	१८	
६-	पी०जी०डिप्लोमा	कम्प्यूटर	२०	
७-	बी०एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	गणित	३७	
८-	—,,—	बायो	१६	
९-	एम०एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	गणित	३	
१०-	एम०एस-सी० I,II,IV(Semester)	Micro Biology	२४	

—प्रो० एस० सी० त्यागी
प्रिंसीपल

गणित विभाग

१. शिक्षक

एस. सी. त्यागी
एस. एल. सिंह
बी. पी. सिंह
विजयेन्द्र कुमार
एम. पी. सिंह
एच. एल. गुलाटी
यू. सी. गैरोला*

*डा० वीरेन्द्र अरोड़ा के कुलसचिव पद पर होने से अवकाशरिक्ति में तदर्थ नियुक्ति।

२. छात्र संख्या

२.१	बी० एस-सी०	भाग एक	—	७२
		भाग दो	—	३५
२.२	एम० एस-सी०	पूर्वार्द्ध	—	१८
		उत्तरार्द्ध	—	०३

२.३ विद्यालंकार भाग एक व दो में संप्रति कोई छात्र नहीं है।

२.४ शोध छात्रों की संख्या — ०४

शोध छात्रों के स्वीकृत विषय

२.४.१ रेखा मेंहदीरत्ता : Fixed Point Theorems in Probabilistics Analysis and Uniform Spaces (वर्ष १९८८-८९ से)

२.४.२ उमेशचन्द्र गैरोला : दूरीक एवं बनाख समष्टियों में संपात, स्थिर एवं संकर स्थिर बिंदुओं का अस्तित्व (वर्ष १९८७-८८ से)

२.४.३ रमेशचंद : A Study of Sidhanta Siromani (वर्ष १९८६-८७ से)

२.४.४ देवेन्द्र दत्त : २-दूरीक, २- बनाख एवं सांस्थितिकत : सदिश समष्टियों में अमूर्त संपात तथा स्थिर बिंदु समीकरणों के साधन का अस्तित्व।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश वरीयता क्रम से दिये जाते हैं तथा शोध हेतु उपयुक्त एवं परिश्रमी छात्रों को ही लिया जाता है।

२.५ उक्त चार शोध छात्रों के अतिरिक्त डा० एस० एल० सिंह के निर्देशन में अन्य दो प्राध्यापक (श्री वी. कुमार एवं आर. सी. अजीज) गढ़वाल वि वि. की डि. फिल. (गणित) उपाधि हेतु पहिले से कायरत हैं।

३. शोध प्रबन्ध

विभाग के श्री एच. एल. गुलाटो ने विषय "Some Problems on Queueing and Sequencing Theory" पर गढ़वाल वि.वि. (श्रीनगर) की शोध उपाधि (डी. फिल. -गणित) हेतु अपना शोध प्रबंध दो निर्देशकों के अतर्गत जमा किया, जिनमें एक निर्देशक डा. एस. एल. सिंह हैं।

४ शोध प्रपत्र

४.१ बनारस मैथेमेटिकल सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन (१९८८) हेतु विभाग के डा. एस. एल. सिंह, सर्वश्री एच. एल. गुलाटी एवं यू. सी. गैरोला के शोध प्रपत्र स्वीकार किये गये।

४.२ उ. प्र. राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसाइटी के पाँचवे अधिवेशन (कोटद्वार) में विभाग के डा. एस. एल. सिंह एवं श्री वी. कुमार ने क्रमश: सोसाइटी के उपाध्यक्ष एवं सदस्य के रूप में भाग लिया, जहाँ इन लोगों ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये वहीं "संस्कृत व्याकरण, विज्ञान एवं वैदिक गणित" विषय से संबंधित डा० सिंह का एक रेडियो वार्ता भी नजीबाबाद आकाशवाणी ने नवम्बर २२, १९८८ को प्रसारित की। यह वार्ता सोसाइटी के अधिवेशन अवधि में रेकार्ड की गई थी।

५. विभाग के शोध छात्रों - श्री उमेशचन्द्र गैरोला एवं देवेन्द्रदत्त ने दो Instructional Workshop में क्रमश: टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई एवं कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरुक्षेत्र में भाग लिया। विभाग के प्राध्यापक श्री विजयेन्द्र कुमार ने विगत ग्रीष्म में दिल्ली में कम्प्यूटर संबंधी एक लघु प्रशिक्षण प्राप्त किया।

६. शोध पत्रिका का प्रकाशन - प्रो. एस.सी. त्यागी के निर्देशन में मुख्य संपादक डा. एस.एल. सिंह द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान शोध पत्रिका "प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध पत्रिका-Journal of Natural and Physical Sciences" का प्रकाशन किया जा रहा है। इसका प्रवेशांक (१९८७) मार्च १९८८ में प्रकाशित हुआ था। लेखों की अधिक संख्या

होने आदि कारणों से वर्ष १९८८ (खण्ड २) एवं १९८९ का प्रथम अंक प्रकाशनाधीन है।

७. उक्त शोध पत्रिका (Journal of Natural and Physical Sciences) के विनिमय में विभिन्न देशों से निम्न शोध पत्रिकाएँ प्राप्त हो रही हैं

i) Review of Research, Faculty of Science, Mathematics Series (Novi Sad, Yugoslavia)

ii) Punime Matematike (Prishtine, Yugoslavia)

iii) Facta Universitatis (Series : Mathematics and Informatics) (Nis, Yugoslavia)

iv) The Punjab University Journal of Mathematics (Lahore, Pakistan)

v)* Acta Math. Vietnamica (Vietnam)

vi) Journal of Mathematical and Physical Sciences (I. I. T. Madras)

vii) Bulletin of the Calcutta Mathematical Society (Calcutta)

viii) Journal of the Indian Institute of Science (Bangalore)

ix) Proceedings of the Mathematical Society

x) Indian Journal of Physical and Natural Sciences

xi)*Arunachal Forest News (Bhalkpong)

xii)*Demonstratio Mathematica (Warszawa, Poland)

विशेष - एक सामान्य अनुमान के अनुसार इन शोध पत्रिकाओं से विभाग को लगभग रुपये बारह हजार एवं देश की लगभग दस हजार रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है। तारांकित एवं अन्य वि०विद्यालयों/संस्थाओं के प्रकाशन विनिमय में प्राप्त होंगे।

विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया का प्रथम वार्षिक अधिवेशन एवं सिंपोजिया

गणित विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर का उक्त अधिवेशन (१०-११ मार्च १९८९) एवं निम्न दो सिंपोजियम आयोजित किये गये :

i) Vedic Mathematics, Traditions and Applications

ii) Applications of Mathematics to Modern Science and Technology

अधिवेशन एवं सिंपोजियम का उद्घाटन दिनांक १० मार्च को प्रातः ६ बजे हवन से आरम्भ किया गया। उद्घाटन भाषण, मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार ने(कुलपति के रूप में)दिया। अतिथियों का स्वागत करते हुए विज्ञान महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रोफेसर एस० सी० त्यागी ने कुमायूँ-गढ़वाल-हरिद्वार परिक्षेत्र में पहिली अखिल भारतीय स्तर की किसी विज्ञान सोसाइटी के अधिवेशन के आयोजन को विश्वविद्यालय एवं विज्ञान महाविद्यालय की बड़ी उपलब्धि से इस सम्मेलन को जोड़ा। कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने इस आयोजन को वि० वि० के लिए गौरव की बात कहा। इस अधिवेशन के स्थानीय सचिव डा० एस० एल० सिंह एवं उनके सहयोगियों के अथक प्रयास के लिए विज्ञान परिषद् के अध्यक्ष प्रो० जे०एन० कपूर एवं अन्य ज्येष्ठ प्रतिभागियों ने वि० वि० के अधिकारियों एवं आयोजकों को धन्यवाद देते हुए इस अधिवेशन एवं सिंपोजिया को सफलतम बताया। उक्त अधिवेशन के अवसर पर एक सोवीनिर भी प्रकाशित किया गया जिसमें निम्न विषयसामग्री भी सम्मिलित है -

i) विश्वविद्यालयों के संबंध में जवाहरलाल नेहरू का एक कथन
ii) 'स्वागताध्यक्ष को ओर से" (द्वारा श्री आर० सी० शर्मा)
iii) "A good beginning" (द्वारा डा० वीरेन्द्र अरोड़ा)
iv) "गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार—एक दिग्दर्शन" (द्वारा आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार)
v) "विज्ञान महाविद्यालय" (द्वारा प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी)
vi) "A Letter" (from H. N. Ramaswamy)
vii) "Vedic Insight" (Due to Subhash Kak of U.S.A.)
viii) "Mathematics—A Vital Subject" (by Narinder Puri of Roorkee)
ix) "Mathematics in Vedas" (by R. P. Sehgal)

उक्त विज्ञान सम्मेलन एवं सिंपोजिया में लगभग पाँच दर्जन शोध प्रपत्र प्रस्तुत किये गये तथा दो दर्जन आमंत्रित भाषण हुए। देश के दूर-दराज के स्थानों, जैसे—चंपारण, कलकत्ता, मद्रास, मगध, इंदौर, भोपाल, झाँसी, बाँदा, वाराणसी, गोरखपुर, रीवाँ, टीकमगढ़ आदि स्थानों से आये प्रतिनिधियों ने शैक्षणिक सत्रों में मनोयोग से भाग लिया।

जामिया मिलिया वि० वि०, दिल्ली की ज्येष्ठ गणित विज्ञानी प्रोफेसर अरुणा कपूर ने एक वक्तव्य में कहा है कि वैदिक गणित से संबंधित ऐसी गोष्ठी वर्ष में दो-तीन बार आयोजित की जानी चाहिए।

दिनांक ११ मार्च को सायं ६ बजे के बाद समापन समारोह हुआ तथा अगले दिन १२ मार्च को प्रतिभागियों को हरिद्वार-ऋषिकेश के विभिन्न आध्यात्मिक एवं दर्शनीय स्थलों का दर्शन कराया गया। प्रतिभागियों के सम्मान में श्री जयराम आश्रम, हरिद्वार एवं लायंस क्लब ऋषिकेश द्वारा दिये गये रात्रि एवं दोपहर भोजों के लिए आयोजकों ने श्री ब्रह्मस्वरूप व लायन ओमप्रकाश टूटेजा (अध्यक्ष, लायन्स क्लब) के प्रति साधुवाद ज्ञापित किया।

—प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी

अध्यक्ष

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। एक प्रवक्ता की स्वीकृति यू० जी० सी० ने और दे दी है। इस समय दो प्रयोगशाला बी० एस-सी० प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष कमरा, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ठ हैं। बी० एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी बी० एस-सी० प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के सभी उपकरण विद्यमान हैं। तृतीय वर्ष के लिए रु० ३०,०००/-के उपकरण खरीदे गये हैं। बी० एस-सी० के लिए अधिकतर पुस्तकें यू० जी० सी० Dev. grant से खरीदी गई हैं। विभाग में एक Colour T. V. भी विद्यमान है जो कि B. Sc. के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को U. G. C. के प्रोग्राम दिखाने के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो रहा है।

भावी योजना—

(१) भौतिकी विभाग में Post graduate कक्षाएँ चालू करना।

(२) भौतिक विज्ञान विभाग में Research Programme शुरु करना।

(३) बी० एस-सी० तृतीय वर्ष के लिए Project Workshop एवं प्रयोगशाला स्थापित करना।

स्टाफ :—

(१)	प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर	अध्यक्ष
(२)	प्रो० बी० पी० शुक्ल	रीडर
(३)	डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल	प्रवक्ता
(४)	डा० परमानन्द प्रकाश पाठक	प्रवक्ता
(५)	रिक्त	प्रवक्ता
(६)	श्री प्रमोदकुमार शर्मा	प्रयोगशाला सहायक
(७)	श्री ठकुरासिंह	लैब ब्याय
(८)	रिक्त	लैब ब्याय

सन् १९८८-८९ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में ११२ तथा द्वितीय वर्ष में ३५ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम—

(A) बी० एस-सी० प्रथम खण्ड

(1) Mathematical Physics.

(2) Classical and Relativity Mechanics.

(3) Vibration & Optics.

(B) बी० एस-सी० द्वितीय खण्ड

(1) Thermodynamics & Statistical Physics.

(2) Electricity & Magnetism.

(3) Atomic Physics & Quantum Mechanics.

(C) बी० एस-सी० तृतीय खण्ड

(1) Physics of Materials/Environmental Physics.

(2) Nuclear Physics.

(3) Electronics.

B. Sc. तृतीय वर्ष में Project Work पूर्ण रूप से व्यवहारिक होगा। विद्यार्थियों के लिए आधुनिक इलेक्ट्रोनिक यंत्रों को सीखने का अवसर मिलेगा।

शिक्षक छात्र का अनुपात

१:३७

इस वर्ष T. D. Course की B.Sc की द्वितीय वर्ष की कक्षाएँ नये कोर्स के अनुसार चालू कर दी गई हैं।

शिक्षकों की Research गतिविधियां—

विभाग के सभी अध्यापक Research के कार्य में व्यस्त हैं। प्रो० बुद्ध प्रकाश शुक्ल ने इस वर्ष अपनी Ph.D का Viva-voce कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

में दे दिया है। प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर भी अपने Research के कार्य में व्यस्त हैं। डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल ने भी इस वर्ष सह-परीक्षाध्यक्ष का कार्य सुचारू रूप से किया तथा डा० परमानन्द प्रकाश भी U. G. C. द्वारा Organised Summer School में व्यस्त हैं।

परीक्षा परिणाम –

पिछले वर्षों की भाँति १९८७–८८ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

–हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायन विज्ञान विभाग

विभाग में पी० जी० डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों की, पहले की भाँति, विभिन्न संस्थानों व उद्योगों में अच्छे पदों पर नियुक्ति हुई। विभाग में निम्नलिखित शोध प्रोजेक्ट चल रहे हैं।

(१) यू० जी० सी मेजर विज्ञान प्रोजेक्ट "हायर वेलेन्ट सिल्वर—प्रीपेरेशन व स्टेबिलिटी", **डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण**।

(२) C. S. I. R. मेजर विज्ञान प्रोजेक्ट "सिन्थेसिस स्पेक्ट्रल एन्ड इलेक्ट्रो-केमिकल स्टडीज ऑफ सम मेक्रोसाइक्लिस ऑफ बायोलोजिकल एन्ड इन्डस्ट्रियल इम्पोर्टेन्स", **डा० रणधीरसिंह**।

(३) यू० जी० सी० माइनर शोध प्रोजेक्ट "स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक आइडेंटिफिकेशन एन्ड डिटरमिनेशन ऑफ आर्गेनिक अमीनो कम्पाउन्ड्स ऑफ इम्पोर्टेन्स इन माइनर अमाउन्टस इन इन्डस्ट्रियल एफ्लुऐन्टस", **डा० रजनीशदत्त कौशिक**।

(४) यू०जी०सी० माइनर शोध प्रोजेक्ट "इलेक्ट्रो-केमिकल एन्ड स्पेक्ट्रल स्टडीज आफ सम एन सब्सटिटयूटेड मेक्रोसाइक्लिक काम्पलेक्सेस आफ ट्रान्जीशन मेटलस" **डा० रणधीरसिंह**।

विभागीय शिक्षकों ने निम्नलिखित कान्फ्रेन्सों में भाग लिया :—

(१) **डा० इन्द्रायण** ने जून १९८८ में कनाडा में हुए अन्तर्राष्ट्रीय "सिम्पोजियम आन एनवायरनमेन्टल पोल्यूशन" में भाग लिया।

(२) **डा० रणधीरसिंह** ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस (जनवरी १९८९) (मदुराई कामराज वि० वि०) तथा "इन्टरनेशनल कांफ्रेस आन पोल्यूशन मोनिटरींग टेक्निक" (एस० वी० यूनिवर्सिटी, तिरुपति) में भाग लिया व शोधपत्र प्रस्तुत किये।

(३) **डा० रजनीशदत्त कौशिक** व **डा० कौशलकुमार** ने इन्डियन कोन्सिल आफ केमिस्ट की VIII कान्फ्रेन्स में (एस० वी० यूनिवर्सिटी, तिरुपति-अक्तूबर १९८८) भाग लिया व शोधपत्र प्रस्तुत किये।

इसके अतिरिक्त **डा० रणधीरसिंह** का एक शोधपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल (पोलीहेड्रन) में प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुआ तथा उन्होंने दो अन्य शोधपत्र

प्रकाशनार्थ भेजे। **डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण** का हायर वेलेन्ट सिल्वर सम्बन्धित शोधपत्र अक्टूबर १९८८ में तिरुपति में हुई इन्डियन कौन्सिल आफ केमिस्ट की कान्फ्रेन्स में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

डा० कौशलकुमार ने विश्वविद्यालय सुन्दरीकरण का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला। **डा० इन्द्रायण** की रेडियो-वार्ता "रासायनिक युद्ध कर्मक" प्रसारित की गई। उन्हें विज्ञान विशेषज्ञ के रूप में परामर्श समिति में आल इन्डिया रेडियो नजीबाबाद ने मनोनीत किया।

इसके अतिरिक्त **डा० कौशलकुमार** व **डा० रजनीशदत्त कौशिक** पी० जी० छात्रों को व्यवसायिक ट्रेनिंग हेतु HCL जीन्द व HAU हिसार ले गये। **डा० रणधीरसिंह** व **डा० कौशिक** उन्हें इसी ट्रेनिंग हेतु NBSS लैब, दिल्ली ले गये।

डा० रजनीशदत्त कौशिक का एक शोधपत्र कनाडा में हुई "अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम आन एनवायरनमेंटल पोल्यूशन" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

डा० रणधीरसिंह का एक शोधपत्र "इन्टरनेशनल सिम्पोजियम आन मेक्रोसाइक्लिक केमिस्ट्री" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ जो जून १९८९ में आस्ट्रेलिया में होने जा रही है।

—डा० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

———

जन्तु विज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तु विज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

१. पी०एच-डी० प्रोग्राम के अन्तर्गत दो छात्रों ने डा० बी०डी० जोशी एवम् डा० दिनेश भट्ट के शोध निर्देशन में अपनी-अपनी सिनोप्सिस विश्वविद्यालय में जमा की।

२. माह अक्टूबर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष (जन्तु वि०वि०) द्वारा "टौक्सीकोलाजी" नामक विषय के ऊपर एक अत्यन्त रोचक एवम् ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया गया, जिसमें छात्र एवं प्राध्यापकों ने भाग लिया।

३. माह मार्च में एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, विषय था "बदलता पर्यावरण व जन्तु संरक्षण"। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री डा० वी० जी० झिंगरन द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रो० एस० सी० त्यागी, प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय ने की। इस गोष्ठी में भारतीय विश्वविद्यालयों के करीब ६० वैज्ञानिकों/प्राध्यापकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

४. प्रो० बी० डी० जोशी को XXXI International Congress of Physiological Sciences, Helsinki, Finland में Invited Lecture देने हेतु आमन्त्रित किया गया है, वे जुलाई १९८९ में इस कान्फ्रेन्स में भाग लेंगे।

विभागीय प्राध्यापकों के शोध एवं प्रसार कार्य :

प्रो० बी०डी० जोशी (विभागाध्यक्ष) : डा जोशी के उल्लेखनीय प्रकाशन इस प्रकार हैं :

1. Seasonal variations in blood glucose and cholesterol contens of **Gallus domesticus, Him. J. Env. Zool.**2, 1988
2. A comparative account of floral components of the forests of Malani river catchment area. **Him J. Env. Zool.** 2 : 146, 1988.

3. On the litter fall of different forest types in Malini river catchment Area **Him J. Env. Zool.** 2 149, 1988
4. Annual trend of Malaria in & around BHEL locality of Hardwar. **Him. J. Env. Zool** 1988, 2, 45
5. Major insect pest of Kanwa Valley (Kotdwara Pauri Garhwal). **Him. J. Env. Zool.** 1988, 2, 54.
6. On some physico-chemical properties of soil from different regions in relation to eucalyptization in Himalayan foothills **Him. J. Env. Zool.** 1988, 2, 58

लघुशोध प्रबन्ध :

प्रो० जोशी के निर्देशन में निम्न २ छात्रों ने निम्न विषयों पर शोधकार्य किया :

1, Virendra Chauhan : Lactic acid production from cellulose by L. casu.

2. Sushil Kumar : On the differential leucocyte and Platelet counts during a short course of treatment of Malaria patients.

जनरल आर्टिकल :

१. हिमालय के स्तनपोषी जन्तु, प्रह्लाद सित० १९८८.

२. इनवायरनमेंटल कोर्स कन्टेन्टस स्टे यूनिवर्सिटी लेवल कैरीकुलम Proc. I Conf Curr. Trends Zool. Teaching & Res. 1988. PP. 128.

३. इन्सेक्ट पेस्ट इन एग्रीकल्चर. आर्यभट्ट, 1983

व्याख्यान/कान्फ्रेंस/सेमिनार/एक्सटेंशन वर्क :

1. Annual Workshop : Himalayan Eco development Projects NEHU, Shillong, June 1988
2. Natl. Symp. Growth Development & Natural Resource Conservation, DAV College, Muzaffarnagar, Oct. 1988. (Delivered Invited Talk)
3. Second Natl. Symp. Fish & Their Environment, Kerala

Univ. Trivendrum, Nov. 1988. (Acted as a Chairman of a session & delivered talk)

4 Workshop on 'Himalayan Environment & Development Institutional & NGO participation." Pant Instt. of Himalayan Environment & Development" Almora, Jan. 1989.

5. "Education of moral values in our Industrial complex" BHEL, Hardwar, Nov. 1988

6. National Symp. "Annual Protection under changing Environment, Deptt. of Zoology, G.K.V. Hardwar (Acted as Director of the Symposia) & presented following Papers.

(i) Biochemical changes in ovary of C. batrachus during different ambient temperature.

(ii) On some haematological changes of the fish H. fossilis during the period of experimental wound healing

(iii) On some haematological values of a teleost fish H. fossilis following its transfer to higher altitude.

(iv) Some enzymological probes in kidney of lithium treated rats.

(v) Status of wildlife in Kotdwara forest area.

(vi) Correlation of climatic factors with male gonadosomatic index of a hill stream teleost, P. dukai.

दूरदर्शन/रेडियो वार्तायें/समाचारपत्र इन्टरव्यू :

(i) "सामाजिक वानिकी" कृषि दर्शन, दिल्ली दूरदर्शन जनवरी १६, १९८९.

(ii) "पढ़े-लिखे पर्वतीय लोग पहाड़ के विकास में कितने सहयोगी" आकाशवाणी नजीबाबाद

(iii) विभिन्न सरकारी योजनाओं का पर्वतीय क्षेत्र के विकास में योगदान, आकाशवाणी, नजीबाबाद

(iv) वार्ता समीक्षा : हिमालयन शोध योजना, आकाशवाणी

(v) राष्ट्रीय दैनिक The Hindu, 25-12-88 के "Meet the Person" कालम में इन्टरव्यू।

महत्वपूर्ण शैक्षणिक पदों के कार्यभार :

१. संकाय प्रमुख (Dean) स्टूडेन्ट वेल्फेयर, गु. का. वि. वि.

२. कल्चरल प्रतिनिधि गु. का. वि. वि. फार A.I.U. नई दिल्ली

३. मेम्बर, बोर्ड आफ पब्लिकेशन, गु. का. वि. वि. हरिद्वार

४. मेम्बर, स्पोर्टस काउन्सिल, गु. का. वि. वि. हरिद्वार

५. मेम्बर, आरगनाईजिंग कमेटी, N S.S. National Integration Camp गु. का. वि. वि. (Delivered an invited Talk)

६. प्रेजीडेन्ट "इन्डियन अकादमी आफ इनवायरनमेंटल साइन्सेस"

७. मुख्य संपादक "हिमालयन जरनल आफ इनवायरेनमेंट एन्ड जुलाजो"

८. मेम्बर आफ एडिटोरियल बोर्ड : (i) आर्यभट्ट (ii) बायोस्फयर
(iii) जरनल आफ जुलाजीकल रीसर्च,
(iv) जरनल आफ फिजीकल एन्ड नेचुरल साइन्सेस

९. संपादक : Abstracts & Souvenir "Natl. Symp. Animal Protection under Changing Environment"

शोध परियोजनायें

(i) Himalayan Eco-development Project की अन्तिम रिपोर्ट भारत सरकार को भेज दी है।

(ii) "Eco-biology of 'Bhagirathi River System" नामक नई शोध परियोजना (रु० ५.०७ लाख को) भारत सरकार के पर्यावरण विभाग से स्वीकृत हुई है।

डा० टी०आर० सेठ : डा० सेठ ने सभो विभागीय क्रिया-कलापों जैसे विभागीय क्रय, व्याख्यान, सेमीनार, परोक्षा) में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डा० ए०के० चोपड़ा (रीडर) : डा० चोपड़ा का प्रकाशन-कार्य निम्नवत है। इनके कई लेख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं।

1. Acid Phosphate Activity in B Taigno Cephalum (Nematode). Rivista Di Parasitologia Vol lll 225, 1986

2. On a new nematode of the genus Schulzia (Travassors 1937) (Family Tricostrongylidae) from Bufo Melanstictus from Garhwal Himalaya. Rivista Di Parasitologia Vol lll 323, 1986,

3. Annual Trend in Malaria in and around BHEL Locality of Hardwar. Him J. Env. Zool. Vol. 2, 45, 1988

4. Protozoan Cysts in Sewage System of Hardwar, Him. J. Env. Zool. Vol 2, 139, 1988

जनरल आर्टिकल :

१. हुकवर्म भी रक्ताल्पता का एक कारण है : विज्ञान प्रगति, जनवरी १९८९, पृ० १९.

२. Impact of Fungus on Fishes; आर्यभट्ट 1988-89 (I & II) पृ 60.

एम०एस-सी० डिसर्टेशन :

दो छात्रों के लघुशोध प्रबन्ध के कार्यों का सुपरविजन किया जा रहा है।

i. अब्दुल रहमान — "Effect of Sewage effluents on quality of water of river Ganga"

ii मनोज कुमार — "Effect of drugs on the enzyme activities of helminth parasites."

कान्फ्रेंस/एक्सटेंशन वर्क :

१. नेशनल सिम्पोजियम आन एनीमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इनवायरनमेंट, गु.का.वि.वि हरिद्वार, मार्च १९८९ में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

२. उक्त सिम्पोजियम के आरगनाइजिंग कमेटी में सेक्रेट्री के पद पर कार्य किया।

३ भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एवम् गु.का वि. वि. द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय-एकीकरण-शिविर" में "को आर्गनायजर" के पद पर कार्य करते हुये शिविर का सफल संचालन किया।

४. एन एस.एस. प्रोग्राम आफिसर के पद पर कार्य करते हुये छात्रों द्वारा कई राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य करवाये गये।

५. एक दस-दिवसीय कैम्प का आयोजन किया गया (श्यामपुर गांव में, दिसम्बर १९८८)

संपादन कार्य :

Executive Editor-"हिमालयन जर्नल आफ इनवायरनमेंट एन्ड जुलाजी"
Editor-"Souvenir & Abstracts" Natl. Symp. Animal Protection under changing Environment, March 1989, GKV.

डा० दिनेश भट्ट : प्रवक्ता : डा० भट्ट के प्रकाशन कार्य का ब्यौरा इस प्रकार है :

1. Pinealectomy Affects the Seasonal Fattening Cycle of Spotted munia, L. punctulata, Natl. Symp. Gen. Comp. Endocrinol Delhi Univ. Nov. 1988.
2. Effect of Pinealectomy on Free running Reproductive cycles of Tropical Spotted munia. J. Comp. Physiol A. Springer-Verlag) 164, 117.
3. Incidence of Protozoan Infection in the intestine of Humans in Hardwar. 9th Natl. Congr Parasitol, Ujjain Jan. 1989.

एम०एस-सी० डिसरटेशन :

एक छात्र (M.Sc. Microbiology) के लघु शोध प्रबन्ध हेतु गाइड कर रहे हैं।

कान्फ्रेंस/एक्सटेंशन वर्क :

१. "नेशनल सिम्पोजियम आन एनीमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इनवायरनमेंट" नामक राष्ट्रीय सगोष्ठी की Organising Committee में रहते हुये विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन किया।

२. माह अक्टूबर में बी०एस-सी० छात्रों का "शैक्षणिक भ्रमण" आयोजित किया व छात्रों को Excursion पर Himalayan Eco-System की जानकारी हासिल करवाई।

संपादन कार्य :

१. Managing Editor — "हिमालयन जरनल आफ इनवायरेनमेंट एण्ड जुलाजो"

2. Editor — Souvenir & Abstracts "Natl. Symp. Animal Protection... —— —— Environment' GKV. Hardwar

उक्त कार्यों के अतिरिक्त सभी प्राध्यापकों एवम् कर्मचारियों ने समय-समय पर उन सभी क्रिया-कलापों में निष्ठा के साथ भाग लिया जो विश्वविद्यालय द्वारा निर्देशित या प्रायोजित किये गये।

विभाग में कार्यरत स्टाफ इस प्रकार है :

१-	विभागाध्यक्ष	—	प्रो० बी० डी० जोशी
२-	रीडर	—	डा० टी० आर० सेठ
३-	रीडर	—	डा० ए० के० चोपड़ा
४-	प्रवक्ता	—	डा० दिनेश भट्ट
५-	प्रवक्ता	—	रिक्त
६-	प्रयो० सहायक	—	श्री हरीश चन्द
७-	स्टोर कीपर	—	रिक्त
८-	प्रयो० सहायक	—	रिक्त
९-	लैब ब्वाय	—	रिक्त
१०-	लैब ब्वाय	—	श्री प्रीतम

—डा० बी०डी० जोशी
विभागाध्यक्ष

————

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में M.Sc. माइक्रोबायलाजी एवं B.Sc. की कक्षाओं की पढ़ाई सुचारु रूप से हुई एवं विभिन्न विषयों पर शोध कार्य हुआ। विभाग में निम्न-लिखित स्टाफ ने काय किया।

डा० विजयशंकर	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
डा० पुरुषोत्तम कौशिक	प्रवक्ता
डा० गंगाप्रसाद गुप्ता	प्रवक्ता
श्री रुद्रमणि	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रप्रकाश	प्रयोगशाला सहायक
श्री विजयसिंह	लैब बॉय
श्री सूरजदीन	माली

निम्नलिखित विषयों पर विभाग में शोधकार्य सम्पन्न हुआ/चल रहा है।

1. Ph. D. Student	Topic	Supervisor
1. I. P. Joshi	Environmental Studies of Shiwalik ranges & impact of human & developmental activities	Prof. V. Shanker
2. M. Shrivastava	Impact of municipal & industrial wastes on...... .... Ganga water (Garhwal University)—Thesis to be submitted.	Prof V. Shanker

दो छात्रों ने क्रमश: अपने synopsis डा. वि. शंकर के निर्देशन में रजिस्ट्रेशन के लिये भेजे हुए हैं। विषय इस प्रकार हैं :

1. Studies on biodeterioration of certain drugs & their formulations
2. Impact of industrial & human activities on Ganga eco-system in Rishikesh-Hardwar.

शोध निबन्ध (M. Sc.)

	Student	Topic	Supervisor
(i)	Prakash Sharma	Studies on the impact of certain aquatic plants on effluents"	Prof. V. Shanker
(ii)	Rakesh Walia	"Effect of pesticides on soil microflora and soil properties"	—do—
(iii)	Jugal Kishor	"Antimicrobial effect of **Rhynchostylis retusa** and **Acides multiflora** (Orchidaceae)	Dr. P. Kaushik
(iv)	V. G. Rao	"Genetic venebility in Rhizobium.	—do—

विभाग में डा॰ पुरुषोत्तम कौशिक के निर्देशन में दो शोध परियोजनायें चल रही हैं जिसमें तीन रिसर्च फैलोज कार्य कर रहे हैं। इनके नाम नीचे दिये गये हैं।

(१) श्री सुरेन्द्र कामार
(२) श्री शशीकान्त शर्मा
(३) श्री विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ

डा० वि० शंकर ने भारत सरकार द्वारा गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टरेट द्वारा आयोजित 'Workshop on University Research under Ganga Action Plan" में मास नवम्बर में भाग लिया और "Lignocellulose degradation by geofungi of Ganga ecosystem" पर शोध कार्य के लिये प्रोपोजल प्रस्तुत किया एवं Pollution Control Research Institute द्वारा आयोजित एवं United Nations development programme UNEP, UNIDO आदि से सहयोग प्राप्त "International Conference on Environmental Impact Analysis for Developing Countries" के टेक्निकल पेपर की scrutiny के लिये Expert के रूप में कार्य किया और १०० से अधिक पेपरों का निरीक्षण किया। डा० शंकर ने आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका के सम्पादक का कार्य किया।

डा० पुरुषोत्तम कौशिक ने दिसम्बर में भारत सरकार के पर्यावरण मन्त्रालय की वार्षिक वर्कशाप में आर्किड प्रोजेक्ट में किये गये अनुसन्धान कार्य को प्रस्तुत किया तथा North-East Hill University Shillong, तथा Panjab University, Chandigarh द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगाष्ठयों में शोधपत्र पढ़े।

इस सत्र में विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशित प्रकाशनार्थ भेजे गये शोधपत्रों की सूची निम्नलिखित है:

LIST OF PAPERS/BOOKS PUBLISHED/ COMMUNICATED

1. V. Shanker and G. Prasad (1984) Printed in (1988) Studies on some microbiological aspects of Ganges at Hardwar and Garhmukteshwar, Kanpur University Research J. (Vol 5)

2. V. Shanker and G. Prasad (1988) Impact of Nala discharging into Ganga on water quality and algal population in Rishikesh and Hardwar, India (Abstract) Proceeding of International Conference on EIA held on 28th and 29th Nov. 1988 at New Delhi.

3. V. Shanker and Rajeev Sharma (1988) Studies on

Medicinal Plants-Arya Bhatt.

4. V. Shanker, Editorial (1988) Arya Bhatt.

5. G. Prasad 1988 : Efficacy of some fungicides and antibiotics against **Phytophthora nicotianae** var. Parasitica Proceeding of Botanical Society of Kanpur Vol I : 1—6

6. G. Prasad 1988 : Studies on growth and sporulation of **Phytophthora nicotianae** var Parasitica (Destur) water house from different hosts in relation to their mating types J. of Natural and Physical Sciences G. K. V. Hardwar Vol.

7. G. Prasad and Ajay Shanker 1988 : Application of microbes in Agriculture and Antibiotics, Arya Bhatt. Vol—I-II,1989.

8. P. Kaushik 1988 : Edited a book in title Indigenous Medicinal Plants Including microbes and fungi-Published by Today and Tomorrows Printers and Publishers, New-Delhi.

PAPER COMMUNICATED

9. V. Shanker and G Prasad
Impact of Nala discharging into Ganga and water quality and algal population in Rishikesh and Hardwar, India Hydrobiologia (Belgium)

10. V. Shanker and G. Prasad (1988) : Studies seasonal variation of Plankton population in relation to water quality of river Ganga in Rishikesh and Hardwar region, India. Indian J. of Ecology PAU Ludhiana.

11. V. Shanker and G. Prasad : Studies on influence of

IDPL effluent on water quality of Ganga at Shayampur Khadar, Rishikesh. Kanpur University R. J.

12. V. Shanker and G. Prasad :—A new record of **Fusarium** ovule root of cycas from Hardwar, India, Plant disease American Phytopathological Society USA.

—डा० विजयशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

—————

लैक्टिन परियोजना

यह शोध परियोजना डा० पुरुषोत्तम कौशिक, मुख्य अन्वेषक, वनस्पति विज्ञान विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के निर्देशन में चल रही है। इस परियोजना हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से रु० ५०,००० धनराशि प्राप्त हो चुकी है और शेष ग्रान्ट की प्रतीक्षा है। श्री विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ इस परियोजना में जे० आर० एफ० के रूप में कार्यरत हैं। इस परियोजना के अन्तर्गत हाई स्पीड रफ्रिजरेटेड सैन्ट्रिफ्यूज जैसे आधुनिक उपकरण प्राप्त किये गये हैं तथा प्रयोग में लाये जा रहे हैं। अन्य उपकरणों को धनराशि प्राप्त होने पर उपलब्ध कराया जाएगा।

लैक्टिन्स कुछ प्राकृतिक लेग्युमिनस पादपों के बीजों में पाये जाते हैं। यह सूक्ष्मजैविकी प्रकार की एक रोचक शाखा है। इसके अन्तर्गत लेग्युमिनस सीड्स तथा बल्बस पादपों को एकत्रित करके लैक्टिन्स का अध्ययन किया जा रहा है। लैक्टिन्स का आणविक जीवविज्ञान सम्बन्धी शोध में अपना एक विशेष महत्व है। अभी तक की शोध के परिणाम काफी रोचक रहे हैं तथा भविष्य में और अच्छे परिणामों की आशा है। पादपों की १६ जातियों पर कार्य किया गया है।

—डा० पुरुषोत्तम कौशिक
मुख्य अन्वेषक

हैमालिक आर्किड्ज की पार्यवर्णिक जीव विज्ञान शोध परियोजना

भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

यह शोध परियोजना विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में डा० पुरुषोत्तम कौशिक के निर्देशन में चल रही है। रु० ५,८३,८४५/- की धनराशि की इस शोध परियोजना में आर्किड्ज पौधों से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य प्रगति पर है। शोध कार्य के अन्तर्गत आर्किड्ज का ऊतक सवर्धन, जड़ संलग्न कवक वर्धन, आकारिकी, पार्यवर्णिक विज्ञान, परिस्थितिकी, आंतरिक संरचना इत्यादि पर शोधकार्य हो रहा है। परियोजना के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए प० जर्मनी से लघुपादप पर्यावरण कक्ष का आयात किया गया है। इस परियोजना के लिए विश्वविद्यालय में आर्किडेरियम बनवाये जाने के लिए भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय से और धन स्वीकृत करवाने का प्रयास किया जा रहा है।

अब तक के वर्णित उपरोक्त शोध कार्य में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं वे शिक्षा एवं शोधकार्य के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

—डा० पुरुषोत्तम कौशिक
मुख्य अन्वेषक

हिमालय शोध योजना

पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कण्वघाटी एवं संलग्न मालिनी जलागम का ३ वर्ष तक विस्तृत पर्यावरणीय अध्ययन किया गया। क्षेत्र के पर्यावरण सुधार हेतु योजना द्वारा निम्नलिखित सात उद्देश्य निर्धारित किये गये थे :—

(१) विभिन्न प्रजातियों को पौधों को नर्सरी में लगाकर स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरण।

(२) स्थानीय फसलों के लिए हानिकारक प्रमुख कीटों का सर्वेक्षण एवं नियन्त्रण हेतु कीटनाशक दवाओं का प्रयोग।

(३) विभिन्न स्थानों से मृदा का रासायनिक परीक्षण।

(४) स्थानीय ग्रामीण समुदाय का पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण।

(५) स्थानीय जनता को बैठकों, कैम्पों तथा आकाशवाणी वार्ता द्वारा पर्यावरण सुधार हेतु जानकारी देना।

(६) भूमि की उपयोग-विधि का अध्ययन।

(७) बाढ़ रोकथाम हेतु उपाय।

योजना अवधि में विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर पर्यावरण-सुधार हेतु अनेक सुझाव निष्कर्षित किये गये, जो पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार को प्रेषित अन्तिम प्रोजेक्ट रिपोर्ट में विस्तार से दिये गये हैं। योजना की कुछ महत्वपूर्ण संस्तुतियाँ संक्षेप में निम्नवत हैं :

(१) हिमालय की घाटियों के ग्रामीण एवं कस्बाई अंचल की जनता को विभिन्न प्रजातियों के पौधे निःशुल्क उपलब्ध कराये जायें, जिन्हें लोग अपनी सुविधानुसार उपलब्ध उपयुक्त भूमि में लगा सकें। तथा भविष्य में उक्त पेड़ों के उपयोग हेतु कोई बंधन नहीं होना चाहिए एवं वन विभाग से कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।

२. भू-संरक्षण एवं आय के अतिरिक्त स्रोत के लिए हॉर्टिफोरेस्ट "के अन्तर्गत ग्रामीण जनता को फल, ईंधन, चारा, इमारती एवं जलावन लकड़ी के साथ-साथ सब्जियों का भी उत्पादन करना चाहिए।

३. स्थानीय वनों के कुछ बाह्य भाग पूर्णरूप से स्थानीय निवासियों के उपयोग हेतु होने चाहिए जिसकी व्यवस्था का उत्तरदायित्व स्थानीय ग्राम पंचायतों को देना चाहिए जिससे लोग वनों के अन्त:भाग की सुरक्षा व संरक्षण में रुचि ले सकें।

४. शासन के पास उपलब्ध अतिरिक्त भूमि पर वृहत वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।

५. स्थानीय ग्रामीणों को वैकल्पिक ईंधन—गैस व बिजली प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

६. ग्रामीणों को नवीन ईंधनों एवं ऊर्जा बचत की उचित जानकारी दी जानी चाहिए।

७. एक ही प्रजाति की पौध का रोपण (मोनोकल्चर) को हतोत्साहित किया जाना चाहिए तथा बहुप्रजाति वृक्षारोपण (पोलिकल्चर) करवाना चाहिए।

८. पेयजल, बिजली, सड़कों आदि की सुविधा देकर ग्रामीणों के जीवन-स्तर में सुधार होना चाहिए ताकि शहरों की ओर पलायन को रोका जा सके।

९. ग्रामीणों को स्थानीय रोजगार के अवसर कुटीर उद्योगों के माध्यम से उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

१०. ग्रामीण काश्तकारों को शासन की ओर से अधिक पैदावार वाली बीजों की उन्नत किस्में, खाद व कीटनाशक आदि सस्ते दामों पर उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

११. कीट मुख्यरूप से फसल एवं उत्पादन को हानि पहुंचाते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु कीटनाशक दवाओं का प्रचलन बढ़ाकर अच्छे तथा नये प्रकार के कीटनाशक उपलब्ध कराये जाने चाहिए। कीटनाशकों के कुप्रभावों के बारे में भी ग्रामवासियों को अवगत कराना चाहिए।

१२. बाढ़ की रोकथाम हेतु जलागम क्षेत्र के वनों का संरक्षण किया जाना

चाहिए एवं नदी पर छोटे-छोटे बांध बनवाये जाने चाहिए।

१३ नदी के पाट से पत्थरों, रेत, बजरी की निकासी पर स्थानीय ग्राम पंचायतों का नियन्त्रण होना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके।

१४. नयी-नयी वनस्पति एवं जन्तु प्रजातियों का स्थानीय वनक्षेत्र में प्रवेश हेतु प्रयत्न किये जाने चाहिए।

१५ स्थानीय नदियों का छोटे-छोटे जल विद्युत उत्पादन केन्द्रों, मत्स्य उत्पादन हेतु जलाशयों, सिंचाई एवं पनचक्कियों का निर्माण कर उपयोग किया जाना चाहिए।

१६. सरकारी भवनों, सड़कों एवं विद्युत लाइनों के निर्माण हेतु यथासम्भव कृषि हेतु अनुपयोगी भूमि का ही उपयोग किया जाना चाहिए।

१७. स्थानीय पशुधन का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि पशुधन की संख्या एवं दुग्ध पदार्थों का उत्पादन निरन्तर कम होता जा रहा है। जिसका मुख्य कारण चारागाहों एवं जंगलों से उपलब्ध चारे की कमी है। अतः पशुधन विकास हेतु चारागाहों एवं चारा वृक्षों की वृद्धि हेतु प्रयत्न किये जाने चाहिए।

१८. क्षेत्र के सामाजिक सर्वेक्षण से पता चला कि सरकार द्वारा विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा चलाये गये विकास एवं परिवार नियोजन कार्यक्रमों ने अधिकतर लोगों को सीमित परिवार रखने हेतु प्रेरित किया है। इसलिए इस प्रकार के नवीन आविष्कारों एवं विकास कार्यक्रमों का समाचार-पत्रों, रेडियो एवं टेलीविजन द्वारा अधिक प्रसार किया जाना चाहिए।

इस योजना की चार वर्ष की अवधि में लगभग २० कर्मचारियों द्वारा (जिसमें रिसर्च साइंटिस्ट, प्रोजेक्ट इन्जिनियर, सीनियर रिसर्च फैलो, जूनियर रिसर्च फैलो, लैब अटैण्डैण्ट एवं ड्राइवर पद के अधिकारी व कर्मचारी सम्मिलित थे) कण्व घाटी क्षेत्र के पर्यावरण तथा सामाजिक परिस्थितियों का वृहद् अध्ययन किया गया। उक्त योजना का कार्यकाल ३० अप्रैल १९८८ को समाप्त हो गया था। योजना कार्य की प्रगति के फलस्वरूप योजना को १५ मार्च १९८९ तक पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा विस्तरण प्रदान किया गया। इस शोध योजना के माध्यम से विश्वविद्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को पर्वतीय व ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने एवं क्षेत्र की पर्यावरणीय, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को निकट से देखने व समझने का अवसर मिला तथा इनसे सम्बन्धित आंकड़े

प्राप्त हुए। इसी प्रकार की शोध-योजनाओं के द्वारा वृहत्तर हिमालय के कुछ अन्य भागों एवं देश के अन्य विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों से भी विस्तृत अध्ययन के पश्चात् आंकड़े एकत्रित किये जाने चाहिए। जिनके विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर किसी स्थानविशेष अथवा सम्पूर्ण भारतवर्ष के विकास हेतु विकास योजना बनाने तथा पर्यावरण की इस प्रकार की शोध योजनाओं के द्वारा किये गये रचनात्मक कार्यों से निकटभविष्य में निश्चित रूप से सकारात्मक प्रभाव सामने आयेंगे। हम उक्त योजना के सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में पर्यावरण मन्त्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के हृदय से आभारी हैं जिनके निरन्तर सहयोग के फलस्वरूप यह योजना सफलतापूर्वक सम्पादित की जा सकी।

—डा० बी० डी० जोशी
मुख्य अन्वेषक

कम्प्यूटर विभाग

इस विभाग के लिए यू० जी० सी० ने चौदह शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की स्वीकृति प्रदान की है।

विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर सिस्टम की इन्स्टालेशन तथा उसकी सम्पूर्ण देख-रेख सिस्टम इंजीनियर श्री नरेन्द्र पाराशर द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। विभाग के अन्य सभी कार्य इनके द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। डिप्लोमा कोर्स के लिए स्वीकृति, विभाग की समुचित व्यवस्था के लिए स्टाफ की स्वीकृति और अनुदान आदि को स्वीकृत कराने के लिए श्री नरेन्द्र पाराशर ने विशेष प्रयास किए।

—नरेन्द्र पाराशर

पुस्तकालय विभाग

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरंतर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय वेद, वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय विज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। उत्तर भारत में प्राच्य विद्याओं के साहित्य के संग्रह का यह प्रमुख आगार है।

वर्ष १९८८-८९ में लगभग २४,००० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है :-

१- संदर्भ ग्रन्थ संग्रह
२- पत्रिका संग्रह
३- आर्य साहित्य संग्रह
४- आयुर्वेद संग्रह
५- विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह
६- विज्ञान संग्रह
७- अंग्रेजी साहित्य संग्रह
८- पं० इन्द्रजी संग्रह
९- दुर्लभ पुस्तक संग्रह
१०-पाण्डुलिपि संग्रह
११-गुरुकुल प्रकाशन संग्रह
१२-प्रतियोगितात्मक संग्रह
१३-शोध प्रबन्ध संग्रह
१४-रूसी साहित्य संग्रह
१५-आरक्षित पुस्तक संग्रह
१६-उर्दू संग्रह
१७-मराठी संग्रह
१८-गुजराती संग्रह
१९-गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह
२०-मानचित्र संग्रह
२१-वेद मंत्र कैसेट संग्रह

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय

पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में २ घंटे प्रतिदिन कार्य के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे वे अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ६ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षा में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १६ पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

फोटोस्टेट सेवा

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का ५२०० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु वर्ष १९८८-८९ में प्लेन पेपर कापियर मशीन मोदी जीराक्स भी पुस्तकालय द्वारा क्रय की गई है तथा प्रशासनिक कार्यों हेतु भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी

इस विराट् पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इसमें २२ कर्मचारी कार्यरत हैं। पुस्तकालय कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है :

क्र.सं. पद	नाम	योग्यता
१- पुस्तकालयाध्यक्ष	डा. जगदीश विद्यालकार	एम.ए., एम.लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच.डी., बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२- स.पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजार सिंह	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स
३- पुस्तकालय सहा.	श्री उपेन्द्रकुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, योग प्रमाणपत्र।

४- पुस्तकालय सहा.	श्री ललितकिशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स
५- पुस्तकालय सहा.	श्री मिथलेश कुमार	बी.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स
६- पुस्तकालय सहा.	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७- पुस्तकालय सहा.	श्री अनिल कुमार	एम.एस-सी., एम. ए., सी. लाइब्रेरी सा., आई.जी डी बाम्बे पत्रकारिता विज्ञान।
८-पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा
९- ,, ,,	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१०- ,, ,,	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स आई. टी. आई.
११-काउन्टर सहायक	श्री हरिभजन	मिडिल
१२-बुकबाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल
१३-बुकलिफ्टर	श्री गोविन्दसिंह	मिडिल
१४-सेवक	श्री घनश्याम सिंह	मिडिल
१५-सेवक	श्री शशीकान्त	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१६- ,,	श्री बुन्दू	—
१७- ,,	श्री शिवकुमार	मिडिल
१८-स्वीपर	श्री सुशील कुमार	—
१९-लिपिक	श्री लालकुमार कश्यप	—
२०- ,,	श्री दीपक घोष	एम.ए., सी.लाइब्रेरी साइन्स
२१- ,,	श्री विक्रमशाह	इन्टर
२२- ,,	श्री चमनलाल	(दैनिक) मिडिल

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर :

	१९८७-८८	१९८८-८९
१- पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२४,२००	२४,०००
२- भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	३९३	१३१
३- नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	१५५३	३,६५६
४- वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	३५००	२,६००
५- सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	३२७३	२,५१७
६- पत्रिकाओं की संख्या	४५४	४०५
७- पत्रिकाओं को आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरण-पत्रों की संख्या	२०३	२५८
८- सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७०१६	७१५२

९- पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	४३४	१४६
१०- पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१८७३	१६६०
११- पुस्तकों का कुल सग्रह	९९,४६८	१,०३,१२४
१२- सदस्य संख्या	४९८	५२१

प्रगति के आयाम

१. गत वर्ष १९८७-८८ में १५५३ नई पुस्तकें क्रय की गई थी वहाँ आलोच्य वर्ष १९८८-८९ में ३६३६ नई पुस्तकें क्रय की गई।

२. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएं मँगाई जाती थीं वहीं आलोच्य वर्ष में ४०५ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जाती हैं।

३. पुस्तकालय द्वारा वैदिक साहित्य, आर्य साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की एक वृहद् सूची तैयार की गई है जिसमें पुस्तकालय में उपलब्ध ७५०० पुस्तकों को शामिल किया गया है। श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक संदर्भ ग्रन्थ एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया हो। इस सन्दर्भग्रन्थ का सम्पादन श्री आर. के श्रीवास्तव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ के अन्त में एक वृहद् इन्डैक्स तैयार किया गया है जिसमें लेखक के अनुसार पुस्तक का पूर्ण विवरण अंकित किया गया है।

४- ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पुस्तकालय को ११ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था। आलोच्य वर्ष में यू. जी. सी. विकास अनुदान में से ३,५८,९९० रु० की राशि नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ क्रय करने में व्यय की गई। इसके अतिरिक्त वार्षिक रखरखाव बजट से पुस्तकों एवं पत्रिकाओं हेतु क्रमशः ४७,५९७,८३ एवं ६६,१०२,३५ राशि व्यय की गई।

५- श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "शोध सारावली" एवं "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक पुस्तकों की १००-१०० से अधिक प्रतियाँ उक्त पुस्तकों के अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गई। उ० प्र० सरकार द्वारा भी 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक ग्रन्थ की ४० प्रतियों का आदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों को देश के सुदूर अंचलों तक पहुँचाने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत लगभग ३००० प्रतियाँ देश के सभी विश्वविद्यालयों में पहुँचाई गयी हैं।

६. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की अधिसूचना के आधार पर पुस्तकालय की पुस्तकों का सेम्पल स्टाक वेरिफिकेशन का कार्य भी किया गया तथा इसकी

अन्तिम रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

७- पुस्तकालय के संग्रह को सुव्यवस्थित रूप से रखे जाने हेतु आलोच्य वर्ष १९८८-८९ में ८३ हजार रु० की अलमारियाँ एवं रैक्स क्रय किये गये।

८- विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर गुरुकुल के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की प्रदर्शनी का आयोजन पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसका अवलोकन मुख्य अतिथि मान्यवर ब्रह्मदत्त जी, पैट्रोलियम राज्य मंत्री भारत सरकार द्वारा किया गया। पुस्तकालय का अवलोकन करने के उपरान्त उन्होंने अपनी सम्मति दी कि इस पुस्तकालय में दुलर्भ ग्रन्थों एवं हाल में प्रकाशित ग्रन्थों का संग्रह देख कर प्रसन्नता हुई। पुस्तकालय का रखरखाव व व्यवस्था सराहनीय है।

९- इस वर्ष श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा "वेदों में भारतीय मनोविज्ञान" विषय पर शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया गया जिसे विश्वविद्यालय ने स्वीकृत कर उन्हें पी-एच डी. की उपाधि प्रदान की। पुस्तकालय द्वारा वेदों में मनोविज्ञान, वेदों में राजनीति, वेदों में आयुर्वेद आदि विषयों से सम्बद्ध पुस्तकों का एक पृथक् कक्ष बनाया गया है।

– डा० जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

———

राष्ट्रीय छात्र सेना

उपक्रम – १/३१ यू० पी० कम्पनी, गु० कां० विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से डा० राकेशकुमार शर्मा का चयन एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर के रूप में पिछले सत्र में हो चुका था। इस वर्ष तीन माह (१२ सितम्बर से १० दिसम्बर ८८) का प्रशिक्षण लेने एन० सी० सी० विभाग के अफसर ट्रेनिंग स्कूल कामठी (नागपुर) डा० राकेशकुमार शर्मा को भेजा गया। जहाँ उन्होंने इस 'बी' सर्टीफिकेट ग्रड लेकर सम्मानपूर्वक पूर्ण कर एन० सी० सी० में कमीशन प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० विभाग द्वारा ५२ छात्रों के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। अतः इस वर्ष एन० सी० सी० में विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों द्वारा ५२ योग्य छात्रों का चयन कर उन्हें नियमानुसार पंजीकृत किया गया। पूरे सत्र में उक्त ५२ कैडेट्स को एन० सी० सी० बटालियन मुख्यालयसे भारतीय सेना के प्रशिक्षित आफीसरों तथा हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालयपरिसरतथा बी० एच० ई० एल० के परेड मैदान में प्रशिक्षण दिया गया।प्रत्येक वर्ष एन० सी० सी० विभाग की ओर से वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होता है। इस वर्ष यह शिविर रायवाला में दो बार लगा जिसमें विश्वविद्यालय के छात्रों ने परिश्रम एवं समर्पण की भावना का परिचय देते हुये शिविर में सराहनीय योगदान दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर २६ जनवरी १९८९ के समारोह में माननीय उप-कुलपति श्री रामप्रसाद वेदालंकार ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर एन० सी० सी० के कैडेट्स का निरीक्षण करते हुये उप-कुलपति जी ने सलामी ली। वर्ष ८७-८८में बी प्रमाण-पत्र के लिये १० तथा सी प्रमाण-पत्र के लिये ७ कैडेट्स ने परीक्षा दी थी, जिसका परिणाम अत्यधिक उत्साहवर्द्धक रहा। बी प्रमाण-पत्र में १० में से ९ तथा सी प्रमाण-पत्र में ७ में से ४ कैडेट्स उत्तीर्ण घोषित किये गये। इस वर्ष ८८-८९ में बी तथा सी प्रमाण-पत्र परीक्षा १६ कैडेट्स ने दी है तथा परिणाम अपेक्षित है।

सन् १९९० के गणतन्त्र दिवस देहली के लिये बटालियन स्तर पर विद्यालंकार के छात्र संजय बड़ोनी का चयन हो गया है, जिसके फलस्वरूप उक्त कैडेट को मई माह में प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने जाना होगा।

सैकिण्ड लेफ्टीनेण्ट डा० राकेशकुमार शर्मा

एन० सी० सी० कमाण्डिग आफीसर

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८८-८९ की उपल-ाँ निम्न हैं :—

(१) अगस्त माह में एन० एस० एस० कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८८-८९ के लिए ११५ छात्रों का पंजीकरण किया गया।

(२) जन-साक्षरता अभियान के अन्तर्गत निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए छात्रों को दो दिन का प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें एक से पांच तक लिटरेसी हाऊस, लखनऊ द्वारा प्राप्त साक्षरता किट्स दी गयीं। इसके अन्तर्गत ६२ छात्रों ने १२१ व्यक्तियों को साक्षर किया।

(३) समय-समय पर छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर की सफाई, पर्यावरण संरक्षण आदि का कार्य किया गया।

(४) विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी वार्तालाप, टूर्नामेन्ट एवं गणतन्त्र दिवस के अवसर पर छात्रों ने सहयोग दिया।

(५) दो, एक-दिवसीय शिविर एक जमालपुर तथा दूसरा कांगड़ी ग्राम में लगाये गये। इसके अन्तर्गत पशुओं, परिवार नियोजन, बीमारियों से सम्बन्धित सामाजिक सर्वेक्षण प्रपत्र भरवा कर आंकड़े लिए गये।

(६) छात्रों को समय-समय पर राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व, उद्भव, उद्देश्यों एवं अन्य कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गयी।

(७) सप्तम् दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर का आयोजन दिनांक २८-१२-८८ से १-१-८९ तक ग्राम श्यामपुर में किया गया। इस शिविर का नेतृत्व डा० ए० के० चोपड़ा, एन० एस० एस० प्रोग्राम आफिसर ने किया। इस शिविर का उद्घाटन समारोह दिनांक २४-१२-८८ को हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० आर० सी० शर्मा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय थे। डा० जयदेव वेदालंकार एन० एस०

एस० को-ऑडिनेटर ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रो० आर० सी० शर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ समाज-सेवा एवं देशसेवा में तत्परता से संलग्न होकर राष्ट्र-निर्माण की मुख्य धारा से जुड़ना चाहिए और ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक ग्रामवासी अपनी समस्याओं को पहचान कर स्वयं प्रयास नहीं करेंगे तो वे प्रगति के पथ में अग्रसर नही हो सकते। इस समारोह की अध्यक्षता ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष श्री गोयल ने की। इस समारोह में प्रो० बी० डी० जोशी, अध्यक्ष-जन्तु विज्ञान विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, ग्राम प्रधान श्री घासीराम जो तथा अन्य माननीय व्यक्ति भी उपस्थित थे। छात्रों द्वारा शिविर में किए गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :—

१— ग्राम में छात्रों द्वारा सड़कों, नालियों एवं अन्य गन्दे स्थानों की सफाई की गई।

२— गांव में लगभग एक कि०मी० लम्बी एवं २.४ मीटर चौड़ी ऊबड़ खाबर सड़क को मिट्टी आदि डालकर समतल किया गया।

३— जन-साक्षरता अभियान के अन्तर्गत नित्य ४२ व्यक्तियों को साक्षर करने का प्रयास किया गया।

४— गांव के कुओं में लाल-दवाई एवं ब्लीचिंग पाउडर डालकर कुओं के पानी की सफाई की गयी।

५— ८६ किचन सोक पिट्स, ३ बड़े गड्ढे तथा ४५ नालियों का निर्माण किया गया, जिससे कि गांव में पानी का निकास ठीक प्रकार से हो सके एवं अतिरिक्त पानी गलियों में एकत्र न हो सके।

६— ईख को कटाई आदि में ग्रामीणों की सहायता को गयी।

७— किसानों को आधुनिक तराकों से खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

८— ग्रामीणों को परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण एवं पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी दी गयी।

९— खेतों में खाद, कीटनाशक आदि डालने में ग्रामीणों की सहायता की गयी।

१० – गांव में ग्रामीणों की समस्याओं पर विचार किया गया एवं उनके निराकरण हेतु उपाय सुझाये गये।

(८) विश्वविद्यालय परिसर में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत एक राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन डा० जयदेव वेदालंकार प्रोग्राम कोआर्डिनेटर, रा० से० यो०, गु० का० वि० के नेतृत्व में दिनांक २०-२-८६ से २६-२-८६ तक किया गया। इस शिविर में १५ प्रान्तों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के १७१ स्वयंसेवकों एवं प्रोग्राम आफिसरों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन समारोह दिनांक २०-२-८६ को हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि डा० सतीशचन्द्र, निदेशक इंस्टीट्यूट आफ हाईड्रोलोजी भारत सरकार एवं वरिष्ठ अतिथि श्री जगदम्बिकापाल राज्य शिक्षामन्त्री थे। इस समारोह की अध्यक्षता प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की।

इस शिविर की अवधि में किए गये अनेक कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :

१— प्रतिदिन प्रातः स्वयंसेवकों द्वारा सामूहिकरूप से सर्वधर्म प्रार्थना की गयी। तत्पश्चात् श्री ईश्वरचन्द भारद्वाज के नेतृत्व में योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया। नाश्ते के बाद समस्त स्वयंसेवकों द्वारा ग्राम जमालपुर एवं जगदीशपुर में श्रमदान, सामाजिक सर्वेक्षण एव रोगियों के उपचार हेतु विभिन्न कार्य किए गये। दोपहर एक बजे समस्त छात्र स्नान तथा भोजन इत्यादि के लिए शिविर में लौट आये। भोजन के उपरान्त ३-०५ बजे तक वरिष्ठ व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रीय एकता, दहेज प्रथा, प्रौढ़शिक्षा, पर्यावरण इत्यादि से सम्बन्धित व्याख्यानों का आयोजन विश्वविद्यालय भवन में किया गया। चाय के उपरान्त क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय भारत सरकार देहरादून द्वारा लघु वीडियो फिल्में वी० सी० आर० के० माध्यम से दिखायी गई। तत्पश्चात् विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों द्वारा राष्ट्रीय सेवायोजना के उद्देश्यों से सम्बन्धित अनेक साँस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किय गये।

२— छात्र स्वयंसेवकों द्वारा विश्वविद्यालय से जगदीशपुर तक जाने वाली एवं विश्वविद्यालय से जमालपुर को जाने वाली लगभग २ कि० मी० लम्बी २.५ मी० चौड़ी सड़क का निर्माण किया गया तथा इन दोनों सड़कों के दोनों ओर८०० वृक्षभी लगाये गये। जमालपुर गांवके स्कूल के प्रांगण में २०० वृक्षलगाये गये। ऋषिकुल इकाई के स्वयंसेवकों ने वरिष्ठ चिकित्सकों के संरक्षण में १०४२ रोगियों का परीक्षण एवं उपचार

किया। इसके अतिरिक्त इन्हें निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गयीं। छात्राओं ने प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित सामाजिक सर्वेक्षण किया और उन्होंने घर-घर जाकर ग्रामीणों को प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि की ओर प्रेरित एवं जागृत किया। इसके अतिरिक्त उन्हें दहेज प्रथा, नशाबन्दी से उत्पन्न अनेक बुराइयों से अवगत कराया।

३— एक विशाल रैली का आयोजन विश्वविद्यालय से हरकी पौड़ी तक दिनांक २४-२-८९ को किया गया। इसमें स्थानीय कालेजों के १००० एन० एस० एस० छात्रों एवं स्वयंसेवकों ने भाग लिया। रैली समारोह के मुख्य अतिथि श्री पारसकुमार जैन, अध्यक्ष, नगरपालिका हरिद्वार थे। समारोह की अध्यक्षता प्रो० आर० सी० शर्मा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। इस रैली के संयोजक डा० एन० के० गर्ग, एन० एस० एस० प्रोग्राम आफिसर, एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज, हरिद्वार थे। श्री जैन, प्रो० शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों ने इस रैली का नेतृत्व भी किया। यह रैली सिंहद्वार, अवधूत मण्डल, रानीपुर मोड़, देवपुरा, रेलवे स्टेशन, अपरबाजारसे होती हुई हरकी पौड़ी तक पहुँची। यहाँ पर यह रैली एक सभा के रूपमें परिवर्तित हो गयी। नगरवासी रैली का अनोखा दृश्य देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये और उन्होंने जगह-जगह पर छात्रों का स्वागत किया तथा उनके द्वारा जलपान आदि भी कराया गया। इस रैली में छात्र-छात्राएँ एवं स्वयसेवक क्षेत्रवाद एवं जातिवाद को भूल कर विभिन्न नारे—जैसे दहेज लेना पाप है, हम सब एक हैं, भारत माता की जय इत्यादि बोलते हुए जा रहे थे। सभा को प्रो० शर्मा, श्री जैन, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव गु० कां० विश्वविद्यालय तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये कार्यक्रम अधिकारियों एवं अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों ने सम्बोधित किया। सभा के समापन के पश्चात् रैली में भाग लेने वाले समस्त छात्र एवं छात्राओं को अल्पाहार स्वरूप सन्तरे व केले वितरित किए गये।

४— दिनांक २५-२-८९ को एक शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत समस्त छात्रों को यहाँ के दर्शनीय स्थलों के दर्शन करवाये गये एवं स्थानीय संस्कृति से अवगत कराया गया। रात्रि को 'राष्ट्रीय एकता में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयसेवकों की भूमिका' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय, भारत सरकार, देहरादून के सौजन्य से किया गया। जिसमें १९ छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बंगलौर विश्वविद्यालय के छात्र श्री यशवन्तकुमार को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त कु० ममता, एस० पी० महिला विश्वविद्यालय

तिरुपति, श्री शिवेन्द्रसिंह, एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज, हरिद्वार तथा श्री जसपालसिंह, इंजीनियरिंग कालेज पटियाला को क्रमशः द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस शिविर का समापन समारोह दिनांक २६-२-८१ को विश्वविद्यालय भवन में हुआ। इस समारोह के वरिष्ठ अतिथि डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार थे। इस समारोह की अध्यक्षता प्रो० आर० सी० शर्मा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। विश्वविद्यालयों से आये कार्यक्रम अधिकारियों ने शिविर में प्राप्त अनुभवों से सम्बन्धित अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। डा० इल्लन गोवन कार्यक्रम अधिकारी अन्नामलयी विश्वविद्यालय के शब्दों में—'हम यहाँ तमिल बनकर आये थे, अब भारतीय बनकर लौट रहे हैं।' विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्रत्येक स्वयंसेवक एवं कार्यक्रम अधिकारी को श्री पारसकुमार जैन की ओर से यादगारस्वरूप एक-एक गंगाजली दी गयी। सभी छात्रों एवं कार्यक्रम अधिकारियों ने इस शिविर को स्मरणीय आयोजन बताते हुए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डा० ए० के० चोपड़ा
प्रोग्राम आफिसर

प्रौढ़, सतत् शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम

विभाग द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संचालन वर्ष १९८४ से सतत् रूप से किया जा रहा है। वर्ष ८८-८९ में विभाग ने पचपन (५५) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र हरिद्वार के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्रारंभ किये। केन्द्रों में लगभग १०४८ प्रौढ़ शिक्षार्थियों ने पंजीकरण कराया। केन्द्रों का संचालन मुख्यतः हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदाय के क्षेत्रों, पिछड़े क्षेत्रों में किया गया। केन्द्रों के संचालन हेतु विद्यार्थियों, कार्यकर्ताओं, ग्रामीण महिलाओं आदि को अनुदेशक के रूप में कार्य करने का दायित्व सौंपा गया।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के संचालन के साथ-साथ विभाग ने अन्य प्रसार कार्यक्रम भी संपादित किये -

१- विभाग द्वारा २२ जून १९८८ को अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस के सहयोग से एक-दिवसीय स्वास्थ्य कैंप का आयोजन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र लोधामंडी में किया गया। जिसमें योग्य चिकित्सकों द्वारा ४८ रोगियों का परीक्षण किया गया व उन्हें मुफ्त दवाएँ वितरित की गईं।

२- अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर विभाग द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं हेतु एक सात-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत विषयविशेषज्ञों के माध्यमसे विभिन्न विषयों पर सारगर्भित जानकारी उपलब्ध कराई गई। प्रशिक्षार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु पशुलोक ऋषिकेश व शान्ति कुन्ज हरिद्वार भी ले जाया गया। पशुलोक में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई। प्रशिक्षार्थियों ने विभिन्न चारे की फसलों के विषय में अधिक रुचि दिखाई। शांति कुन्ज में प्रशिक्षार्थियों को स्वतः रोजगार संबन्धी जानकारी उपलब्ध कराई गई जिसके प्रति लगभग सभी अनुदेशकों में उत्सुकता दिखाई दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को आकाशवाणी नजीबाबाद ने अपने कार्यक्रम 'प्रगति के चरण' के अन्तर्गत दिनांक १३-९-८८ को रात्रि ८ बजे प्रसारित किया।

३- दिनांक २९-११-८८ को रुड़की विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के

संयोजक प्रो० मंसूर अली के नेतृत्व में प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं ने विभाग का भ्रमण किया जिस दौरान एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया।

४- दिसम्बर १९८८ में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के सहयोग मे जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्राध्यापकों, अधिकारियों तथा छात्रों ने भाग लिया।

५- २२ दिसम्बर १९८८ को एक-दिवसीय स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन विश्वविद्यालय के प्रांगण में किया गया, जिसमें एलोपैथिक, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सकों के माध्यम से ४७ रोगियों का प्रशिक्षण किया गया। अखिल भारतीय महिला कॉन्फ्रेन्स द्वारा उपलब्ध कराये गये अनुदान से रोगियों को मुफ्त दवाइयाँ बाँटी गई।

६- फरवरी १९८९ में राष्ट्रीय सेवा योजना के राष्ट्रीय एकीकृत शिविर में आयोजन के दौरान विभाग द्वारा प्रतिभागियों के माध्यम से ग्राम जमालपुर कलां व जगजीतपुर ग्रामों में साक्षरता सर्वेक्षण कार्य सम्पादित किया गया। इसके अतिरिक्त सड़क निर्माण, सफाई, वृक्षारोपण आदि प्रचार व प्रसार कार्यक्रमों की व्यवस्था भी की गई।

७- विभाग के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों आदि में भाग लिया गया तथा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

८- विभाग के पर्यवेक्षक डा० जे० एस० मलिक को विश्वविद्यालय ने 'प्राचीन भारतीय में पौरोहित्य' विषय पर शोधकार्य हेतु पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया।

विभाग के पर्यवेक्षक श्री एस० के० त्यागी ने 'भारतीयदर्शन में अहिंसा पर तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' पर शोधकार्य पूर्ण करके पी-एच०डी० की उपाधि हेतु शोधग्रन्थ प्रस्तुत किया।

विभाग की प्रगति की समीक्षा कर के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विभाग के अग्रेतर विकास हेतु आगामी सत्र से संचालन हेतु तीन जन शिक्षण निलयम, तीन सतत् शिक्षा परियोजनायें तथा एक जनसंख्या शिक्षा परियोजना स्वीकृत की है।

माननीय कुलपति जी के मार्ग निर्देशन में तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों के सहयोग से विभाग प्रगति की ओर अग्रसर है।

—डा० अनिलकुमार
स० निदेशक

विश्वविद्यालय छात्रावास

विश्वविद्यालय छात्रावास में इस वर्ष व्यवस्था की दृष्टि से कई कार्य किए गए, जैसे :

१. पंखों की व्यवस्था
२. विद्युत फिटिंग व ट्यूब लाइट
३. तख्तों की व्यवस्था
४. चारों ओर की फेंसिंग
५. खिड़कियों की जाली
६. शौचालय की व्यवस्था
७. स्नानागार की मरम्मत

उपर्युक्त व्यवस्था के उपरान्त छात्रों को आवास व्यवस्था में सुविधा रही किन्तु मूलभूत समस्या भोजनालय की व्यवस्था न हो पाने के कारण छात्रों को पी०ए०सी० के भोजनालय पर आधारित रहना पड़ा। आशा है नवीन सत्र में यह समस्या भी दूर हो जाएगी।

छात्रों से नियमित रूप से छात्रावास शुल्क लिया जाता रहा। छात्रावास में उचित व्यवस्था हेतु समय-समय पर निरीक्षण किया गया। रात्रि के चौकीदार की व्यवस्था भी इस वर्ष से की गई। इससे सुरक्षा भावना दृढ़ हुई।

कुलपति जी, उपकुलपति जी, कुलसचिव जी, वित्ताधिकारी जी, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय तथा अन्य महानुभावों के सहयोग से व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही। प्रयास किया जा रहा है कि भोजनालय की व्यवस्था भी शीघ्र ही हो जाए। इस दिशा में अनुदान लेने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

-ईश्वर भारद्वाज
अध्यक्ष

क्रीड़ा-विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का समस्त कार्य डा० अम्बुजकुमार शर्मा के निर्देशन में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा सुचारू रूप से सम्पन्न किया गया। विभाग में अभी तक निर्देशक शारीरिक शिक्षा का पद रिक्त है।

इस वर्ष निम्नलिखित खेलों का प्रशिक्षण छात्रों को प्रदान किया गया तथा छात्रों ने रुचिपूर्वक भाग लिया :

हाकी, क्रिकेट, बैडमिण्टन, टेबल टेनिस, फुटबाल, तैराकी, कबड्डी, कुश्ती, एथलेटिक्स, वालीबाल, शरीर सौष्ठव व भारोत्तोलन। किन्तु इसमें से हाकी, क्रिकेट, बैडमिण्टन, तैराकी, कुश्ती व कबड्डी की टीमों को ही विश्व-विद्यालय प्रतियोगिताओं में भेजा जा सका।

१. हाकी : सितम्बर मास के प्रारम्भ से ही हाकी का अभ्यास प्रारम्भ किया गया। श्री नन्दकिशोर (लिपिक, विज्ञान महाविद्यालय) के सहयोग से छात्रों को प्रतिदिन विधिवत् प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजकीयआयु० महाविद्यालय, भेल, आई०डी०पी०एल०, दून हाक्स आदि की टीमों के साथ मत्रीपूर्ण मुकाबलों का आयोजन करके टीम का अभ्यास कराया गया।

उ.प्र. वि.वि. प्रतियोगिता लखनऊ तथा उत्तर क्षेत्र अ.वि.वि. प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र में खेली गई। दोनों ही प्रतियोगिताओं में वि.वि. की टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया किन्तु आधे समय के बाद बिखराव व स्टेमना की कमी होने के कारण विजय प्राप्त न कर सकी। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित हाकी टूर्नामेंट में दो मुकाबलों में विजय प्राप्त की। प्रदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा।

२. क्रिकेट : उ.प्र.अ.वि.वि. क्रिकेट प्रतियोगिता आगरा में आयोजित की गई। अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. की सशक्त टीम के साथ अत्यन्त कांटे के संघर्ष में विजय तो प्राप्त न हो सकी किन्तु प्रदर्शन सराहनीय रहा। उत्तर क्षेत्र प्रतियोगिता में हिमाचल विश्वविद्यालय के साथ मुकाबला अत्यन्त कठिन रहा। लक्सर में आयोजित इंदिरा गांधी टूर्नामेंट में दो बार मुकाबले जीतकर विजय के निकट जाने के पश्चात भी टूर्नामेंट आयोजकों द्वारा गड़बड़ी करने के कारण

विजय से वंचित होना पड़ा। भेल की टीम के साथ कई मैत्रीपूर्ण मुकाबलों में विजय प्ाई। स्थानीय क्लबों के साथ भी प्रतियोगिताएँ रखी गई।

३. कुश्ती : उ.प्र. अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन मेरठ में किया गया था। छात्र सुनील कुमार ने लगातार दो कुश्तियों में विजय पाई। अपने ६२ कि०ग्राम भार वर्ग में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। अपरिहार्य कारणों से उ० क्षेत्र कुश्ती प्रतियोगिता में भाग न ले सके।

४. तैराकी : प्रथम बार इस वर्ष उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम प्रयास होने के कारण प्रदर्शन संतोषजनक रहा। इसके लिए अभ्यास हेतु बी एच ई एल. के स्वीमिंग पूल को किराये पर लेकर व्यवस्था की गई।

५. कबड्डी : कबड्डी की टीम का अभ्यास लगातार कराया गया। उसी के कारण ऋषिकुल के प्रांगण में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् हरिद्वार के सौजन्य से आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में भी हमारी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। किन्तु उ०प्र०अ०वि०वि० प्रतियोगिता में कानपुर टीम जाने के बाद उसे खेलने न दिया गया जिससे एक अच्छा अवसर प्राप्त न हो सका।

६. बैडमिण्टन : उत्तर क्षेत्र अ.वि.वि. प्रतियोगिता दिल्ली में आयोजित की गई थी जिसमें हमारी टीम ने भाग लिया किन्तु अभ्यास और अनुभव के अभाव में प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

७. टेबल टेनिस : अभ्यास चलता रहा किन्तु अच्छी टीम तैयार न होने के कारण अ.वि.वि. प्रतियोगिता में भेजने में असमर्थ रहे।

८. एथलेटिक्स : एथलेटिक्स खेलों में छात्रों ने रुचि न दिखाई। अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिताओं के आयोजन के अवसर पर भी कुछ ही छात्र उपस्थित होने के कारण प्रतियोगिताओं को स्थगित करना पड़ा।

९. वालीबाल : वालीबाल का अभ्यास चलता रहा। टीम भी अच्छी गठित हुई। श्रद्धानन्द स्मारक वालीबाल प्रतियोगिता में निरन्तर दो मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन किया।

१०. फुटबाल : विद्यालय विभाग के प्रांगण में फुटबाल का अभ्यास चलता रहा। फुटबाल के खिलाड़ियों की कमी के कारण टीम तैयार न हो सकी।

इस बार विश्वविद्यालय की ओर से खिलाड़ियों को वेशभूषा प्रदान की गई। छात्रों के डी.ए. आदि में सुधार किया गया। प्रोत्साहन के लिए कप्तानों को ब्लेजर दिए गए। बजट बढ़ाकर ४०,०००/- रुपये किया गया।

प्रयास यह है वि. वि. को टीम अन्तर्विश्वविद्यालय मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन कर सके। इसके लिए आगामी सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विशेष तैयारी हेतु कोचिंग कैम्प लगाने की व्यवस्था की जाएगी।

श्रद्धानन्द सप्ताह कार्यक्रम :

इस सप्ताह के आयोजन में इस वर्ष कबड्डी, योग एवं शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। २३ दिसम्बर से २५ दिसम्बर तक कबड्डी प्रतियोगिता में लगभग ९ टीमों ने भाग लिया। हमारी टीम ने प्रथम तथा गुरुकुल महाविद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। २५ दिसम्बर को योग एवं शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें योग प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में तथा कनिष्ठ वर्ग में प्रथम व द्वितीय स्थान गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में स्वामी ओमानन्द जी मुख्य अतिथि व कुलपति प्रो० आर०सी० शर्मा अध्यक्ष थे। आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी प्रो-कुलपति ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। कुलपति जी द्वारा तीन-दिवसीय प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

विभागीय कार्य संचालन में डा० अम्बुजकुमार शर्मा, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार (उपकुलपति), डा० वीरेन्द्र अरोड़ा (कुलसचिव), श्री राजेन्द्र सहगल (पूर्व वित्ताधिकारी), डा० श्यामनारायण सिंह (उप कुलसचिव), डा० काशमीर सिंह, डा० श्रवणकुमार शर्मा, डा० विजयेन्द्र शर्मा, श्री रणजीत सिंह (विद्यालय), डा० कौशलकुमार, डा० यू० एस० बिष्ट, डा० राकेश शर्मा, प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी (प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय) प्रभृति महानुभावों ने विशेष सहयोग प्रदान किया है। एतदर्थ विभाग की ओर से समस्त महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

—डा० अम्बुजकुमार शर्मा
अध्यक्ष

———

योग प्रशिक्षण केन्द्र

विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष में योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की अवधि चार मास से बढ़ाकर एक शैक्षिक सत्र कर दी गई। किन्तु इस वर्ष पूर्व-संचालित चार-मासीय पाठ्यक्रम भी चलाया गया। इनमें छात्र संख्या इस प्रकार रही :

चारमासीय पाठ्यक्रम—२६
एकवर्षीय पाठ्यक्रम—६

दोनों पाठ्यक्रमों के संचालन में विशेष ध्यान रखा गया। छात्रों को क्रियात्मक प्रशिक्षण साथ-साथ प्रदान किया गया। सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम का अध्यापन करते हुए शरीर-विज्ञान व यौगिक चिकित्सा के पाठ्यक्रम के अंश का अध्यापन डा० विनोदकुमार शर्मा व डा० सत्यप्रकाश विश्नोई (राज० आयु० महाविद्यालय) द्वारा अवैतनिक रूप से कराया गया। शेष पाठ्यक्रम का अध्यापन दोनों ही प्रकार के छात्रों को श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा ही कराया गया।

योग केन्द्र की ओर से चिकित्सा सेवाएँ सभी के लिए उपलब्ध कराई जा रही हैं। योग चिकित्सा का प्रभाव प्रत्यक्ष देखने में आया है। विविध रोगों से पीड़ित आतुरजन इस चिकित्सापद्धति का लाभ उठा रहे हैं। भविष्य में यह प्रयास किया जा रहा है कि अलग एक छोटा-सा चिकित्सा केन्द्र विभिन्न रोगों के यौगिक उपचार हेतु संचालित किया जाए।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर योग प्रतियोगिता को इस बार फिर चतुर्थ बार आयोजित किया गया। इसमें बाहर से आए प्रतियोगियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

केन्द्र के संचालन में कुलपति, उपकुलपति एवं आचार्य, कुलसचिव, उपकुल-सचिव, समस्त विभागाध्यक्ष, प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय एवं उनका स्टाफ, कला एवं वेद महाविद्यालय का स्टाफ आदि का सहयोग प्राप्त होता रहा है। केन्द्र की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

—ईश्वर भारद्वाज

———

स्वास्थ्य केन्द्र

इसवर्ष गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालयके प्रौढ़शिक्षा केन्द्र में स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने एक शिविर का आयोजन किया । जिसके उपरान्त अनेक मरीजों की देखभाल करते हुए दवाइयों का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र ने निम्न वर्गीकरणानुसार मरीजों की देख-रेख की—

(i) बड़े आपरेशन—१३४

(ii) छोटे आपरेशन—१७८

(iii) लीगेशन—१३

(iv) सामान्य डिलीवरी—२४१

(v) एम० टी० पी०—४२

(vi) ई० सी० जी—५४

(vii) ओ० पी० डी० मरीज—३५१२

—बालकृष्ण भारद्वाज
निदेशक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय स्नातक विभाग, देहरादून

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कालेज १६ जुलाई १९८८ को खुला। इस वर्ष अलंकार द्वितीय खण्ड में ११ छात्राओं ने प्रवेश लिया तथा अलंकार प्रथम खण्ड में १२ छात्राओं ने प्रवेश किया। किन्तु इनमें अलंकार द्वितीय खण्ड की दो छात्राएँ अस्वस्थ तथा विवाह हो जाने के कारण अक्टूबर मास १९८८ को संस्था से मुक्त हो गई।

पांच अगस्त १९८८ को समस्त छात्राओं की सहमति से छात्रा-अध्यक्षा के रूप में कुमारी ऋतु, अलंकार द्वितीय खण्ड कुल-मन्त्राणी चुनी गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम :

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्रावणी पर्व उपलक्ष में रक्षाबन्धन दिवस से पूर्व संस्कृत सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्कृत विभाग की प्रवक्ताओं श्री सुनृत्या जी तथा श्री सरोज जी की अध्यक्षता में छात्राओं ने संस्कृत भाषा में नाटक, कविता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। तुलसी जयन्ती के अवसर पर छात्राओं ने तुलसी के पदों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किये। २ अक्टूबर को महात्मा गांधी एवम् लालबहादुर जी शास्त्री के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा छात्राओं और शिक्षिकाओं ने सामूहिकरूप से सूत कातने के कार्यक्रमों में भाग लिया। दीपावली के एक दिन पहले कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के जन्मोत्सव पर दोनों खण्डों की छात्राओं ने उल्लासपूर्वक अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसकी अध्यक्षता निर्देशिका एवम् आचार्या श्री दमयन्ती जी कपूर ने की। प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

१४ नवम्बर को बालदिवस के अवसर पर कुमारी सुमन, कुमारी स्वाति आदि ने नगर के जिलाधिकारी द्वारा आयोजित खेलकूद में भाग लिया तथा पुरस्कारस्वरूप कुछ पुस्तकें प्राप्त कीं। ९ दिसम्बर तथा २३ दिसम्बर को

क्रमशः आचार्य रामदेव दिवस तथा श्रद्धानन्द सप्ताह दिवस के अवसर पर विविध रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

अलंकार प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड को छात्राओं ने अंग्रेजी में नाटक, व्याख्यान तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में कुमारी कमला जी की अध्यक्षता में भाग लिया। छात्रओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम प्रशंसनीय थे।

संगीत कार्यक्रम :

"तरुण संघ" तथा "जागृति परिषद्" द्वारा आयोजित सामूहिक गान, लोकगीत, सुगम गीत, निबन्ध तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में दिसम्बर १२, १३ तथा १४ को छात्राओं ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किया। (नटराज की मूर्ति) सामूहिक गान में अलंकार द्वितीय खण्ड को छात्रा कुमारी सुमन, कुमारी विजयलक्ष्मी, कुमारी विनीता तथा अर्चना, कुमारी संगीता ने भाग लिया तथा विशेषपुरस्कार प्राप्त किये। हिन्दी निबन्ध तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में अलंकार द्वितीय खण्ड की कुमारी ऋतु, प्रथम खण्ड की कुमारी पूनम तथा कुमारी रेखा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा पुरस्कारस्वरूप पुस्तकें प्राप्त कीं।

क्रीडा :

क्रीडा प्रतियोगिता में भी अलंकार प्रथम तथा द्वितीय खण्ड की छात्राओं ने भाग लिया। ८०० मीटर रिले रेस में कुमारी सुमन प्रथम रही तथा महिला वालीबाल टूर्नामेण्ट के ओपन गेम में कुमारी स्वाति, कुमारी रेणु, कुमारी कमलेश, कुमारी मलिका आदि ने भाग लिया तथा पुरस्कारस्वरूप एक कप प्राप्त किया।

परीक्षा विवरण :

इस वर्ष की वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने वाली छात्राओं की संख्या निम्नलिखित है :

अलंकार प्रथम खण्ड	१२ छात्राएँ
अलंकार द्वितीय खण्ड	९ छात्राएँ

१९८७-८८ अप्रैल-मई में सम्पन्न हुई परीक्षा में अलंकार प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड की निम्नलिखित छात्राओं ने परीक्षा में भाग लिया।

गत वर्ष १९८७-८८ :

अलंकार प्रथम खण्ड की परीक्षा में कुल ११ छात्रायें सम्मिलित हुईं

तथा परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। अलंकार-द्वितीय खण्ड की परीक्षा में ७ छात्रायें सम्मिलित हुई, परीक्षा परिणाम निम्नलिखित है :—

प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण ४ छात्रायें
द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण—२ छात्रायें
तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण—१ छात्रा
कुल परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा।

यू० जी० सी० के निर्देशानुसार कालेज में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। कालेज परिसर में जल का नया प्रबन्ध, पुस्तकालय के लिए नई पुस्तकें, समाचारपत्र तथा पत्र-पत्रिकाओं का प्रबन्ध किया गया है। नया फर्नीचर भी क्रय किया है।

टीचिंग स्टाफ तथा नॉन टीचिंग स्टाफ की संख्या पूर्वतः ही है। नॉन टीचिंग स्टाफ के कुछ सदस्य १९८७ तथा १९८८ में अवकाश प्राप्त कर चुके थे। अतः उनके स्थान पर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त चयन समिति ने निम्न नवीन कर्मचारियों की नियुक्ति की है :

(१) श्री ओमप्रकाश (भृत्य)
(२) श्री श्यामसिंह जी (भृत्य)
(३) श्री मुन्नालाल (माली)
(४) श्रीमती विमला (सफाई कर्मचारी)

परिसर में स्थित भवन की टीन की छत लगातार छेदों के कारण टपकती है तथा सभी विषयों की पढ़ाई के लिए कमरे अपर्याप्त हैं। पुस्तकालय तथा वाचनालय तथा लिपिक के कार्य के लिए कोई उचित स्थान नहीं है। १९८९ की जुलाई से तृतीय वर्ष की छात्राओं का भी प्रवेश होगा, उनके लिए कोई जगह नहीं है, अतः नये कमरों का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। लिपिक के लिए कोई टाईपराईटर (हिन्दी, अंग्रेजी) नहीं है।

यद्यपि नये भवन के निर्माण की योजना बन चुकी है तथा उसका नक्शा भी बन चुका है किन्तु अभी तक भवन के निर्माण का कार्य आरम्भ नहीं किया गया है। आशा है कि नये भवन का निर्माण कार्य शीघ्र-अतिशीघ्र आरम्भ किया जायेगा।

—प्राचार्या

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1988 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 26-10-1988 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्न प्रकार बजट पारित किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 88-89	बजट अनुमान 89-90
वेतन एवं भत्ते आदि	66,09,950.00	68,37,100.00
अंशदायी भविष्यनिधि	2,17,170.00	2,56.030.00
अन्य आय	17,86,860.00	17,55,250.00
योग व्यय	86,13,980.00	88,48,380.00
आय	2,37,150.00	2,48,380.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत अनुदान	79,13,164.45	86,00,000.00

समीक्षाधीन वर्ष 1988-89 में 79,13,164.45 रु०के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है -

क्र सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1-	20,000.00	वि०वि० अनुदान आयोग	कम्प्यूटर हेतु
2-	2,75,000.00	,, ,,	हाऊस बिल्डिंग लोन एडवांस
3-	15,139.85	,, ,,	अनएसाइन्ड ग्रान्ट
4-	14,00,000.00	,, ,,	उपकरण अनुदान
5-	4623.55	,, ,,	विश्वविद्यालय भवन

क्र. सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
6-	3055.00	वि० वि०अनुदान आयोग	संग्रहालय विकास
7-	7,00,000.00	,, ,,	वेतन विकास अनुदान
8-	25,000.00	,, ,,	अतिथि भवन
9-	700,000.00	,, ,,	पुस्तकालय पुस्तकें
10-	7,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. पी.पी. पाठक
11-	6,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. आर.डी. कौशिक
12-	9,000.00	,, ,,	माइनर रिसर्च प्रोजे. डा. रणधीरसिंह
13-	2,250.00	,, ,,	माइनर रि. प्रो. श्री दिनेश भट्ट
14-	53,419.80	,, ,,	विजिटिंगप्रो./फैलोशिप
15-	50,000.00	,, ,,	जूनियर रि. फैलोशिप
16-	8,950.00	,, ,,	डा. कृष्ण कुमार
17-	2,05,000.00	,, ,,	प्रौढ़ शिक्षा
18-	2,00,000.00	उत्तर प्रदेश सरकार	पुस्तकालय अनुदान
19-	1,00,000.00	,, ,,	संग्रहालय अनुदान
20-	32,500.00	इंडियन काउन्सिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च नई दिल्ली	फैलोशिप डा. एस.आर. चौधरी
21-	5,000 00	इंडियन काउन्सिल आफ साइंस, नई दिल्ली	सेमिनार आन फिश एण्ड देयर एन्वायरनमेंट
22-	2,371.00	,, ,,	डा.एस.के.श्रीवास्तव

-बी० सी० सिन्हा
वित्त अधिकारी

———

आय का विवरण

1988-89

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
(क)	दान और अनुदान—	
1-	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	79,13,164.45
	योग (क)	79,13,164.45
(ख)	शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—	
1-	पंजीकरण शुल्क	5118.00
2-	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	1055.00
3-	पी-एच०डी० मासिक शुल्क	2170.00
4-	परीक्षा शुल्क	42348.00
5-	अंकपत्र शुल्क	2580 00
6-	विलम्बदण्ड, टूट-फूट	5029.00
7-	माइग्रेशन शुल्क	983.00
8-	प्रमाण-पत्र शुल्क	1219.00
9-	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का शुल्क	8837.00
10-	सेवा आवेदन-पत्र	10618.00
11-	शिक्षा शुल्क	45391.00
12-	प्रवेश व पुनःप्रवेश शुल्क	7761.00
13-	भवन शुल्क	1794.00
14-	क्रीड़ा शुल्क	7752.00

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
15-	पुस्तकालय शुल्क	5443.00
16-	परिचयपत्र शुल्क	526.00
17-	एसोसियेशन शुल्क	705.C0
18-	प्रयोगशाला शुल्क	1932 00
19-	मंहगाई शुल्क	7333.00
20-	विज्ञान शुल्क	1190.00
21-	पुस्तकालय से आय	8059.27
22-	पत्रिका शुल्क	14258.40
23-	अन्य आय	12205.70
24-	किराया प्रोफेसर्स क्वार्टर्स	38864.50
25-	सरस्वती यात्रा	1400 C0
26-	वाहन ऋण	45190.40
27-	छात्रावास	3337 00
28-	विद्युत	28330.00
	योग (ख)	3,11,429 27
	सर्वयोग (क+ख)	82,24,593.72

–बी० सी० सिन्हा
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1988-89

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन		
1-	वेतन	54,60,714.00
2-	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	2,13,763.00
3-	ग्रेच्युटी	48,485.00
	योग (क)	57,22,962.00
ख (अन्य)		
1-	विद्युत व जल	1,26,730.00
2-	टेलीफोन	69,559 00
3-	मार्ग व्यय	1,06,374.00
4-	लेखन सामग्री एवं छपाई	53,719.00
5-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	18,552 00
6-	डाक एवं तार	15,189.00
7-	वाहन एवं पैट्रोल	93,826.00
8-	विज्ञापन	46,098.00
9-	कानूनी व्यय	21,662.00
10-	आतिथ्य व्यय	61,581 00
11-	दीक्षान्त उत्सव	26,714.00
12-	लॉन संरक्षण	22,222.00
13-	भवन मरम्मत	99,971.00
14-	आडिट व्यय	18,750.00
15-	उपकरण	61,935.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
16-	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	67,830.00
17-	राष्ट्रीय छात्र सेवा	868.00
18-	छात्रों को छात्रवृत्ति	40,031.00
19-	खेलकूद एवं क्रीड़ा	48,987.00
20-	सांस्कृतिक कार्यक्रम	2,915.00
21-	सरस्वती शै० यात्रा	5,483.00
22-	वाग्वर्धिनी सभा	8141.00
23-	वेद प्रयोगशाला	10,719.00
24-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	6,876.00
25-	रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	46,511.00
26-	भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	22 065.00
27-	वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	24,224.00
28-	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	23,832.00
29-	गैस प्लाण्ट	6,628.00
30-	इतिहास	8,664.00
31-	गणित	4,741.00
32-	वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाउस)	558.00
33-	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं	68 669.00
34-	पुस्तकें	47,598.00
35-	जिल्दबंदी एवं पुस्तक सुरक्षा	10,239.00
36-	केटेलाग एण्ड कार्ड्स	2,770.00
37-	वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्यभट्ट	57 499.00
38-	गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका मिश्रित	23,582.00
39-	आकस्मिक	12,229.00
40-	सदस्यता शुल्क अंशदान	21,528.00
41-	सेमिनार	4,667.00
42-	पढ़ते हुए कमाओ	5,454.00
43-	वाहन हेतु ऋण	24,000.00
44-	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्यूटी प्रतिभूति	18,715.00
45-	निर्धन छात्रकोष	400.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
46-	छात्रावास	18,246 00
	योग (ख)	14,87,551.00
47-	परीक्षकों का पारिश्रमिक	39,230.C0
48-	मार्गव्यय परीक्षक	22,265.00
49-	निरीक्षण व्यय	11,791.00
50-	प्रश्नपत्रों की छपाई	45 568 00
51-	डाक तार व्यय	10,826.00
52-	लेखन सामग्री	2,270.00
53-	नियमावली, पाठविधि छपाई	13,532.00
54-	अन्य व्यय	1,755 00
	योग (ग)	1,47,237.00
	योग (ख+ग)	16,34,788 00
	सर्वयोग (क+ख+ग)	73,57,750.00

—बी० सी० सिन्हा
वित्त अधिकारी

दीक्षान्तोत्सव १९८८-८९ पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त शोधार्थी

क्र. सं.	मौखिकी परीक्षा	पं०सं०	नाम शोधार्थी	पिता का नाम श्री	प्र.प सं.	विभाग	विषय
1.	20.7.88	83014	मनीराम त्रिपाठी	सूर्यबली त्रिपाठी	89/70	सस्कृत सा०	संस्कृत महाकाव्यों मे पर्वतवर्णन : एक अनुशीलन (प्रारम्भ से दशम शताब्दी तक)
2.	13.3.89	840104	सत्यदेव	धर्मवीर	89/71	,,	औचित्य सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में वाल्मीकि रामायण का एक समालोचनात्मक अध्ययन
3.	30.3.89	82005	जगदीशप्रसाद	प्रह्लादराय	89/72	वैदिक सा०	अथर्ववेदीय मनोविज्ञान
4.	27 3.89	820129	बाबूराम	अफ्लातून	89/73	दर्शनशा०	भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों में अन्तःकरण का एक तुलनात्मक अध्ययन
5.	12.1.89	850223	अशोककुमार शर्मा	किशनलाल शर्मा	89/74	हिन्दी सा०	राष्ट्रकवि दिनकर : काव्य : प्रेरक और प्रभावक तत्व (भारतीय)
6.	10.8.88	82004	सुखवीरसिंह	ईलमसिंह	89/75	प्रा०भा०इ०	पुरातत्व संग्रहालय (गुरुकुल कांगड़ी) की मृण्मूर्तियों एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन
7.	28.2.89	82003	जसवीरसिंह मलिक	जिहानसिंह मलिक	89/76	,,	प्राचीन भारत में पौरोहित्य (प्रारंभ से 1200 ई० तक)

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर विद्यालंकार (बी०ए०) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	453	860037	कु० अनुजा	मुन्शीराम पालीवाल	विद्यालंकार	(i) वै०लौ० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा०सं०	(i) संगीत गा० (ii) इतिहास	कन्या गु० दे०	द्वितीय
2.	454	860038	कु० बबीता	रामलाल यादव	,,	,,	(I) हिन्दी (II) इतिहास	,,	द्वितीय
3.	455	860039	कु० कमलेश	दीवानसिंह	,,	,,	(I) इतिहास (II) संगी०गा०	,,	प्रथम
4.	456	860040	कु० मनोज	दिलीपसिंह	,,	,,	(I) संगीत गा० (II) संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
5.	457	860041	कु० पूनम	प्रतापसिंह	,,	,,	(I) हिन्दी (II) इतिहास	,, ,,	प्रथम
6.	458	860190	कु० रश्मि बख्शी	वेदप्रकाश बख्शी	,,	,,	(I) इतिहास (II) चित्रकला	,,	प्रथम
7.	459	860043	कु० शिवा	वशिष्ठ पाण्डेय	,,	,,	(I) हिन्दी (II) चित्रकला	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
8.	460	840074	आलोककुमार	भैरवदत्त घिल्डियाल	विद्यालंकार	(i) वै० लौ० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा० सं०	(I) हिन्दी (II) मनोविज्ञान	गु० कां०	द्वितीय
9.	461	860233	आलोककुमार	हरपालसिंह	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
10.	462	860216	बीरबल रावल	हरनामसिंह रावल	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
11.	463	860223	देवदत्त शर्मा	पतिराम शर्मा	,,	,,	(I) मनोविज्ञान (II) दर्शन	,,	द्वितीय
12.	464	860128	हरिशंकर गहतोड़ी	गिरीशचन्द्र गहतोड़ी	,,	,,	(I) इतिहास (II) दर्शन	,,	प्रथम
13.	465	860129	मोहितलाल नाथ	रमनचन्द्र देवनाथ	,,	,,	(I) मनोविज्ञान (II) दर्शन	,,	प्रथम
14.	466	870114	नेतराम शर्मा	बलजोर शर्मा	,,	,,	(I) हिन्दी (II) मनोविज्ञान	,,	प्रथम
15.	467	860224	प्रदीपकुमार	जयभगवान	,,	,,	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	द्वितीय
16.	469	860121	राजेन्द्रसिंह	डालचन्दसिंह	,	,,	(I) हिन्दी (II) दशन	,,	प्रथम

क्र.सं.	अनु०	पं.सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
17.	470	860225	सतीशकुमार	यशपालसिंह	विद्यालंकार	(i) वै०लै० सं० सा० (ii) अंग्रेजी (iii) भा० सं०	(I) इतिहास (II) मनोविज्ञान	,,	द्वितीय
18.	471	860120	बीरसिंह	लक्ष्मणसिंह	,,	,,	(I) हिन्दी (II) दर्शन	,,	प्रथम (दुर्घटना से मृत्यु)

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर बी० एस-सी० (गणित ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र०प०सं.	श्रेणी
1.	342	850115	अखिल चौधरी	श्री उदयशंकर	बी.एस-सी.	रसायनशा. भौतिकी.गणित	गु कां.वि.वि.	101	द्वितीय
2.	343	860079	अरुणकुमार गुप्ता	श्री बृजपाल गुप्ता	,,	,,	,,	102	तृतीय
3.	344	860083	अजयप्रसाद	श्री के०के० प्रसाद	,,	,,	,,	103	द्वितीय
4.	345	860105	अनुपमकुमार	श्री विनोदकुमार जग्गा	,,	,,	,,	104	,,
5.	348	860148	अनिलकुमार	श्री कल्याणसिंह	,,	,,	,,	105	तृतीय
6.	349	850122	अवनीशकुमार	श्री जयप्रकाश	,,	,,	,,	106	,,
7	350	860010	अजयकुमारसिंह	श्री रतनसिंह	,,	,,	,,	107	द्वितीय
8.	35	860107	वसन्तकुमारसिंह	श्री इन्द्रदेवसिंह	,,	,,	,,	108	,,
9.	353	860071	देवेन्द्रसिंह	श्री कुलवन्तसिंह	,,	,,	,,	109	तृतीय
10.	354	860069	धनीश सहगल	श्री देशराज सहगल	,,	,,	,,	110	द्वितीय
11.	355	860072	दीपकमणि गुप्ता	श्री मुकुटबिहारी गुप्ता	,,	,,	,,	111	,,
12.	356	850133	दिनेशकुमार उपाध्याय	श्री हृदयनारायण उपाध्याय	,,	,,	,,	112	,,
13.	357	860112	धीरज शारदा	श्री बलवीर कृष्ण शारदा	,,	,,	,,	113	,,
14.	358	860073	दीपक पन्त	श्री ए० के० पन्त	,,	,,	,,	114	,,
15.	359	850143	जगदीशचन्द्र	श्री लालचन्द	,,	,,	,,	115	,,
16.	360	860067	कुलदीपकुमार	श्री अतरसिंह	,,	,,	,,	116	तृतीय

क.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं.	श्रेणी
17.	361	860184	कैलाशचन्द्र त्रिपाठी	श्री पूरनचन्द्र त्रिपाठी	बी.एस-सी.	रसायनशा. भौतिकी, गणित	गु कां.वि.वि.	117	द्वितीय
18	364	850043	मुकेशचन्द्र कुकरेती	श्री लालमणि	,,	,,	,,	118	प्रथम
19.	365	860104	मनोजकुमार	श्री वेदप्रकाश	,,	,,	,,	119	तृतीय
20.	366	860063	नवीनकुमार	श्री मदनमोहन	,,	,,	,,	120	प्रथम
21.	368	860138	ओमीकान्त	श्री अमनसिंह	,,	,,	,,	121	द्वितीय
22.	369	860060	प्रदीपकुमार	श्री हरिसिंह	,,	,,	,,	122	तृतीय
23.	370	860201	प्रदीप यादव	श्री जगदेवसिंह यादव	,,	,,	,,	123	द्वितीय
24.	372	860059	प्रमोदचन्द्र वर्मा	श्री सोमदत्त वर्मा	,,	,,	,,	124	,,
25	373	860143	प्रकाशचन्द	श्री नरवृसिंह	,,	,,	,,	055	,,
26.	377	860149	राजेशकुमार	श्री ए० एल० छावड़ा	,,	,,	,,	056	,,
27.	378	860200	राजू जोशी	श्री उमेशचन्द्र जोशी	,,	,,	,,	057	,,
28.	379	850056	राकेशकुमार	श्री फूलसिंह सैनी	,,	,,	,,	058	,,
29.	380	860055	रविन्द्रसिंह	श्री उदयवीरसिंह	,,	,,	,,	059	,,
30.	381	860054	राजीव शर्मा	श्री बी० बी० शर्मा	,,	,,	,,	060	,,
31.	382	860057	रमेश यादव	श्री विक्रमा यादव	,,	,,	,,	061	,,
32.	383	860052	सोमप्रकाश भट्ट	श्री बुद्धिराम भट्ट	,,	,,	,,	062	तृतीय
33.	385	860199	शिवरतन शर्मा	श्री रामरतन शर्मा	,,	,,	,,	063	द्वितीय
34.	386	860162	संजय गौड़	श्री जगदीशप्रसाद शर्मा	,,	,,	,,	064	,,

क्र सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
35.	387	850073	संजयकुमार	श्री श्यामसुन्दर गर्ग	बी.एस-सी.	रसायनशा भौतिकी,गणित	गु.कां.वि वि.	065	द्वितीय
36.	388	850064	सुभाषचन्द	श्री राजसिंह	,,	,,	,,	066	द्वितीय
37.	389	860136	सुरेन्द्र दत्त	श्री सुरेशानन्द	,,	,,	,,	067	,,
38.	390	860047	सुरेन्द्रसिंह	श्री शेरसिंह	,,	,,	,,	068	,,
39.	393	850068	शिवकुमार	श्री चमेलसिंह	,,	,,	,,	069	,,
40.	394	850067	सुभाषचन्द	श्री कर्णसिंह	,,	,,	,,	070	,,
41.	395	860053	संजीवकुमार	श्री रामकृष्ण	,,	,,	,,	071	,,
42.	396	860175	संजयकुमार	श्री जयभगवान	,,	,,	,,	072	,,
43.	397	850080	उदयन	श्री नरेन्द्रपाल	,,	,,	,,	073	प्रथम
44.	398	850079	उत्तमकुमार	श्री राजेन्द्रप्रसाद तिवारी	,,	,,	,,	074	प्रथम
45.	399	850084	विनयकुमार	श्री बशेश्वर दयाल	,,	,,	,,	075	तृतीय
46.	400	850091	विपुलकुमार	श्री रमेशचन्द	,,	,,	,,	076	द्वितीय
47.	401	850093	योगेन्द्रसिंह	श्री महीपालसिंह	,,	,,	,,	077	,,

———

दीक्षान्त-समारोह १९८९ पर बी० एस-सी० (बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र प.सं.	श्रेणी
1.	403	860085	अजयकुमार गुप्ता	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	बी.एस-सी.	रसायनशा., वनस्पतिवि., जीवविज्ञान	गु.कां वि.वि.	095	द्वितीय
2.	404	860147	इन्द्रदेव	श्री रामचन्द्र	,,	,,	,,	079	,,
3.	405	860005	जितेन्द्रकुमार तोमर	श्री राजपालसिंह तोमर	,,	,,	,,	080	,,
4.	406	860032	जयकृष्ण	श्री कमलेश्वर प्रसाद	,,	,,	,,	081	,,
5.	407	860031	जमाल हाशिम	श्री हाशिम अली	,,	,,	,,	082	प्रथम
6.	408	860095	कुलबीरसिंह पुण्डीर	श्री जहानसिंह पुण्डीर	,,	,,	,,	083	द्वितीय
7.	409	860096	मौहम्मद आरिफ	श्री अख्तरहसन	,,	,,	,,	084	,,
8.	411	860094	मनोजकुमार रावत	श्री सेवाराम	,,	,,	,,	085	,,
9.	413	860033	पंकज वर्मा	श्री के० के० वर्मा	,,	,,	,,	086	,,
10.	415	860007	पवनकुमार	श्री कृष्णगोपाल	,,	,,	,,	087	,,
11.	416	860092	राजेशकुमार सुई	श्री श्यामलाल सुई	,,	,,	,,	088	,,
12.	418	840013	सन्दीपकुमार	श्री हरबंशलाल बाली	,,	,,	,,	089	,,
13.	419	860088	संजीवकुमार	श्री एन० के० त्यागी	,,	,,	,,	090	,,

क्र.सं.	अनु०	प.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं.	श्रेणी
14.	420	860091	संजयराज	श्री बी० राज	बी.एस-सी.	रसायनशा., वनस्पतिवि., जीवविज्ञान	गु.कां.वि.वि.	091	द्वितीय
15.	422	860144	त्रिभुवनसिंह	श्री राजपालसिंह	"	"	"	092	"
16.	423	860089	विजयकुमार	श्री श्यामसुन्दरलाल	"	"	"	093	"
17.	424	860087	विवेककुमार	श्री यशपालसिंह	"	"	"	094	"

दीक्षान्त-समारोह १६८६ पर एम० ए०/एम० एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओ की सूची

क्र.सं	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र प.सं	श्रेणी
1.	655	820125	भोपालसिंह	बाबूराम	एम० ए०	वैदिक साहित्य	गु.कां.वि.वि.	890001	प्रथम
2.	657	860218	वैराग्यस्वरूप	मुक्तस्वरूप	,,	,,	,,	02	द्वितीय
3.	658	850257	नरेश	पासीराम	,,	,,	,,	03	प्रथम
4.	661	860234	प्रकाशस्वरूप	स्वामी परमानन्द	,,	दर्शन शा.	,,	04	द्वितीय
5.	663	860116	तेजपालसिंह	बलजीतसिंह	,,	,,	,,	05	प्रथम
6.	664	86C021	ईश्वरसिंह भारद्वाज	हीरालाल भारद्वाज	,,	,,	,,	06	,,
7.	665	850172	विपिनकुमार	कृष्णकुमार	,,	,,	,,	07	द्वितीय
8.	666	860242	अजयकुमार	ओमप्रकाश	,,	संस्कृत	,,	08	,,
9.	667	840076	अरविन्दकुमार	महेन्द्र सिंह	,,	,,	,,	09	,,
10.	668	860212	हीराबल्लभ बेलवाल	केशवदत्त बेलवाल	,,	,,	,,	010	,,
11.	669	860221	कृष्णावतार	काशीराम	,,	,,	,,	011	प्रथम
12.	671	860122	सोमपाल	रघुवीरसिंह	,,	,,	,,	012	,,
13.	672	840072	तेजनारायणसिंह	लंगूरसिंह	,,	,,	,,	013	द्वितीय
14.	673	860198	अजयकुमार	वेदपालसिंह	,,	,,	,,	014	प्रथम
15.	674	860217	युधिष्ठिर उप्रेती	पशुपतिनाथ उप्रेती	,,	,,	,,	015	,,
16,	675	860044	कु० अनुपमा शर्मा	आनन्दप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	016	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
17	676	830017	गरिमादेवी	सत्यपाल शर्मा	एम० ए०	संस्कृत	गु.कां.वि.वि.	890017	द्वितीय
18.	678	870205	कमलेश डागर	हरिसिंह	,,	,,	,,	018	,,
19.	679	860169	कृष्णा	रणधीरसिंह	,,	,,	,,	019	,,
20.	680	830120	लीला	बोधेन्द्रदेव वैद्य	,,	,,	,,	020	,,
21.	681	860164	नीलम दहिया	रामानन्द	,,	,,	,,	021	,,
22.	682	860023	निर्मला	बेलीराम	,,	,,	,,	022	,,
23.	683	850025	पुष्पलता	मनोहरलाल	,,	,,	,,	023	,,
24.	685	860165	राजवन्ती मान	करतारसिंह	,,	,,	,,	024	तृतीय
25.	686	860170	सुमित्रा	चन्द्रभान	,,	,,	,,	025	द्वितीय
26.	687	870100	सुशीला	हीरामसिंह	,,	,,	,,	026	,,
27.	689	860168	सुमित्रा	प्रह्लादसिंह	,,	,,	,,	027	प्रथम
28.	690	870143	कु० सरस्वती	रामस्वरूप	,,	,,	,,	028	द्वितीय
29.	691	860171	विजयलक्ष्मी गुलिया	चन्द्रभान	,,	,,	,,	029	प्रथम
30.	692	860167	विद्यावती	सूरतसिंह	,,	,,	,,	030	द्वितीय
31.	530	860146	सुशीला	टेकचन्द आर्य	,,	,,	,,	031	द्वितीय
32.	693	860240	अनिलकुमार	माताप्रसाद कटियार	,,	,,	,,	032	,,
33.	694	860226	अनुजकुमार जैन	चमनलाल जैन	,,	हिन्दी सा०	,,	033	प्रथम
34.	695	860220	गजेन्द्रप्रसाद	गिरजादत्त	,,	,,	,,	034	द्वितीय
35.	696	860235	जगदीशचन्द्र शर्मा	जयराम शर्मा	,,	,,	,,	035	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
36.	697	860213	शिवकुमारशर्मा	श्यामसुन्दर शर्मा	एम० ए०	हिन्दी सा०	गु.कां.वि.वि.	890036	तृतीय
37.	749	860215	दुर्गाप्रसाद तिवारी	शिवमूर्ति तिवारी	,,	,,	,,	037	प्रथम
38.	698	860016	प्रेमचन्द शर्मा	ब्रह्मानन्द शर्मा	,,	,,	,,	038	,,
39.	700	860231	श्रीमती अनिता वर्मा	रामसिंह पंवार	,,	,,	,,	039	द्वितीय
40.	701	860035	कु० अंजलि शर्मा	विवेकानन्द शर्मा	,,	,,	,,	040	,,
41.	703	850259	कु० मुनेशदेवी	चतरसिंह	,,	,,	,,	041	तृतीय
42.	704	860013	ममता शर्मा	रतन शर्मा	,,	,,	,,	042	द्वितीय
43.	705	860022	कु० सावित्री देवी	होसिलाप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	,,	043	,,
44.	706	860101	कु० विभा प्रसाद	उमेशचन्द्र प्रसाद	,,	,,	,,	044	,,
45.	707	850022	विनोद बाला	रिछपालसिंह	,,	,,	,,	045	प्रथम
46.	568	870208	नीलम शर्मा	एस० एन० शर्मा	,,	,,	,,	046	द्वितीय
47.	709	840075	ऋषिपाल	ओमप्रकाश	,,	प्रा.भा. इतिहास	,,	047	,,
48.	711	860115	सुखबीर	शंकरलाल	,,	,,	,,	048	प्रथम
49.	712	850220	शचेन्द्रनाथ शर्मा	सुरेन्द्रनाथ शर्मा	,,	,,	,,	049	,,
50.	713	790041	शिशुपाल	फूलसिंह	,,	,,	,,	050	द्वितीय
51.	717	860019	श्रीमती कृष्णा शर्मा	मदनगोपाल शर्मा	,,	,,	,,	051	,,
52.	719	860239	कु० रेखा	जगदेवसिंह यादव	,,	,,	,,	052	,,
53.	721	860132	श्रीमती सुनीता गुप्ता	मंगूलाल	,,	,,	,,	053	,,
54.	722	840165	कु० सीमा	देवराजसिंह	,,	,,	,,	054	,,

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र.प.सं	श्रेणी
55.	725	860126	मदनगोपाल उपाध्याय	बाबूलाल उपाध्याय	एम. ए.	मनो वि.	गु.कां.वि.वि.	890055	द्वितीय
56.	726	860026	कु० अनुराधा यादव	बलवानसिंह यादव	एम एस-सी.	,,	,,	एम एस-सी89028	प्रथम
57.	728	860125	मंजुलता सिन्हा	हीरालाल सिन्हा	,,	,,	,,	029	,,
58.	729	860015	कु० पवनलता	भोपालसिंह त्यागी	,,	,,	,,	030	,,
59.	730	860036	कु० सोनिया सेठी	अजितसिंह सेठी	,,	,,	,,	031	,,
60.	731	860127	कु० शोभा गुप्ता	राजनारायण गुप्ता	,,	,,	,,	032	,,
61.	732	860118	भुवनचन्द्र	लोलाधर उपाध्याय	एम.ए.	अंग्रेजी	,,	890056	द्वितीय
62.	733	860222	हरेन्द्रचन्द्र नाथ	बिहारीचरण नाथ	,,	,,	,,	057	प्रथम
63.	734	860117	प्रवीणकुमार	मंगलसैन जैन	,,	,,	,,	058	,,
64.	736	860219	संजयकुमार गोस्वामी	जगदीशगिरी गोस्वामी	,,	,,	,,	059	द्वितीय
65.	737	850229	चन्द्रभूषण झा	दुःखहरण झा	,,	,,	,,	060	,,
66.	738	850232	दिनेशकुमार	राधाकृष्ण शास्त्री	,,	,,	,,	061	,,
67.	739	850158	रमेशचन्द्र शर्मा	चमनलाल शर्मा	,,	,,	,,	062	,,
68.	740	850185	संजीवकुमार वर्मा	वीरेन्द्र प्रसाद वर्मा	,,	,,	,,	063	,,
69.	741	860232	कु० अर्चना	महेशचन्द्र	,,	,,	,,	064	,,
70.	743	850170	रतिन्द्रकौर सिद्धू	बलवन्तसिंह सिद्धू	,,	,,	,,	065	,,
71.	745	860099	शिखा सरन	योगेश्वर सरन	,,	,,	,,	066	,,
72.	747	850027	संगीता दत्ता	सुदर्शन दत्ता	,,	,,	,,	067	,,
73.	748	850245	उमादेवी अग्रवाल	कृष्ण औतार	,,	,,	,,	068	,,

	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम श्री	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	प्र प.सं.	श्रेणी
74.	764	820074	आदेशकुमार	श्यामलाल	एम.एस-सी.	गणित	गु.कां.वि वि.	043	द्वितीय
75.	765	820073	आदित्यकुमार चौहान	केहरसिंह चौहान	,,	,,	,,	044	,,
76.	767	810083	दीपक श्रीवास्तव	अखिलेश्वरप्रसादश्रीवास्तव	,,	,,	,,	045	प्रथम
77	769	860097	कु० मीनाक्षी भटनागर	आर०एस० भटनागर	,,	,,	,,	046	,,
78.	770	850211	कु० सरिता रानी	विजयेन्द्रकुमार	एम.ए.	,,	,,	890069	,,
79.	761	830044	अतुलकुमार गुप्ता	सुरेशकुमार गुप्ता	एम.एस-सी.	,,	,,	047	,,
80.	766	830024	संदीप भटनागर	निरंकारस्वरूप भटनागर	,,	,,	,,	033	,,
81.	1118	830091	अभयकुमार	भगवानदास	,,	माइक्रोबायलोजी	,,	034	,,
							Session—(1985-86) Prev. Final completed in June & Aug. 88		
82.	1119	830090	अनिलकुमार	रणधीरसिंह	,,	,,	,,	035	,,
83.	1120	850209	अनिलकुमार पूनिया	विजयसिंह	,,	,,	,,	036	,,
84.	1121	830071	राकेश बहुगुणा	जीतराम बहुगुणा	,,	,,	,,	037	,,

———

ओ३म्

९०वाँ

वार्षिक विवरण

१९८९-९०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

डा० वीरेन्द्र अरोड़ा

कुलसचिव,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

मुद्रक :

जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान पदाधिकारी

परिद्रष्टा	—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
कुलपति	—श्री सुभाष विद्यालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
आचार्य एवं उप-कुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्राचार्य, विज्ञान महाविद्यालय	—प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्ताधिकारी	—डा० जयदेव वेदालंकार
निदेशक, पुरातत्त्व संग्रहालय	—डा० श्यामनारायण सिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष	—डा० जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी राष्ट्रीय शिक्षणसंस्था है। इसकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आज से ९० वर्ष पूर्व स्वाधीनता आन्दोलन में चरित्रवान जुझारू सिपाही पैदा करने तथा प्राचीन ऋषियों के ज्ञान-विज्ञान और वैदिक संस्कृति को पुन: स्थापित करने के लिए की थी। तब से लेकर आज तक इस विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सेवाकार्यों की एक विस्तृत अखण्ड परम्परा रही है और यहाँ के आचार्यों तथा स्नातकों ने अपने-अपने क्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

५ मई १९९० को विश्वविद्यालय के नए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने कार्यभार ग्रहण किया। श्री विद्यालंकार गुरुकुल के लब्धप्रतिष्ठित स्नातक हैं तथा दिल्ली प्रशासन, रेडियो, पत्रकारिता और सर्वोच्च न्यायालय में वकालत के कार्यों से जुड़े रहे हैं। विश्वविद्यालय की कठिनाइयों और समस्याओं को समझने और उनके निराकरण करने में वह अत्यन्त दक्ष हैं। पिछले वर्षों से विश्वविद्यालय के लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षकों के स्वीकृत पदों तथा अवकाश ग्रहण करने के कारण हुए रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ करने तथा पदों की पूर्ति करने पर आयोग ने प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। सातवीं पंचवर्षीय योजना में विश्वविद्यालय के छात्रावास, पुस्तकालय, कैन्टीन और महाविद्यालय भवनों आदि आवश्यक कार्यों के लिए लगभग ४५ लाख रु० की राशि स्वीकृत की गई थी। इस राशि में किसी भी विकासकार्य के लिए आर्थिक अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पिछले दो से भी अधिक वर्षों में नहीं दिया था। कुलपति महोदय ने अपने पद का कार्यभार ग्रहण करने पर सबसे पहले इस समस्या पर ध्यान दिया और प्रसन्नता की बात है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्वीकृत रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ करने तथा भवनों के निर्माण के लिए धन उपलब्ध कराने की स्वीकृति दे दी है।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए अनुदान आयोग ने श्रद्धानन्द शोध संस्थान की बृहत् योजना के अन्तर्गत लगभग १ करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। यह राशि सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्वीकृत राशि से अलग होगी। इस केन्द्र के अन्तर्गत वैदिक साहित्य, भाषा विज्ञान, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के अध्ययन, अनुसंधान और प्रकाशन की व्यवस्था होगी। योग का क्रियात्मक तथा अनुसंधानात्मक अध्ययन कराया जाएगा तथा पुराविद्याओं, प्राचीन भारतीय इतिहास,

संस्कृति एवं पुरातत्व के अद्यतन तथा अधुनातन आधार पर पठन-पाठन की व्यवस्था सुलभ होगी। हिमालय की प्राकृतिक सम्पदा की सुरक्षा, गंगा प्रदूषण नियंत्रण, पर्यावरण अनुसन्धान, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का जनजीवन से सहकार तथा ग्रामीण क्षेत्र के परिविस्तार का कार्यक्रम भी विश्वविद्यालय इसी योजना के अन्तर्गत करेगा। ये कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्यों, आदर्शों, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार कार्यक्रमों तथा भावात्मक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जागरण की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने यह भी सूचित किया है कि प्रौढ़ शिक्षा, ग्राम विकास, पर्यावरण अनुसन्धान, स्वास्थ्यशिक्षा तथा खेल-खूद से सम्बन्धित कार्यक्रमों के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना में उक्त राशि के अतिरिक्त अनुदान मिलेगा। विश्वविद्यालय के समुचित और समग्र विकास की दिशा में यह एक सराहनीय क़दम है।

गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली का यह प्रभाव है कि इस समय विश्वविद्यालय में भारत और भारत से बाहर के विदेशी छात्र भी शिक्षाध्ययनरत हैं। इनमें मारिशस के विरजानन्द उमा, फीजी के राजेश्वरप्रसाद, दक्षिण अफ्रीका के राधेसिंह तथा सूरीनाम के आनन्दकुमार विरजा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन्डोनेशिया से भी दो छात्र शोध-कार्यार्थ गुरुकुल आए हैं।

विश्वविद्यालय में जहाँ वेद, दर्शन, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर, वनस्पति विज्ञान, प्राणीविज्ञान, माइक्रोबाइलोजी, भौतिकी, गणित तथा रसायन जैसे विषय स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़े-पढ़ाए जा रहे हैं, वहीं संस्कृत, अंग्रेजी तथा योग के प्रशिक्षणार्थ दक्षतापाठ्यचर्या और डिप्लोमा भी चल रहे हैं। कार्माशियल मैथड्स ऑव कैमिकल एनालेसिस जैसे सफल व्यवसायोन्मुख पाठ्यचर्याएँ भी चल रही हैं।

इस वर्ष के उल्लेखनीय कार्यक्रमों में दर्शन विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सगोष्ठी तथा पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति जन्मशती समारोह रहे हैं। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महा-महिम श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी गुरुकुल पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। ११ अगस्त को विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह हुआ। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा कार्य परिषद् और शिष्ट परिषद् के संमान्य सदस्य भी उपस्थित हुए। वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, परिद्रष्टा गुरुकुल कांगड़ी ने आशीर्वाद दिया। स्नातकों को दीक्षा-भाषण माननीय श्री चीमनभाई मेहता, शिक्षा राज्यमंत्री भारत सरकार ने दिया। इस अवसर पर श्री मेहता, डा० विजयेन्द्र स्नातक तथा डा० इन्द्रसेन जेतली को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानदउपादि विद्यामार्तण्ड से अलंकृत किया गया। वेद, संस्कृत, अंग्रेजी तथा हिन्दी साहित्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक प्रदान किए गए।

विश्वविद्यालय के विद्वान शोध-संगोष्ठियों में भाग लेने के लिए देश-विदेश जाते रहते हैं। इस सत्र में डा० एस० एल० सिंह, प्रो० गणित विभाग, फ्रांस; डा० रजनीश दत्त कौशिक, रसायन विभाग, कनाडा और फ्रांस; डा० बी० डी० जोशी, प्रो० जन्तुविज्ञान, फिनलैंड और फ्रांस तथा डा० पुरुषोत्तम कौशिक बनस्पति विभाग, इंग्लैंड गए।

विश्वविद्यालय के सभी विभागों में पठन-पाठन, लेखन, अनुसन्धान का कार्य सुचारू रूप से चला। इन सबका विस्तृत विवरण यथास्थान देखा जा सकता है।

प्रस्तुत प्रगति विवरण विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों, घटनाओं और परीक्षा-परिणाम, आय-व्यय तथा उन सभी सूचनाओं से पूर्ण है जिनकी अपेक्षा विश्वविद्यालय से की जाती है। श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय परिद्रष्टा जी, माननीय कुलपति जी तथा सभी विभागों के अध्यक्षों तथा सहयोगी महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने विश्वविद्यालय को प्रगति की ओर उन्मुख करने में क्रमशः मुझे प्रेरणा, आशीर्वाद, सहयोग दिया।

अन्त में, मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली; हरयाणा, पंजाब एवं दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारूरूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते रहे हैं।

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी का दीक्षान्त समारोह ।। अगस्त 90 को सम्पन्न हुआ। मंच पर बाएँ से श्री सोमपाल सांसद्, श्री स्वामी ओमानन्द जी, आचार्य प्रियव्रत जी परिद्रष्टा, श्री स्वामी आनन्द बोध जी, प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति, श्री चिमन भाई मेहता, शिक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार, श्री सुभाष विद्यालंकार कुलपति, डा० विजयेन्द्र स्नातक तथा प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एवं उपकुलपति कुलवन्दना करते हुए।
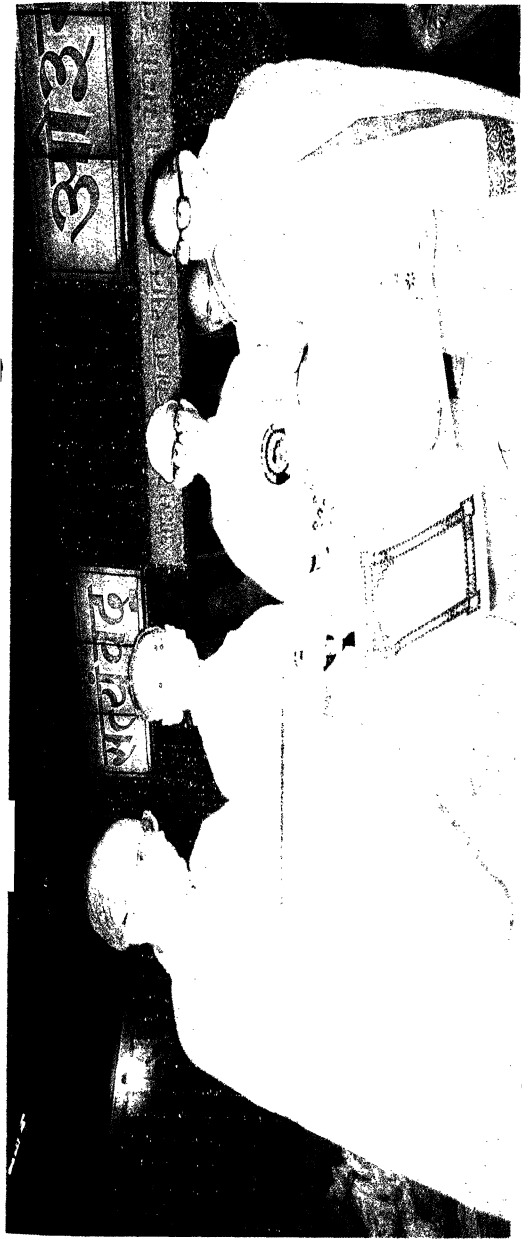
गुरुकुल के दीक्षान्त अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री चिमनभाई मेहता, शिक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार को विद्यामार्तण्ड की मानद् उपाधि प्रदान की गई। पूजोपाधि तथा अभिनन्दन-पत्र प्रदान करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार तथा कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह। कुल सचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा कुलपति जी के साथ खड़े हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक को विद्यामार्तण्ड की मानद् उपाधि प्रदान करते हुए कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार। कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह प्रसन्न मुद्रा में कुलपति और डा० स्नातक के साथ खड़े हैं।
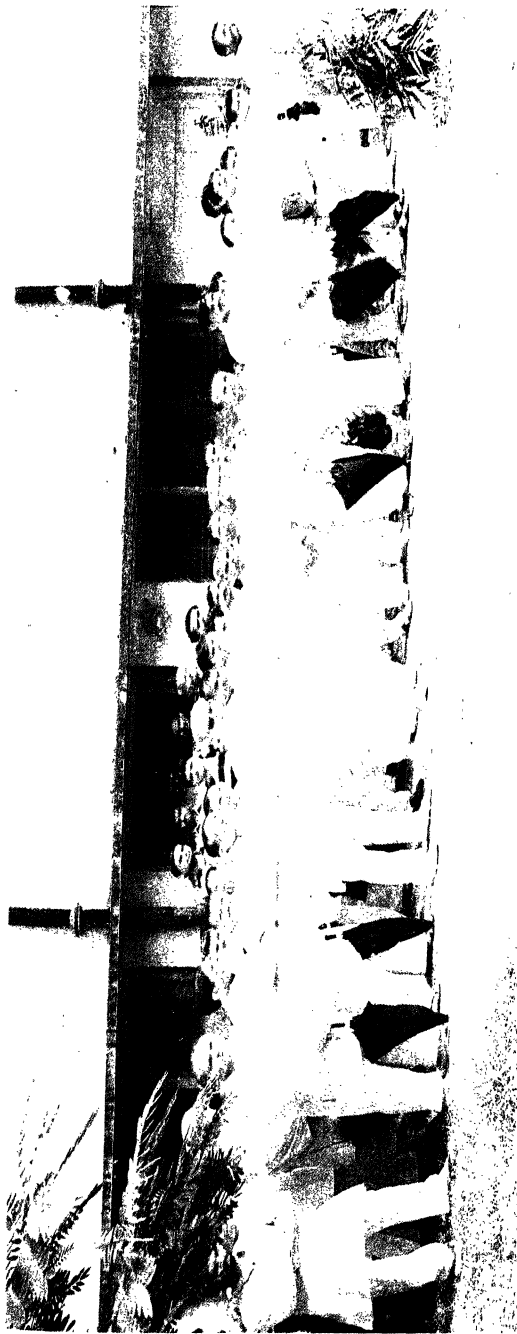
दीक्षान्त समारोह के पूर्वांग कुलपताका-आरोहण के अवसर पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का एक समूह चित्र। यहीं से शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई।

दीक्षान्त के अवसर पर उपाधि ग्रहण के लिए खड़े हुए नवस्नातक एवं नवस्नातिकाएँ।

दीक्षान्त समारोह में उपस्थित नगर के नागरिक, बुद्धिजीवी, पत्रकार, प्राध्यापक तथा महिलाएँ दत्तचित्त होकर दीक्षान्त भाषण सुनते हुए।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-ललिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नए पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८९ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन: धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उसके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अत: गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। नि:सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्त्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इसमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों

ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देख नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१६२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय

२. साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१६२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अत: निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१६२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १६२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १६२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १६२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १६२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १६०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १६३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १६४२ में स्वास्थ्य

खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने, पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने क पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम० ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। श्री हूजा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८९ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संबड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहाँ स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम०ए० और पी-एच०डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम० ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति

भौतिकी, रसायन, वनस्पतिशास्त्र, जन्तुविज्ञान, माइक्रोबायोलोजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलोजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायनविज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू० जी० सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसके निकट-भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों—परिद्रष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत पाँच वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला, एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत छः वर्षों से चल रहा है। तीन वर्षों से अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र' पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हुए। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

——

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीगण, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय शिक्षा मंत्री श्री मेहता जी, सज्जनों, बहनों और नव-दीक्षित स्नातकों !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के 90वें दीक्षान्त समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। आज से 41 वर्ष पूर्व जब मैं इस विश्वविद्यालय का स्नातक बना था तब मेरे कानों में 7 अक्टूबर, 1913 को दिल्ली भारतीय आर्य कुमार सम्मेलन में दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का यह उद्‌बोधन गूंज रहा था—"सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष आत्मा, सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्"-अर्थात् यह आत्मा सत्य से मिलता है, तप से मिलता है, तप का पालन सम्यक् ज्ञान के बिना नहीं होता और सम्यक् ज्ञान ब्रह्मचर्य अर्थात् गुरु, शास्त्र तथा परमेश्वर की कृपा और इन्द्रिय निग्रह बिना दृढ़ नहीं होता।

प्रिय ब्रह्मचारियों !

मेरे अग्रज स्नातकों ने ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के लिए मर-मिटने वाले महापुरुषों के व्रत का निर्वाह करते हुए कुलमाता के गौरव की वृद्धि की है। पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, पण्डित विश्वनाथ, स्वामी समर्पणानन्द, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, पण्डित जयचन्द्र, डा० सत्यकेतु, पण्डित रामनाथ तथा पण्डित चन्द्रगुप्त जैसे अनेक स्नातकों ने साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन और राष्ट्रसेवा के क्षेत्रों में जो कार्य किये हैं, उनसे देश-विदेश में गुरुकुल का यश और गौरव बढ़ा है। मेरी इच्छा है कि आप इस परम्परा को आगे बढ़ाएँ तथा कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को चरितार्थ करें। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से आप अपने आस-पास ऐसा वातावरण बनाएँ जिससे समाज और देश का ध्यान आपकी ओर जाए। स्मरण रखो, "सत्येनोत्तभिता पृथिवि" यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना समाज का कोई नियम अनुकरणीय नहीं हो सकता। यदि सत्य आपके जीवन का अवलम्बन है तो मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त हूँ। यही सत्यसंकल्प हमारे प्रति तुम्हारी गुरुदक्षिणा होगी।

सज्जनों !

हम सौभाग्यशाली हैं कि आज सुप्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद्, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय श्री चीमन भाई जी मेहता, शिक्षा राज्यमंत्री, भारत सरकार, दीक्षान्त भाषण देने के लिए गुरुकुल पधारे हैं। श्री मेहता पिछले पचास वर्षों से समाजसेवा का कार्य कर रहे हैं। उनके जीवन पर महात्मा गांधी, महर्षि दयानन्द, सरदार पटेल तथा विनोबाजी का गहरा प्रभाव है। सन् 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन तथा 1955 के गोवा-दिव आन्दोलन में वह जेल गए। 1984 से आप राज्यसभा के सदस्य हैं। इससे पूर्व आप गुजरात विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं। गुजरात के श्रम, परिवहन और जेल मंत्री के रूप में आपने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। कांग्रेस संसदीय समिति, वित्त मंत्रालय, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, गुजरात इंटक किसान प्रकोष्ठ, सौराष्ट्र किसान सभा तथा गुजरात कौमी एकता समिति आदि संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य कर आपने समाजसेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान प्रतिष्ठित किये हैं। गुजराती और अंग्रेजी में दर्शन, राजनीति और अर्थशास्त्र पर तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर आपने उच्चकोटि की पुस्तकों की रचना की है। आप सफल पत्रकार भी हैं। चीन, जापान, सोवियत संघ, जर्मनी आदि अनेक देशों की आपने यात्रा की है। आज समस्त कुलवासी ऐसे मनीषी व्यक्ति को अपने बीच पाकर धन्य हैं, जो निष्ठावान्, समाजसेवी, राजनीतिशास्त्र के पंडित और भारतीय जीवनमूल्यों एवं सिद्धान्तों के पोषक हैं तथा जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। आपने गुरुकुल के विकास में रुचि लेकर इस राष्ट्रीय शिक्षा मंदिर के पुनरुद्धार का द्वार खोला है। मैं शिक्षा मंत्री जी का इस अवसर पर हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी हमारे बीच पधार कर हम सबका गौरव बढ़ाया है।

आर्य बन्धुओं !

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास की संक्षिप्त चर्चा करना संभवतः अप्रासंगिक नहीं होगा।

इस विश्वविद्यालय को पिछले दो वर्षों में अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। सातवीं पंचवर्षीय योजना में स्वीकृत विकास की राशि नहीं मिल पा रही थी और अनेक स्वीकृत रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ नहीं हो सकीं थीं। मुझे यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय की गुरुकुल के प्रति सद्भावना और सहृदयता से विश्वविद्यालय की ये कठिनाइयाँ दूर हो गईं हैं।

पिछले दिनों विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों ने विश्वविद्यालय की 8वीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श करने हेतु हमें आमंत्रित किया था। आयोग के अधिकारियों ने विचार-विनियम के दौरान स्पष्ट कहा कि गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी० सत्य नारायण रेड्डी सभामण्डप में पधारते हुए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री एस0के0 खन्ना गुरुकुल कांगड़ी पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की गतिविधियों का निरीक्षण किया तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्रों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर माननीय खन्ना जी का स्वागत करते हुए परिद्रष्टा माननीय आचार्य प्रियव्रत वेद - वाचस्पति। सम्मान समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो0 शेर सिंह ने

विश्वविद्यालय की स्थापना जिन आधारभूत उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति करने हेतु की गई है, उन्हें पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से हर प्रकार की सहायता प्रदान की जाएगी।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने आयोग के अधिकारियों को सूचित किया कि आठवीं पंचवर्षीय योजना में श्रद्धानन्द शोध संस्थान की गतिविधियों को बढ़ाने का भी प्रस्ताव है। इसके अनुसार विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन, वैदिक साहित्य की पाठ्य-पुस्तकों के लेखन, चैकोस्लाविका, सोवियत संघ और अन्य स्लाव भाषा-भाषी विद्वानों के भारतीय विद्याओं से सम्बन्धित ग्रन्थों के अनुशीलन और अनुवाद की योजनाओं पर भी कार्य किया जाएगा। उपरोक्त कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शिक्षकों के अतिरिक्त पद, पुस्तकों तथा आवश्यक उपकरणों और भवनों आदि के लिए अनुदान स्वीकृत कर दिया है।

इस वर्ष 16 से 18 नवम्बर को पहली बार इस विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है। इसमें सम्पूर्ण भारत के वैदिक तथा संस्कृत-साहित्य और भारतीय विद्याओं की विभिन्न धाराओं के लगभग तीन हज़ार विद्वानों के पधारने की सम्भावना है।

नया शिक्षासत्र 11 जुलाई, 1990 से प्रारम्भ हो चुका है। मुझे यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि विज्ञान महाविद्यालय, वेद महाविद्यालय तथा मानविकी महाविद्यालय के सभी विभागों में विद्यार्थी पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रविष्ट हुए हैं। अब विश्वविद्यालय में शिक्षा प्रतिदिन प्रात: 9-30 बजे यज्ञ और वैदिक प्रार्थना के साथ प्रारम्भ की जाती है।

विश्वविद्यालय जहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, संस्कृति, पुरातत्व और प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान जैसे विषयों के उच्च अध्ययन और अनुसंधान का कार्य कर रहा है, वहाँ कम्प्यूटर, वनस्पति विज्ञान, माइक्रोबायलोजी, भौतिकी, रसायन, जीवशास्त्र और गणित जैसे आधुनिक विषयों के अध्ययन–अनुसंधान का कार्य भी सुचारू रूप से सम्पन्न कर रहा है। यहाँ संस्कारों के प्रशिक्षण के लिए भी विशेष पाठ्यक्रम का प्रबन्ध है। अंग्रेजीदक्षता पाठ्यचर्या भी सुचारू रूप से चल रही है। योग का एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त योग प्रशिक्षण के लिए चार-चार मास के दो पाठ्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। प्रौढ़ शिक्षा, प्रसार कार्यक्रम, ग्रामसुधार, योग प्रशिक्षण, अंग्रेजी–संस्कृत दक्षता पाठ्यक्रम तथा कॉमर्शियल मैथड्स आफ कैमिकल एनालाइसिस जैसे व्यवसायोन्मुख डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण देकर विश्वविद्यालय समाज और देश की आत्मिक तथा भौतिक आवश्यकताएँ भी पूरी कर रहा है। इस शिक्षासत्र से कम्प्यूटर में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की भी व्यवस्था कर दी गई है। राष्ट्रीय सेवा योजना

और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी देश की मिट्टी से जुड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। राष्ट्रीय विकास की रचनात्मक धारा के साथ जुड़े बिना वे शास्त्रवेत्ता तो हो सकते हैं पर जीवनवेत्ता या आत्मवेत्ता नहीं।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने पिछले वर्ष जिन ग्रन्थों का प्रणयन किया, उनमें से उल्लेखनीय ग्रन्थ इस प्रकार हैं :

१—"आथर्वणिक राजनीति"—डा० भारतभूषण विद्यालंकार।
२—"बृहदारण्यकोपनिषद् : एक विवेचन"—डा० मनुदेव बन्धु।
३—"महर्षि दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य में समाज का स्वरूप"—डा० सत्यव्रत राजेश।
४—"एनिमल प्रोटेक्शन अण्डर चेंजिंग एनवाइरनमेण्ट्स"—प्रो० बी०डी० जोशी।
५—"वैदिक दर्शन"—डा० जयदेव वेदालंकार।

संस्कृत विभाग के छात्र ब्रह्मचारी हरिशंकर तथा ब्रह्मचारी जयेन्द्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आए। इसी प्रकार ब्रह्मचारी राजेश तथा ब्रह्मचारी ताराचन्द ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की भाषण प्रतियोगिता में विजय-वैजयन्ती प्राप्त की। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन तथा संस्कृत अकादमी उत्तरप्रदेश की प्रतियोगिताओं में भी वे विजयी हुए।

दर्शन विभागाध्यक्ष डा० जयदेव वेदालंकार ने इस वर्ष विभाग में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इसमें पंजाब, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कर्नाटक तथा प्रयाग विश्वविद्यालयों के दार्शनिकों ने भाग लिया।

हिन्दी पत्रकारिता के पितामह, गुरुकुल के प्रथम स्नातक और कुलपति, स्वतंत्रता सेनानी, सांसद तथा हिन्दी के उन्नायक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशति का आयोजन भी हिन्दी विभाग की ओर से हुआ। समारोह की अध्यक्षता वेदों के उद्भट् विद्वान तथा विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। हिन्दी के विश्रुत आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक, पूर्व आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'भारतीय मनीषा के प्रतीक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति" विषय पर व्याख्यान दिया। प्रह्लाद का "इन्द्र जन्मशति" विशेषांक भी विभागाध्यक्ष डा० राकेश के उद्योग से प्रकाशित हुआ।

विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षक व्याख्यान देने के लिए समय-समय पर पधारे। इनमें से श्रीमती लक्ष्मीबाई, डा० पी० अवतार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, डा० कृष्णदत्त वाजपेयी, सागर विश्वविद्यालय, डा० रामनाथ वेदालंकार, डा० रमाशंकर तिवारी, डा० वेदप्रकाश उपाध्याय, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, डा० रमाकान्त शुक्ल, डा० महेन्द्रकुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० शिवशेखर मिश्र, भू० पू० विभागाध्यक्ष लखनऊ

विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। काशी विद्यापीठ के कुलपति डा० त्रिभुवनसिंह भी विश्वविद्यालय में पधारे। विश्वविद्यालय में आयोजित संस्कृत-दिवस समारोह में भारत सरकार के संस्कृत परामर्शदाता डा० रामकृष्ण शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। हिन्दी दिवस पर आयोजित गोष्ठी में अन्य विद्वानों के अतिरिक्त डा० श्यामसुन्दर शुक्ल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपने विचार प्रस्तुत किए। फिज़ी से हिन्दी पढ़ने के लिए आए छात्र नेतराम शर्मा ने फिज़ी में हिन्दी-शिक्षण के लिए डा० विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन में पाठ्यपुस्तक लिखी।

इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त विदेशी छात्र भी अध्ययन कर रहे हैं। इनमें मारीशस के विरजानन्द उमा, फिज़ी के राजेश्वर प्रसाद, दक्षिण अफ्रीका के राधेश सिंह, सूरीनाम के आनन्दकुमार विरजा के नाम उल्लेखनीय हैं।

देश की विभिन्न प्रतियोगी-परीक्षाओं तथा प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं में भी इस विश्वविद्यालय के छात्र सफलता प्राप्त कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस विश्वविद्यालय के छात्र अखिल भारतीय एवं प्रान्तीय सेवाओं में चुने गए हैं।

इस वर्ष रुड़की विश्वविद्यालय के एम० टेक० जियोफिजिक्स पाठ्यक्रम के लिए ३०० प्रत्याशियों में से इस विश्वविद्यालय के छात्र नवनीत कुमार ने प्रथम तथा संजय उप्रेती ने सातवाँ स्थान प्राप्त किया। एक अन्य छात्र अनुराग शर्मा मर्चेन्ट नेवी में ट्रेनी नौटिकल आफीसर के रूप में चुना गया है।

पुरातत्व संग्रहालय—

गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय दर्शनीय है। सिन्धु सभ्यता से लेकर उन्नीसवीं शती तक की विभिन्न पुरातन वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं मुद्राए यहाँ संकलित हैं। इस संग्रहालय के श्रद्धानन्द कक्ष में स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल, दुर्लभ चित्र, पत्र तथा संदेश आदि सुरक्षित हैं। इस वर्ष छः हजार दर्शक यह संग्रहालय देखने आए। इस वर्ष केन्द्रीय कक्ष के उपरी भाग में मृण्मूर्ति कक्ष, सिन्धु सभ्यता वीथिका तथा केन्द्रीय कक्ष में लघुचित्र दीर्घा बढ़ाई गई।

पुस्तकालय :—

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग डेढ़ लाख पुस्तकें हैं। शोधकार्य के लिए देश-विदेश के विद्यार्थी पुस्तकालय में आते हैं। संग्रहीत वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, आर्यसमाज, समाजशास्त्र तथा हस्तलेखों से संबन्धित 7500 प्रविष्टियों की बृहद सूची प्रकाशित की गई है। पुस्तकालय

में इस वर्ष दो शक्तिशाली कम्प्यूटर टर्मिनल लगाए गए। पहले 148 पत्र-पत्रिकाएँ पाठकों के लिये मँगाई जा रही थीं, इस वर्ष इनकी संख्या बढ़कर 433 हो गई है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के 46 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में से 23 केन्द्र पुरुषों के तथा 23 केन्द्र महिलाओं के थे। इन केन्द्रों का संचालन हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदायों के क्षेत्रों, पिछड़े वर्ग के इलाकों तथा निर्बल-दलित बस्तियों में किया गया। छात्रों के मार्गदर्शन के लिये "काउन्सिलिंग सेल" की स्थापना की गई।

श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। राष्ट्रीय सेवा योजना के डा० दिनेश भट्ट ने समन्वयक डा० जयदेव वेदालंकार के निरीक्षण में दस-दिवसीय शिविर हरिपुर ग्राम में लगाया। जनसाक्षरता अभियाने, सड़क निर्माण, वृक्षारोपण तथा गाँव के निवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण इस शिविर की विशेषता रही। "वनौषधियों से स्वास्थ्य लाभ" विषय पर आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल के विद्वान डा० विनोद उपाध्याय ने ग्रामवासियों को जानकारी दी। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय छात्र सेना का प्रशिक्षण शिविर रायपुर में आयोजित किया गया।

विज्ञान महाविद्यालय में भौतिकविज्ञान, रसायन, गणित, जन्तुविज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, माइक्रोबायलोजी में अध्ययन-अध्यापन तथा शोध कार्य चल रहा है। पिछले वर्ष विज्ञान महाविद्यालय के जो प्रोफेसर अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में गये उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

१–डा० एस० एल० सिंह—गणित विभाग—फ्रान्स
२–डा० रजनीशदत्त कौशिक—रसायन विभाग—कनाड़ा और फ्रान्स
३–डा० बी० डी० जोशी—जीवविज्ञान विभाग—फिनलैण्ड और फ्रान्स
४–डा० पुरुषोत्तम कौशिक - वनस्पतिविज्ञान विभाग—इंग्लैण्ड

विज्ञान महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में अनेक शोध-योजनाओं पर भी कार्य चल रहा है।

गणित विभाग "जरनल आफ नेचुरल एण्ड फिजिकल साइन्स" शोध पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। इसके विनियम से विदेशों से १२ हजार रु० की विदेशी मुद्रा खर्च की ७ पत्रिकाएँ विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई।

विश्वविद्यालय की अन्य शोध पत्रिकाओं आर्यभटट् के सम्पादक डा० विजय शंकर, वैदिक पथ के सम्पादक डा० राधेलाल वार्ष्णेय, प्रह्लाद के सम्पादक डा० विष्णुदत्त राकेश, गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक डा० जयदेव वेदालंकार, हिमालयन जरनल आफ एन्वायरनमेंट एण्ड जूलोजी के सम्पादक डा० बी० डी० जोशी तथा प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान पत्रिका के सम्पादक डा० एस० एल० सिंह को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय सेवा योजना, क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया। श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित कार्टून प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक संध्या आकर्षण के केन्द्र बने रहे।

प्रिय ब्रह्मचारियों!

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वर्तमान परिस्थितियों में नितान्त उपयोगी है। चरित्रनिर्माण, राष्ट्रीय अखण्डता, एकता, धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता, समाजसेवा, सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक न्याय, समानता आत्मानुशासन तथा मानव जाति की सेवा इसका लक्ष्य है। मैं चाहता हूँ कि नव-दीक्षित स्नातक स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाएँ तथा चरित्र, सत्याचरण और आत्मानुशासन की शक्ति लेकर जीवन की चुनौतियाँ स्वीकार करें। मैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको सदैव सफलता मिले।

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों, ब्रह्मचारियों, अभिभावकों तथा आर्यजनों का भी मैं साधुवाद करता हूँ। माननीय कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी तथा सुमान्य परिद्रष्टा आचार्य पण्डित प्रियव्रत जी का भी मैं कृतज्ञ हूँ। मुझे विश्वास है कि इन महानुभावों के मार्गदर्शन और संरक्षण में विश्वविद्यालय का गरिमापूर्ण अतीत लौट आयेगा। इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर 102 स्नातकों को अलंकार, पी-एच० डी०, एम० एस-सी०, एम० ए० तथा बी० एस-सी० की उपाधियाँ प्रदान की जा रही हैं।

प्रभु से प्रार्थना है—

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः॥

—सुभाष विद्यालंकार
कुलपति

11 अगस्त, 1990

दीक्षान्त भाषण

द्वारा

माननीय श्री चीमन भाई मेहता

शिक्षा राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

पूज्य संन्यासीवृन्द, माननीय कुलाधिपति जी, कुलपति जी, आचार्यगण, ब्रह्मचारियों, आर्य-बन्धुओं तथा बहनों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस साधना-स्थली में आकर मैं गौरवमिश्रित हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। देशप्रेम, बलिदान, आत्मत्याग, संस्कृतिगत निष्ठा तथा मूल्य आधारित जीवन चेतना को विकसित करने में उन्होंने सारा जीवन लगा दिया। मैं सर्वप्रथम आचार्यप्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति विनम्रता के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इस दीक्षा-मण्डप में विराजमान प्रत्येक व्यक्ति नवस्नातकों के साथ इस अवसर पर उन्हें श्रद्धासहित स्मरण कर रहा होगा।

भाइयों !

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब भारतीय पुनर्जागरण और सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन शुरू हुए तब महर्षि दयानन्द ने आदर्श समाज व्यवस्था, राज्य व्यवस्था और परिपूर्ण शिक्षा नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की। सर्वसाधारण जनता को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उस समय नहीं था। परिणामस्वरूप बहुसंख्यक जनता निरक्षर रह गई। अज्ञान, शोषण और रूढ़ियों में जकड़ी जनता कैसे खुशहाल रह सकती थी ? महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने तत्कालीन शिक्षण-संस्थाओं के प्रतिरोध में अपनी शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित कीं तथा सभी वर्णों, वर्गों, जातियों और उप-जातियों के बालक-बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के, समानरूप से अध्ययन-अध्यापन का अवसर प्रदान किया। दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य था कि शिक्षा सबके लिये अनिवार्य हो। कोई भी वर्ग विद्या से वंचित न रहे। स्त्रीशिक्षा और समाज में स्त्रियों की समान तथा आदरपूर्ण स्थिति का समर्थन भी स्वामी जी ने ही किया। आधुनिक संवेदना से पूर्ण शिक्षा की गंगा, दयानन्द के कमण्डल से ही इस देश में प्रवाहित हुई। उनका सतत् प्रयत्न रहा कि अध्ययन के दौरान जाति या कुलसूचक कोई चिन्ह

विद्यार्थी के नाम के साथ न रहे। धनी-निर्धन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, छूत-अछूत, ऊँच-नीच, समान-असमान तथा अपने-पराये का कोई भेद न रहे। आज शिक्षण-संस्थाओं में बढ़ते अनाचार, अराजकता और लोभ, देश की नई पीढ़ी को जिस दिशा में ढकेल रहे हैं, उससे उबरने के लिये स्वामी दयानन्द, गांधी, रवीन्द्रनाथ और श्री अरविन्द के शिक्षादर्शन को स्वीकार करना जरूरी है। लोग समझते हैं कि दयानन्द और गांधी की जरूरत हमें आज़ादी के दौरान थी, पर सच्चाई यह है कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद हमें उनकी और जरूरत है। साधारण पाठशालाओं और पब्लिक स्कूलों के बीच दौड़ते शिक्षार्थियों को देख कर लगता है कि शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है। हमने तय किया है कि शिक्षा सबको समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिये। आज तकनीकी शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में लाखों रुपया देकर सामान्य प्रतिभा का छात्र भी प्रवेश पा जाता है और निर्धन व्यक्ति प्रतिभाशाली होकर भी उससे वंचित रह जाता है। प्रतिभा के साथ न्याय होना चाहिये और सबको समान अवसर मिलना चाहिये। आज देश में अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता है। शिक्षा, रोजगार और विकास के अवसर सबको दिए जाएँ, इसके लिए हमारी सरकार कृतसंकल्प है। आज विश्वविद्यालयों को मानविक और तकनीकी ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाना होगा। देशव्यापी साक्षरता के अभियान के साथ विस्तार की योजनाओं को लागू करना विश्वविद्यालयों का कर्त्तव्य है। पुस्तकीय शिक्षा तब तक अपूर्ण है, जब तक हम ज्ञान-विज्ञान का लाभ जन-साधारण तक नहीं पहुँचाते।

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। अतः विश्वविद्यालयों का कार्य एक निश्चित अवधि में विद्यार्थियों को उपाधि बाँट देना ही नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य तो व्यक्ति में ज्ञानार्जन की तीव्र लालसा जगा देना है। वह विश्वविद्यालय में हो या विश्वविद्यालय से बाहर, उसे समाज की नित-नवीन समस्याओं से परिचित होना है और उनका समाधान ढूँढना है। स्वामी दयानन्द ने ससार के शिक्षाविदों के सामने सतत् शिक्षा का आदर्श रखा था। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी लक्ष्य को आगे बढ़ाया। यदि माता-पिता शिक्षित, चरित्रवान और धर्मनिष्ठ हैं तो संतान में भी इन संस्कारों का आरोपण हो सकेगा। माता-पिता के पश्चात् शिक्षक उसके निर्माण में योग देता है। प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्व-विद्यालयों तक शिक्षा की धुरी चरित्र निर्माण होनी चाहिये। हमें रोजगारोन्मुख शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन देना है पर यह कार्य केवल सरकार नहीं कर सकती। विद्यार्थी में तीव्र ज्ञान-पिपासा, अन्वेषण, सहिष्णुता, तप, विद्यार्जन तथा राष्ट्र और समाजसेवा की भावना जाग्रत करना है। इसकी उपलब्धि में शिक्षक समुदाय की अहम भूमिका है और उन्हें इस भूमिका को देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि में पूरा करना होगा। आज संसार को ऐसे ही विद्यार्थी और आचार्य चाहिए।

गुरुकुल, दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज, संस्कृत पाठशालाओं, उपदेशक विद्यालयों,

कन्या महाविद्यालयों, बालमन्दिरों तथा कृषि, शिल्प, कला केन्द्रों के माध्यम से शिक्षा के उन्नत रूप का प्रचार किया तथा सभी प्रकार के पाठ्यक्रम लागू किये। गुरुकुल में संस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन इतिहास तथा साहित्य के साथ यद्यपि विज्ञान के विषय भी पढ़ाये जाते हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आज से ७०-८० वर्ष पूर्व यहाँ ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का माध्यम हिन्दी था और हिन्दी में भौतिकविज्ञान, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र तथा विकासवाद पर पुस्तकें भी लिखी गई थीं। यह बड़ी बात है और आज चुनौती भी, जो कहते हैं आधुनिक विज्ञान मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में नहीं पढ़ाया जा सकता। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया और उस समय इस दिशा में पहल की, जब वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण भी नहीं हुआ था। अंग्रेजी भाषा सम्पन्न है, उसका पठन-पाठन अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। पर यह मोह हमारी चेतना को जकड़े रहे यह आवश्यक नहीं है। हमें देशी भाषाओं की शब्द-सामर्थ्य पर भरोसा रखना चाहिये।

विनोबा जी ने एक लिपि की बात की थी। यदि ऐसा हो जाए तो सारी भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे के निकट हो जाएँ और हम भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंध जाएँ। भाषा, धर्म, जाति, रंग और प्रान्त की संकीर्ण भावना से ऊँचा उठकर ही हम देश को मजबूत बना सकते हैं।

नवस्नातकगण !

आप जीवनक्षेत्र में प्रवेश करने जा रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप राष्ट्र के कर्त्तव्यशील नागरिक बनेंगे। मैं चाहता हूँ कि आपका जीवन देश और समाज की चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करे और आप सच्चे मन से उनका सक्रिय निदान खोजकर मानवमात्र की सेवा करें। आचार्यप्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था : "लेना तो सभी संसार जानता है। तुम इतने योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ, हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बंद न होने दो। जो सरोवर भरता है, वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।"

इन शब्दों के साथ मैं आपके सुखद, समृद्ध और उज्ज्वल जीवन की मंगल-कामना करता हूँ तथा आपके कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी तथा कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे आपके बीच उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया। मेरी कामना है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का संगम हो। अपने मूल स्वरूप की रक्षा करते हुए यह क्षेत्र के अभाव की पूर्ति में सहायक हो तथा यहाँ के स्नातक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक क्षेत्र में अग्रणी बनें। इस मंगलाशा के साथ आप सभी के प्रति हार्दिक शुभ-कामनाएँ।

11 अगस्त, 1990 —चीमन भाई मेहता

वेद और मानविकी महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२	२ (१ पद रिक्त)	५
संस्कृत साहित्य	१ (रिक्त)	२	२ (१ पद रिक्त)	५

२—मानविकी महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
हिन्दी साहित्य	१	१ (रिक्त)	३	५
दर्शनशास्त्र	१ (रिक्त)	१	३	५
अंग्रेजी साहित्य	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२ (१ पद रिक्त)	१	२ (१ पद रिक्त)	५

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल	लिपिक
(२) „ बलवीरसिंह	भृत्य
(३) „ रतनलाल	„
(४) „ रामसुमत	माली

४—मानविकी महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर वर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज	योग प्रशिक्षक
(२) „ लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक
(३) „ हंसराज जोशी	लिपिक
(४) „ अशोक कुमार डे	„

(५) श्री कुँवर सिंह — भृत्य
(६) „ हरेन्द्रसिंह — „
(७) „ प्रेमसिंह — „
(८) „ रामपद राय — „
(९) „ सन्तोषकुमार राय — फील्ड अटैन्डेन्ट
(१०) „ मानसिंह — चौकीदार
(११) „ जग्गन — सफाई कर्मचारी

५—शिक्षासत्र दिनांक १९-७-८९ से आरम्भ हुआ।

६—अलंकार तथा विद्याविनोद में इस वर्ष छात्रसंख्या इस प्रकार रही:—

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	——	०२	——	०२
विद्याविनोद	मानविकी वर्ग	१२	०९	——	२१
वेदालंकार	——	०३	०१	०१	०५
विद्यालंकार	——	१८	१५	०९	४२

७—सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक सोमवार को प्रातः साप्ताहिक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ आदि का आयोजन किया जाता रहा, जिसमें सभी शिक्षक, छात्र तथा कर्मचारी सम्मिलित हुए।

८—दिनांक २-९-८९ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में "संस्कृत-दिवस" समारोह-पूर्वक मनाया गया।

९—दिनांक १५-९-८९ को श्रीमती लक्ष्मीबाई धर्मपत्नी श्री पी० शिवशंकर, तत्कालीन मंत्री मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार का "RELEVANCE OF GITA" विषय पर भाषण हुआ।

१०—दिनांक २२-९-८९ को श्रद्धानन्द व्याख्यानमाला के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डा० पी० अवतार का "कम्प्यूटर वरदान अथवा अभिशाप" विषय पर व्याख्यान हुआ।

११—दिनांक ६-११-८९ को भूतपूर्व टैगोर प्रोफेसर के०डी० वाजपेयी का विशेष व्याख्यान हुआ।

१२—दिनांक १६-१२-८६ से १८-१२-८६ तक दर्शन-विभाग के तत्वावधान में "अखिल भारतीय दर्शन सम्मेलन" एवं "उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन" आयोजित किया गया।

१३—दिनांक २३-१२-८६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस के अवसर पर प्रात: श्रद्धानन्द द्वार से शोभा-यात्रा निकाली गई। यज्ञोपरान्त श्रद्धान्जलि-सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८६ से २६-१२-८६ तक अखिल भारतीय संस्कृत गीत प्रतियोगिता, त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता, योग, शरीर सौष्ठव, कबड्डी, वालीबाल आदि प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं जिनमें विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया।

१४—दिनांक ७-२-९० को डा० रमाशंकर तिवारी का "महाकवि कालिदास" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुआ।

१५—दिनांक ८-३-९० को डा० रामनाथ वेदालंकार, पूर्व आचार्य एवं उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का "कालिदास के काव्यों में प्रतिबिम्बित वैदिक संस्कृति" विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ।

१६—दिनांक १३-३-९० को पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशती पर श्रद्धान्जलि व्याख्यान संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डा० विजयेन्द्र स्नातक, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, डा० रामनाथ वेदालंकार, तथा डा० धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के व्याख्यान हुए।

१७—इस वर्ष संस्कृत विभाग के दो छात्र ब्र० हरिशंकर तथा ब्र० जयेन्द्र, कुरुक्षेत्र वि०वि० में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में भाग लेने गये तथा **प्रथम स्थान प्राप्त** किया। इसी विभाग के दो अन्य छात्रों, ब्र० राजेशकुमार तथा ब्र० ताराचन्द ने पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित भाषण-प्रतियोगिता में भाग लिया तथा **प्रथम स्थान प्राप्त** किया।

१८—दिनांक २५-४-९० से वेद एवं मानविकी महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ प्रारम्भ हुईं तथा १२-५-९० को विधिवत् सम्पन्न हुईं।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग में वैसे तो आज से ६० वर्ष पूर्व सन् १६०० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ ही अध्ययन शुरू हो गया था किन्तु सन् १६६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस विश्वविद्यालय को समकक्ष विश्व-विद्यालय की मान्यता प्रदान करने के बाद यह विभाग वर्तमान स्वरूप में आया। इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० श्रीपाद दामोदार सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति एवं पं० रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वान कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	योग
एम० ए०	वैदिक साहित्य	०५	०२	——	०७
अलंकार	,,	२१	१६	१०	४७
विद्याविनोद	,,	१२	११	—	२३
				योग	७७

विभागीय उपाध्याय

१-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार – प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति

२-डा० भारतभूषण विद्यालंकार – वेदाचार्य, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान) पी-एच०डी० —रीडर

३-डा० सत्यव्रत राजेश – सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, वेदशिरोमणि, एम०ए०, पी-एच०डी० —रीडर

४-डा० मनुदेव बन्धु—एम०ए० (वेद, हिन्दी, संस्कृत), व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी० —प्रवक्ता

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य

१-वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, अध्यक्ष वेद विभाग ने वर्ष ८९-९० में आचार्य एवं कुलपति, मुख्याधिष्ठाता तथा अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग के अतिरिक्त पदों पर भी

कार्य किया। वैदिक रश्मियाँ भाग ४ तथा केनोपनिषद् उनके नवीन ग्रन्थ हैं। आर्य संदेश, वैदिक पथ तथा प्रह्लाद आदि पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

विश्वविद्यालयीय कार्यों के अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों तथा आर्यसमाजों द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भी भाग लिया है। ८ मई ८९ को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में "वेद मानवजीवन के शाश्वत प्रेरणास्रोत" विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। १५, १६ जुलाई को मथुरा परिष्कारिणी नगर में वैदिक संस्कृति और वैदिक आदर्श जीवन पर व्याख्यान हुए। ४ अगस्त को डी०ए०वी० कालेज मुजफ्फरनगर का विद्यासत्रारंभ-उद्घाटन भाषण दिया। १६ मार्च को मयराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा विशेष व्याख्यान दिया। २३ जनवरी को मुरादाबाद में आयोजित दर्शन परिषद् के अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में भाषण दिया। अप्रैल में कन्हैयालाल डी०ए०वी० कालेज रुड़की के बी०एड० विभाग के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा व्याख्यान दिया। प्रभात आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ में आयोजित पर्यावरण संगोष्ठी में व्याख्यान दिया। टंकारा तथा जयपुर में आयोजित आर्यसमाज के अधिवेशनों में वेद पर व्याख्यान दिए। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठकों में भाग लिया।

अब तक ५ शोधार्थियों को आपके निर्देशन में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है तथा शेष कार्य कर रहे हैं।

२-डा० भारतभूषण विद्यालंकार

शैक्षिक योग्यता–विद्यालंकार, एम०ए० (संस्कृत, मनोविज्ञान), वेदाचार्य, पी-एच०डी०

शैक्षणिक अनुभव –

स्नातक स्तर – २४ वर्ष
स्नातकोत्तर – २४ वर्ष

निर्देशन– चार छात्र पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। दो छात्रों ने एम०ए० के शोध प्रबन्ध लिखे। अनेक छात्र शोध-निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं।

विशेष– अनेक विदेशी छात्र पी-एच०डी० स्तर पर निर्देशन प्राप्त कर चुके हैं।

प्रकाशन– आथर्वणिक राजनीति (मान्य महामहिम राज्यपाल बी० सत्यनारायण रेड्डी द्वारा विमोचन), विभिन्न शोध लेख।
सायण एवं महीधर के भाष्यों में यौगिक प्रयोग (अप्रकाशित।

सेमिनार

१–चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।

२–विश्वेश्वरानन्द वैदिक आश्रम, होशियारपुर (चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय) में अध्यक्षता।

३–प्रभात आश्रम, मेरठ।

४–वेद सम्मेलन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (वर्तमान युग में वेद की प्रासंगिकता)

५–वेद सम्मेलन (कानपुर)

लेख- देवविद्याविद् आचार्य यास्क

पर्यावरण सुधार में वेदों का योगदान

वैदिक आख्यान—एक अध्ययन, इत्यादि अनेक लेख।

विशेष-योग का एकवर्षीय डिप्लोमा।

भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक विचारों का प्रचार-प्रसार।

विभिन्न विश्वविद्यालयों में पी-एच०डी० एवं स्नातकोत्तर परीक्षा का परीक्षकत्व।

३–डा० सत्यव्रत राजेश

शैक्षणिक अनुभव–दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में अध्यापन और गुरुकुल घटकेश्वर, हैदराबाद में आचार्य पद पर कार्य करने के बाद १९६८ से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अध्यापन।

निर्देशन– ३ छात्रों को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त। १ छात्र का शोध-प्रबन्ध जमा तथा २ छात्र सम्प्रति शोध-कार्य कर रहे हैं।

अन्य कार्य

१– वैदिक संग्रहालय का निदेशन एवं वैदिक प्रयोगशाला की व्यवस्था।

२– उत्तर प्रदेश, हरयाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक प्रान्त के अनेक नगरों, उपनगरों तथा ग्रामों में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

३– अनेक सभाओं और संगोष्ठियों में विचार-विमर्श और अनेक पत्रिकाओं में लेखन।

४– विश्वविद्यालय की ओर से पर्यवेक्षणार्थ गुरुकुल भैंसवाल में कार्य।

५– गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं अन्य अनेक विश्वविद्यालयों का परीक्षकत्व।

प्रकाशन– शोध-प्रबन्ध का महामहिम राज्यपाल द्वारा विमोचन।

४–डा० मनुदेव बन्धु

(क) इस वर्ष डा० मनुदेव बन्धु का शोध-ग्रन्थ "बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन" छपकर तैयार हो गया है। निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

१–भाष्यकार दयानन्द

२–वेद मन्थन

३–मानवता की ओर

४–चरित्र निर्माण

५–वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

(ख) अनेक निबन्ध भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

(ग) रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत (हरयाणा) में आयोजित "दर्श-पौर्णमास यज्ञ" को देखने तथा सीखने के लिए गये।

(घ) वेद सम्मेलनों, संस्कृत सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों में भाग लिया और अनेक स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए निमंत्रित किये गये।

(ङ) वैदिक प्रयोगशाला में सहायक निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

—रामप्रसाद वेदालंकार

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग

संस्कृत-विभाग

संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रमुख अंग रहा है। इस विभाग के उपाध्यायों एवं छात्रों का गुरुकुल के यश को अभिवृद्ध करने में प्रशंनीय योगदान रहा है। प्राय: संस्कृत के छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपनी वाग्मिता की अमिट छाप अंकित की है। इस विभाग के अनेक मेधावी छात्र आज विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्तुत्य शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भी इस विभाग के छात्रों का चयन हो चुका है। संस्कृत विभाग का संपोषण एव विकास डा० रामनाथ जी वेदालंकार जैसे संस्कृत-जगत के मूर्धन्य विद्वान् द्वारा प्रशंसनीय पद्धति के साथ हुआ है।

विभागीय उपाध्याय—

१. आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री — रीडर एवं अध्यक्ष

२. डा० महावीर अग्रवाल —रीडर

३. डा० रामप्रकाश शर्मा —प्रवक्ता

४. डा० सत्यदेव —प्रवक्ता
(तदर्थ २ सितम्बर ८९ से १५ मई ९० तक)

विभागीय विवरण—

विभाग में २ सितम्बर ८९ को संस्कृत दिवस सोल्लास मनाया गया। इसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के संस्कृत परामर्शक श्री रामकृष्ण शर्मा ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में डा० रामनाथ जी वेदालंकार तथा ब्रह्मनिष्ठ ऋषिकेशवानन्द जी महाराज उपस्थित हुए। इस अवसर पर पंचपुरी के समस्त संस्कृत विद्वानों की उपस्थिति प्रशंनीय रही।

२३ नवम्बर ८९ को विभाग में शोध समिति की बैठक सम्पन्न हुई। २१-२२ दिसम्बर ८९ को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के छात्र-प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का संयोजन डा० महावीर जी अग्रवाल ने विभागाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री के निर्देशन में सफलतापूर्वक किया। इस कार्यक्रम में विभागीय उपाध्याय डा० रामप्रकाश शर्मा एवं डा० सत्यदेव का प्रशंसनीय योगदान रहा।

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में समायोजित कालिदास समारोह में भाग लेने के लिए संस्कृत विभाग के दो छात्र जयेन्द्रकुमार तथा ताराचन्द, श्री वेदप्रकाश शास्त्री विभागाध्यक्ष के निर्देशन में गए।

डा० रामप्रकाश शर्मा के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण करने वाले तारानाथ मनाली तथा डा० निगम शर्मा के निर्देशन में शोध करने वाली श्रीमती सुखदा तथा श्रीमती राजेन्द्र कौर की मौखिकी परीक्षा सम्पन्न हुई।

संस्कृत विभाग के छात्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश लखनऊ, संस्कृत विद्यापीठ अम्बाला, भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, निर्धन निकेतन संस्कृत महाविद्यालय आदि अनेक स्थानों पर प्रतियोगिताओं में भाग लेने गए तथा सभी स्थानों से विजयश्री प्राप्त करते रहे।

विभाग में विशिष्ट व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित विद्वान्—

दिनांक ६ फरवरी ९० को डा० रमाशंकर जी तिवारी का संस्कृत विभाग में कालिदास पर एक विशेष व्याख्यान डा० रामनाथ जी वेदालंकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

८ मार्च ९० को संस्कृत विभाग में विशिष्ट व्याख्यान डा० रामनाथ जी वेदालंकार का "कालिदास की कृतियों में प्रतिबिम्बित वैदिक संस्कृति" पर सम्पन्न हुआ।

१५ मार्च ९० से ३१ मार्च ९० तक संस्कृत विभाग में अभ्यागत विद्वान् के रूप में डा० शिवशेखर जी मिश्र (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) आमन्त्रित किए गए। उन्होंने निरन्तर १७ दिनों तक विभाग को अपनी बौद्धिक सम्पदा से लाभान्वित किया।

डा० वेदप्रकाश उपाध्याय चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय तथा प्रो० रमाकान्त शुक्ल अध्यक्ष सस्कृत विभाग, राजधानी कालिज दिल्ली ने विभाग में पधार कर त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता के कार्यक्रमों की अध्यक्षता की।

विभागीय उपाध्यायों के कार्यों का विवरण—

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

शोधलेख प्रकाशन— "पर्यावरण समस्याया वैदिकं समाधानम्" संस्कृत शोधलेख पावमानी पत्रिका में प्रकाशित।

"कालिदासस्योपरि वेदानां प्रभाव:" शोधलेख परिशीलनम् पत्रिका में प्रकाशनार्थ।

"ऋग्वेदे पारिवारिकादर्श:" शोधलेख आदर्श संस्कृत पत्रिका तथा अन्तर्राष्ट्रीय वेदपीठ शोध पत्रिका में प्रकाशित।

"वेदानुसरणं धर्म:" लेख आर्य समाज हापुड़ की स्मारिका में प्रकाशनार्थ।

"भाति मे भारतम् में राष्ट्रीय भावना" लेख प्रकाशनार्थ।

विद्वद्गोष्ठी में भाग– ६ नवम्बर ८६ को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ में कालिदास पर विशेष व्याख्यान दिया जो अकादमी के अधिकारियों तथा विद्वानों द्वारा विशेष प्रशंसा का विषय बना।

१२ नवम्बर ८६ से १५ नवम्बर तक विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मनाए गए कालिदास जयन्ती समारोह में भाग लेकर शोधगोष्ठी में पत्रवाचन किया।

२ दिसम्बर ८६ को दयानन्द वेद विद्यालय, गौतमनगर दिल्ली में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में विशिष्ट वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया जो संस्कृत में था।

१३ जनवरी ६० को गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में शोध गोष्ठी में भाग लेकर शोधपत्र का वाचन किया।

२०, २१ जनवरी ६० को लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय साहिबाबाद में आयोजित अन्तर्विद्या संगोष्ठी में भाग लेकर संस्कृत सत्र की अध्यक्षता की तथा शोधलेख पढ़ा।

४ मार्च तथा ६ मार्च ६० को निर्धन निकेतन हरिद्वार में भारत सरकार की सहायता से आयोजित कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर में संस्कारों पर विशेष व्याख्यान दिए।

१५ से १७ मार्च ६० तक ऋषि संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार में आयोजित मेरठ-मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लिया तथा विद्वद् गोष्ठी में भाग लिया।

२० मार्च ६० को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित पांडुलिपि प्रशिक्षण शिविर में व्याख्यान दिया।

शोध निर्देशन– इस समय श्री शास्त्री के शोध निर्देशन में सात शोध छात्र कार्यरत हैं। कुमारी किरणमयी ने अपना शोधप्रबन्ध मूल्याङ्कन हेतु प्रस्तुत कर दिया है।

सांस्कृतिक प्रचार– विभिन्न धार्मिक संस्थानों, शिक्षण संस्थानों एवं प्रचार प्रतिष्ठानों में समय पर पहुँचकर लगभग ८० व्याख्यान वेद, धर्म, दर्शन एवं

संस्कृति को लक्ष्य करके दिए। विशेषकर महर्षि दयानन्द के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्यान दिए गए।

डा० महावीर अग्रवाल

योग्यता– एम० ए० (संस्कृत, वेद, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, पी-एच० डी०

विशिष्ट शोध-गोष्ठियों में प्रतिनिधित्व

१) स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान, प्रभात आश्रम, मेरठ में १३ जनवरी ९० को आयोजित शोध संगोष्ठी में "पर्यावरण एवं वेद" विषय पर शोधलेख प्रस्तुत किया।

२) एस० एस० वी० कालेज हापुड़ में १५ जनवरी ९० को आयोजित अन्तर्विद्या संगोष्ठी में द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा "संस्कृत के विकास में साम्प्रदायिक चुनौतियाँ" विषय पर शोधपत्र पढ़ा।

३) एल० आर० पी० जी० कालेज साहिबाबाद में २० जनवरी ९० को आयोजित शोध संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में "आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय एकता" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४) महाविद्यालय ज्वालापुर में मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से आयोजित पाण्डुलिपि प्रशिक्षण शिविर में १७ मार्च ९० को "भाषा का विकास सिद्धान्त" विषय पर व्याख्यान दिया।

५) वेद महाविद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर, देहली के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत सम्मेलन में "आधुनिक युग में संस्कृत की प्रासङ्गिकता" विषय पर व्याख्यान दिया।

६) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के वार्षिकोत्सव पर वेद एवं संस्कृत सम्मेलन में ११ अप्रैल को व्याख्यान दिया।

७) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में ११ अप्रैल को आयोजित शिक्षा सम्मेलन में व्याख्यान किया।

८) उपदेशक महाविद्यालय, हावड़ा में दीक्षान्त समारोह पर मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान किया।

प्रकाशित शोध-लेख—

१) पर्यावरण एव वैदिक वाङ्मय

२) आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय एकता

३) प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति के साहित्य में राष्ट्रीय भावना

शोध-निर्देशन—

वर्ष १९८९-९० में तीन छात्रों ने लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये तथा एक छात्रा पी-एच० डी० हेतु शोध कार्यरत।

संयोजन कार्य—१ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में संस्कृत-दिवस समारोह का संयोजन किया।

२. स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण एवं संस्कृत-गीत प्रतियोगिता का संयोजन किया।

सांस्कृतिक प्रचार - कलकत्ता, देहली, कान्पुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर, पुणे, नागपुर, आदि नगरों, महानगरों में विभिन्न शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा समायोजित समारोहों में वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत साहित्य एवं भारतीय संस्कृति पर लगभग ८० व्याख्यान दिए।

डा० रामप्रकाश शर्मा

१. आगरा विश्वविद्यालय आगरा द्वारा नियुक्त परीक्षक के रूप में दो पी-एच० डी० शोध-प्रबन्धों का मूल्याँकन।

२. "शैवलिनी पत्रिका" (संस्कृत) का सम्पादन।

३. दीक्षितकृत "शब्दकौस्तुभ" पर शोधपरक लेख प्रकाशनाधीन।

डा० सत्यदेव

विशिष्ट संगोष्ठी:—

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल (मेरठ) में १३ जनवरी १९९० को "पर्यावरण प्रदूषण का वैदिक समाधान" विषयक गोष्ठी में भाग लिया।

प्रकाशन:—१– काव्यभेदेषु पद्य काव्यस्य स्थानम् (गुरुकुल पत्रिका)

२– श्रुति सुधा (गुरुकुल पत्रिका)

३– ईश वन्दना (दिव्य ज्योति) शिमला

४– "पर्यावरण प्रदूषण का वैदिक समाधान" पावमानी, गु०प्र०आ० भोला झाल मेरठ में प्रकाशनार्थ स्वीकार किया गया।

५– "राम के जीवन में धर्म" नामक लेख गुरुकुल पत्रिका, गु०का०वि०वि०, हरिद्वार के लिये स्वीकृत।

सम्मानित कार्य—

(क) विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में २३ जनवरी १९९० को प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक के पद पर कार्य किया।

(ख) आर्य समाज मन्दिर, ज्वालापुर, हरिद्वार में आयोजित प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक का पदभार संभाला।

संयोजन कार्य—

(क) १२ मार्च १९९० को आर्य समाज विरावधा में समायोजित आर्य युवक सम्मेलन का संयोजन किया।

(ख) ८ मार्च १९९० को कालिदास विषयक विशेष संगोष्ठी में गु०का०वि०वि०, हरिद्वार में सह-संयोजक का कार्य किया।

विशिष्ट विद्वद् गोष्ठियों में व्याख्यान—

(क) ज्वालापुर, आर्य वानप्रस्थाश्रम, रुड़की, विरावधा (मेरठ), मुजफ्फरपुरनंगला कनवाड़ा (मेरठ), तमेला गढ़ी (मेरठ), बेवर (मैनपुरी), अनन्तपुर नन्हेड़ा (हरिद्वार), इकबालपुर (हरिद्वार), दतियाना (मुजफ्फरनगर) आदि ग्रामों और नगरों में समायोजित सम्मेलनों, आर्य समाज के उत्सवों में वेद, भारतीय दर्शन, धर्म उपनिषद्, भारतीय संस्कृति पर लगभग ४० व्याख्यान दिए।

———

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ :—

१–श्री ओमप्रकाश मिश्र	—	प्रोफेसर
२–श्री सतीशचन्द्र धमीजा	—	रीडर
३–डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	—	प्रवक्ता
४–श्री लाल नरसिंह नारायण	—	प्रवक्ता (तदर्थ नियुक्ति)
५–श्री कुँवरसिंह नेगी	—	प्रयोगशाला सहायक (तदर्थ नियुक्ति)

इस सत्र (८९–९०) में मनोविज्ञान विभाग की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का प्रवेश निम्नांकित है :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	०७
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	११
अलंकार प्रथम वर्ष	—	१०
अलंकार द्वितीय वर्ष	—	०६
अलंकार तृतीय वर्ष	—	०५
एम०ए० प्रथम वर्ष	—	१८
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	१०

अन्य वर्षों की तुलना में विभाग की छात्रसंख्या बढ़ी है।

इन छात्रों के अतिरिक्त विभाग में प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में ५ विद्यार्थी शोधकार्य कर रहे हैं। उनमें से कु० कमला पाण्डेय ने अपना शोधकार्य पूरा कर अपना शोध-प्रबन्ध "A Psycho-Social Study of the Attitudes of Acceptors and Non-Acceptors towards Family Planning Programme" विषय पर जमा करा दिया है। उनके परीक्षकों की रिपोर्ट्स आ जाने के बाद उनकी मौखिक परीक्षा डा० अरुण कुमार सेन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक १२–५–९० को ली जा चुकी है। अन्य छात्रों की प्रगति भी सन्तोषजनक है।

इस वर्ष श्री लाल नरसिंह नारायण की प्रवक्ता पद पर तदर्थ नियुक्ति की गई।

उन्होंने छात्रों को अपनी प्रतिभा एवं योग्यता से लाभान्वित किया। उनके द्वारा छात्रों के विकास हेतु किए गए कार्य निम्नांकित हैं—

१—स्नातकोत्तर छात्रों को लोकतांत्रिक नेतृत्व के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु विश्वविद्यालय से लगभग १५ किलोमीटर दूर सोंग नदी पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सामूहिक भोज का आयोजन किया। जिसकी पूर्ण व्यवस्था छात्रों ने श्री लाल नरसिंह नारायण के निर्देशन में स्वयं की।

२—हरिद्वार से रायवाला जाकर दैनिक मद्यपान करने वाले व्यक्तियों के व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन।

३—लोक सभा तथा विधान सभा आम चुनावों पर छात्रों के दल द्वारा निम्नलिखित बातों का गहन अध्ययन :

क–चुनाव सम्बन्धी भविष्यवाणियों की विश्वसनीयता।

ख–चुनाव पर विभिन्न प्रचार-माध्यमों का प्रभाव।

ग–विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और सरकार द्वारा नियंत्रित आकाशवाणी और दूरदर्शन की विश्वसनीयता।

घ–सरकारी मशीनरी की कार्यप्रणाली।

ङ–मतदान पेटियों पर कब्जा कर लेने का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

च–पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रिपोर्ट के आधार पर चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली का विश्लेषण।

छ–युवा छात्र, छात्राओं तथा महिलाओं का मतदान संबन्धी व्यवहार।

ज–चुनाव के बाद परिणामों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

झ–दल में शामिल छात्रों संजयकुमार, अरुणकुमार गुप्ता, सुनीलकुमार शर्मा, बालकृष्ण और सत्येन्द्रमोहन वशिष्ठ द्वारा प्राप्त परिणामों का विभिन्न समाचार-पत्रों—दैनिक जागरण, विश्वमानव, बद्री विशाल एवं दून-दर्पण में प्रकाशन।

ट–क्रास कल्चर अध्ययन, गुरुकुलीय प्रणाली के प्रचार एवं राष्ट्रीय एकता हेतु छात्रों को गोआ तक की सरस्वती–यात्रा के लिए संगठित किया। इस हेतु विश्वविद्यालय ने कुछ आर्थिक सहायता दी, शेष व्यय छात्रों ने किया। इस यात्रा की विशेषताएँ निम्नलिखित रहीं –

अ–प्रयोगस्वरूप विषय अध्यापक की अनुपस्थिति में भी छात्र पूरी तरह अनुशासित रहे।

आ–हरिद्वार से गोआ तक छात्रों ने नियमित वैदिक यज्ञ आदि वेद प्राध्यापक श्री हरिश्चन्द्र के निर्देशन में सम्पन्न किये।

४–विश्वविद्यालय के लिए जनसम्पर्क अधिकारी के दायित्वों का निर्वाह किया।

५–विश्वविद्यालय की भविष्य की कार्यप्रणाली के निर्धारण हेतु शिक्षक–शिक्षकेत्तर कर्मचारी और छात्रों की आशा-आकांक्षाओं एवं विगत क्रिया–कलापों के सर्वेक्षण में कार्यरत।

श्री सतीशचन्द्र धमीजा की पदोन्नति रीडर पद पर की गई। श्री धमीजा ने विभागीय पाठ्यक्रम के विकास एवं प्रयोगशाला के संवर्धन में उल्लेखनीय सहयोग दिया।

इस वर्ष डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव को विश्वविद्यालय द्वारा सीनियर स्केल दिया गया। उनके द्वारा विभाग एवं विषय से संबन्धित कार्य निम्नांकित हैं :

डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने रिसर्च प्रोजेक्ट का प्रस्ताव शीर्षक Job Satisfaction and Achievement Motivation-A Comparative Study of Private and Public Sectors", I.C.S.S.R. New Delhi को वित्तीय अनुदान के लिए भेजा है। डा० श्रीवास्तव ने दिसम्बर 1–2, 1989 में मानविकी तथा समाजविज्ञान विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "21st Century Perspectives on the Role of Humanities and Social Sciences in Technical Education," और जनवरी 21–29, 1990 में गांधी महाविद्यालय, उरई द्वारा आयोजित "सामाजिक तनाव—विविध परिदृश्यों में" विषय पर हुए राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया। इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ३ शोध–प्रबन्ध प्रकाशित किए गए जो कि इस प्रकार हैं :—

(1) Role of Communication in Industry and Business Organization. Personnel Today.

(2) Strikes and Lockouts – Causes and Remedial Measures, Public Administration Review.

(3) Leadership Styles among Bank Mangers. Indian Psychologist.

प्रो० ओमप्रकाश मिश्र को इस वर्ष यू० जी० सी० की एफ० आई० योजना के अन्तर्गत कानपुर विश्वविद्यालय ने विषय–विशेषज्ञ के रूप में नामित किया। इस योजना के अन्तर्गत उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय जाकर पी–एच०डी० प्रस्तावों की समीक्षा और अपनी संस्तुतियाँ यू०जी०सी० व कानपुर वि०वि० को प्रेषित कीं। इसके अतिरिक्त यू०जी०सी० ने प्रो० मिश्र को रिसर्च प्रोजेक्ट पर अनुदान देने हेतु विषय–विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया, जिसमें अनेक विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर्स द्वारा रिसर्च प्रोजेक्ट की उपादेयता एवं अनुदान पर संस्तुति मांगी गई।

प्रो० मिश्र ने गढ़वाल विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज में विषय–विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और गढ़वाल वि०व० के स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम को विकसित करने में सहयोग दिया।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की रिसर्च डिग्री कमेटी में प्रो० मिश्र ने विषय–विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और उस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विषय के पी–एच०डी० प्रस्तावों को अन्तिम रूप दिया।

इस वर्ष प्रो० मिश्र मद्रास में आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आफ क्लिनिकल साइकालोजी" में भाग लेने हेतु निमंत्रित किये गये। उन्होंने इस समेम्लन में भाग लिया और नैदानिक मनोविज्ञान से सम्बद्ध संगोष्ठियों में विचार व्यक्त किये।

प्रो० मिश्र गत तीन वर्षों की भांति इस वर्ष भी इण्डियन जर्नल आफ क्लिनिकल साइकालोजी के एडिटोरियल बोर्ड में कार्यरत रहे।

—विभागाध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग निर्बाध रूप से उन्नति की ओर उन्मुख है। वतमान में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर अध्ययन-अध्यापन को सुचारू रूप से चला रहे हैं।

विभागीय प्राध्यापक :—

(१) डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम० ए०, पी-एच० डी० – प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

(२) डा० जबरसिंह सेंगर, एम० ए०, पी-एच० डी० (रीडर)

(३) डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, एल-एल० बी० (रीडर)

(४) डा० काश्मीरसिंह भिण्डर, एम० ए०, पी-एच० डी० (लेक्चरर)

(५) डा० राकेशकुमार शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० (लेक्चरर)

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध-छात्रों की संख्या—

एम० ए० प्रथम वर्ष	१७
एम० ए० द्वितीय वर्ष	१७
शोध-छात्र	१६

शोधकार्य:—विभाग में वर्तमान समय तक २४ महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य सम्पन्न हो चुका है। इस वर्ष दीक्षान्त समारोह ने शोधार्थी आर्येन्द्रसिंह को पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया गया है। उक्त शोधार्थी ने विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा के निर्देशन में अपना कार्य सम्पूर्ण किया है तथा इनका विषय "प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध" है। इसके अतिरिक्त दो शोधार्थियों ने अपने शोध-कार्य पूर्ण करके अपने शोध-प्रबन्ध जमा करा दिये हैं, उनमें क्रमश: प्रथम श्रीमती मधुबाला हैं जिन्होंने विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के निर्देशन में अपना "महाभारतकालीन युद्धप्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र" विषय पर शोध-प्रबन्ध तथा द्वितीय श्री विनोदकुमार शर्मा जिन्होंने डा० काश्मीरसिंह भिण्डर के निर्देशन में अपना "प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थायें" नामक शोध-प्रबन्ध जमा करा दिया है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थियों के शोध-कार्य प्रगति पर हैं :—

नाम	विषय	निर्देशक
१—जितेन्द्र नाथ	दी ध्यानी बुद्धाज प्रानम एण्ड बुद्धिस्ट एवेयर इन इण्डियन आर्ट	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
२—डाली चटर्जी	प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालंकरणों का चित्रण	,, ,,
३—सुधाकर शर्मा	बुद्धिस्ट स्कल्प्चर अण्डर द पालाज	,, ,,
४—डा० विनोद शर्मा	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास	,, ,,
५—श्रीमती रश्मि सिन्हा	प्राचीन भारत में समाजवाद	,, ,,
६—सुषमा स्नातिका	उत्तर और दक्षिण पंचाल : एक ऐतिहासिक पुरातात्विक अध्ययन।	,, ,,
७—ऋचा शंकर	भारत और तिब्बत के सम्बन्ध (७वीं से १२वीं शताब्दी)	,, ,,
८—कु० नीरजा	शुंगकाल में धर्म और कला	,, ,,
९—जगदीशचन्द्र ग्रोवर	ब्रह्मी स्कल्प्चर अण्डर पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
१०—ऋषिपाल आर्य	प्राचीन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व।	,, ,,
११—रजनी सेंगर	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (वैदिककाल से गुप्तकाल तक)	,, ,,
१२—प्रभातकुमार सेंगर	बुंदेलखण्ड के प्राचीन मन्दिरों का विवेचनात्मक अध्ययन	,, ,,
१३-भारतभूषण	गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० काश्मीरसिंह

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित लेख:—

वर्तमान सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार शोधपत्र प्रकाशित हुये। वर्तमान समय तक प्रो० सिन्हा की ११ पुस्तकें तथा लगभग ५५ शोध-लेख प्रकाशित हो चुके हैं। विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के क्रमश: तीन लेख प्रकाशित हुये। प्रथम "डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—सांस्कृतिक इतिहास के प्रहरी" आर्य सन्देश सितम्बर १९८९ में, द्वितीय "आर्यन हैरिटेज" म्यूजियम एण्ड रिसर्च प्रोग्राम, अगस्त १९८९ तथा तृतीय ने "स्वामी दयानन्द और रजवाड़े" आर्य सन्देश, फरवरी १९९० में।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा के दो शोध-लेख इस सत्र में प्रकाशित हुए। प्रथम "दी नेचर आफ स्टेट इन वैदिक एज" प्रो. उपेन्द्र ठाकुर फैलिसिटेशन वाल्यूम में तथा

द्वितीय "सावरनिटि इन मौर्यन पीरियड" वैदिक पथ, क्वाटरली जरनल, एल० २, नं० २, सितम्बर १९८९ में।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ:—

विश्वविद्यालय में स्थित पुरातत्व संग्रहालय के निदेशक पद पर डा० जबरसिंह सेंगर पूर्व की भाँति सफलतापूर्वक कार्य कर-कर रहे हैं। डा० श्यामनारायण सिंह पूर्व वर्षों की भाँति विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव के कार्य-भार को देख रहे हैं। डा० काश्मीरसिंह ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में २५ जनवरी से २३ दिन का रिफ्रेशर कोर्स किया। डा० काश्मीरसिंह ने सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य इस वर्ष भी सम्भाला। डा० राकेशकुमार शर्मा विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० विभाग को उसके प्रभारी कम्पनी कमाण्डर के रूप में सुचारू रूप से चला रहे हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य को विभागीय बन्धुओं ने उत्साह से पूर्ण किया।

पुरातत्व संग्रहालय

देश की सांस्कृतिक धरोहर को संजाये हुये विश्वविद्यालय का पुरातत्व संग्रहालय उत्तरोत्तर विकासपथ पर अग्रसर है।

संग्रहालय में सिन्धु सभ्यता से लेकर २०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक की विभिन्न पुरातन वस्तुयें, कलाकृतियाँ संग्रहीत एवं प्रदर्शित हैं। विश्वविद्यालय के संस्थापक, आर्य समाज के प्रबल पोषक एवं अग्रणी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महात्मा मुंशीराम जी के जीवनवृत्त पर छायाचित्रों के माध्यम से संग्रहालय में एक विशिष्ट कक्ष सदैव आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट के अतिरिक्त संग्रहालय को अन्य शासकीय संस्थाओं से भी अनुदान प्राप्त होता रहा है। प्रतिवर्ष की भाँति इस वित्त वर्ष में भी उत्तर प्रदेश से संग्रहालय विकास हेतु २०,०००)०० रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि से प्रस्तर कक्ष को आकर्षक एवं नवीन रूप दिये जाने का कार्य किया गया है। मुद्राओं के प्रदर्शन में भी इसका कुछ उपयोग किया गया है। सातवीं पंचवर्षीय योजना से अलग विश्व विद्यालय अनुदान आयोग ने संग्रहालय विकास हेतु १,५०,०००)०० रुपये की अनुदान राशि प्रदान की है। यह राशि प्रकाशन, पुरातन कृतियों के क्रय, प्रदर्शन, फोटोग्राफिक सामग्री एवं अन्य कार्यों हेतु स्वीकृत की गई है। इसमें से ५०,०००/- की राशि प्राप्त हो चुकी है।

संग्रहालय में इस वर्ष फीजी राष्ट्र से हिन्दी के अध्ययन हेतु आये शोध-छात्र श्री नेतराम शर्मा द्वारा अमरीका एवं हांगकांग की विभिन्न ५ मुद्रायें भेंटस्वरूप प्राप्त हुई हैं। नेपाल राष्ट्र का एक सिक्का संग्रहालय के ही कर्मचारी श्री रमेशचन्द्र पाल द्वारा भेंटस्वरूप प्राप्त हुआ। वेद विभाग में कार्यरत श्री सत्यव्रत राजेश जी द्वारा ग्राम झींवरहेड़ी से प्राप्त एक पशु मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है। प्रो० (डा०) बिनोदचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष प्रा० भा० इतिहास द्वारा संग्रहालय पुस्तकालय के लिये ३ पुस्तकें भी संग्रहालय में प्राप्त हुई हैं।

इस वर्ष संग्रहालय आने वाले दर्शकों की संख्या लगभग ५५५० है। संग्रहालय आने वाले कुछ विशिष्ट दर्शकों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :—

१– डा० के डी० वाजपेयी, अवकाशप्राप्त टैगोर प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी आफ सागर।

२– श्री सैयद हिदायत हुसैन, मुख्य लेखा परीक्षाधिकारी, सहकारी समितियाँ एवं पंचायत, उत्तर प्रदेश शासन।

३– श्री नानूभाई मणिभाई देसाई, बलसार, गुजरात।

४– श्री पी० वेंकटास्वामी, भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द वि० वि० वाराणसी।

५– श्री एवं श्रीमती जगतप्रकाश तोरल, मारीशस।

६– श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी–महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश सरकार।

७– प्रो० शेरसिंह–कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

८– वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० हरिद्वार।

वर्तमान में संग्रहालय के विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं :—

१–डा० जबरसिंह सेंगर	निदेशक
२–श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
३–डा० सुखबीरसिंह	सहायक क्यूरेटर
४–श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
५–श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
६–श्री ओमप्रकाश	भृत्य
७–श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार
८–श्री गुरुप्रसाद	माली
९–श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

वर्तमान सत्र में संग्रहालय अधिकारियों की उपलब्धियाँ निम्न हैं :—

निदेशक :—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, संस्कृति, मानव संसाधन मन्त्रालय भारत सरकार एवं सांस्कृतिक कार्य निदेशालय उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ जाकर वहाँ के अधिकारियों की पूर्ण सन्तुष्टि के बाद अनुदान लाने का प्रयत्न करते रहे। आल इण्डिया म्यूजियम कांफ्रेन्स हैदराबाद में धनाभाव के कारण सम्मिलित न हो सके, जिससे गत वर्ष की संग्रहालयों की नवीनताओं की जानकारी से वंचित अवश्य रहना पड़ा।

निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर के निम्न लेख प्रकाशित हुये :—

१—युगों-युगों में नारी शिक्षा—प्रह्लाद, अप्रैल १९८९।

२—म्यूजियम आउटरीच प्रोग्राम—आर्यन हैरिटेज, अगस्त १९८९।

३—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—सांस्कृतिक इतिहास के प्रहरी, आर्य सन्देश, सितम्बर १९८९।

४—स्वामी दयानन्द और रजवाड़े—आर्य सन्देश, फरवरी १९९०।

५—पं इन्द्र विद्यावाचस्पति की इतिहास चेतना—प्रह्लाद, अप्रैल १९९०।

इसके अतिरिक्त अपने सहयोगियों को विभिन्न गैलरियों के रख-रखाव, अनुदानों के उपयोग, विशिष्ट दर्शकों को संग्रहालय की जानकारी देना, आदि कार्य भी सम्पन्न करवाये। यह प्रसन्नता की बात है कि महामहिम राज्यपाल महोदय ने संग्रहालय से दयानन्द द्वार के मध्य कच्ची सड़क के निर्माण हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग उत्तर प्रदेश के माननीय मंत्री जी को उन्होंने पत्र संख्या १२३/पी० एस०-एच० ई०, दिनांक २१ अप्रैल १९९० द्वारा लिखा कि यह सड़क तुरन्त बनवा दी जाय। आशा है यह कार्य भी सम्पन्न हो जायेगा।

संग्रहालयाध्यक्ष :—

पद के कार्यों के साथ-साथ निदेशक के आदेशों एवं उनकी अनुपस्थिति में उक्त पद के कार्यों को किया।

केन्द्रीय कक्ष के ऊपरी भाग में मृण्मूर्ति कक्ष, सिन्धु सभ्यता वीथिका का नियोजन कार्य किया। केन्द्रीय कक्ष में पेंटिंग गैलरी के नियोजन का कार्य इस समय किया जा रहा है। संग्रहालय सहायक श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ के त्याग-पत्र देने के पश्चात् उनकी कुछ विभिन्न गैलरियों का भी कार्य-भार देख रहे हैं।

लेख प्रकाशन : -

१-स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल कांगड़ी, साप्ताहिक आर्य संदेश, वर्ष १३, अंक ६, २४ दिसम्बर १९८९।

२ - सम मोर कापर आबजेक्ट फ्राम श्योराजपुर (अंग्रेजी में) पुरातत्व, नं० १९, पृष्ठ ७०—७१।

३—सिगनीफिकेन्स आफ नम्बर सेवन (अंग्रेजी में), द वैदिक पथ, वाल्यूम एल।, नं० ३ दिसम्बर १९८९, पृष्ठ ११-१३।

सहायक संग्रहालयाध्यक्ष :—

निदेशक के आदेशों का कार्यपालन करते हुये, संग्रहालय में विभिन्न गैलरियों की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया। संग्रहालय सहायक श्री बृजेन्द्र जैरथ के त्याग-पत्र देने के पश्चात् उनकी कुछ विभिन्न गैलरियों का भी कार्य-भार देख रहे हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा से समय-समय पर उचित निर्देशन मिलता रहा। इसके अतिरिक्त डा० श्यामनारायण सिंह, डा० काश्मीरसिंह एवं डा० राकेशकुमार शर्मा ने भी समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देशन देकर संग्रहालय को विकास की ओर अग्रसर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संग्रहालय लिपिक एवं अन्य सहयोगी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों ने भी संग्रहालय के रख-रखाव, दर्शकों को अधिक से अधिक सुविधा प्रदान करने, बिजली, पानी एवं अनुदानों के उपयोग में अपना पूर्ण योगदान दिया। संग्रहालय भवन के आस-पास के क्षेत्र में पुष्पवाटिका एवं वृक्षों की देख-भाल पर भी विशेष ध्यान दिया गया तथा ऐंगिल आयरन लगाकर तारबाड़ी करके पशुओं से सुरक्षित बनाया गया। इसमें माली का भी सक्रिय योगदान है। पानी की कमी को यदि दूर कर दिया जाये, तो दर्शकों के लिये और आकर्षक बनाया जा सकता है।

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) स्थापना-

१९१० ई० में अलंकार और दर्शनवाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम० ए० स्तर का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९८३ ई० से पी-एच० डी० हेतु शोधकार्य हो रहा है ।

संस्थापक-अध्यक्ष—स्व० प्रोफेसर सुखदेव दर्शनवाचस्पति

अपने स्थापनाकाल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शन के मौलिक ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाये तथा पाश्चात्य दर्शन-शास्त्र की अवधारणाओं पर उसके स्नातकों का गहन अध्ययन हो और वे स्नातक अपने-अपने विषय के मर्मज्ञ विद्वान् सिद्ध हों।

यह विभाग अपने इस दायित्व का निर्वाह सम्यक् रूप से कर रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार एवं प्रसार और अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुए हैं।

(२) छात्र संख्या—

विद्याविनोद	५+६=११
अलंकार	४+४+३=११
एम० ए०	९+४=१३
पी-एच० डी०	३

(३) वर्तमान अध्यापकगण—

१—डा० जयदेव वेदालंकार—रीडर एवं अध्यक्ष

२—डा० विजयपाल शास्त्री—प्राध्यापक

३—डा० त्रिलोकचन्द्र—प्राध्यापक

४—डा० उमरावसिंह बिष्ट—प्राध्यापक

(४) आई० ए० एस० और पी० सी० एस० के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था—

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये दर्शन विषय के मार्गदर्शन की निःशुल्क समुचित व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी. एच. ई. एल., हरिद्वार एवं अन्य स्थानों के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(५) राष्ट्रीय सेमीनार—

डा० जयदेव वेदालंकार के निदेशकत्व में १६ से १६ दिसम्बर ८६ तक "क्या तार्किक भाववाद तत्त्वमीमांसा का स्थान ले सकता है?" (Is logical Positivism an answer to metaphysics) विषय पर राष्ट्रीय दर्शन सेमीनार का आयोजन विभाग के तत्त्वावधान में किया गया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, पंजाब वि० वि० चण्डीगढ़, बी० एच० यू०, मेरठ, रूहेलखण्ड, गढ़वाल, बम्बई, कलकत्ता, कर्नाटक, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, तमिलनाडु, भुवनेश्वर (उड़ीसा), गोरखपुर, इलाहाबाद, दरभंगा (बिहार) आदि विश्वविद्यालयों के विद्वान् प्रतिनिधियों ने अपने-अपने शोधपत्र वाचित किये। इन शोधपत्रों को प्रकाशित भी किया गया है। विभाग के समस्त प्राध्यापक और छात्रों ने इस राष्ट्रीय सेमीनार को सफल बनाने हेतु निष्ठा से कार्य किया।

(६) प्राध्यापकगण—

(क) डा० जयदेव वेदालंकार—पद—रीडर एवं अध्यक्ष, नियुक्ति-अगस्त १९६८ (वर्तमान पद पर फरवरी १९८४ से)

(ख) योग्यतायें—एम० ए० दर्शन और मनोविज्ञान) न्यायदर्शनाचार्य, पी-एच० डी० और डी० लिट्।

(ग) शोधकार्य

(i) उपनिषदों का तत्त्वज्ञान—पृष्ठ सं० २६५ (पी-एच० डी० का शोधग्रन्थ)

(ii) भारतीय दर्शन की समस्यायें—पृष्ठ-४२५

(iii) वैदिक दर्शन—पृष्ठ ६१० (डी० लिट्० का शोधप्रबन्ध)

(iv) महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन—पृष्ठ-१५०

(v) महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त—पृष्ठ—२९८

शोधपत्र (१९८९)

(क) तत्त्वमीमांसा और तार्किक भाववाद

(ख) कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द

(ग) वेदों में ब्रह्मनिरूपण

(घ) वैदिक समाजवाद

(ङ) वैदिक राजनीतितत्त्व

(च) वेदों में विश्वशान्ति

(घ) शोध निर्देशन : - श्री बाबूराम ने डा० जयदेव वेदालंकार के निर्देशन में "भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में अन्तःकरण" विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की।

(ii) श्री दूधपुरी गोस्वामी और ईश्वर भारद्वाज क्रमशः "मध्यकालीन द्वैतवादी और अद्वैतवादी आचार्यों के मत में प्रमाणमीमांसा" एवं "उपनिषदों में अध्यात्म-विज्ञान" विषय पर पी-एच० डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं।

(ङ) राष्ट्रीय सेमीनार—दिसम्बर १६ से १९ तिथियों में राष्ट्रीय सेमीनार "तत्त्वमीमांसा और तार्किक भाववाद" विषय पर डा० जयदेव वेदालंकार के निदेशकत्व में सम्पन्न हुआ।

(च) उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का वार्षिक अधिवेशन—दिनांक १६ से १९ दिसम्बर तक उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर स्थानीय सचिव का कार्य किया।

(ज) इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस—अक्टूबर में इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस के अहमदाबाद (गुजरात) अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया एवं वैदिक आचार-शास्त्र विषय पर शोधपत्र वाचन किया।

(झ) आर्यसमाज नया नांगल (पंजाब) में भाषण—विषय :—

(i) वेदज्ञान सार्वभौमिक है।

(ii) वैदिक दर्शन के मूलतत्त्व।

(iii) आर्य समाज की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप।

(iv) वेद में धर्म का स्वरूप।

(v) वेद में नारी का महत्त्व।

(vi) गुरुकुल शिक्षापद्धति का दर्शन।

(vii) अध्यात्मतत्त्व।

(viii) योगसाधना।

(ix) जीवनतत्त्व।

(x) मोक्ष का स्वरूप।

(ञ) वित्त अधिकारी का कार्य--

सितम्बर से विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी का कार्य भी अतिरिक्त कार्य के रूप किया जा रहा है।

(त) वार्षिक परीक्षा में उड़नदस्ते का संयोजन—वार्षिक परीक्षा १९८९ के अवसर पर गठित उड़नदस्ते का संयोजकत्व किया और परीक्षा सम्बन्धी सुधार के लिए प्रशासन को अनेक सुझाव प्रस्तुत किये।

डा० विजयपाल शास्त्री

पद—प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र

योग्यता—एम० ए० (दर्शनशास्त्र)
एम० ए० (संस्कृत साहित्य)
एम० ए० (हिन्दी)
साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदान्ताचार्य, शास्त्री

अनुसन्धान कार्य—

शोधछात्र सुरेन्द्रकुमार ने "भारतीय दर्शनों में अहिंसा तत्त्व का दार्शनिक अध्ययन" इस विषय पर शोध किया।

प्रकाशित लेख—सत्र १९८९-९० में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए—

१—पंच मकार रहस्यम्—पंच तत्त्व सम्बन्धी तान्त्रिक योगसाधना पर व्याख्यात्मक मौलिक संस्कृत लेख, पत्रिका—भारतोदय, सितम्बर' ८९।

२—गीर्वाणवाणी रक्षोपायाः—संस्कृत के अभ्युत्थान के लिये मौलिक उपायों पर विचारात्मक संस्कृत लेख —गुरुकुल पत्रिका, अक्टूबर-नवम्बर' ८९।

३—महावीरप्रसाद द्विवेदी की अनुवाद कला—द्विवेदी जी की जन्म शताब्दी पर उनकी अनुवादकला की विशेषताओं पर प्रकाश डालने वाला समीक्षात्मक हिन्दी लेख—प्रह्लाद, जनवरी' ९०।

४—कविगर्वोक्ति समीक्षा—संस्कृतकवियों की गर्वोक्तियों पर एक समालोचनात्मक हिन्दी लेख—गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर' ८९।

५—केन पथा गच्छन्ति प्राणिनः—उपनिषदों में वर्णित देवयान और पितृयान पर व्याख्यात्मक संस्कृत लेख, गुरुकुल पत्रिका दिसम्बर-जनवरी' ९०।

६—कः शब्दार्थः—दार्शनिक संस्कृत लेख—गुरुकुल पत्रिका, फरवरी-मार्च' ९०।

डा० त्रिलोकचन्द्र

पद— सीनियर प्रवक्ता

योग्यता—एम० ए०, पी-एच० डी०, डिप्लोमा योग, सर्टिफिकेट योग, एक वर्ष का कोर्स योग।

सत्र १९८९-१९९० में किये गये कार्य—

१—इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रिफ्रेशर कोर्स किया जिसकी अवधि लगभग चार सप्ताह तक रही।

२ - ब्रह्मचर्य विषय पर एक पुस्तक लिखी जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो पायी है।

३—पाँच दिन तक (एक अप्रैल से पाँच अप्रैल तक) व्यास आश्रम में योग शिविर का संचालन किया।

४ – आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये।

५--आर्यसमाज रुड़की में कई बार व्याख्यान दिये।

६ – आर्यसमाज देहरादून में योग विषय पर व्याख्यान।

७—आर्यसमाज गाँधी कालोनी, मुजफ्फरनगर में दस दिन तक योगशिविर का संचालन किया जिसमें प्रतिदिन प्रातः एवं सायं योग की कक्षायें एवं व्याख्यान होते रहे।

उपरोक्त के अतिरिक्त अनेक अन्य कार्य किये जिनसे आर्यसमाज एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रचार हुआ।

दिसम्बर मास में परिवारसहित दक्षिण भारत के दर्शनीय एवं धार्मिक स्थानों का भ्रमण किया।

डा० यू० एस० बिष्ट--नियुक्ति-१९८९

पद—प्रवक्ता

(i) शोध ग्रन्थ –The Concept of Language.

(ii) लेख—Ulittgenstein and his language games.

(iii) प्रशिक्षण—जनवरी १९९० में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में रिफ्रेशर पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया।

———

अंग्रेजी विभाग

विभाग में निम्नांकित प्राध्यापक नियुक्त हैं :—

१—डा० आर० एल० वार्ष्णेय

एम० ए०, पी-एच० डी०, पी० जी० डी० टी० ई०, सी० टी० ई०

—प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

२—श्री सदाशिव भगत, एम० ए०

—रीडर

३—डा० नारायण शर्मा

एम० ए०, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०

—रीडर

४—डा० श्रवणकुमार शर्मा

एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०

—प्रवक्ता

५—डा० अम्बुजकुमार शर्मा

एम० ए०, एम० फिल०, पी-एच० डी०

—प्रवक्ता

विभागीय गतिविधियाँ सुचारू रूप से चलती रहीं। अनुसंधान में अभूतपूर्व प्रगति हुई। एक शोधार्थी ने डा० नारायण शर्मा के अधीन अपना शोध-प्रबन्ध जमा कराया। दूसरा शोधार्थी श्री सदाशिव भगत के अधीन अपना शोध-प्रबन्ध जमा करने वाला है। कुछ नए शोधार्थियों का भी पंजीकरण डा० आर० एल वार्ष्णेय तथा डा० श्रवण कुमार शर्मा के अधीन हुआ।

डा० आर० एल० वार्ष्णेय की एक पुस्तक तथा दो शोधपत्र प्रकाशित हुए और उन्होंने मौडर्न अमेरिकन लिटरेचर पर रोहतक विश्वविद्यालय के अधीन रेवाड़ी में हुए सेमीनार में एक शोधपत्र "एक्सप्रैशनिज्म इन द प्लेज आव ओ' नील" प्रस्तुत किया तथा कुछ शोध-प्रबन्धों का मूल्यांकन किया। उन्हें मेरठ विश्वविद्यालय की R. D C. का सदस्य भी नामांकित किया गया। उन्होने "वैदिक पथ" का सम्पादन किया।

श्री सदाशिव भगत अपने सभी शैक्षणिक कर्त्तव्य निभाते हुए विभाग की प्रगति में सहयोग करते रहे और अनुसंधान निर्देशन में अग्रसरित रहे।

डा० नारायण शर्मा ने रुड़की विश्वविद्यालय में हुए "टैकनौलाजी एण्ड सोशल चैन्ज" नामक सेमीनार में भाग लिया। साथ ही उन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय में फ्रांसीसी क्रांति पर हुए सेमीनार में भी भाग लिया और "शैली एण्ड द फ्रैन्च रिवोल्यूशन" नामक पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्ष ६० की परीक्षा में परीक्षाध्यक्ष के रूप में सफलता-पूर्वक कार्य किया।

डा० श्रवणकुमार शर्मा के अधीन एक एम० ए० की छात्रा ने डिस्सर्टेशन जमा किया तथा एक शोधार्थी का पी-एच० डी० हेतु पंजीकरण कराया। उन्होंने मेरठ तथा रुड़की विश्वविद्यालयों में हुए सेमीनारों में भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत किये। कुछ शोध-पत्र प्रकाशित भी हुए। उन्हें हरियाणा के गवर्नमेंट कालिज, हिसार में भाषण देने के लिये भी निमंत्रित किया गया।

डा० अम्बुजकुमार शर्मा क्रीड़ाध्यक्ष का कार्य भी करते रहे तथा उनका शोध-प्रबन्ध मुल्कराज आनंद पर प्रकाशित हुआ। उन्होंने रुड़की तथा मेरठ विश्वविद्यालय में हुए सेमीनारों में भी भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत-प्रकाशित किये।

हिन्दी-विभाग

गुरुकुल कांगड़ी का यह सौभाग्य है कि यहाँ हिन्दी का अध्यापन तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा और हिन्दी के पाणिनि आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने किया। विश्वविद्यालय स्तर पाने के बाद स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन, शोधकार्य तथा विश्वविद्यालयस्तरीय लेखन और प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हुआ। भारतीय धर्म साधनाओं, दार्शनिक विचार सरणियों, मध्यकालीन काव्यप्रवृत्तियों, आधुनिक साहित्यिक विधाओं तथा आर्य समाज के प्रति प्रतिबद्ध साहित्यकारों पर हिन्दी विभाग में उल्लेखनीय शोधकार्य हुआ और विभाग की भारतीय हिन्दी मानचित्र पर एक पहचान बनी।

हिन्दी विभाग में अध्यापन और शोधकार्य निर्देशन से जुड़े हुए महानुभावों की सूची इस प्रकार है :—

(१) डा० विष्णुदत्त राकेश एम०ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०	प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
(२) रीडर	पद रिक्त
(३) डा० ज्ञानचन्द्र रावल एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता
(४) डा० भगवानदेव पाण्डेय एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता
(५) डा० सन्तराम वैश्य एम० ए०, पी-एच० डी०	प्रवक्ता

कार्य-विवरण

इस वर्ष १४ सितम्बर १९८९ को हिन्दी दिवस पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान, स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर डा० श्यामसुन्दर शुक्ल ने हिन्दी की समस्याओं पर प्रकाश डाला। स्वामी जी के उद्बोधन से हिन्दी-सेवियों को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला। कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी पत्रकारिता के पितामह, गुरुकुल के प्रथम स्नातक एवं कुलपति, स्वतन्त्रता सेनानी, प्रखर सांसद् तथा आर्यसमाज एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक पण्डित इन्द्र विद्या-वाचस्पति की जन्मशती का आयोजन भी विभाग के तत्त्वावधान में १३ मार्च ९० को किया गया। समारोह की अध्यक्षता वेदों के प्रसिद्ध विद्वान्, पूर्वकुलपति तथा वर्तमान परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। हिन्दी के विश्रुत आलोचक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विजयेन्द्र स्नातक ने 'भारतीय मनीषा के प्रतीक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति' विषय पर प्रमुख भाषण दिया। उनका शोध संवलित मुद्रित व्याख्यान श्रोताओं में वितरित कराया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य तथा पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द पीठ के पूर्व अध्यक्ष डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने भी आलेख प्रस्तुत किए। गुरुकुल विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी का संचालन प्रो० विष्णुदत्त राकेश ने किया। इस गोष्ठी को सफल बनाने में डा० वीरेन्द्र अरोड़ा (कुलसचिव) ने हरसंभव सहायता की।

इस वर्ष स्नातकोत्तर कक्षाओं के हिन्दी विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के अतिरिक्त मार्गदर्शन के लिए विजिटिंग फैलो के रूप में मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के विद्वान् तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० महेन्द्रकुमार, डी० लिट्० विभाग में पधारे। साहित्येतिहास के स्वरूप, संरचना, मध्यकालीन कविता तथा छायावादी कविता पर उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए। वह विभाग में पन्द्रह दिन रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० त्रिभुवनसिंह जी भी विभाग में पधारे।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की बैठक में विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हुए। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के दिल्ली अधिवेशन में सम्मिलित हुए तथा इस्माईल महिला स्नातकोत्तर विद्यालय मेरठ में कोहसिप योजनान्तर्गत व्याख्यान के लिए गए। लखनऊ संभाग के केन्द्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रशिक्षण-शिविर के समापनसत्र में भारतीय शिक्षा प्रणाली पर विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किए गए तथा मानव संसाधन मंत्रालय की सहायता राशि से हरिद्वार में आयोजित पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में सोलह संस्कारों की उपयोगिता पर व्याख्यान दिए।

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री०बी० सत्यनारायण रेड्डी पधारे। उनके सम्मान में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की। श्री० रेड्डी गुरुकुल की परम्परा, अवदान और वर्तमान प्रगति से इतने अभिभूत हुए कि उनकी आँखें छलछला आईं। इस अवसर पर आर्यनेता स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, श्री बन्देमातरम, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल आर्य विशेषरूप

से उपस्थित थे। सम्मेलन का संचालन डा० विष्णुदत्त राकेश ने किया। डा० राकेश के सम्पादन में इस वर्ष प्रह्लाद के दो विशेषाङ्क आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के १२५वें जन्माब्द पर तथा पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशताब्दी पर प्रकाशित हुए। देश के शीर्षस्थ विद्वानों ने इन उच्चस्तरीय पठनीय सामग्री से भरपूर नयनाभिराम अंकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अतिरिक्त पद्मभूषण पण्डित बलदेव उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० किशोरीलाल गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० विश्वंभरनाथ उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ, राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिन्दी, जैनेन्द्र स्मृति ग्रन्थ तथा श्री बालशौरि रेड्डी अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए शोध लेख, संस्मरण तथा पत्र लिखे। डा० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की पुस्तक 'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' तथा डा० यू०एस० बिष्ट की पुस्तक 'द कन्सैप्ट आफ लेंग्वेज' की समीक्षाएँ लिखीं। वेद मंत्रों का गीतपरक अनुवाद किया।

डा० ज्ञानचन्द्र शास्त्री हिन्दी पुस्तकों के क्रय के लिए दिल्ली में आयोजित विश्व-पुस्तक मेले में गए तथा हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों की सरस्वती-यात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा के दौरान विद्यार्थी वयोवृद्ध हिन्दीसेवियों से मिले।

डा० भगवानदेव पाण्डेय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की ओरिएन्टेशन पाठ्यचर्या तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभनगर गुजरात की रिफ्रेशर पाठ्यचर्या में भाग लिया तथा वहाँ देवनागरी की वैज्ञानिकता, आधुनिक हिन्दी कविता : बदलते संदर्भ, तथा आधुनिक हिन्दी कविता : बदलते मिथकीय संदर्भ पर आलेखों का वाचन किया। गुरुकुल पत्रिका में 'मैथिलीशरण और खड़ी बोली' लेख प्रकाशित हुआ। ।

डा० सन्तराम वैश्य ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ओरिएन्टेशन पाठ्यचर्या में भाग लिया। प्रह्लाद पत्रिका के सम्पादनकार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि, पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति : पत्रकारिता के अनुभव शीर्षक दो शोधलेख प्रकाशित हुए तथा दो पुस्तक-समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं।

मारिशसनिवासी हिन्दी एम०ए० प्रथम वर्ष के छात्र श्री विरजानन्द उमा तथा नरेश ने आर्य समाज और हिन्दी प्रचार का कार्य किया तथा फीजी निवासी एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के छात्र श्री नेतराम विद्यालंकार ने फीजी में हिन्दीशिक्षण हेतु पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण विभाग के तत्वावधान में किया। वारंगलनिवासी एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के तेलुगुभाषी छात्र बशीर मौहम्मद ने हिन्दी में कविता और लेख लिखकर स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए। इन्द्र विद्यावाचस्पति हिन्दी परिषद् के माध्यम से विभाग के विद्यार्थियों ने अच्छा कार्य किया तथा एम०ए० हिन्दी द्वितीय वर्ष के छात्र हरिश्चन्द्र गैरोला ने उत्तराखण्ड के सशक्त किन्तु विस्मृत कवि चन्द्रकुँवर बर्त्वाल पर लघु शोधप्रबन्ध की रचना की।

सम्प्रति विभाग में चल रहे अनुसन्धान कार्य का उल्लेखनीय पक्ष यह है कि महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और विशेषत: गुरुकुल के स्नातकों द्वारा की गई हिन्दी सेवाओं के शोधपूर्ण अध्ययन पर विशेष बल दिया जा रहा है। योजनाबद्ध ढंग से किए जा रहे इस शृंखलाबद्ध कार्य के सम्पन्न हो जाने पर आर्य समाज और हिन्दी साहित्य की ऊर्जा का वैज्ञानिक आकलन हो सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक नये स्तम्भ की साधार प्रतिष्ठा हो सकेगी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी विभाग गुरुकुल परम्पराओं और आदर्शों के संरक्षण में निष्ठापूर्वक लगा रहेगा तथा आर्य समाज के हिन्दी प्रचार-प्रसार के व्रत के अनुपालन में संलग्न रहेगा।

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् जौलाई १९८९ को नये सत्र के लिये खुला। इस वर्ष बी० एस-सी० में ६०० अभ्यर्थियों ने प्रवेश के लिये आवेदन किया तथा इस वर्ष ५५% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया गया।

विभागीय प्रवेश निम्न रहे :

(१) एम० एस-सी० माईक्रोबायलोजी में ५८% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

(२) पी० जी० डिप्लोमा रसायनशास्त्र में ५५% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

(३) बी० एस-सी० कम्प्यूटर ग्रुप में ६०% से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया।

महाविद्यालय में छात्रों की संख्या निम्नलिखित रही :

कक्षा	संख्या	विशेष
(१) बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)	१३७	बी० एस-सी० में छात्रों की संख्या २४३ थी।
(२) बी० एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	६०	
(३) बी० एस-सी० (तृतीय वर्ष)	४६	
(४) पी० जी० डिप्लोमा रसायनशास्त्र	१०	
(५) एम० एस-सी० (गणित) (प्रथम वर्ष)	१०	एम० एस-सी० गणित में छात्रों की संख्या १४ थी।
(६) एम० एस-सी० (गणित) (द्वितीय वर्ष)	०४	

(७) एम० एस-सी० (माईक्रोबायलोजी) (प्रथम वर्ष)	१०	एम० एस-सी० माईक्रोबायलोजी में छात्रों की संख्या १९ थी।
(८) एम० एस-सी० (माईक्रोबायलोजी) (द्वितीय वर्ष)	०९	

गतिविधियाँ :

(१) इस वर्ष वि० म० वि० के छात्रों ने राष्ट्रीय सेवायोजना में डा० दिनेशचन्द्र भट्ट के नेतृत्व में सक्रिय भाग लिया।

(२) गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी वि० म० वि० के छात्रों ने श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

(३) इस वर्ष वि० म० वि० के छात्रों ने अन्तं वि० वि० तथा प्रदेशीय स्तरीय प्रतियोगिताओं, जैसे हाकी, क्रिकेट, कबड्डी, बैंडमिण्टन आदि प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय टीम का प्रतिनिधित्व किया।

(४) इस वर्ष वार्षिक परीक्षाओं से पूर्व छात्रों ने वार्षिक-उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जिसमें कार्टून प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्धलेखन प्रतियोगिया और साँस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

(५) इस वर्ष वि० म० वि० के छात्रों का विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं (I. I. T, इन्जीनियरिंग, मेडिकल) में चयन हुआ।

गणित विभाग

१. शिक्षक :—

एस० सी० त्यागी—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
एस० एल० सिंह—प्रोफेसर
वी० पी० सिंह—रीडर
विजयेन्द्र कुमार—रीडर
वीरेन्द्र अरोड़ा—रीडर (कुलसचिव पद पर कार्यरत)
एम० पी० सिंह—प्रवक्ता
एच० एल० गुलाटी—प्रवक्ता
यू० सी० गैरोला (सित० १९८९-मई १९९०)—(तदर्थ नियुक्ति)

२—छात्र संख्या (आधार जुलाई-अगस्त प्रवेश १९८९)

२.१ बी० एस-सी० भाग एक	—१०१
भाग दो	—३९
भाग तीन	—३३
२.२ विद्यालंकार भाग एक-तीन	—कोई छात्र नहीं
२.३ एम० ए०/ एम० एस-सी० पूर्वार्द्ध	—०९
उत्तरार्द्ध	—०४
२.४ शोध छात्रों की संख्या	—०४

उनके स्वीकृत विषय—

२.४.१ देवेन्द्र दत्त : २—इरीक, २-बनाख एवं सांस्थितिकत : सदिश समष्टियों में अमूर्त संपात तथा स्थिर बिन्दु समीकरणों के साधन का अस्तित्व।

२.४.२ रमेशचन्द्र : A Study of Siddhanta Siromani.

२.४.३ उमेशचन्द्र गैरोला : इरीक एवं बनाख समष्टियों में संपात, स्थिर एवं संकर स्थिर बिन्दुओं का अस्तित्व

२.४.४ रेखा मेंहन्दीरत्ता : Fixed Point Theorems in Probabilistics Analysis and Uniform Spaces.

स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश वरीयता के आधार पर दिये जाते हैं तथा शोध हेतु उपयुक्त अभ्यर्थियों को ही प्रविष्ट किया जाता है।

२.५ उक्त चार शोध छात्रों के अतिरिक्त डॉ० एस० एल० सिंह के निर्देशन में दो प्राध्यापक (सर्वश्री वी० कुमार एवं आर० सी० अजीज) गढ़वाल वि० वि० की डी० फिल्० (गणित) उपाधि हेतु शोध कर रहे हैं।

३. शोध उपाधि—

इस विभाग के श्री एच० एल० गुलाटी को "Some Problems on Queueing and Sequencing Theory" विषय पर गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर की शोध उपाधि (D. Phil.) दो निर्देशकों के अंतर्गत कार्य करने पर प्रदान की गई। इनमें से एक निर्देशक इस विश्वविद्यालय के डा० एस० एल० सिंह थे।

४. शोध-प्रपत्र जो प्रस्तुत करने हेतु विभिन्न सम्मेलनों में स्वीकृत हुए—

४.१ उज्जैन में आयोजित Varahmihir Memorial National Seminar on Ancient Indian Mathematics and its relevance to Modern Science में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोधछात्र श्री रमेश चंद्र ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। प्रो० सिंह ने आमंत्रित व्याख्यानकर्त्ता के रूप में भाषण दिया तथा विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधप्रपत्रों के विवरण निम्नलिखित हैं—

(i) Khahar—एस० एल० सिंह

(ii) A note on Vedic Mathematics formula "एकाधिकेन पूर्वेण"—एस० एल० सिंह

(iii) Ahorgana and Applications—एस० एल० सिंह एवं रमेशचंद्र।

४.२ दिल्ली में आयोजित भारतीय गणित समाज के ५५वें वार्षिक अधिवेशन में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोध छात्रों श्री उमेशचंद्र गैरोला व कु० रेखा मेहंदीरत्ता के शोधप्रबन्ध स्वीकार हुए। इस अधिवेशन में श्री गैरोला ने अपना निबन्ध प्रस्तुत किया। इन शोध प्रबन्धों का विवरण इस प्रकार है—

(i) A Generalization of Matkowski Contraction Principle – एस० एल० सिंह एवं उमेशचन्द्र गैरोला;

(ii) A note on the convergence of sequences of mappings on

a probabilistic metric space and their fixed points—एस० एल० सिंह एवं रेखा मेहंदीरत्ता।

४.३ रामानुजम गणित सोसाइटी के ५वें वार्षिक सम्मेलन (Ramanujam Mathematical Society) में प्रो० एस० एल० सिंह एवं उनके शोधछात्र श्री उमेशचंद्र गैरोला का शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करने हेतु स्वीकृत हुआ तथा प्रो० सिंह "आमंत्रित अतिथि" के रूप में भाषण देने के लिये बुलाये गये हैं। शोध प्रबन्ध एवं आमंत्रित भाषण के विषय इस प्रकार हैं—

(i) A general fixed point theorem द्वारा श्री उमेशचन्द्र गैरोला एवं एस० एल० सिंह।

(ii) Probabilistic Contractions (आमंत्रित भाषण—एस० एल० सिंह)।

४.४ National Academy of Sciences, India के हैदराबाद अधिवेशन में प्रस्तुत करने हेतु प्रो० एस० एल० सिंह एवं श्री उमेशचन्द्र गैरोला का शोध-प्रपत्र "Coordinate-wise commuting and weekly Commuting maps, and extension of Jungck and Matkowski contraction principles" स्वीकृत हुआ।

६. विदेशभ्रमण :-

CSIR-CNRS के विनिमय कार्यक्रम १९८९ के अंतर्गत विभाग के प्रो० एस० एल० सिंह ने फ्रांस के कुछ प्रमुख गणितीय शोध संस्थानों का भ्रमण किया। वे अपने चार सप्ताह के फ्रांस प्रवास (२२-४-१९९० से १९-५-१९९०) में पेरिस व लियोन गये तथा लियोन के प्रमुख शोधसंस्थानों में कार्य किया। वहाँ के दो प्रोफेसरों rof. J. B. Baillon एवं Prof Nicole Blanchord के साथ शोधकार्य भी किया। उन्होंने इस दौरान तीन शोधप्रपत्रों का कार्य पूरा किया तथा Ancient Indian and Vedic Mathematics विषय पर भाषण भी दिया।

७. विनिमय में प्राप्त शोध पत्रिकाएं :—

वि० वि० द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका "Journal of Natural and Physical Sciences=प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोधपत्रिका" के विनिमय में १५ शोध पत्रिकाएं प्राप्त हो रही हैं, जिनमें से सात शोध पत्रिकाएं विदेशों से प्राप्त हो रही हैं। यदि इनको क्रय किया जाता तो अनुमानतः रु० १२000/- के बराबर विदेशी मुद्रा व्यय करनी पड़ती है।

८. छात्रों के लिए कार्यक्रम—

८.१ बी०एस-सी० एवं एम० एस-सी० के छात्रों को विभाग के शिक्षकों द्वारा पर्याप्त समय दिया जाता है तथा उनकी कठिनाइयाँ दूर की जाती हैं।

८.२ शोधछात्रों को पर्याप्त समय दिया जाता है तथा उनके निर्देशकों के द्वारा शोधछात्रों से सेमीनार कराये जाते हैं। यह कार्य महाविद्यालय की सामान्य समय-सारिणी से अलग होता है।

८.३ एम० एस-सी० उत्तरार्द्ध के छात्रों को कुछ शिक्षक सेमीनार देने का अवसर देते हैं। इससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ने के साथ विषय की बोधगम्यता भी बढ़ती है।

———

भौतिकी विभाग

भौतिकी विभाग की स्थापना १ अगस्त १९५८ में हुई । इस विभाग में दो रीडर तथा तीन प्रवक्ता स्वीकृत हैं। इस विभाग में B Sc.-I, B. Sc.-II एवं B. Sc.-III तक के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। बी० एस-सी० की क्रियात्मक परीक्षाओं के लिए B. Sc. Pt. I, B. Sc. Pt. II के कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान हैं, परन्तु B. Sc.-III के लिए कुछ उपकरण इस वर्ष खरीदे गये हैं। इस वर्ष B. Sc. III year के लिए Project के लिए भी कुछ सामान मँगाया गया है। B. Sc. I year तथा B. Sc. II year की प्रयोगात्मक परीक्षाएँ समय पर सम्पन्न हो गई हैं। विभाग के लिए ३ लाख रुपये के उपकरण U.G.C. Development Grant से खरीदे गए तथा Project Work भी कराया गया। इस वर्ष B. Sc. III year के लिए दो प्रयोगशालाएँ भी बनवाई गईं।

रसायन विभाग

विश्वविद्यालय का रसायन विज्ञान विभाग डा० आर० के० पालीवाल की अध्यक्षता में प्रगति पर है । विभाग में चल रहा 'कामर्शियल मेथड्स ऑफ केमिकल एनेलिसिस' में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा विद्यार्थियों को तुरन्त एक अच्छे रोजगार को दिलाने में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है। यू०जी०सी० अनुदान से इस वर्ष कुछ और श्रेष्ठ उपकरण विभाग में लिए गए हैं। डा० ए० के० इन्द्रायण एवं डा० रणधीरसिंह के संचालन में क्रमश: यू० जी० सी० एवं सी० एस० आई० आर० की शोध परियोजनाएँ प्रगति पर हैं । डा० कौशलकुमार विश्वविद्यालय परिसर के सौन्दर्यीकरण की देखभाल भी कर रहे हैं। डा० आर० डी० कौशिक का एक शोध-पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण गोष्ठी में पढ़े जाने हेतु स्वीकृत हुआ है। डा० रणधीरसिंह के दो शोधपत्र भी प्रकाशित हुए तथा उन्हें एक अन्तर्राष्ट्रीय Journal का Refree भी नियुक्त किया गया है। उन्होंने इस वर्ष कोचीन में आयोजित इण्डियन साइंस कांग्रेस में भी अपना एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। आकाशवाणी, नजीबाबाद से डा० इन्द्रायण की विज्ञान वार्ताएँ समय-समय पर प्रसारित की जाती रही हैं। गत वर्ष भी मंगल ग्रह व रासायनिक युद्ध कर्मकों पर उनकी वार्ताएँ प्रसारित की गयीं। विज्ञान महाविद्यालय के वार्षिक समारोह के आयोजन में रसायन विभाग का विशेष योगदान रहा। इसका संयोजन डा० कौशल कुमार ने किया। डा० रजनीशदत्त कौशिक टोरन्टो (कनाडा) में अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम में भाग लेने गए। टोरन्टो विश्वविद्यालय के अतिरिक्त पेरिस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से भी उन्होंने विचार-विमर्श किया।

जन्तु विज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तु विज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :—

१. दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक प्रोफेसर आर० एन० सक्सेना ने "इण्डोक्रायनोलोजिकल कन्ट्रोल आफ रिप्रोडक्शन" नामक विषय के ऊपर अत्यन्त ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया, जिससे छात्र एवं प्राध्यापक लाभान्वित हुये।

२. विभाग ने "एनिमल प्रोटेक्शन अन्डर चेन्जिंग इनवायरनमेंट" नामक शोध पुस्तक का प्रकाशन कराया। इस पुस्तक में भारत के ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों के शोध-पत्र संकलित हैं। इस प्रकाशन कार्य हेतु डी. एस. टी. (भारत सरकार) से अनुदान प्राप्त हुआ था।

विभागीय प्राध्यापकों का शोध एवं प्रसार कार्य :

विभागाध्यक्ष प्रो० बी० डी० जोशी— डा० जोशी ने निम्न गतिविधियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी :

१. विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग की वार्षिक चयन समिति हेतु कुलपति जी द्वारा मनोनीत हुये।

२. डीन, स्टुडेन्ट वेलफियर के पद पर कार्यरत रहे।

३. एसोसियेशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज, नई दिल्ली हेतु गु० का० वि० वि० के सांस्कृतिक प्रतिनिधि रहे।

४. विश्वविद्यालय प्रकाशन समिति के सदस्य रहे।

५. अवकाशप्राप्त शिक्षकों की पुर्ननियुक्ति से सम्बन्धित समिति के लिये कुलपति जी द्वारा सदस्य मनोनीत हुये।

राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी :

१. International Congress of Physiological Sciences, Helsinki, Finland (July 1989) में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

२. उक्त सम्मेलन से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में आमन्त्रित व्याख्यान दिया। उक्त कार्यशाला Kupio University, Finland में आयोजित की गई थी।

दस दिन तक कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया एवम् "विकासशील देशों में फिजियोलोजिकल साइन्सेज सम्बन्धी शोध एवं अध्ययन के स्तर पर सुझाव" देने वाली समिति के सचिव के रूप में कार्य किया।

३. पेरिस में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (Microbiology in Poikilotherms) में शोधपत्र प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

४. पेरिस विश्वविद्यालय में शोध-समस्याओं पर विचार-विनिमय किया।

५. काश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी (Fish and Their Environment) में आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

६. पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक अन्य राष्ट्रीय सम्मेलन (Emerging Trend in Animal Haematology) में भी आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

शोध-प्रकाशन

विभिन्न वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में प्रोफेसर जोशी के पांच शोधपत्र एवं चार शोधपत्र-सारांश प्रकाशित हुये।

१. Atretic and Discharged Follicle in a Hill Stream Fish **P. dukai**, 1989. Him. J. Env. Zool. 3. 44.

२. Age related variations in a differential and Arnath Counts of leucocytes in **G. domesticus**. In : Animal Protection under Changing Environment. 109. 989.

३. Haematological Studies on **C. batracus** infested with Trypanosoma. In : Animal Prot. Changing Env. 203. 1989.

४. A Sample Survey of ABO blood groups distributed in Hardwar, Animal. Prot. Changing Env. 243, 1989.

५. Physio-pathological Studies on the blood of few Hill Stream Teleost. Emerg. Tr. Anim. Haematol. 127. 1989. Proc. Natl. Symp.

विविध लेख :

(i) Ancient Vedic Philosophy and Himalayan Ecosystem Development. In : Himalaya, Man and Nature. Dec. 1989.

(ii) टिहरी बांध : पर्यावरण एवं विकास–तथ्यात्मक विवेचन, आर्यभट्ट।

दूरदर्शन/रेडियो वार्ता :

(i) "मत्स्य एवं उनका स्वास्थ्य"–दिल्ली दूरदर्शन ।

(ii) तीन वार्तायें/परिचर्चायें आकाशवाणी नजीबाबाद से ।

शोध परियोजनायें/शोध निदेशन :

(i) Eco-Development of Bhagirathi River विषय पर DOEn (भारत सरकार) द्वारा प्रदत्त शोधयोजना पर कार्य प्रगति पर है। इस प्रोजेक्ट में भागीरथी नदी के जल-प्रदूषण एवम् टिहरी बाँध से सम्बन्धित विषयों पर कार्य हो रहा है।

(ii) U G.C. नई दिल्ली द्वारा एक नई शोध योजना की स्वीकृति मिली है, जिस पर ऋषिकेश एवं हरिद्वार क्षेत्र के बीच जलीय प्रदूषण का मछली के रक्त पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा—यह अध्ययन किया जायेगा।

(iii) चार M. Sc. Microbiology के छात्रों ने डा० जोशी के निदेशन में अपने लघु शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किये।

सम्पादन कार्य :

(i) मुख्य संपादक—	Himalayan Journal of Environment and Zoology.
(ii) मुख्य सम्पादक—	Animal Protection under Changing Environment (Research book).
(iii) सम्पादक—	Journal of Physical and Natural Sciences.

अन्य कार्य :

(i) अध्यक्ष—	Indian Academy of Environmental Sciences.
(ii) उपाध्यक्ष—	Indian Society of Haematology.
(iii) सहा० परीक्षाध्यक्ष—	Science College Annual Exam.
(iv) मेम्बर—	Academic Council, GKV.

डा० टी०आर० सेठ (रीडर) :

डा० सेठ ने वि० वि० एवम् विभागीय क्रिया-कलापों में सक्रिय योगदान दिया। इन्होंने विज्ञान महाविद्यालय की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य

कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ रिसर्च डिग्री कमेटी के सम्मानित सदस्य हैं व विभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षा-कार्यक्रमों में परीक्षक हैं।

डा० ए० के० चोपड़ा (रीडर) :

डा० चोपड़ा ने विश्वविद्यालय के सभी क्रिया-कलापों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैज्ञानिक-सम्मेलनों में हिस्सा :

(i) गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (Advances in Limnology and Conservation of Endangered Fish Species) में आमन्त्रित व्याख्यान दिया।

(ii) उक्त संगोष्ठी के Organizing Committee के मेम्बर रहे।

शोध-प्रकाशन : डा० चोपड़ा के सात शोधपत्र प्रकाशित हुये।

(i) Phosphate Activity in the Alimentary Canal of **Schizotharax, Matsya** Vol 12. pp 119.

(ii) Helminth ova load in Sewage of Hardwar and its impact on Human Health. **Ind J. Helminth**, Vol 40. pp 164.

(iii) Sex related variations in Heart beat rate and Haematological Values of **Bufo**. of Garhwal Himalaya. **Proc. II Natl. Symp. Ecotoxicology** pp. 726.

(iv) Records of Nematods in Coldwater Fishes of Garhwal Himalaya. **Rec. Zool. Survey India**. Vol. 85. pp 155.

(v) Acid Phosphatase activity in cysts of **Giardia lablia. Him. J. Env. Zool.** Vol 3. pp 88.

(vi) Monthly Variations of Carbohydrates in the Alimentary Canal **Schizothorax. Him. J. Env. Zool.** Vol 3. pp 227.

(vii) Incidence of black spot diseases in Schizothorax Spp. of Garhwal Himalaya. **Ind. J. Helminth**. Vol 40. pp 160.

विविध लेख :

(i) "विज्ञान प्रगति" मासिक पत्रिका (CSIR, Govt. of India) के दिसम्बर अंक में 'Machliyan Banam Phaphoondi" शीर्षक पर लेख प्रकाशित।

शोध निदेशन : डा० चोपड़ा ने दो छात्रों की निम्न M. Sc. dissertation-work सुपरवाइज की ।

(i) Effect of Ayurvedic and Anthelmintics on Phosphatase Activity of **Paraphistomum Cervi**.

(ii) Effect of Sewage on water quality of Ganga Canal.

सम्पादन-कार्य :

(i) Executive Editor :	Himalayan Journal of Environment and Zoology.
(ii) Asscciate Editor :	Animal Protection Under Changing Environment (Proceedings of a Natl. Symp.)

अन्य कार्य :

(ii) प्रोग्राम आफिसर—एन०एस०एस० (सितम्बर ३०, १९८९ तक)

(ii) इन्चार्ज (सज्जा समिति)—विज्ञान महाविद्यालय वार्षिक समारोह ।

डा० दिनेश भट्ट (प्रवक्ता) :

डा० भट्ट ने निम्न गतिविधियों में अपना सक्रिय योगदान दिया ।

(i) बी० एस-सी० छात्रों की शैक्षणिक-यात्रा (excursion) में टूर-इन्चार्ज का कार्य किया । छात्रों को वन्य-जीवन एवम् वन्य-जन्तु संरक्षण के महत्व की फील्ड में जानकारी दी ।

(ii) राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित क्रिया-कलापों में छात्रों का मार्ग-निर्देशन किया व दस दिवसीय कैम्प का सफल आयोजन किया ।

(iii) विज्ञान महाविद्यालय वार्षिक समारोह में सक्रिय भाग लिया ।

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में योगदान :

(i) Intl. Congr. Physiological Sciences. हेलसिन्की फिनलैण्ड (जुलाई १९८९) में शोध-पत्र प्रस्तुत किया ।

(ii) बेजिंग (चीन) में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में शोधपत्र सह-लेखक द्वारा प्रस्तुत ।

शोध-प्रकाशन : डा० भट्ट के दो शोध पत्र प्रकाशित हुए ।

(i) Field Observations on Behavioural Ecology of white Crested Kaleej Pheasant in Garhwal Himalaya. **Proc. IV International Symp. on Pheasants. Beizing (1989) WPA Intl. Publ.**

(ii) Control of Seasonal Reproduction in a Tropical bird. **Proc. 31st Intl. Congr. Physiol. Sciences Abstr. p 391.**

शोध-परियोजनायें/शोध निदेशन :

(i) "Chronobiology of Obesity in an Animal Model" विषय पर (यू०जी०सी० नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त शोध योजना) कार्य किया।

(ii) पी० एच-डी० उपाधि हेतु पंजीकृत छात्र (महेश जोशी) के शोध-कार्य का निदेशन।

(iii) एम० एस-सी० के दो छात्रों (नेगी एवं संजय जैन) के लघु-शोध-प्रबन्धों (i. Effect of herb-extract on some microbes, (ii) Bio-socio characteristics of Tuberculosis patients in Hardwar) को शोध निदेशन दिया।

सम्पादन कार्य :

(i) मैनेजिंग एडिटर : "हिमालयन जनरल आफ इन्वायरनमेंट एण्ड जूलाजी"

(ii) एसोशियेट एडिटर : एनिमल प्रोटेक्शन अन्डर चेंजिग इन्वायरनमेंट (Proc. Natl. Symp.)

उक्त चार प्राध्यापकों के अतिरिक्त विभाग में दो शिक्षकेत्तर स्टाफ (i. श्री हरीश चन्द, प्रयोगशाला सहायक; ii. श्री प्रीतमलाल, प्रयो० अटैन्डैन्ट) दक्षतापूर्वक व निष्ठा के साथ कार्यरत हैं।

वनस्पति विज्ञान

वनस्पति विज्ञान विभाग में निम्नलिखित शैक्षणिक/शोध सुविधायें उपलब्ध हैं।

१—B. Sc.—Botany

२—M. Sc.—Microbiology

३—Ph. D.—Botany

शिक्षकवर्ग--

१—डा० वि० शंकर	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२—डा० पी० कौशिक	प्रवक्ता
३—डा० जी० पी० गुप्ता	प्रवक्ता (Adhoc)
(२ स्थान रिक्त रहे)	

शिक्षकेत्तर कर्मचारी—

१— श्री रुद्रमणि	प्रयोगशाला सहायक
२— श्री चन्द्रप्रकाश	,, ,,
३— श्री विजयसिंह	लैब ब्वाय
४— श्री सूरजदीन	माली
(माली का १ स्थान रिक्त रहा)	

प्रो० वि० शंकर—

डा० विजय शंकर के निर्देशन में विभिन्न Environmental Problems पर शोधकार्य हो रहा है। ४ विद्यार्थी उनके निर्देशन में Ph. D. के लिये शोधकार्य कर रहे हैं एवं दो विद्यार्थी M. Sc. dissertation के लिये कार्य कर रहे हैं। शोध विषय इस प्रकार हैं :

शोधविषय (Ph. D.)	**विद्यार्थी का नाम**
१—Environmental Studies of Shivalik Range & Impact of Human & Developmental Activities.	I. P. Joshi

२—Impact of Industrial & Human Activities on Ganga Eco-System — S. K. Sharma

३—Studies on Bio-deterioration of certain crude drugs & their formulations. — M. Singh

४—Studies on oxidation-stabilization ponds — V.V. Kulshreshtha

विभाग से निम्नलिखित articles प्रकाशित हुए :

१—Integratad Study of Ganga at Rishikesh & Hardwar (Invited article for **Water Pollution** book) — V. Shanker

२—Effect of Industrial Effluents on......... wheat plants — V. Shanker **et. al.**

३ – Influence of Industrial Effluents on Seed Germination — V. Shanker, G. Prasad

४—A New Record of Cycas Ovule Rot from Hardwar — V. Shanker, G. Prasad

५—Effect of Temperature on Development of Cycas Ovule Rot — G. Prasad **et. al.**

६—Effect of Distillery Effluents on Seed Germination — G. Prasad **et. al.**

७—Studies on Seasonal Variation of Plankton Population (communicated) — V. Shanker, G. Prasad

८—Mycorrhizal investigations in some orchids. (Published in Current Trends in Mycorrhizal Research) — P. Kaushik

९—Asymbiotic Seed Germination of **Aerides multiflora** Roxb. and **Rhynchostylis retusa** Bl. (Orchidaceae) — P. Kaushik

१०—Paryavaran Sanrakshan — V. Shanker

डा० पी० कौशिक के निर्देशन में २ विद्यार्थी M. Sc. dissertation के लिये कार्य कर रहे हैं।

डा० कौशिक ने शैक्षणिक कार्य के अतिरिक्त अपने निर्देशन में पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार की शोध परियोजना "स्टडी आन एनवायर्नमैन्टल बायलाजी आव दा हिमालयन आर्किड्ज" और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की लैक्टीन शोध योजना का निदेशन एवं मार्गदर्शन किया।

डा० कौशिक बायकैमिकल सोसायटी आव लन्दन द्वारा आयोजित ३२वीं हार्डेन कान्फ्रेंस में भाग लेने इंग्लैंड गये और वहाँ अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

अन्य रचनात्मक कार्य :

प्रो० वि० शंकर ने पर्यावरण एवं संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न सोसाइटी/संस्थाओं में सक्रिय भाग लिया तथा निम्नलिखित पदों पर कार्य किया।

१- Vice Chairman —**World-wide Fund for Nature India**.
Hardwar Rajaji National Park Regional Committee.

२- Special Adviser—Indian National Trust for Art & Cultural Heritage.
Hardwar Chapter-INTACA

३- Executive Director-Society for Environmental Conservation & Development.

वार्ता एवं संपादन—

१—विश्व प्रकृति निधि भारत की हरिद्वार इकाई द्वारा आयोजित पर्यावरण संगोष्ठी में पर्यावरण एवं ग्रामसुधार पर वार्ता प्रस्तुत की।

२—आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका—

हिन्दी/अंग्रेजी में popular science लेख प्रकाशित करने वाली पत्रिका का सम्पादन कार्य किया।

———

कम्प्यूटर विभाग

कम्प्यूटर विभाग में पी0 जी0 डिप्लोमा के छात्रों की वार्षिक परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई, एवं विभिन्न उपयोगी विषयों पर मेधावी छात्रों ने प्रोजेक्ट्स तैयार किये। इस वर्ष इस विभाग से शिक्षा पूरी करने वाले ये छात्र प्रथम विद्यार्थी थे। बी० एस-सी० प्रथम वर्ष के सभी छात्र उत्तीर्ण रहे। प्रथम वर्ष में नये छात्रों का प्रवेश हुआ। शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के अभाव के कारण कुछ कठिनाइयों के बावजूद दोनों वर्षों के छात्रों की परीक्षायें निर्विघ्न सम्पन्न हुईं। शिक्षकों के अभाव के कारण इस वर्ष पी0 जी0 डिप्लोमा के लिए छात्रों का प्रवेश न हो सका।

इस विभाग में इस समय श्री दिनेश बिश्नोई, प्रवक्ता और श्री कर्मजीत भाटिया, प्रोग्रामर के पद पर कार्य कर रहे हैं। विज्ञान महाविद्यालय के प्रयोगशाला सहायक श्री वेदव्रत विभिन्न कार्यों में इनकी सहायता कर रहे हैं।

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरंतर ८१ वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय वेद-वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय विज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भंडार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए है। आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। उत्तर भारत में प्राच्यविद्याओं के साहित्य के संग्रह का यह प्रमुख आगार है।

वर्ष १९८९–९० में लगभग २४,२०० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :–

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है। १. संदर्भग्रंथ संग्रह २. पत्रिका संग्रह, ३ आर्य साहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५ विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७. अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८. पं० इन्द्रजी संग्रह, ९ दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाण्डुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक संग्रह, १३. शोध प्रबन्ध संग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७ मराठी संग्रह, १८. गुजराती संग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१. वेद मंत्र कैसिट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :—

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से

प्रारम्भ किया गया था जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में दो घंटे प्रतिदिन कार्य के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है, जिससे वह अपनी शिक्षा का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ५ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :—

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षा में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मकपरीक्षा संग्रह की स्थापना की है, जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी-परिक्षाओं से सम्बद्ध २० पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इस समय उक्त संग्रह में लगभग ५०० पुस्तकें उपलब्ध हैं।

फोटोस्टेट सेवा :—

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३–८४ से उपलब्ध है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का १६,६०२—०० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु वर्ष १९८८–८९ में प्लेनपेपर कोपियर मशीन मोदीजीराक्स भी पुस्तकालय द्वारा क्रय की गई। प्रशासनिक कार्यों हेतु भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी :—

क्र. सं.	पद	नाम	योग्यता
१	पुस्तकालयाध्यक्ष	डा. जगदीश विद्यालंकार	एम. ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच.डी., बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२.	सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजारसिंह चौहान	एम. ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स।
३.	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री उपेन्द्रकुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, योग प्रमाणपत्र।
४.	,, ,, ,,	श्री ललितकिशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।

५	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री मिथलेशकुमार	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, प्रमाणपत्र प्रूफ रीडिंग।
६.	" " "	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७.	" " "	श्री अनिलकुमार धीमान	एम एस-सी ,एम.ए ,सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई.जी.डी. बाम्बे, पत्रकारिता विज्ञान, बी एड।
८.	पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा।
९.	" "	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स।
१०.	" "	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई. टी आई, की आपरेटर (मो. जीराक्स)
११.	काउन्टर सहायक	श्री हरिभजन	मिडिल।
१२.	बुक बाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल।
१३.	बुक लिफ्टर	श्री गोविन्दसिंह	मिडिल।
१४.	सेवक	श्री घनश्यामसिंह	मिडिल।
१५.	"	श्री शशिकान्त धीमान	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स।
१६.	"	श्री बुन्दू	—
१७.	"	श्री शिवकुमार	मिडिल।
१८.	स्वीपर	श्री सुशीलकुमार	कक्षा ६ पास
१९.	लिपिक	श्री दीपक घोष	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
२०.	"	श्री लालकुमार कश्यप	—
२१.	"	श्री विक्रमशाह	इन्टर।
२२.	सेवक (दैनिक)	श्री चमनलाल	मिडिल।

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर :—

	वर्ष—१९८८-८९	१९८९–९०
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२४,०००	२४,२००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	१३१	६१७
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	३,६५६	३,३६८
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	२,६००	२,७००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	२,५१७	२,४४६
६. पत्रिकाओं की संख्या	४०५	४३३
७. पत्रिकाओं की आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्र	२५८	२८०

८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७,१५२	७,४५२
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	१४६	३००
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१,९६०	३,८०२
११. पुस्तकों का कुलसंग्रह	१,०३,१२४	१,०७,१०९
१२. सदस्य संख्या	५२१	५१८

प्रगति के आयाम :—

१. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएँ मंगाई जाती थीं, वहीं आलोच्य वर्ष में ४३३ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जा रही हैं।

२. पुस्तकालय द्वारा वैदिक साहित्य, आर्य साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की एक बृहद्सूची तैयार की गई है जिसमें पुस्तकालय में उपलब्ध ७,५०० पुस्तकों को शामिल किया गया है। श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक संदर्भ ग्रन्थ एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया हो। इस संदर्भ ग्रन्थ का सम्पादन श्री एस. के. श्रीवास्तव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ के अन्त में एक बृहद् इन्डैक्स तैयार किया गया है जिसमें लेखक के अनुसार पुस्तक का पूर्ण विवरण अंकित किया गया है।

३. ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पुस्तकालय को ११ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था। आलोच्य वर्ष में यू. जी. सी. विकास अनुदान में से ३,३२,५०२–३४ रु० राशि की नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ क्रय की गईं। इसके अतिरिक्त वार्षिक रखरखाव बजट से पुस्तकों एवं पत्रिकाओं हेतु क्रमशः ३४,४७८–२० रु० एवं ६२,२००–१५ रु० की राशि व्यय की गई।

४. श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "शोध सारावली" एवं "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक पुस्तकों की १५० से अधिक प्रतियाँ उक्त पुस्तकों के अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गई। उ० प्र० सरकार द्वारा भी "वैदिक साहित्य एवं संस्कृति" नामक ग्रन्थ की ४० प्रतियों का आदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राइटिंग्स आन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" नामक ग्रन्थ की ९३ प्रतियाँ अधिकृत विक्रेता द्वारा विक्रय की गईं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों को देश के सुदूर अंचलों तक पहुँचाने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत लगभग २८०० प्रतियाँ देश के सभी विश्वविद्यालयों में पहुँचाई गईं।

५. विश्वविद्यालय के वर्ष १९८९–९० के वार्षिक उत्सव के अवसर पर गुरुकुल के

स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की प्रदर्शनी का आयोजन पुस्तकालय द्वारा किया गया । इसका अवलोकन मुख्य अतिथि मान्यवर वी. सत्यनारायण रेड्डी, राज्यपाल उ० प्र० द्वारा किया गया । पुस्तकालय का अवलोकन करने के बाद उन्होंने अपनी सम्मति दी कि इस पुस्तकालय में दुर्लभ ग्रन्थों एवं हाल में प्रकाशित ग्रन्थों का संग्रह देखकर प्रसन्नता हुई ।

६. पुस्तकालय में इस वर्ष कम्प्यूटर यूनिट की स्थापना की गई है। ७२ हजार रु० के अनुदान से दो शक्तिशाली कम्प्यूटर टर्मिनल पुस्तकालय में लगाये गये हैं। इसका उद्घाटन मान्यवर कुलपति महोदय द्वारा दिनांक १६.५.९० को किया गया। आशा है ८वी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस यूनिट का विकास होगा तथा पुस्तकालय के अनेक संग्रहों का विवरण इसके अन्दर समायोजित कर दिया जायेगा।

———

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

उपक्रम-१/३१ यू०पी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय को एन०सी०सी मुख्यालय से ५२ छात्र कैडेट्स के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। पूर्व की भाँति इस वर्ष भी १/३१ यू०पी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के कालेजों का चयन कम्पनी कमाण्डर II लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा तथा भारतीय सेना के योग्य प्रशिक्षकों द्वारा किया गया। तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया। सम्पूर्ण सत्र में उपर्युक्त छात्र कैडेट्स को एन०सी०सी० बटालियन मुख्यालय के आफिसरों ले० कर्नल एस०के० पाल, मेजर ग्रीनबुड, विश्वविद्यालय के कम्पनी कमाण्डर II लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा तथा भारतीय सेना के जूनियर कमीशन्ड आफीसरों एवं हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर तथा बी०एच०ई०एल० के परेड मैदान में प्रशिक्षण दिया गया।

प्रत्येक वर्ष एन०सी०सी० मुख्यालय के निर्देश पर बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में यह शिविर अक्टूबर ८९ में रायपुर (देहरादून) में आयोजित किया गया। इस शिविर में छात्र कैडेट्स को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। विश्वविद्यालय के २० छात्र कैडेट्स ने कम्पनी कमाण्डर II लेफ्टिनेन्ट डा० राकेशकुमार शर्मा के नेतृत्व में भाग लिया जिसमें विश्व-विद्यालय के छात्र कैडेट्स ने परिश्रम एवं नियमबद्धता का परिचय देते हुये श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष एन०सी०सी० मुख्यालय के निर्देश पर दो वर्ष तथा ३ वर्ष का प्रशिक्षण सम्पूर्ण कर लेने के पश्चात् एन०सी०सी० के 'बी' तथा 'सी' सर्टीफिकेट की परीक्षा में बैठने के लिये अनुमति प्रदान की जाती है। वर्ष ८८-८९ में उक्त परीक्षा में विश्वविद्यालय के छात्र कैडेट्स में से 'सी' सर्टीफिकेट एक छात्र कैडेट ने तथा 'बी' सर्टीफिकेट परीक्षा ८ (आठ) छात्र कैडेट्स ने सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की। इस वर्ष सत्र १९८९-१९९० में बी० तथा सी० सर्टीफिकेट में बैठने वाले छात्र-कैडट्स की संख्या क्रमश: ११ तथा १३, कुल २४ है। यह संख्या उत्साहवर्द्धक है तथा यह उचित प्रशि-क्षण का ही परिणाम है। उक्त छात्र कैडट्स के परीक्षा परिणाम अपेक्षित हैं।

२६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार ने ध्वजारोहण किया। आपने इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र कैडेट्स की परेड की सलामी ली तथा निरीक्षण किया। तत्पश्चात् 'बी' तथा 'सी' सर्टीफिकेट की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र कैडट्स को माननीय कुलपति के द्वारा सर्टीफिकेट वितरित किये गये।

राष्ट्रीय सेवा योजना

छात्रों के शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में प्रमुख राष्ट्रीय सेवा योजना वर्ष ८९-९० में अपने उद्देश्यों को लेकर सुचारू रूप से कार्यान्वित हुई। छात्रों की श्रमशक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक एवम् राष्ट्रीय उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किये गये। कुछ विशेष कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है :

१-छात्रों ने दो 'एक-दिवसीय' शिविरों में भाग लिया। इन शिविरों में छात्रों ने ग्रामीण क्षेत्रों की सफाई की व सड़कों की मरम्मत की।

२-छात्रों एवम् ग्रामनिवासियों को "वनौषधियों से स्वास्थ्यरक्षा" की विस्तृत एवम् प्रयोगात्मक जानकारी उपलब्ध करायी गई। यह जानकारी डा० विनोद उपाध्याय (रा०आ०चि० गुरुकुल) के निदेशन में दी गई।

३-दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर २२-१२-८९ से ३१-१२-८९ तक हरिपुर गांव में सम्पन्न हुआ। इस शिविर की मुख्य उपलब्धियाँ इस प्रकार है : (i) जनसाक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत छः निरक्षरों को साक्षर बनाया गया, (ii) हरिपुर गांव की दो सड़कों की मरम्मत व वृक्षारोपण के लिये स्कूल अहाते में १२५ गड्ढों का निर्माण किया गया, (iii) १२० परिवारों का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण व ९५ व्यक्तियों का ब्लड टैस्ट कराया गया, (iv) वनसम्पदा एवं भूमि संरक्षण एवं संस्कृति-संरक्षण के महत्व के बारे में गोष्ठियों एवम् चलचित्रों के माध्यम से जानकारी दी गई।

४-निरक्षरों को साक्षर बनाने के कार्यक्रम में ३८ छात्र प्रयासरत हैं।

वर्तमान में रा०से०यो० के समन्वयक के पद पर डा० जयदेव वेदालंकार कार्य कर रहे हैं तथा डा० चोपड़ा के त्यागपत्र देने के उपरान्त डा० भट्ट इन दिनों कार्यक्रम अधिकारी हैं।

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रम विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत प्रौढ़ शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन वर्ष १९८४ से निरन्तर किया जा रहा है। इस वर्ष विभाग ने ४६ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से, जिनमें २३ केन्द्र पुरुषों के व २३ केन्द्र महिलाओं के थे, इसे संचालित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हरिद्वार के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में किया गया। कार्यक्रम के संचालन से पूर्व अनुदेशक/अनुदेशिकाओं द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया गया। केन्द्रों का संचालन मुख्यतः हरिजन बस्तियों, अल्पसंख्यक समुदायों के क्षेत्रों, पिछड़े वर्गों के क्षेत्रों तथा अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों मे किया गया। अनुदेशक/अनुदेशिकाओं के रूप में विद्यार्थियों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं, बेरोजगार युवकों, ग्रामीण महिलाओं आदि को प्राथमिकता दी गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर अनुदेशक/अनुदेशिकाओं ने अपने–अपने केन्द्रों पर विभिन्न कार्यक्रम, जैसे भाषण, प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि आयोजित किये। इस अवसर पर विभागीय अधिकारियों द्वारा विभिन्न केन्द्रों पर जाकर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

विभाग ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अन्तर्गत "एरियाबेस्ड एपरोच" विषय पर एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के अतिरिक्त गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के सहायक निदेशक डा० अरुण मिश्रा तथा रुड़की विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के समन्वयक डा० मन्सूर अली ने भी भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष के उपलक्ष में एक चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा "प्रत्येक को एक पढ़ाओ" कार्यक्रम चलाये जाने के अतिरिक्त विभाग ने एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज हरिद्वार की छात्राओं द्वारा स्लम एरिया, बी0 एच0 ई0 एल0 में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया तथा अच्छे कार्यकर्त्ताओं को विभाग द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विभागीय अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं

आदि में भी भाग लिया गया। विभाग ने ३ जनशिक्षण निलियम भी प्रारम्भ किये, जिनके माध्यम से सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

आगामी सत्र से विभाग द्वारा कुछ रोजगारपरक कार्यक्रम भी प्रारम्भ किये जाने प्रस्तावित हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों को भविष्य के लिए मार्गदर्शन हेतु एक "कांसलिंग सैल" का गठन भी किया जायेगा।

विश्वविद्यालय छात्रावास

इस वर्ष सत्रारम्भ से पूर्व छात्रावास की सफाई, मरम्मतादि का कार्य किया गया। अगस्त में छात्रावास हेतु आचार्य जी तथा छात्रावासाध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार किया गया तथा सितम्बर मास से छात्रों की व्यवस्था की गई। विद्युत व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने के कारण छात्रों को असुविधा नहीं हुई। इस सत्र में कुछ व्यवस्थाएं और की जानी हैं, जैसे—

१ पानी की टंकी का निर्माण।

२. स्नानागार का निर्माण।

३ चारों तरफ की चारदीवारी अथवा सीमेंट के खम्भों में कंटीली तार लगाना।

४. पुताई कराना।

५. भोजनालय का निर्माण।

क्रीड़ा विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का समस्त कार्य डा० अम्बुज कुमार शर्मा के नेतृत्व में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा कुशलतापूर्वक संचालित किया गया। विभाग की गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं—

१. हॉकी :—

हॉकी का अभ्यास अगस्त मास से ही प्रारम्भ कर दिया गया था किन्तु विधिवत् प्रशिक्षण कार्य सितम्बर से स्थानीय कोच की देखरेख में चल सका। २८/९/८९ को टीम का प्रथम चयन करने के पश्चात् विभिन्न मैत्री मुकाबलों का आयोजन किया गया। २३/१०/८९ को अंतिम चयन के पश्चात् टीम को उ० प्र० अ० वि० वि० प्रतियोगिता में लखनऊ भेजा गया। विश्वविद्यालय की हॉकी टीम उ० क्षेत्र 'अ' अन्त-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने अलीगढ़ मुस्लिम वि० वि० गई। गोबिन्दबल्लभ पन्त कृषि व प्रौद्योगिक वि० वि० के न आने के कारण वाक-ओवर मिला तथा सेमीफाइनल में लीग मैच होने के कारण मेरठ, लखनऊ व अलीगढ़ वि० वि० के साथ मैच हुए। सभी गत वर्ष की सेमीफाइनल की टीमें थीं। किन्तु हमारे खिलाड़ियों का अभ्यास भी अच्छा था। इन सभी टीमों से संघर्ष किया। फलस्वरूप मेरठ वि० वि० जैसी टीम से १—१ से बराबर रहे। लखनऊ विश्वविद्यालय से ३—० तथा अलीगढ़ वि० वि० से ६—० से पराजित हुए। किन्तु गोल औसत के आधार पर मेरठ को चतुर्थ तथा गुरुकुल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। उ० प्र० तथा उत्तर क्षेत्र दोनों प्रतियोगिताओं में श्री नन्दकिशोर टीम मैनेजर के रूप में साथ गए।

२. क्रिकेट :—

क्रिकेट का अभ्यास अगस्त से ही प्रारम्भ हो गया था किन्तु सितम्बर से उसमें गति आई। पहले से अधिक छात्रों ने इन अभ्यासों में भाग लिया। २९/९/८९ को प्रथम चयन के पश्चात् छात्रों की उपस्थिति क्रीडांगन में होने लगी जिससे नियमितता तथा अनुशासन बनाए रखने में सफलता मिली। ८/११/८९ को अंतिम चयन हुआ। विभिन्न मैत्री मुकाबलो का आयोजन हुआ जिससे अभ्यास में गति आई।

उत्तर क्षेत्र अ० वि० वि० प्रतियोगिता का आयोजन जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली द्वारा ३/१२/८९ को किया गया। हमारा मुकाबला पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में हुआ।

उ० प्र० अ० विश्वविद्यालय प्रतियोगिता कानपुर में ३-१-९० को ओ० ई० एफ० के ग्राउण्ड पर आयोजित की गई। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के साथ हुए मुकाबले में हमारी टीम ७ विकेट से विजयी रही।

३. वॉलीबाल :—

गत वर्ष प्रयोग के रूप में वि. वि. की वॉलीबाल टीम का गठन किया गया। स्थानीय वॉलीबाल स्पर्धाओं में छात्रों की रुचि देखते हुए किया गया उक्त प्रयास सराहनीय रहा।

उ. प्र. अ. वि. वि. प्रतियोगिता में डा० राकेश शर्मा के साथ टीम आगरा गई। प्रथम बार अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी अनुभवहीन होने के कारण अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सके।

उ० क्षेत्र 'अ' प्रतियोगिता जी. बी. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक वि. वि. पन्तनगर द्वारा १४ नवम्बर को आयोजित की गई। मेजबान टीम के साथ हुए मैच में हमारी टीम ३ के मुकाबले एक मैच से पिछड़ गई। उक्त टीम का प्रदर्शन अच्छा न होने का कारण कोचिंग का अभाव था।

अ. वि. वि. प्रतियोगिताओं से लौटने के पश्चात् भी अभ्यास निरन्तर चलता रहा। श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता में भी हमारी टीम ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ऋषिकुल विद्यापीठ में अ. भा. विद्यार्थी परिषद् द्वारा आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता तथा जयभारत साधु संस्कृत महाविद्यालय द्वारा आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता में हमारी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

४. टेबल-टेनिस :—

टेबल-टेनिस की टीम को भी प्रथम बार अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार किया गया।

उ. प्र. अ. वि. वि. प्रतियोगिता में २५/१०/८९ को टीम झांसी गई।

उत्तर क्षेत्र अ. वि. वि. प्रतियोगिता कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा तिलक महाविद्यालय औरेया (इटावा) में ८/१२/८९ को आयोजित की गई। डा० जबरसिंह सेंगर टीम मैनेजर के रूप में गए।

५. बैडमिण्टन :–

बैडमिण्टन का अभ्यास अगस्त से ही प्रारम्भ किया गया। १९ व २० सितम्बर को चयन किया गया। उ. प्र. अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में टीम मैनेजर श्री गिरीश सुन्दरियाल के साथ टीम म्योहाल (इलाहाबाद) गई। विभिन्न कारणों से उ. क्षे० प्रतियोगिता में टीम भेजी न जा सकी।

६. खो–खो :—

इस वर्ष वि. वि. द्वारा टेबल टेनिस के अतिरिक्त खो-खो की भी नई टीम तैयार की गई। खो-खो खिलाड़ियों का अभ्यास भी सितम्बर से प्रारम्भ किया गया। १९ अक्तूबर को चयन किबा गया। २३/१०/८९ को जी. बी. पन्त विश्वविद्यालय में उत्तर-पूर्व क्षेत्र प्रतियोगिता में टीम भेजी गई।

७. तैराकी :—

तैराकी की टीम के चयन हेतु भेल स्वीमिंग पूल को किराए पर लिया गया।

फुटबाल :—

वि. वि. फुटबाल टीम का चयन दिसम्बर में किया जा सका। अत: वि. वि. द्वारा श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित फुटबाल प्रतियोगिता में ही टीम भाग ले सकी।

९. शरीर सौष्ठव :—

शरीर सौष्ठव का अभ्यास जुलाई से ही निरन्तर चलता रहा, किन्तु शरीर-शिल्पी तैयार नहीं हो पाए। अत: बाहर टीम न भेजी जा सकी।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में कई छात्रों ने भाग लिया किन्तु कोई सफलता प्राप्त न कर सका।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह—

उक्त सप्ताह में आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार रहे—

१. फुटबाल प्रतियोगिता :—इसमें विद्यामन्दिर इण्टर कालिज प्रथम तथा गुरुकुल विद्यालय द्वितीय स्थान पर रहा। समापन-समारोह पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा उद्बोधन किया गया।

२. वॉलीबाल प्रतियोगिता :—इस प्रतियोगिता में वॉलीबाल क्लब झबीरन प्रथम तथा कनखल क्लब द्वितीय रहा। हमारी टीम सेमीफाइनल में झबीरन से परास्त हुई। उद्घाटन कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार द्वारा किया गया।

३. शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिता :—इस प्रतियोगिता में अध्यक्ष कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार तथा मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी थे। सहारनपुर, जमनानगर, देहरादून, रुड़की तथा स्थानीय प्रतियोगियों ने भाग लिया। उसी दिन श्रद्धानन्द सप्ताह के पारितोषिक वितरण किए गए। श्री डागर (दिल्ली पब्लिक स्कूल), श्री ओ. पी. सिसोदिया (भेल) तथा श्री राममोहन शर्मा (नेहरू व्यायामशाला), निर्णायक रहे।

४. योग प्रतियोगिता :—स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का आयोजन इस वर्ष सप्तम बार किया गया। इसमें विभिन्न प्रतियोगियों ने भाग लिया। वरिष्ठ तथा कनिष्ठ वर्ग में गुरुकुल झज्झर के प्रतियोगियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा। गुरुकुल झज्झर के ब्रह्मचारियों ने मल्लखम्भ व रस्सी पर आसनों का रोमांचक प्रदर्शन किया।

विशेष :—छात्रों को किटें उपलब्ध कराई गईं। सीमित साधनों के होते हुए भी विभाग का प्रदर्शन अच्छा रहा।

विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन में माननीय आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, डा० जयदेव वेदालंकार, डा० उमरावसिंह बिष्ट, डा० श्रवणकुमार शर्मा, डा० महावीर अग्रवाल, डा० राकेशकुमार शर्मा, डा० काश्मीर सिंह भिण्डर, डा० जबरसिंह सेंगर, डा० कौशलकुमार, श्री गिरीश सुन्दरियाल, श्री नन्दकिशोर, श्री वीरेन्द्र असवाल, श्री बी पी. शर्मा (केन्द्रीय विद्यालय), श्री डागर (दिल्ली पब्लिक स्कूल), श्री ओ. पी सियोदिया (भेल), श्री देवदत्त त्यागी (भेल), श्री एम. के. चतुर्वेदी रुड़की वि. वि.), श्री भारतभूषण (सहारनपुर), श्री अशोक शर्मा व श्री राममोहन शर्मा हरिद्वार) का सदैव सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है। उक्त सहयोग के लिए विभाग की ओर से मैं कृतज्ञताज्ञापन करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

———

योग केन्द्र

विश्वविद्यालय में वर्ष १६८४ से योग केन्द्र की स्थापना के पश्चात् केन्द्र द्वारा चतुर्मासीय योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता रहा है। गत वर्ष १६८८-८६ में प्रथम बार योग शिक्षा में एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। इस वर्ष (द्वितीय बार) डिप्लोमा पाठ्यक्रम में दस छात्र थे। दो चतुर्मासीय पाठ्यक्रम के छात्रों ने क्रियात्मक परीक्षा दी।

विश्वविद्यालय में संचालित इस पाठ्यक्रम से गुरुकुल के प्रति श्रद्धा एवं भारतीय विद्याप्रचार में गुरुकुल की निष्ठा में वृद्धि हुई है। अभी यह विचार चल रहा है कि उक्त पाठ्यक्रम में प्राकृतिक चिकित्सा को जोड़कर एक पूर्ण चिकित्सापद्धति का विकास किया जाए तथा उसके लिए एक चिकित्सालय की व्यवस्था की जाए। योग द्वारा चिकित्सा में अत्यन्त सफल प्रयोग किए जा रहे हैं। स्थानीय लोगों को योग चिकित्सा की सुविधा केन्द्र द्वारा निःशुल्क प्रदान की जाती है। कुलवासियों के लिए केन्द्र अहर्निश सेवा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी सप्तम स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का आयोजन श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह पर किया गया। कनिष्ठ व वरिष्ठ वर्गों में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें हरयाणा, सहारनपुर, देहरादून, हरिद्वार व कनखल के योगसाधकों ने भाग लिया। वरिष्ठ वर्ग में कनखल के सुरक्षित गोस्वामी तथा कनिष्ठ वर्ग में सहारनपुर के प्रीतकुमार को योगकुमार की उपाधि से अलंकृत किया गया। दोनों वर्गों में द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर गुरुकुल झज्झर के ब्रह्मचारी रहे। उनके द्वारा मल्लखम्भ के व्यायाम तथा रस्सी पर कठिन आसनों का प्रदर्शन किया गया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्झर (मुख्य अतिथि) ने प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन करते हुए ब्रह्मचर्य पालन पर बल दिया। उक्त प्रतियोगिता में डा० भारत भूषण विद्यालंकार, श्री अशोक शर्मा तथा लंदन में स्थित योग केन्द्र के संस्थापक संचालक श्री मौहम्मद सईद निर्णायक थे।

योग केन्द्र के विकास हेतु उपकरणों के अतिरिक्त स्वतन्त्र विभाग बनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। तभी इस केन्द्र द्वारा विस्तार कार्यक्रम का संचालन किया जाना सम्भव होगा।

योग केन्द्र के कार्य को सुचारू रूप से चलाने में प्रो० ओमप्रकाश मिश्र, डा० अम्बुजकुमार शर्मा, डा० उमरावसिंह बिष्ट, डा० विजयपाल शास्त्री, डा० त्रिलोकचन्द्र, डा० जयदेव वेदालंकार एवं आचार्य प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार जी ने समय-समय पर अमूल्य सत्परामर्श एवं मार्गदर्शन किया।

———

स्वास्थ्य केन्द्र

पूर्व की भाँति स्वास्थ्य केन्द्र में वही स्टाफ है और श्रद्धानन्द चिकित्सालय में कार्य-रत है। इस वित्तीय वर्ष ८९-९० में निम्नलिखित कार्य हुआ।

बाह्य विभाग रोगी संख्या—	३५३५
कार्डियोग्राम विश्वविद्यालय के	२५
" " अन्य के—	८२

भर्ती रोगियों का इलाज—लगभग २५० समस्त ६२० भर्ती में

स्टाफ ने ३४० डिलीवरी में सहयोग दिया तथा २०९ आपरेशनों में सहयोग दिया। नेत्र के २२८ आपरेशनों में सहयोग दिया।

ENT के ६८, Caesarian आपरेशन ४१, महिला नसबन्दी के ९ आपरेशनों में सहयोग दिया।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया के एक्ट २१-१८६० ई० के अनुसार सन् १८८४ में हुई थी। २६ नवम्बर १९०२ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्नलिखित परिभाषा की—

१—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बालकों की शिक्षा के लिए गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को स्थापित किया और उन्हीं नियमों के अनुसार बालिकाओं के लिए २३ कार्तिक १९८० तदनुसार ८ नवम्बर १९२३ ई० को दीपावली के दिन दिल्ली में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान नेता श्री स्व० आचार्य रामदेव जी, जिनका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदि-संस्थापक थे। प्रथम आचार्या विद्यावती जी सेठ थी। कन्या गुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली में रहकर १-५-१९२७ को देहरादून आ गया और तब से वहीं पुष्पित हो रहा है।

२—प्राचीन ऋषि-मुनियों-द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के अनुरूप अलग-अलग जाति, वंश, संप्रदाय और धर्म की छात्राओं को विना किसी भेदभाव गुरुकुल आश्रम व्यवस्था में रहकर दीक्षित करके आर्य समाज के मंतव्यों के अनुसार वेद-वेदांग, संस्कृत-साहित्य, प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान में शिक्षित करने और इस प्रकार देश और मानवजाति की सेवा के लिए बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न आदर्श नारियाँ तैयार करने के उद्देश्य से इस संस्था की स्थापना की गई थी। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल वट की भाँति पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बड़ा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहाँ न केवल भारत के कोने-कोने से बल्कि विदेशों से भी छात्राएँ आकर शिक्षा ग्रहण करती हैं। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि संस्था में कुछ मुसलमान छात्रायें भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। इस वर्ष विद्यालंकार परीक्षा में ३१ छात्रायें बैठीं, परीक्षा परिणाम शतप्रतिशत रहा। (पूरक परीक्षा की एक छात्रा को सम्मलित कर)।

ज्योति-समिति

इस वर्ष ज्योति-समिति का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक, टेब्लो एवं संगीत के कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय रहे। प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नलिखित रहा—

शुभ्रासमूह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
शेफालिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
अलका पार्टी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अभिनन्दन

२४ जुलाई १६८६ को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य रामदेव सभा भवन में श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) जालन्धर
श्री योगेन्द्रपाल जी उपप्रधान " " "
तथा श्री रणवीर भाटिया महामन्त्री " " "
द्वारा एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता की। देहरादून के आर्य समाज के सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री धर्मेन्द्रजी आर्य इसके संयोजक थे। देहरादून के आर्य समाजी भाई-बहिन तथा अन्य बहुत से प्रतिष्ठित नागरिकों ने इसमें सम्मिलित होकर सामूहिकरूप से वैदिक विद्वान् श्री पं० विश्वनाथ जी का अभिनन्दन किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार के कई प्रतिष्ठित महानुभाव भी इसमें सम्मिलित हुये। सभा की ओर से श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान ने २१ हजार की राशि श्री पं० विश्वनाथ जी को भेंट की।

भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वर्तमान कार्यवाहक कुलपति श्री प्रो० रामप्रसाद जी ने भावभीने शब्दों में अपने विचार प्रकट किए। श्रीमती दमयन्ती देवी जी कपूर, आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य समाज देहरादून एवं कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की ओर से अभिनन्दनपत्र समर्पित किया।

अन्त में श्री वीरेन्द्र जी, सभा प्रधान ने अपने भाषण में श्री पं० विश्वनाथ जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं की रिपोर्ट—

१— २४ अगस्त १६८६ को कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नारी शिल्प मन्दिर

कालेज में आयोजित गीता पाठ प्रतियोगिता में यहाँ की छात्राओं ने जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२— "भारत विकास" परिषद् की ओर से आयोजित समूहगान प्रतियोगिता में छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

३— २२ अक्टूबर' ८९ को इसी सभा में आयोजित अल्पना प्रतियोगिता में यहाँ की छात्राओं ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। काव्य प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा हिन्दी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

स्थापनादिवस

२९ अक्टूबर ८९ को आचार्य रामदेव सभा भवन में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का ६६वाँ स्थापनादिवस अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया गया। छात्राओं ने कुलभूमि में सम्पूर्ण परिसर को पुष्प सज्जा एवं विभिन्न विधाओं से अलंकृत किया। प्रातःकाल सम्पूर्ण छात्राओं एवं कुलवासियों ने मिलकर यज्ञ किया। तत् पश्चात् श्री आचार्य जी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने अनेक प्रकार के शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कुलमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रतिवर्ष की भाँति एक प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

आचार्य रामदेव स्मृति दिवस एवं श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को एवं आचार्य रामदेव स्मृति दिवस ९ दिसम्बर को अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मनाया गया। श्रीमती दमयन्तीदेवी कपूर की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। छात्राओं एवं शिक्षिकाओं ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

विभिन्न पर्व एवं त्योहार

२६ जनवरी १९९०, वसन्त पंचमी, आर्यसमाज स्थापना दिवस आदि पर्व भी समारोहपूर्वक मनाये गये।

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1989 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 11/11/89 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्नलिखित बजट स्वीकृत किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 89–90	बजट अनुमान 90–91
वेतन एवं भत्ते आदि	78 26,820.00	80,18,920.00
अंशदायी भविष्यनिधि	3,36,590.00	3,50,760.00
प्रौढ़ शिक्षा	—	4,00,000.00
अन्य व्यय	17,85,210.00	18,31,450.00
योग व्यय	99,48,620.00	1,06,01130.00
गत वर्ष का शेष	10,03,680.00	—
आय	2,48,940.00	3,01,130.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत अनुदान	86,96,000.00	1,03,00,000.00

समीक्षाधीन वर्ष 1989-90 में वित्त समिति एवं कार्य परिषद् द्वारा 86,96,000.00 का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था, किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 81,00,000.00 का अनुदान ही दिया गया। इस प्रकार समीक्षाधीन वर्ष में स्वीकृत राशि से 5,96,000.00 रु० कम प्राप्त हुए। जिसके कारण शिक्षकों को सीनियर स्केल/सलेक्शन ग्रेड का एरियर तथा कुछ शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को एरियर नहीं दिये जा सके। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग / भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है :

क्र. सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	2,50,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	हाउस बिल्डिंग लोन एडवांस
2.	1,60,170.00	,, ,,	कम्प्यूटर हेतु
3.	5,00,000.00	,, ,,	वेतन विकास अनुदान कर्मचारी
4.	50,000.00	,, ,,	संग्रहालय अनुदान

क्र. सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
5.	1,30,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट (i) डा. ए. के इन्द्रायन
6.	30,000.00	,, ,,	(ii) डा. स्वर्णातीश
7.	75,000.00	C. S. I. R.	(iii) डा. रणधीरसिंह
8.	1,13,000.00	भारत सरकार	(iv) डा. पुरुषोत्तम कौशिक
9.	12,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट (i) श्री हरबंशलाल गुलाटी
10.	1000.00	,, ,,	(ii) श्री दिनेशकुमार भट्ट
11.	3000.00	,, ,,	(iii) श्री आर. डी. कौशिक
12.	30,000.00	,, ,,	(iv) डा. पुरुषोत्तम कौशिक
13.	3000.00	,, ,,	(v) डा. रणधीरसिंह
14.	17,500.00	इण्डियन कौंसिल आफ फिलोसिफिकल रिसर्च	फैलोशिप डा. एस. आर. चौधरी

————

—जयदेव वेदालंकार
वित्त-अधिकारी

आय का विवरण
1989—90

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
(क)	**अनुदान—**	
1.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	81,00,000.00
	योग (क)	81,00,000.00
(ख)	**शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—**	
1.	पंजीकरण शुल्क	4,441.00
2.	पी-एच. डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	2,022.00
3.	पी-एच. डी. मासिक शुल्क	3,800.00
4.	परीक्षा शुल्क	48,314.00
5.	अंकपत्र शुल्क	2,793.00
6.	विलम्ब दण्ड एवं टूट-फूट	8,846.00
7.	माइग्रेशन शुल्क	1,195.00
8.	प्रमाणपत्र शुल्क	394.00
9.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों का शुल्क	11,490.00
10.	सेवा आवेदनपत्र	367.00
11.	शिक्षा शुल्क	54,662.00
12.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	9,168.00
13.	भवन शुल्क	1,343.00
14.	क्रीड़ा शुल्क	8,068.00
15.	पुस्तकालय शुल्क	4,272.00
16.	परिचयपत्र शुल्क	262.00
17.	ऐसोसियेशन शुल्क	2,542.00
18.	प्रयोगशाला शुल्क	8,637.00
19.	मंहगाई शुल्क	8,980.00
20.	विज्ञान शुल्क	8,507.00
21.	पुस्तकालय से आय	12,664.00

क्र. सं.	आय का मद	धनराशि
22.	पत्रिका शुल्क	8,238.00
23.	अन्य आय	75,593.00
24.	किराया प्रोफेसर क्वाटर्स	25,818.00
25.	सरस्वती यात्रा	1,700.00
26.	वाहन ऋण	62,655.00
27.	छात्रावास	5,346.00
28.	विद्युत	5,104.00
29.	प्रो. फंड अंशदान	1,43,138.00
30.	श्रद्धानन्द प्रकाशन	33,659.00
	योग (ख)	5,64,018.00
	सर्वयोग (क + ख)	86,64,018.00

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1989-90

क्र सं. व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन	
1. वेतन	69,62,113.00
2. भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	4,66,915.00
3. ग्रेच्युटी	99,919.00
4. पेंशन	35,078.00
योग (क)	75,64,025.00
(ख) अन्य	
1. विद्युत व जल	1,23,393.00
2. टेलीफोन	51,603.00
3. मार्ग व्यय	76,043.00
4. लेखन सामग्री एवं छपाई	51,576.00
5. वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	34,003.00
6. डाक एवं तार	10,447.00
7. वाहन एवं पैट्रोल	93,306.00
8. विज्ञापन	42,001.00
9. कानूनी व्यय	36,012.00
10. आतिथ्य व्यय	28,189.00
11. दीक्षान्त उत्सव	24,200.00
12. लॉन संरक्षण	10,525.00
13. भवन मरम्मत	64,041 00
14. आडिट व्यय	14,040.00
15. उपकरण	55,035.00
16. फर्नीचर एवं साज-सज्जा	19,043.00
17. राष्ट्रीय छात्र सेवा	739.00

क्र. सं.	व्यय का मद	धनराशि
18.	छात्रों को छात्रवृत्ति	48,216.00
19.	खेलकूद एवं क्रीड़ा	58,920.00
20.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	7,504.00
21.	सरस्वती शै० यात्रा	13,135.00
22.	वाग्वर्धिनी सभा	8,714.00
23.	वेद प्रयोगशाला	5,952.00
24.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	3,304 00
25.	रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	37,863.00
26.	भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	38,350.00
27.	वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	43,124.00
28.	जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	27,779.00
29.	गैस प्लाण्ट	7,101.00
30.	गणित	3,253.00
31.	वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाउस)	602.00
32.	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं	67,571.00
33.	पुस्तकें	34,478.00
34.	जिल्दबंदी एवं पुस्तक सुरक्षा	17,017.00
35.	केटेलाग एण्ड कार्डस	4,083.00
36.	वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्य भट्ट गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका मिश्रित	86,191.00
37.	आकास्मक	9,650.00
38.	सदस्यताशुल्क अंशदान	39,759.00
39.	सेमीनार	14,191.00
40.	पढ़ते हुए कमाओ	6,306.00
41.	वाहन हेतु ऋण	1,46,320.00
42.	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्युटी प्रतिभूति	23,234.00
43	निर्धन छात्र कोष	200.00
44.	छात्रावास	1,018.00
45.	मिश्रित	16,798.00
46.	एल. टी. सी.	38,592.00
	योग (ख)	15,43,423.00

क्र. सं. व्यय का मद	धनराशि
(ग) परीक्षा सम्बन्धी	
47. परीक्षकों का पारिश्रमिक	51,488.00
48. मार्ग व्यय परीक्षक	28,563.00
49. निरीक्षण व्यय	23,989.00
50. प्रश्नपत्रों की छपाई	49,124.00
51. डाक तार व्यय	10,927.00
52. लेखन सामग्री	6,215.00
53. नियमावली, पाठविधि, छपाई	20,186.00
54. उत्तर पुस्तिका का मूल्य	32,060.00
55. अन्य व्यय	781.00
योग (ग)	2,23,333 00
योग (ख+ग)	17,66,756.00
सर्वयोग (क+ख+ग)	93,30,781.00

—जयदेव वेदालंकार
वित्त-अधिकारी

अलंकार, बी० एस-सी० एम० ए०, एम० एस-सी० परीक्षा १९८९ में उत्तीर्ण छात्र/छात्राओ का सूची :—

क्र सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	कक्षा	श्रेणी
१.	सर्वश्री रमेशचन्द्र	श्री रामकिशन	विद्यालंकार	द्वितीय
२.	बलबीर	श्री हरबंशलाल	एम. ए.	प्रथम
३.	महावीर	श्री ताराचन्द्र	वैदिक साहित्य	,,
४.	सुरेन्द्रकुमार	श्री बेनीराम	,,	,,
५.	भोज गोस्वामी	श्री विदेह गोस्वामी	,,	द्वितीय
६.	कर्मवीर सिंह	श्री कृपाराम	दर्शन शास्त्र	,,
७.	रामगोपाल	श्री रामदयाल	,,	,,
८.	संजय अरोड़ा	श्री आर. डी. अरोड़ा	,,	,,
९.	स्वामी सन्तोषानन्द	श्री परमानन्द	,,	प्रथम
१०.	श्रीमती निर्मला चौधरी	श्री उपेन्द्रनारायण मण्डल	,,	द्वितीय
११.	कु. जागृति	श्री शिरीषचन्द्र शर्मा	संस्कृत साहित्य	प्रथम
१२.	कु. मैत्रेयी	श्री लल्लूसिंह	,,	द्वितीय
१३.	कु. मुक्तारानी पाठक	श्री इन्द्रकुमार पाठक	,,	प्रथम
१४.	कु. रेणु मिश्रा	श्री सोमदत्त मिश्रा	,,	द्वितीय
१५.	कु. सत्यवती	श्री रामस्वरूप	,,	प्रथम
१६.	कु. शकुन्तला	श्री सूरजभान सिंह	,,	द्वितीय
१७.	लेखराज शर्मा	श्री मनिरतन	,,	प्रथम
१८.	कु. कमला	श्री फतेहसिंह	,,	द्वितीय
१९.	कु. पवित्रा वर्मा	श्री राजेन्द्रकुमार वर्मा	,,	,,
२०.	अजयकुमार गोस्वामी	श्री इन्द्रदेव गोस्वामी	हिन्दी साहित्य	,,
२१.	गुलाबचन्द्र वर्मा	श्री सौदागरप्रसाद	,,	,,
२२.	नारायण पण्डित	श्री पलकधारी पण्डित	,,	तृतीय
२३.	राकेशकुमार	श्री रामेश्वरलाल	,,	द्वितीय
२४.	सतीशकुमार	श्री वेदपाल सिंह	,,	तृतीय
२५.	राजेन्द्रप्रसाद चौहान	श्री चौहलसिंह	,,	,,
२६.	कु. अपर्णा पालीवाल	श्री विष्णुदत्त राकेश	,,	प्रथम

१	२	३	४	५
२७.	कु. बीना	श्री कृष्णस्वरूप शर्मा	एम.ए. (हिन्दी साहित्य)	द्वितीय
२८.	कु. कामिनी रानी	श्री कुँवरभान	"	"
२९.	कु. किरण अरोड़ा	श्री यशपाल अरोड़ा	"	"
३०.	कु. मधु सेंगर	श्री टी.एस. सेंगर	"	"
३१.	कु. ममता	श्री ओमप्रकाश पंवार	"	"
३२.	कु. ममता त्यागी	श्री नरेन्द्र शर्मा	"	"
३३.	कु. सीमा माहेश्वरी	श्री वेदप्रकाश	"	"
३४.	धर्मपाल	श्री बाबूराम	प्राचीन भारतीय इ., सं. एवं	"
३५.	प्रभातकुमार	श्री जबरसिंह सेंगर	पुरातत्त्व	प्रथम
३६.	रामजी पाण्डेय	श्री सूर्यनारायण पाण्डेय	"	द्वितीय
३७.	रमेशचन्द्र	श्री महेश लाल	"	"
३८.	कु. अतसी	श्री हेमचन्द्र भट्टाचार्य	"	"
३९.	कु. अनिता त्रिपाठी	श्री शारदाप्रसाद त्रिपाठी	"	प्रथम
४०.	कु. अंजना श्रीवास्तव	श्री विजयसिंह श्रीवास्तव	"	"
४१.	कु. कृष्णा	श्री तुलसीदास	"	द्वितीय
४२.	कु. ऋचा शंकर	श्री विजयशंकर	"	प्रथम
४३.	संजयकुमार मलिक	श्री धर्मपालसिंह मलिक	"	द्वितीय
४४.	कु. नीरजा मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	"	"
४५.	विकास गाँधी	श्री जे. पी. वार्ष्णेय	मनोविज्ञान	"
४६.	कु. मनजीत कौर	श्री गुरदयाल सिंह	"	प्रथम
४७.	कु. रीता शर्मा	श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा	"	द्वितीय
४८.	कु. संगीता शुक्ला	श्री किशनदास शुक्ला	"	प्रथम
४९.	शिवकुमार झा	श्री विष्णुदेवनारायण झा	"	द्वितीय
५०.	अशोककुमार त्यागी	श्री शिवचरणसिंह त्यागी	अंग्रेजी	"
५१.	अशोककुमार	श्री ओमप्रकाश	साहित्य	"
५२.	दिनेशसिंह	श्री श्रीपाल सिंह	"	"
५३.	कु. इला शंकर	श्री विजयशंकर	"	प्रथम
५४.	कु. प्रतिभा	श्री जयचन्द्र	"	द्वितीय
५५.	कु. सन्तोष कुमारी	श्री राजेन्द्र प्रसाद	"	द्वितीय
५६.	कु. संगीता कपूर	श्री मोहनलाल कपूर	"	"
५७	कु. शशिप्रभा मेहरोत्रा	श्री लक्ष्मीनारायण मेहरोत्रा	"	प्रथम
५८.	कु. साधना	श्री सूर्यप्रकाश धीमान	"	द्वितीय

१	२	३	४	५
५९.	कु. उर्मिला मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	एम.ए अंग्रेजी	द्वितीय
६०.	कु उषा कुमार	श्री नारायण शर्मा	"	"
६१	कु. वन्दना	श्री विनोदकुमार राजपूत	"	तृतीय
६२.	देवाशीष भट्टाचार्य	श्री सुबलचन्द्र भट्टाचार्य	"	"
६३.	कु. पूर्णिमा शर्मा	श्री त्रिलोकचन्द्र शर्मा	"	द्वितीय
६४.	कु. सुषमा शर्मा	श्री त्रिलोकचन्द्र शर्मा	"	"
६५.	अरुणकुमार	श्री कंवलसिंह	एम. एस-सी.	"
६६.	मनोजकुमार त्यागी	श्री महेन्द्रपाल त्यागी	गणित	"
६७.	स्वामीनाथ तिवारी	श्री रामकृपाल तिवारी	"	"
६८.	वीरेन्द्रकुमार चौहान	श्री जगदीशचन्द्र	माइक्रोबायोलोजी	प्रथम
६९.	प्रकाशचन्द्र	श्री कृष्णराम	"	"
७०.	राकेश वालिया	श्री नत्थूसिंह अहलूवालिया	"	"
७१.	सुधीर बंसल	श्री हरिशंकर बंसल	"	"
७२.	जुगलकिशोर	श्री समर्थसिंह	"	"
७३.	वीरेश गोविन्दराव	श्री भगवान गोविन्दराव	"	"
७४.	सुशीलकुमार	श्री भावीचन्द्र तोमर	"	"
७५.	आदित्यभूषण पंत	श्री सुशीलचन्द्र पंत	"	"
७६.	नन्दकिशोर	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता	"	"
७७.	रविकान्त	श्री नरेन्द्रकुमार शर्मा	"	"
७८.	तरुण चुघ	श्री दुर्गादास चुघ	"	"
७९.	जगदीपसिंह सहगल	श्री हरिदत्त सहगल	"	"
८०.	मनोजकुमार शर्मा	श्री जगपाल सिंह	"	"

१	२	३	४	५
१.	अविनाशकुमार शुक्ला	श्री रमेशकुमार शुक्ला	बी.एस-सी./गणित ग्रुप	द्वितीय
२.	अमरपाल सिंह	श्री राजवीर सिंह	"	तृतीय
३.	मुकेशकुमार	श्री सरजीत सिंह	"	"
४.	ओमप्रकाश	श्री राधेश्याम	"	द्वितीय
५.	प्रवीनसिंह	श्री तेजसिंह	"	"

१	२	३	४	५
६.	संजीव शर्मा	श्री चमनलाल	बी. एस-सी. (गणित ग्रुप)	द्वितीय
७.	रवीन्द्रसिंह	श्री सुमेरचन्द्र	"	तृतीय
८.	सन्दीप सरन	श्री वाई. सरन	"	द्वितीय
९.	संदीपकुमार	श्री कुलानन्द पुरोहित	"	"
१०.	महेश्वरमणि	श्री वशिष्ठमणि त्रिपाठी	बायो. ग्रुप	"
११.	नवाजुद्दीन सिद्दीकी	श्री नवाबुद्दीन सिद्दीकी	"	द्वितीय
१२.	प्रदीपकुमार कपिल	श्री सुमन्तप्रसाद कपिल	"	"
१३.	साधूसरन	श्री छोटेलाल	"	"
१४.	विनय शर्मा	श्री वीरेन्द्रकुमार शर्मा	"	"
१५.	राजकुमार	श्री सुमेरचन्द्र	"	"

पी-एच० डी० उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची
वर्ष १९८९

क्र.सं.	शोधार्थी का नाम	पिता का नाम	शोध शीर्षक	निर्देशक का नाम	विभाग
१.	श्री हरिश्चन्द्र	श्री कर्मसिंह	"आयुसंवर्धन (वैदिक संहिताओं के परिप्रेक्ष्य में,"	डा. भारतभूषण	वेद विभाग
२.	श्री तारानाथ मैनाली	श्री मोहनलाल मैनाली	"न्यासकार के परिप्रेक्ष्य में काशिकावृत्ति के प्रथम-द्वितीय अध्यायस्थ पदकृत्यों का समीक्षात्मक अध्ययन"	डा. रामप्रकाश शर्मा	संस्कृत विभाग
३.	कुमारी सुखदा	श्री उमरावसिंह	"प्रमाणालोचन (न्याय, बौद्ध, अद्वैत वेदान्त और पूर्व मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में)"	डा. निगम शर्मा	,,
४.	कु. राजिन्द्र कौर	श्री गुरुचरण सिंह	"देवराज—कवि और काव्य"	,,	,,
५.	श्री आर्येन्द्र सिंह	श्री रिक्षपाल सिंह	"प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य संबंध"	डा. बिनोदचंद सिन्हा	प्रा.भा. इति.
६.	श्री सुरेन्द्रकुमार	श्री ओमप्रकाश	"भारतीय दर्शनों में अहिंसा तत्व का तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण"	डा. विजयपाल शास्त्री	दर्शन विभाग
७.	Kamla Pandey	Nageshwar Prasad	"A Psycho-social study of the attitudes of acceptors and non-acceptors towards Family Planning Programme."	Prof O.P. Mishra	Psychology

ओ३म्

वार्षिक विवरण

१९९१-९२

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

प्रो० जयदेव वेदालंकार

कुलसचिव,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

नवम्बर १६६३ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :

जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	आमुख	१
२.	गुरुकुल काँगड़ी–संक्षिप्त परिचय	४
३.	दीक्षान्त समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन	१२
४.	दीक्षान्त भाषण द्वारा माननीय श्री राजेश जी पायलट, गृह राज्यमन्त्री, भारत सरकार	१६
५.	प्राच्य एवं मानविकी संकाय	२४
६.	वेद विभाग	२६
७.	संस्कृत-साहित्य विभाग	३१
८.	दर्शन विभाग	३७
९.	मनोविज्ञान विभाग	४३
१०.	प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग	४८
११.	पुरातत्व संग्रहालय	५३
१२.	अंग्रेजी विभाग	५९
१३.	हिन्दी विभाग	६१
१४.	विज्ञान संकाय	६५
१५.	गणित विभाग	६७
१६.	भौतिकी विभाग	७०
१७.	रसायन विभाग	७२
१८.	जन्तु विज्ञान विभाग	७४
१९.	वनस्पति विज्ञान विभाग	८८
२०.	Identification, screening of aquatic plant residue for energy generation and increasing biomass production by certain fast growing fuel wood species	९६
२१.	कम्प्यूटर विज्ञान विभाग व कम्प्यूटर केन्द्र	१००
२२.	पुस्तकालय विभाग	१०५

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह्
कुलपति	—डा० धर्मपाल
आचार्य एवं उपकुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सूर्यदेव
कुलसचिव	—प्रो० जयदेव वेदालंकार
डीन, मानविकी संकाय	—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र (१९९१-९२)
	—प्रो० विष्णुदत्त राकेश (१९९३ से)
डीन, विज्ञान संकाय	—प्रो० एस०एल० सिंह्
डीन, जन्तु विज्ञान संकाय	—प्रो० बी०डी० जोशी
डीन, छात्र कल्याण	—प्रो० डी०के० माहेश्वरी
वित्त अधिकारी	—श्री जयसिंह् गुप्ता
संग्रहालयाध्यक्ष	—प्रो० श्याम नारायण सिंह्
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

——

सम्पादक-मण्डल

आमुख

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के ६३ वर्ष पूरे कर रहा है। भारत में पुनर्जागरण और निर्माण की मशाल जलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के समानान्तर भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्त्तन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के रूप में किया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अध्यापन-अनुसन्धान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, दीनबन्धु एन्ड्रूज, पण्डित मदनमोहन मालवीय, मान्य गोखले, महाकवि रवीन्द्रनाथ, नरेन्द्र देव, जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा इन्दिरा गाँधी जैसे लोकनायक मनीषियों ने की है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद विज्ञान, वैदिक ज्ञान, प्राच्य विद्या और मानविकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय में कुलपति जी के आमन्त्रण पर इन वर्षों में वेद एवं संस्कृत विभागों में डा० बृजबिहारी चौबे, अध्यक्ष, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर; डा० निगम शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय तथा डा० कृष्णकुमार अग्रवाल, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने अपने विशिष्ट व्याख्यान दिए।

हिन्दी विभाग में नवभारत टाइम्स के प्रधान सम्पादक डा० विद्यानिवास मिश्र तथा प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' ने महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिए। वनस्पति विज्ञान विभाग में म्युनिख (जर्मनी) के विद्वान प्रोफेसर बी० हाँक, जवाहरलाल नेहरू वि०वि० दिल्ली के प्रोफेसर अजीत वर्मा, भागलपुर वि० वि० के प्रोफेसर के० एस० बिलग्रामी के महत्त्वपूर्ण व्याख्यान हुए।

वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रो० डी०के० माहेश्वरी को उनके वनस्पति विज्ञान सम्बन्धी विशिष्ट कार्यों के लिए "वाई० एस० मूर्ति मैडल आफ बॉटनिकल सोसायटी" प्राप्त हुआ।

विश्वविद्यालय का कम्प्यूटर विभाग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जो धीरे-धीरे अपने रचनात्मक कार्यों से देश में अपना विशिष्ट स्थान बनाने के लिए प्रयासरत है। जुलाई १९९२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कम्प्यूटर सलाहकार प्रो० आर०एस० ठाकरे ने 'भारत में कम्प्यूटर का विकास' विषय पर व्याख्यान दिया।

वर्ष १९९३ के दीक्षान्तोत्सव पर विश्वविद्यालय में माननीय श्री राजेश पायलट, गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार का आना निश्चित हुआ, परन्तु वे कुछ अपरिहार्य कारणों से उत्सव में उपस्थित नहीं हो पाए, परन्तु उन्होंने अपना भाषण विश्वविद्यालय के लिए भिजवाया, जिसको दीक्षान्तोत्सव पर मुख्य अतिथि के स्थान पर विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् के सम्मानित सदस्य डा० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने पढ़ा।

शिक्षा के अतिरिक्त ग्रामोद्धार, प्रसारकार्य, प्रौढ़ शिक्षा, सामाजिक पुनरुत्थान तथा राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में भी गुरुकुल का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। उत्तरप्रदेश के उत्तरकाशी जनपद में भूकम्प राहत का कार्य विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग द्वारा एक शिविर लगाकर किया गया।

महाराष्ट्र में आए भयंकर भूकम्प से पीड़ित जनों की सहायता के लिए विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने एक दिन का वेतन प्रधानमन्त्री भूकम्पराहत कोष में देने का निश्चय किया। कुलपति डा० धर्मपाल आर्य, डा० श्रवणकुमार शर्मा, अध्यक्ष शिक्षक संघ तथा हेमन्त आत्रेय, सचिव शिक्षकेत्तर कर्मचारी संघ ने प्रधानमंत्री आवास पर जाकर एक लाख एक सौ एक रुपये की राशि प्रधानमंत्री माननीय नरसिंहाराव की भेंट की। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान गुरुकुल की इस उदात्त भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस वर्ष अनुदान आयोग ने एम०सी०ए० का नवीन पाठ्यक्रम चलाने की अनुमति दी। फलतः लड़कों के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा

महाराष्ट्र में आए भीषण विनाशकारी भूकम्प से त्रस्त जनता की सेवा के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, शिक्षकेत्तर कर्मचारियों, कुलवासियों तथा फार्मेसी के कर्मचारियों ने मुक्त हस्त से प्रधानमन्त्री राहतकोष में दान दिया।

चित्र में प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरसिंहराव को एक लाख एक सौ एक रुपये का चैक प्रदान करते हुए कुलपति डा० धर्मपाल आर्य, उनके साथ खड़े हैं प्रो० जयदेव वेदालंकार कुलसचिव, डा० राजकुमार रावत, फार्मेसी व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल फार्मेसी, डा० श्रवणकुमार शर्मा, अध्यक्ष अध्यापक संघ, हेमन्त कुमार, महामन्त्री शिक्षकेत्तर कर्मचारी संघ तथा प्रधानमन्त्री निवास के कर्मचारी।

लड़कियों के लिए कन्या गुरुकुल देहरादून में कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी गई। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर चौधरी तथा कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने कम्प्यूटर के नवीन पाठ्यक्रम के उद्घाटन पर सम्वोधित कर छात्रों का मार्गदर्शन किया। इसके अतिरिक्त इसी सत्र से विश्वविद्यालय की प्राच्य उपाधि अलंकार के साथ-साथ आधुनिक उपाधि बी०ए० की कक्षाएँ भी प्रारम्भ की गई।

भारत से बाहर जाकर गुरुकुल के सम्मान की वृद्धि करने वाले आचार्यों में डा० भारतभूषण (बाली तथा जकार्ता), डा० रणधीर सिंह (इंग्लैण्ड), डा० बी० डी० जोशी (इंग्लैण्ड) तथा डा० डी० के० माहेश्वरी (स्पेन तथा जापान) के नाम उल्लेखनीय हैं।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन-प्रकाशन तथा विभिन्न विश्व-विद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों तथा शोध समितियों में भाग लेकर अपने पद की गौरववृद्धि की। कुछ शिक्षकों को प्रोन्नति मिली। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में अलग-अलग इन विद्वानों के निजी क्रिया-कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सद-स्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रो० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव

गुरुकुल काँगड़ी–संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नए पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ९३ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में सँजो लिया और फिर इन्हीं शाखाओं से नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल काँगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारत-वर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल काँगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रांति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के

विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा

न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह

शिक्षा सम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसन्धान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया।

इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे :

१. वेद महाविद्यालय

२. साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार

से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुँजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्या-

लंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेख-नीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल काँगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्या-धिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम०ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच.डी. (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उप-लब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर०सी० शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्य-वसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्व-विद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ९३ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक

एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम काँगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिये पूर्वकुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहाँ स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय (प्राच्य संकाय)

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम.ए. और पी-एच. डी. उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय (मानविकी संकाय)

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित, योग और अंग्रेजी में एम. ए. तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच. डी. उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की सकती है। सत्र ९२-९३ से छात्राओं के लिए भी एम.ए. कक्षाओं की अलग से व्यवस्था की गई है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी. एस-सी. की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पतिशास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रो-वायोलोजी, कम्प्यूटर और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ गणित, माइक्रोवायोलोजी, भौतिकी, रसायन में चल रही हैं।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिए जाने के बाद इस महाविद्यालय में पर्याप्त विस्तार हुआ है तथा भविष्य में इसके तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जन-कल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय गुरुकुल के जो भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत चार वर्षों से चल रहा है। इसके साथ ही योग में एम०ए० की कक्षाएँ भी सत्र ९२-९३ से प्रारम्भ कर दी गई हैं। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों

को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत पांच वर्षों से चल रहा है। अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा का तीन-मासीय दक्षता प्रमाणपत्र' पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त एक प्रोजेक्ट वनस्पति विज्ञान विभाग में चल रहा है। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों — परिद्दष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

—*—

दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर कुलपति का प्रतिवेदन

श्रद्धेय संन्यासीवृन्द, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माननीय गृह राज्यमन्त्री श्रीयुत राजेश जी पायलट, सज्जनों, देवियों, नवदीक्षित स्नातकों, प्रिय ब्रह्मचारियों एवं विश्वविद्यालय परिवार के सहयोगियों !

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के ९२वें दीक्षान्त समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमारा यह सौभाग्य है कि आज इस दीक्षान्त समारोह में भारत सरकार के गृह राज्यमंत्री श्री पायलट जो हमारे मध्य में विद्यमान हैं। मैं इस सभागार में उपस्थित समस्त कुलवासियों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि यदि हमारे आतिथ्य में कोई त्रुटि रह जाए तो उस ओर ध्यान न देंगे।

प्रिय स्नातकों, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने आज से ९२वें साल पूर्व भागीरथी के तट पर घने वन में जिस गुरुकुल की स्थापना की थी, उस गुरुकुल ने राष्ट्र को पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, स्वामी सम्पूर्णानन्द, आचार्य अभयदेव, आचार्य प्रियव्रत, डा० सत्यकेतु, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, डा० रामनाथ वेदालंकार सदृश ऐसे अनेक स्नातक प्रदान किये जिन्होंने अनेकों क्षेत्रों में अपने यश और गौरव के कीर्तिमान स्थापित किये। मैं ये चाहता हूँ कि आप इस परम्परा को आगे बढ़ायें तथा कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को चरितार्थ करें। अपनी योग्यता और आचरण की ऐसी छाप समाज पर अंकित करें जिससे सम्पूर्ण समाज का ध्यान आपकी ओर आकृष्ट हो। कठोर परिश्रम, निष्ठा, आत्मविश्वास, सत्य और श्रद्धा—ये जीवन के ऐसे आभूषण हैं जिनसे मानव-जीवन चमक उठता है। मैं आज आपसे ऐसे उत्तम जीवन-निर्माण की आशा करता हूँ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह ने कुलपताका का आरोहण किया। चित्र में कुलपताका वन्दना करते हुए विश्वविद्यालय के पदाधिकारी। बाएं से- प्रो० जयदेव वेदालंकार कुलसचिव, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एवं उप-कुलपति (कार्यवाहक कुलपति), कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह तथा पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री सदस्य शिष्ट परिषद् एवं मंत्री आर्य विद्या सभा।
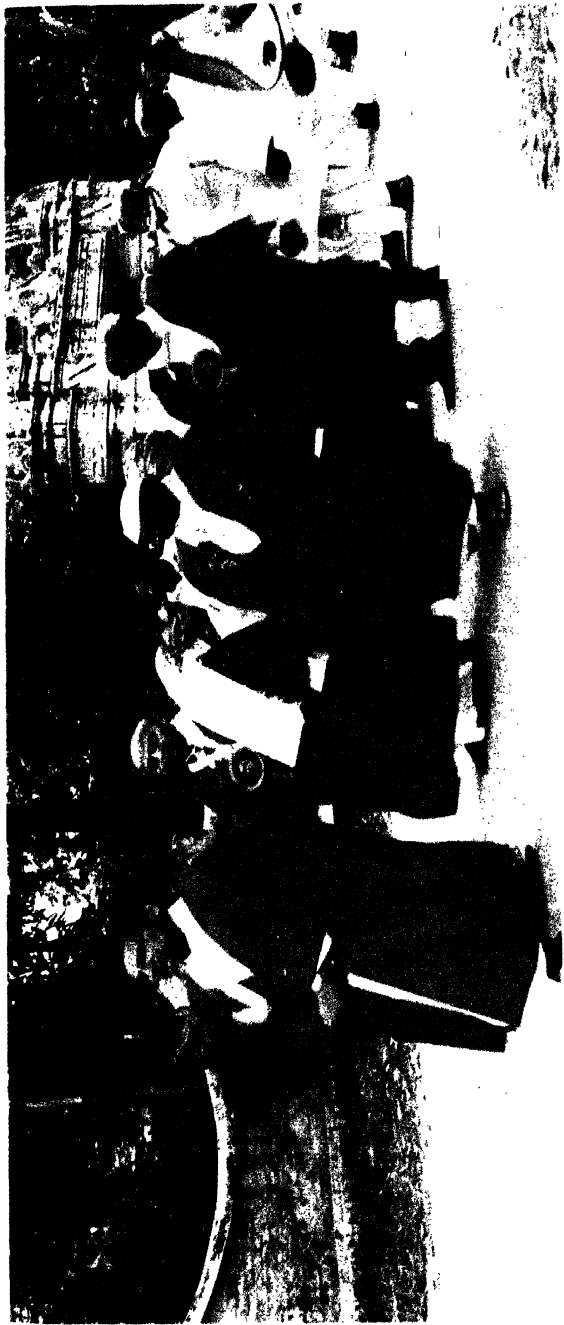
चित्र में दीक्षान्त स्थल की ओर जाते हुए विश्वविद्यालय के पदाधिकारी।

दीक्षान्त स्थल की ओर जाते हुए विश्वविद्यालय के नवस्नातक, नव स्नातिकाएं तथा आचार्यगण।

आर्य बन्धुओं, आज दीक्षान्त समारोह के इस अवसर पर विश्वविद्यालय की विकास-यात्रा का छोटा-सा चित्र प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। वित्तीय कठिनाइयों से गुजरता हुआ भी यह विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। विश्वविद्यालय के विविध विभाग अपनी योजनायें लेकर आगे बढ़ रहे हैं किन्तु अर्थाभाव से प्रगति की गति कुछ धीमी है।

विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान जैसे विषयों के उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य के साथ अब कम्प्यूटर, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायलोजी, भौतिकी, रसायन और गणित जैसे आधुनिक विषयों में भी उच्चस्तरीय अनुसंधान कार्य चल रहा है। विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के साथ-साथ, योग में स्नातकोत्तर अध्ययन तथा पत्रकारिता प्रशिक्षण हमारी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। राष्ट्रीय सेवा योजना, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों तथा शिविरों द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी देश की मिट्टी के साथ जुड़ने का सतत् प्रयत्न करते हैं।

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों की संक्षिप्त प्रगति इस प्रकार है :

वैदिक साहित्य

वेद विभागाध्यक्ष प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार की वैदिक पुष्पाञ्जलि आदि चार पुस्तकें इस वर्ष प्रकाशित हुईं। डा० मनुदेव 'बन्धु' ने दर्शन विभाग में हुए सेमिनार में वैदिककर्म मीमांसा विषय पर शोधपत्र वाचन किया। छात्रों को सस्वर वेदमंत्र सिखलाने के लिए कर्नाटक से श्री कृष्ण भट्ट को बुलाया गया है जो छात्रों को सस्वर मंत्रपाठ सिखा रहे हैं। वैदिक प्रयोगशाला एवं संग्रहालय में छात्रों को कर्मकाण्ड की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, डा० भारत भूषण, डा० मनुदेव बन्धु आदि के निर्देशन में कई छात्र शोधकार्यरत हैं।

संस्कृत साहित्य

यह विभाग शोधकार्य में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। लगभग २४ शोधछात्र पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं। इस वर्ष ४ छात्रों ने शोध-

प्रबन्ध प्रस्तुत किए हैं तथा ८ छात्रों का नवीन पंजीकरण किया गया है। विभाग ने २३ सितम्बर को डा० रामनाथ वेदालंकार के मुख्यातिथ्य में संस्कृत दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनाया। प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री तथा डा० महावीर शास्त्री ने मुरादाबाद में आयोजित वैदिक संगोष्ठी में 'वैदिक शासन व्यवस्था' विषय पर तथा गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग द्वारा आयोजित शोध संगोष्ठी में 'कर्म सिद्धान्त और व्यक्ति स्वातन्त्र्य' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किये। इस वर्ष डा० महावीर अग्रवाल की पुस्तक 'वाल्मीकि रामायण में रस विमर्श' प्रकाशित हुई।

अंग्रेजी विभाग

डा० नारायण शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की। आपके सम्पादकत्व में 'वैदिक पाथ' अंग्रेजी पत्रिका प्रकाशित हो रही है। डा० शर्मा का एक शोध लेख मेरठ विश्वविद्यालय के कम्पेरेटिव जर्नल में कैनेडियन लिटरेचर पर प्रकाशित हुआ।

डा० एस०के० शर्मा ने बड़ौदा विश्वविद्यालय में एक माह की कार्यशाला में भाग लिया, जो यू०जी०सी० एवं एसोसियेशन आफ कैनेडियन स्टडीज़ के सहयोग से सम्पन्न हुई। आपका एक शोधलेख मेरठ विश्वविद्यालय की कैनेडियन साहित्य पर प्रकाशित शोध पत्रिका में छपा। २६ अप्रैल १९९३ को मेरठ विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया तथा आपका एक शोधलेख वैदिक पाथ में प्रकाशित हुआ।

डा० नारायण शर्मा, श्री एस० एस० भगत, डा० श्रवणकुमार शर्मा एवं डा० अम्बुज शर्मा के निर्देशन में लगभग २० छात्र पी-एच०डी० हेतु शोध कार्यरत हैं।

हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग में इस सत्र में जो विशिष्ट व्याख्यान हुए उनमें नवभारत टाइम्स के प्रधान सम्पादक डा० विद्यानिवास मिश्र, श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु', श्री राजेन्द्र यादव आदि प्रमुख हैं। केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय, नई दिल्ली से अहिन्दीभाषी राज्यों के छात्रों का एक दल अध्ययन यात्रा पर आया। इसी अवधि में डा० विष्णुदत्त राकेश की श्रुतिपर्णा तथा देवरात नामक

पुस्तकें प्रकाशित हुईं। डा० ज्ञानचन्द रावल, डा० भगवानदेव पाण्डेय तथा श्री कमलकांत बुधकर ने जोधपुर विश्वविद्यालय में पुनर्वीक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया। डा० सन्तराम वैश्य की एक पुस्तक 'सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध' प्रकाशित हुई।

मनोविज्ञान विभाग

विभाग में सभी शिक्षकों के निर्देशन में शोधकार्य हो रहा है। इस वर्ष श्री ओ०पी० मिश्र के निर्देशन में जिन्होंने कार्य किया, ऐसे तीन छात्रों को पी-एच०डी० की उपाधि से अलंकृत किया जा रहा है। प्रो० सतीश धमीजा की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। डा० एस०के० श्रीवास्तव एक रिसर्च प्रोजेक्ट पर यू०जी०सी० के वित्तीय अनुदान से कार्य कर रहे हैं।

दर्शन विभाग

यह विभाग पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य के साथ-साथ समय-समय पर उच्चस्तर की शोध संगोष्ठियाँ आयोजित करता है। इस वर्ष भी २४ से २६ मार्च तक प्रो० जयदेव वेदालंकार के संयोजकत्व में 'कर्म सिद्धान्त और व्यक्ति स्वातन्त्र्य' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें अनेक विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जन्तुविज्ञान विभाग

प्रो० बी०डी० जोशी द्वारा भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत योजना 'इकोबायोलाजी आफ भगीरथी रिवर' सफलतापूर्वक पूर्ण की गई। डा० ए०के० चोपड़ा के निर्देशन में भी एक परियोजना चल रही है। इस विभाग द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की ओर अग्रसर है। डा० बी०डी० जोशी की एक पुस्तक 'वैदिक फिलासफी आफ इको मैनेजमेंट' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है। इस वर्ष इस विभाग के प्राध्यापकों के २२ शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं। प्रो० जोशी की पर्यावरण एवं अन्य वैज्ञानिक विषयों पर रेडियो वार्ताएँ प्रसारित हुई हैं। उनके निर्देशन में एक शोध-छात्रा को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है तथा ६ शोधकार्य कर रहे हैं। डा० ए०के० चोपड़ा ने एशिया स्तर की गोष्ठी में 'परजीवियों' पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

रसायन विभाग

मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष रसायन विभाग में भी स्नातकोत्तर कक्षाओं के साथ पी-एच०डी० हेतु अनुसंधान कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस वर्ष ३ शोधछात्रों का पंजीकरण हुआ है। इस विभाग की यह विशेषता है कि इसमें प्राचीन रसायन शास्त्र को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। डा० इन्द्रायण के अनेक कार्यक्रम आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुए हैं। डा० आर०डी० कौशिक ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एक माह का रिफ्रेशर कोर्स किया है। डा० रणधीर सिंह ने सरे विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड में इण्टरनेशनल सिम्पोजियम में अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

भौतिकी विभाग

इस विभाग में भी शोधकार्य प्रारम्भ हो चुका है। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में इस विभाग के छात्रों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

वनस्पति विज्ञान विभाग

इस विभाग के प्रो० डी०के० माहेश्वरी तथा डा० पुरुषोत्तम कौशिक के शोधलेख अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। प्रो० माहेश्वरी के निर्देशन में ३ छात्रों को भोपाल विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। एक शोध परियोजना भी यू०जी०सी० के अनुदान से चल रही है। विभाग में शोधकार्य भी भली-भाँति चल रहा है।

कम्प्यूटर विभाग

यू०जी०सी० द्वारा प्रदत्त अनुदान से इस विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना की गई। १९८८ में कम्प्यूटर अणु प्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रारम्भ हुआ। इस विभाग के अध्यक्ष डा० विनोद कुमार के शोध लेख पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। फरवरी १९९२ में 'निरुक्त पर कम्प्यूटर के अनुप्रयोग' श्री दिनेश विश्नोई के संयोजकत्व में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जुलाई १९९२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कम्प्यूटर सलाहकार प्रो० एस०आर० ठाकरे ने 'भारत में कम्प्यूटर विकास' पर व्या-

विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में कुलगीत प्रस्तुत किया गया। चित्र में मंच पर बांए से डा० धर्मपाल आर्य सदस्य शिष्ट परिषद तथा सम्प्रति कुलपति, डा० विजयेन्द्र स्नातक पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय तथा सदस्य शिष्ट परिषद्, प्रो० शेर सिंह कुलाधिपति, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, कार्यवाहक कुलपति, पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री, सदस्य शिष्ट परिषद, श्री महेन्द्र कुमार, सहायक मुख्याधिष्ठता, डा० गंगाराम गर्ग एवं श्री सच्चिदानंद शास्त्री।

दीक्षान्त मण्डप में दीक्षान्त से पूर्व यज्ञ करते हुए आचार्य पण्डित राम प्रसाद वेदालंकार, प्रो० शेर सिंह, नव-स्नातक प्रतिनिधि विनय, डा० देवेन्द्र मोहिनी भसीन तथा पण्डिता श्रीमती प्रभात शोभा, सदस्या कार्यकारिणी तथा शिष्ट परिषद्।

विश्वविद्यालय भवन में दीक्षान्त मंच पर बैठे विश्वविद्यालय के पदाधिकारी–अग्रिम पंक्ति में बांए से डा० विजयेन्द्र स्नातक, श्री सोमपाल सांसद, डा० धर्मपाल आर्य, प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० शेर सिंह, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, श्री प्रकाशवीर तथा डा० गंगाराम गर्ग।

दीक्षान्त मण्डप में उपाधियां प्राप्त करने के बाद अपने आसनों पर बैठे नव-स्नातक एवं नवस्नातिकाएं।

ख्यान दिया। यह विभाग शीघ्र ही विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए एक अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहा है।

पुस्तकालय

इस विश्वविद्यालय का पुस्तकालय समस्त भारत के शोधार्थियों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है। इस समय इसमें एक लाख दस हजार से भी अधिक ग्रन्थों का संकलन है, जिनमें पन्द्रह हजार पुस्तकें दुर्लभ एवं अप्राप्य हैं। पुस्तकालय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की २२० पत्रिकायें मंगाई गयीं, जिनमें अभी एक लाख रुपये व्यय हुआ है। उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से बारह लाख रुपये की लागत से संदर्भ पुस्तकालय का निर्माण पूर्ण हो चुका है। शीघ्र ही यह भवन लोक निर्माण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को हस्तांतरित कर दिया जायेगा।

इनके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग ने इस वर्ष एक अन्तर्विश्वविद्यालयोय प्रतियोगिता भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव में आयोजित की जो श्री एस०के० डागर के परिश्रम से पूर्ण सफल रही। योग विभाग तथा प्रौढ़ शिक्षा विभाग भी विश्वविद्यालय के विकास में संलग्न हैं।

इस विश्वविद्यालय का पुरातत्त्व संग्रहालय भी दर्शनीय है जिसमें सिंधु सभ्यता से लेकर १९वीं शती तक की विभिन्न पुरातत्त्व वस्तुएँ, प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं मुद्राएँ संकलित हैं।

इस संग्रहालय के श्रद्धानन्द कक्ष में स्वामी श्रद्धानन्द जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं।

प्रिय ब्रह्मचारियों !

जिन शाश्वत जीवन-मूल्यों की रक्षा के लिए, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, चरित्र निर्माण, धार्मिक सद्भाव की स्थापना के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ हुई, आज उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की इस पुण्यभूमि में शिक्षा प्राप्त नवदीक्षित स्नातक अवश्य ही जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे। मैं आप सबकी सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

मुझे यह कहते हुए गौरव मिश्रित हर्ष है कि विश्वविद्यालय के बहुमुखी विकास में विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, ब्रह्मचारियों तथा अभिभावकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। माननीय कुलाधिपति प्रोफेसर शेरसिंह जी तथा परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत जी का मैं कृतज्ञ हूँ जिनके मार्ग-दर्शन और संरक्षण में विश्वविद्यालय प्रगति कर रहा है।

सज्जनों, हमारा यह सौभाग्य है कि हमारे मध्य में केन्द्रीय गृह राज्य-मंत्री (आंतरिक सुरक्षा) माननीय श्री राजेश पायलट दीक्षान्त भाषण देने के लिए पुण्यभूमि में पधारे हैं। उनका जीवन राजनीति के साथ-साथ समाज सेवा के लिए सर्मपित है। एक ओजस्वी वक्ता, सुयोग्य प्रशासक, मनीषी शिक्षा-शास्त्री तथा कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में भारतीय राजनीतिक गगन में आपकी एक अलग छवि है। राष्ट्र की ज्वलन्त समस्यायें, चाहे वह कश्मीर की हो, पंजाव की हो, या अन्य किसी की हो, आप उसको सुलझाने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा देते हैं। विभिन्न भाषाओं में जो कुशलता आपको प्राप्त है, उससे श्रोता मुग्ध हो उठते हैं। भारत का प्राण किसान आपकी ओर आशा और स्नेह से निहार रहा है। आज हम समस्त कुलवासी ऐसे मनीषी को अपने वीच पाकर धन्य हैं। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रति आपका अनुराग आज आपको हमारे मध्य में उपस्थित कर सका है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग से विश्वविद्यालय की भावी योजनाएँ पूर्ण हो सकेंगी।

अन्त में, मैं यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्य शालिनी,
देशोऽयं क्षोभरहितः सज्जनाः सन्तु निर्भयाः।

रामप्रसाद वेदालंकार
कुलपति

१४ अप्रैल, १९९३

दीक्षान्त-भाषण

द्वारा

माननीय श्री राजेश जी पायलट

गृह राज्यमन्त्री, भारत सरकार

ओ३म् सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ॥

परम माननीय कुलाधिपति महोदय, सम्मान के योग्य कुलपति जी, श्रद्धा के योग्य आचार्यगण, सम्मान के पात्र आर्यमहिला एवं आर्यपुरुष तथा प्रिय नवस्नातकगण !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के १९९३ के दीक्षान्त समारोह पर विद्या एवं तप की पवित्र स्थली पर आमन्त्रित कर आपने मुझे जो सम्मान प्रदान किया, उसके लिये मैं हृदय से आपका आभार प्रकट करता हूँ । साथ ही श्रद्धा एवं व्रत के धनी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ, जिन्होंने युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द की वैदिक शिक्षा पद्धति व सिद्धान्तों को मूर्त्त रूप देने के लिये गंगापार कांगड़ी ग्राम के निकट जंगल में इस संस्था की स्थापना की । महर्षि दयानन्द के उपदेशों के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी भारत को अविद्या, अकर्मण्यता, अज्ञान एवं परतन्त्रता के अंधकार से निकाल कर देश और समाज को सत्य, पवित्रता और स्वतन्त्रता के रथ पर आरूढ़ करने का आजीवन प्रयत्न करते रहे । स्वामी श्रद्धानन्द जी की दृष्टि में शिक्षा का अर्थ केवल व्यक्तिगत विकास नहीं था, अपितु शिक्षा द्वारा ऐसे नर-नारियों का निर्माण करना था जो अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व को भली-भाँति निभा सकें, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, संसार का उपकार करें । बालकों की शिक्षा में सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय माता, पिता और आचार्य द्वारा उनके सामने सही आचरण प्रस्तुत करना हैं । बालकों का आचरण माता,

पिता, आचार्य की कथनी की अपेक्षा उनकी 'करनी' का अनुकरण होता है। इसीलिए कहा भी है, 'मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद:'। स्वामी श्रद्धानन्द के तप, त्याग और आदर्श जीवन ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को मूर्धन्य राष्ट्रीय शिक्षण संस्था बना दिया। अपने समग्र जीवन को उन्होंने गुरुकुल के महान् राष्ट्रीय यज्ञ की हवि बनाकर समर्पित किया। वे विद्याभ्यास के साथ विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, तप तथा अनुशासन पर बल देते रहे। सम्भवत: यह अमर श्लोक उनके जीवन का रसायन था।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मन: ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ।।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानकर ज्ञान, कर्म, उपासना की वृद्धि करने के लिए गुरुकुल में अनेक विद्याओं के पठन-पाठन की व्यवस्था की। उनके हृदय में अपार प्रेम, धैर्य और उत्साह था। आत्मीयता से उनका रोम-रोम व्याप्त था। वे विद्यार्थियों के पिता थे, उनकी प्रेरणा के अजस्र स्रोत थे।

अपने शिष्य-ब्रह्मचारियों पर उन्हें अगाध निष्ठा थी। उन्होंने मधुरता और प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐश्वर्य के परिवेश में अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन और स्रजन का वातावरण बनाया। आत्मिक ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान के समन्वय का श्रीगणेश किया। उनके आदर्श से अनुप्राणित वर्चस्वी स्नातक और आचार्य धर्म, संस्कृति, समाज, वेदज्ञान एवं संस्कृत वांग्मय का प्रचार-प्रसार, हिन्दी में उच्चस्तरीय शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण, प्राचीन इतिहास सम्बन्धी शोधकार्य, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि में विशेष योगदान कर, गुरुकुल की ख्याति में महान् सहयोग देते रहे। देशभक्ति से आप्लावित और राष्ट्रीय भावना से उद्दीप्त गुरुकुल के स्नातकों ने देशव्यापी सेवाकार्य और स्वाधीनता संग्राम में स्तुत्य भाग लिया।

यह तथ्य है कि वर्तमान में परिवर्तन की सहजरूपता के कारण अन्य प्रमुख शिक्षण संस्थाओं के समान गुरुकुल भी आधुनिकता में अग्रगामी हुआ है। आज गुरुकुल आध्यात्मिक चेतना को उद्‌बुद्ध करने वाले वेदादि सत्शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन के साथ वैज्ञानिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है। आज इस

विश्वविद्यालय में लगभग सभी आधुनिक विषय पढ़ाए जा रहे हैं। यहाँ प्राचीन तथा नवीनता का समन्वय सबको अपनी ओर आकृष्ट करता है। मानवजीवन के साथ शिक्षा का सत्य सम्बन्ध क्या है, इसका उत्तर स्वामी श्रद्धानन्द के इस अमर स्मारक गुरुकुल से मिल सकता है।

प्रिय स्नातकों,

आज आप अपनी विद्या पूर्ण करके उसकी सफलता के लिए दीक्षित हो रहे हैं। इस समावर्त्तन संस्कार की पावन वेला पर उपस्थित आप स्नातकों का मैं अभिनन्दन करता हूँ तथा उपाधि प्राप्ति पर आपको बधाई देता हूँ। स्वाभाविक ही है कि इस समय आपका हृदय हर्ष एवं उल्लास से भरा है। सम्भवत: आपके हृदय में भविष्य को सुखद करने वाले स्वर्णिम स्वप्न आ रहे होंगे। मैं आपके स्वप्नों के साकार होने की मंगल कामना करता हूँ।

आप विद्या में अवगाहन कर चुके हैं, विवेकशील हैं तथा यह भलीभांति जानते हैं कि प्रकाश एवं अन्धकार का, देव और असुर का संग्राम निरन्तर हमारे हृदयों में चलता रहता है, न केवल हृदयों में अपितु घर में, समाज में, देश में तथा विश्वभर में यह संग्राम चल रहा है। मैं आपके आन्तरिक और बाह्य परिवेश में आध्यात्मिक, अधिभौतिक और अधिदैविक सुख शान्ति की तथा द्वेषरहित परस्पर प्रेम और सहयोग की हार्दिक कामना करता हूँ।

नवस्नातकों,

आज विज्ञान तथा गतिशीलता का युग है। इस युग में आपका सामंजस्य किस स्तर पर, किस प्रकार होगा—उपभोक्ता के रूप में या स्रष्टा के रूप में। मुझे विश्वास है कि जिस पवित्र स्थली में आपने आचार्यगण के प्रति श्रद्धा रखते हुए विद्या प्राप्त की है, उसी स्थली में शिक्षित पुराने स्नातकों ने स्वयं को स्रष्टा के रूप में प्रस्तुत किया था। आप में भी स्रजना की अनन्त सम्भावनाएँ प्रसुप्त पड़ी हैं, इन्हें आपको जगाना है।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

आज की परिस्थिति पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि विज्ञान की गति बहुत तेज हो गई है। विज्ञान की नई-नई खोजें देखते ही देखते पुरानी

पड़ रही हैं। संख्या की दृष्टि से भारतीय वैज्ञानिकों का संसार में तीसरा स्थान है। उनको योग्यता भी किसी से कम नहीं। भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ हमारा गौरव है। रोहिणी, भास्कर, एप्पल तथा इनसेट, भारतीय वैज्ञानिकों की बड़ी सफलतायें हैं। भारत ही विश्व का एकमात्र देश है जहाँ मानवजीवन की शतवर्षीय वैज्ञानिक योजना 'जीवेम शरदः शतम्' आज तक चली आ रही है। भारतीय उदात्त जीवन की व्यापक दृष्टि और दिव्यता का रहस्य है ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम और संन्यासाश्रम।

हम विज्ञान और आधुनिक टैक्नोलॉजी में पश्चिम के ऋणी हैं, किन्तु कुछ भारतीय दुर्भाग्यवश अपनी संस्कृति और भाषा को भी हीन तथा द्वितीय श्रेणी की समझने लगे हैं।

विसंस्कृतिकरण का यह विष सुरसा की तरह फैलता ही जा रहा है, फिल्मों, रेडियो और दूरदर्शन ने इसे उग्र रूप दे दिया है। आयातित, आरोपित संस्कारों की चादर ओढ़े ये लोग तथाकथित सभ्य बनकर अपने धर्म, भाषा और संस्कृति की अवहेलना करते हैं। यह निश्चित है कि जब तक भारतीय अपने सही स्वरूप को नहीं पहचानेंगे तब तक भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा नहीं बन सकेगी।

प्रिय स्नातकों,

अर्जित ज्ञान और संस्कारों के आधार पर आपको अपना दायित्त्व निभाना है, अपना ध्येय निश्चित करना है। अपने शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास करना है। तैत्तिरीय उपनिषद् के अमर वाक्यों, सत्यं वद, धर्मं चर, विशेषतया 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्' पर आजीवन आचरण करना है। इस पर आचरण करने से आपकी अन्तर्निहित शक्तियों की दिव्यता का पूर्ण विकास होगा, जीवन को नई दिशा, आशा और उत्साह मिलेगा। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को नये आयाम प्राप्त होंगे। प्रश्न आपके जीवन को जीवनधारा से जोड़ने का है। जीवन से जुड़ना अपने परिवेश की किसी भी ज्वलन्त समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण और समाधान करना है। आध्यात्मिक अभ्युदय और भौतिक अभ्युदय के समन्वय में ही जीवन प्रकाशवान होता है। पश्चिमी देशों को यही हमारी देन है। आदान-प्रदान की परम्परा स्वीकार्य है, इससे जीवन उन्नत होता है। परन्तु सदा ही माँगते

रहना, परमुखापेक्षी होना शोभा नहीं देता। हमने पश्चिम से माँगा किन्तु आज देश में उसकी परिणति क्या हुई है।

अपरिमेय चिन्ता :

दूसरों के दुःख के प्रति असंवेदनशीलता और परिणामस्वरूप युवा आक्रोश, मानवमूल्यों और मान्यताओं का ह्रास।

भौतिक विज्ञान की प्रगति वरदान न बनकर तब अभिशाप बन जाती है, जब मानव की भौतिकता आध्यात्मिकता से सम्बन्ध तोड़ देती है। ऐसा होते ही भौतिकवादी केवल अपने लिए जीते हैं, अकेले ही खाते हैं। विश्वशान्ति के लिये, भौतिकवादी परिश्रम की प्रलयंकारी हिंसा को नियन्त्रित करने के लिये, भारत की संजीवनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ जीवन का सामंजस्य ही एकमात्र उपाय है।

प्रिय स्नातकों,

आप शंका मत कीजिए। आसुरी सम्पत पर विजय पाने के लिये आपके हृदय में दैवी सम्पत की शाश्वत धरोहर है। आप स्वयं पर, अपने देश, धर्म और संस्कृति पर श्रद्धा रखें, अन्धविश्वास नहीं, श्रद्धा से ज्ञान, प्रेयस और निःश्रेयस प्राप्त होते हैं। संशय से तो महानाश ही होता है।

धर्म पर विश्वास के साथ आपकी बुद्धि विशाल हो ताकि आप नये तथ्य ग्रहण कर सकें। ज्ञान-विज्ञान के नये क्षितिज खोजें, गहराइयाँ मापें। आपका हृदय विशाल हो, जो नई चेतना और आत्मीयता का माध्यम बन सके। आप अपने देश के कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनें, केवल अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट न रहें वरन् सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें। यह दीक्षान्त ही नहीं अपितु नया प्रारम्भ है। आपके इस नये अभियान की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभ-कामनायें।

———

प्राच्य एवं मानविकी संकाय

शिक्षा सत्र ९१-९२ में छात्रों की संख्या इस प्रकार रही :—

कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
विद्या विनोद	११	—	—
विद्यालंकार	४४	१३	८
एम०ए० (मनो०)	१२	३	—
(हिन्दी)	४	३	—
(अंग्रेजी)	११	२	—
(इतिहास)	६	७	—
(दर्शन)	६	३	—
योग डिप्लोमा	४७	—	—
हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा	२१	—	—
ब्रिज कोर्स	१२	—	—
अंग्रेजी प्रमाणपत्र	८	—	—

१. १५ जुलाई, १९९१ से यज्ञोपरान्त सत्र प्रारम्भ हुआ।

२. इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस मुख्य कार्यालय के प्रांगण में धूम-धाम से मनाया गया। ध्वजारोहण कुलपति महोदय द्वारा किया गया।

३. दिनांक २९ नवम्बर १९९१ को प्राच्य एवं मानविकी संकाय में **E. E. G. and Behaviour Correlates** विषय पर डा० ब्रह्मदत्त का व्याख्यान आयोजित किया गया।

४. दिनाँक १३ दिसम्बर, १९९१ को कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने 'ध्यान योग' पर व्याख्यान किया।

५. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में वाद विवाद प्रतियोगिता, प्रश्न मंच, श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता तथा अन्य कई खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

६. २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाया गया।

७. दिनांक ५, अप्रैल १९९२ को वेद मन्दिर में विवेकानन्द भारत परिक्रमा के अन्तर्गत विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए गए।

८. दिनांक १ मई, १९९२ से वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित की गईं।

९. १६ मई, १९९२ को सत्रावसान हुआ।

९२ - ९३

शिक्षा सत्र ९२-९३ में छात्रों की संख्या इस प्रकार रही :—

कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
विद्या विनोद	४	६	—
विद्यालंकार	३०	१३	११
एम०ए० (हिन्दी)	३२	३	—
(अंग्रेजी)	४४	१	—
(मनो०)	४७	०४	—
हिन्दी पत्रकारिता	३०	—	—

१. १५ जुलाई १९९२ से सत्रारम्भ हुआ।

२. १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया।

३. २२ सितम्बर को संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किए गए।

४. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में विभिन्न खेल-कूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

५. इस वर्ष से विश्वविद्यालय में छात्राओं को एम० ए० / एम-एस० सी० कक्षाओं में संस्थागत छात्राओं के रूप में प्रवेश दिया गया।

६. सत्रावसान १६ मई, १९९३ को हुआ।

प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

वेद विभाग

१९९१-९२

सन् १९०० में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की स्थापना प्राचीन भारतीय मनीषियों के द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलते हुए, व्यावहारिक ज्ञान के साथ वेद आदि शास्त्रों का गहन चिन्तन तथा मनन अभीप्सित था। तभी से महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट मार्ग से साङ्गोपाङ्ग वेदों के अध्ययन की परम्परा के साथ वेद विभाग प्रतिष्ठित हुआ। इस विभाग को श्री दामोदर सातवलेकर, पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड, पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, आचार्य अभयदेव, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, स्वामी ब्रह्ममुनि, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति जैसे प्रसिद्ध विद्वान् अलंकृत करते रहे। इस विश्वविद्यालय के अनेक वैदिक विद्वान् अपनी कीर्त्तिपताका सम्पूर्ण विश्व में फहराते रहे और उन्होंने वेदों, उपवेदों, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों तथा वेदाङ्गों के भाष्य किये तथा अनेकों पुस्तकों की रचना भी की।

वर्त्तमान काल में भी इस विभाग से अनेकों भारतीय एवं विदेशी छात्र शोध उपाधियाँ प्राप्त करते रहे हैं। लगभग पन्द्रह-बीस छात्र शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और इस समय २० छात्र शोधकार्य कर रहे हैं। यह विभाग विदेशी छात्रों के अतिरिक्त इंजीनियरों, डाक्टरों और अध्यात्म के प्रति अभिरुचि रखने वाले लोगों के साथ भी शोधकार्य करा रहा है।

इस वर्ष भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत प्राच्य विद्याओं को कम्प्यूटर विज्ञान के साथ जोड़ने के लिए प्रो० भारतभूषण पूना विश्वविद्यालय (सी-डैक) में ट्रेनिंग के लिए गये। इसी वर्ष गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में 'निरुक्त और कम्प्यूटर विज्ञान' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें सम्पूर्ण विभाग का सक्रिय योगदान रहा। रुड़की विश्वविद्यालय के सह-संयोजन में 'प्राचीन भारतीय जल विज्ञान' विषय पर एक प्रोजेक्ट बन रहा है।

अखिल भारतीय स्तर पर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में 'हिमालयीय पर्यावरण एवं वैदिक दर्शन' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० भारतभूषण विद्यालंकार, डा० मनुदेव बन्धु के शोधलेख प्रस्तुत हुए।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के ९२वें वार्षिकोत्सव पर वेद विभाग के तत्वावधान में एक वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें एक वैदिक प्रदर्शनी भी लगाई गई। इसी अवसर पर वैदिक प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों पर प्रश्नमंच का सफल और प्रशंसनीय संयोजन श्री विद्यारत्न जी ने किया।

इस वर्ष हिन्दू परिषद् इण्डोनेशिया के राजकीय आमन्त्रण पर डा० भारतभूषण विद्यालंकार बाली तथा जकार्त्ता के विश्वविद्यालयों में तथा हिन्दू परिषद् के कार्यक्रमों में वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित व्याख्यानों तथा कर्मकाण्डीय व्याख्यानों के लिए १५ दिन के लिए इण्डोनेशिया भी गये। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, डा० मनुदेव बन्धु, डा० सत्यव्रत राजेश वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रान्तों में आमन्त्रित किये गये। डा० मनुदेव बन्धु ने पर्यावरण मन्त्रालय, भारत सरकार और जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, मद्रास द्वारा दिल्ली में आयोजित पांच दिवसीय 'जीव-जन्तु अत्याचार निरोधक' प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। प्राच्य विद्या अकादमी द्वारा कनखल (हरिद्वार) में सम्पन्न वैदिक गोष्ठी में डा० भारत भूषण और डा० मनुदेव बन्धु ने भाग लिया। डा० मनुदेव बन्धु लखनऊ विश्वविद्यालय में रिफ्रेशर कोर्स करने गये।

इस सत्र में विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर के अध्यक्ष डा० बृजविहारी चौबे, गढ़वाल विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा० कृष्णकुमार, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डा० निगम शर्मा आदि विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान हुए।

१९९२-९३

विश्वविद्यालय के इस विभाग में उच्च शोधकार्यों के लिए अनेक योजनायें क्रियान्वित हो रही हैं। वैदिक प्रयोगशाला तथा संग्रहालय में कर्मकाण्ड सम्बन्धी पात्र एवं विभिन्न यज्ञ प्रक्रियाओं की सामग्री प्रदर्शित करने के लिए

चित्र आदि तैयार कराये गये हैं। इसके माध्यम से छात्रों को कर्मकाण्ड संबन्धी विशेष ज्ञान दिया जाता है।

दाक्षिणात्य वेदपाठी श्री कृष्ण भट्ट को विभाग के छात्रों को सस्वर वेदपाठ प्रशिक्षण हेतु बुलाया गया और उन्होंने लगभग ६ माह तक छात्रों को सस्वर वेदपाठ का प्रशिक्षण दिया।

१९९२-९३ में वेद विभाग के तीन छात्रों को पी-एच०डी० की डिग्री प्रदान की गई। उनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) अशोक कुमार : "वैदिक वनस्पतियाँ—एक समीक्षात्मक अध्ययन"।

(२) कु० रेणुका : "दयानन्द एवं अरविन्द के वैदिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन"।

(३) इण्डोनेशिया निवासी तितिय मादमे : "सूर्य : वैदिक एवं बाली साहित्य में—एक तुलनात्मक अध्ययन"।

विभाग के डा० भारतभूषण विद्यालंकार, डा० मनुदेव बन्धु और डा० दिनेशचन्द्र ने रुड़की विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विभाग में पाँच सप्ताह का 'भाषा तथा कम्प्यूटर' विषय का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय परिसर में वार्षिकोत्सव के अवसर पर वेद-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन एक प्रमुख आकर्षण रहा।

सरस्वती यात्रा में छात्र स्वामी दयानन्द की जन्म-स्थली टंकारा और सोमनाथ गए।

विभागीय उपाध्यायों का कार्य-विवरण

(१) वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग
आचार्य एवं उपकुलपति

११-४-६३ से ३०-६-६३ तक आचार्य एवं उपकुलपति के पद के साथ कुलपति पद के उत्तरदायित्व का भी निर्वहण किया। वार्षिकोत्सव पर कुलपति के रूप में दीक्षान्त भाषण दिया तथा आचार्य के रूप में छात्रों को उपदेश और आशीर्वाद दिया।

अब तक ४७ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कई पुस्तकों का प्रकाशन अनेक बार हुआ। (१) वैदिक रश्मियाँ, भाग ५; (२) जुआ मत खेलो, पुरुषार्थ करो; (३) कौन तुम भजते हैं (प्रेस में)।

पत्र-पत्रिकाओं में ५ लेख प्रकाशित हुए। दो छात्र शोधकार्य कर रहे हैं जिनमें एक दक्षिण अफ्रीका का है।

अनेक वेद सम्मेलनों और गोष्ठियों में अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के रूप में विचार प्रस्तुत किये।

इस सत्र में निम्नलिखितआर्य संस्थाओं में वैदिक साहित्य, वैदिक दर्शन तथा वैदिक संस्कृति पर अनेक व्याख्यान दिये–दिल्ली, चण्डीगढ़, बम्बई, हरयाणा में फरीदाबाद, यमुनानगर, बल्लभगढ़, अम्बाला, सोनीपत। पंजाब में–जालन्धर, लुधियाना। गुजरात में–बडौदा। बिहार में–दानापुर। उत्तर प्रदेश में–मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, रुड़की। मध्य प्रदेश में–रतलाम।

(२) डा० भारतभूषण विद्यालंकार

(एम०ए०, पी-एच०डी०)
प्रोफेसर, वेद विभाग

५ शोध-पत्र प्रकाशित हुए। इस वर्ष तीन छात्रों को शोध उपाधि प्रदान की गयी तथा ६ छात्र शोध कार्य कर रहे हैं।

वेद विभाग के अतिरिक्त एम०ए० योग की कक्षाओं का भी सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य किया।

(३) डा० मनुदेव बन्धु

(एम०ए०, पी-एच०डी०) व्याकरणाचार्य
रीडर, वेद विभाग

४ सेमिनारों, ५ वेद गोष्ठियों में भाग लिया और शोध-पत्र वाचन किया।

विभिन्न पत्रिकाओं में १० लेख प्रकाशित हो चुके हैं। अब तक छः पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

इनके निर्देशन में चार छात्र शोधकार्य कर रहे हैं।

वैदिक साहित्य के अतिरिक्त एम०ए० योग के छात्रों को पढ़ाया और छात्रों के प्रश्नों का यथोचित उत्तर दिया।

उत्तर प्रदेश में—मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, रुड़की, मुरादाबाद। बिहार में—भागलपुर, पथरगामा, आरा; जम्मू, चण्डीगढ़, दिल्ली, आदि स्थानों पर वैदिक संस्कृति, वैदिक दर्शन आदि विषयों पर व्याख्यान दिये।

(४) डा० रूपकिशोर शास्त्री

(एम०ए०, पी-एच०डी०)

प्रवक्ता, वेद विभाग

इनके निर्देशन में एक छात्र शोधकार्य कर रहा है। तीन वेद गोष्ठियों में भाग लिया।

विभिन्न स्थानों पर वैदिक साहित्य, वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया।

(५) डा० दिनेशचन्द्र

(एम०ए०, पी-एच०डी०)

प्रवक्ता, वेद विभाग

तीन वेद गोष्ठियों में भाग लिया। १२ लेख प्रकाशित हुए। विभिन्न प्रान्तों में वैदिक दर्शन एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। वार्षिकोत्सव पर यजुर्वेद-पारायण-यज्ञ में वेदपाठी के रूप में भाग लिया।

रामप्रसाद वेदालंकार

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

———

संस्कृत-साहित्य विभाग

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही सुयोग्य उपाध्यायों के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाता रहा है। संस्कृत में स्नातकोत्तर एवं शोध-उपाधि प्राप्त स्नातक देश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अपनी योग्यता एवं कर्मनिष्ठा की अमिट छाप अंकित कर रहे हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित राज्यस्तरीय एवं राष्ट्र-स्तरीय वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिताओं में यहां के छात्र अनेक पुरस्कार प्राप्त करते रहे हैं। प्रशासनिक सेवाओं में चयनित होकर इस विभाग के स्नातकों ने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा प्रदर्शित की है। वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् डा० रामनाथ जी वेदालंकार सदृश कुलमाता के सुयोग्य स्नातकों ने इस विभाग को पुष्पित-पल्लवित किया है।

इस वर्ष विभाग की ओर से वेद-मन्दिर में अगस्त ९१ को संस्कृत दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसमें हरिद्वार नगर के अनेक विद्वानों एवं संस्कृतानुरागियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य जगदीश मुनि, नगर विधायक ने अपने प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किये। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० सुभाष विद्यालंकार ने की।

विभागीय छात्रों ने अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अन्तर्गत आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किये।

विभाग में डा० कृष्ण कुमार, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर एवं डा० निगम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत, गुरुकुल काँगड़ी विश्व-विद्यालय के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुये।

प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री एवं डा० महावीर ने अनेक सम्मेलनों में जाकर अनुसन्धानपरक व्याख्यान दिये।

इस वर्ष चार शोध-छात्रों के शोधविषय पी-एच०डी० हेतु शोध-समिति द्वारा स्वीकृत किये गये। श्रीमती वीना विश्नोई को पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गई।

विभाग में २२ सितम्बर ९२ में संस्कृत दिवस समारोह सोल्लास मनाया गया। डा० रामनाथ वेदालंकार ने इस समारोह की अध्यक्षता की। पंचपुरी के प्रतिष्ठित विद्वान्, सन्त, महात्मा तथा संस्कृतानुरागियों ने भाग लेकर संस्कृत दिवस को शोभा प्रदान की। विभाग में विशिष्ट व्याख्याता के रूप में डा० निगम शर्मा आमन्त्रित थे।

इस वर्ष (९२-९३) में संस्कृत विभाग के पाँच शोधार्थियों ने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए तथा उनकी मौखिक परीक्षा भी सम्पन्न हो चुकी है। दो छात्रों को संस्कृत की पी-एच०डी० उपाधि से अलंकृत किया गया।

९२-९३ में विभाग में शोध समिति की बैठक २०-१-९३ को सम्पन्न हुई जिसमें आठ शोध छात्रों को शोधकार्य करने की अनुमति प्रदान की गई।

संस्कृत विभाग के मेधावी छात्र कुरुक्षेत्र, चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में भाग लेने गए तथा पुरस्कृत हुए।

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री—प्रोफेसर

शोधलेख प्रकाशन—"वेदेषु युद्धं शान्तिश्च" संस्कृत शोधलेख प्रकाशित, "यास्क के कतिपय निर्वचन" हिन्दी लेख प्रकाशनार्थ प्रेषित, "वसन्तवर्णने कालिदासस्य प्रतिभोन्मेषः" प्रकाशित, "साहित्याहरण-विमर्शः" शोधलेख प्रकाशित, "कालिदासस्य वसन्तवर्णनम्:" तथा "वैदिकशासनव्यवस्थायां राज्ञः स्वरूप निरूपणम्" शोध-लेख प्रकाशिन।

शोध निर्देशन—९१-९३ तक १० शोधार्थी शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं। अभी १० छात्र निर्देशन में शोधकार्य कर रहे हैं।

सेमिनार—१४-१६ फरवरी ९२ में निरुक्त पर हुए कम्प्यूटर सेमिनार में भाग लिया तथा शोध पत्र पढ़ा। १६ से २५ अप्रैल ९२ तक पुणे विश्व-

विद्यालय में संस्कृत एवं कम्प्यूटर पाठ्यक्रम पर विशेष संगोष्ठी में भाग लिया। अक्टूबर ९२ में मुरादाबाद में एक विशिष्ट विद्वद् गोष्ठी में भाग लिया। फरवरी ९३ में ऋषि संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की सहायता से मनाए गए वैदिक कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर में दो विशिष्ट व्याख्यान दिये।

विशेष व्याख्यान—संस्कृत महाविद्यालय, निर्धन-निकेतन, महाविद्यालय ज्वालापुर, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, कोटद्वार आदि में विशिष्ट व्याख्यान दिये।

विशेषज्ञ के रूप में—विभिन्न विश्वविद्यालयों में वहाँ के कुलपतियों द्वारा नामित विशेषज्ञ के रूप में कार्य सम्पन्न किया।

प्रतिष्ठात्मक कार्य—उज्जैन में सम्पन्न विश्व संस्कृत की आयोजन समिति का सदस्य रहे हैं। विभिन्न संस्कृत की प्रतियोगिता का अध्यक्ष पद से कार्य किया।

सांस्कृतिक व्याख्यान—देहरादून, मेरठ, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, बरेली, करनाल, दिल्ली, आगरा, रुड़की, अम्बाला, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आदि विशेष आर्य सामाजिक स्थानों पर लगभग ६० विशेष व्याख्यान दिये।

डा० महावीर अग्रवाल

रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

शैक्षिक योग्यता—एम०ए० (संस्कृत, वेद, हिन्दी) पी-एच.डी., व्याकरणाचार्य

शोध निर्देशन—संप्रति ८ शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष दो छात्राओं ने लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

शोध-संगोष्ठियाँ—नवम्बर ९१ को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में आयोजित कालिदास समारोह में "कालिदास की सौन्दर्य चेतना" शोध-लेख पढ़ा।

जनवरी ९२ में स्वामी समर्पणानन्द शोध-संस्थान प्रभात आश्रम में

'वर्तमान समय में वैदिक अर्थव्यवस्था की प्रासङ्गिकता' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

२८ अगस्त ९१ को विद्या मन्दिर कन्या महाविद्यालय कानपुर में आयोजित समारोह की अध्यक्षता की तथा 'प्राचीन शिक्षा पद्धति' विषय पर व्याख्यान दिया। समारोह के मुख्य–अतिथि उत्तर प्रदेश के सहकारिता मन्त्री श्री सुधीर बालियान थे।

१२ अप्रैल ९२ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव में आयोजित शिक्षा सम्मेलन में 'वैदिक शिक्षा प्रणाली महत्ता' विषय पर व्याख्यान दिया।

१९९२–९३

१. २०-२१ अक्टूबर ९२ को मुरादाबाद में 'वैदिक शासन-व्यवस्था' विषय पर आयोजित शोध संगोष्ठी में भाग लिया और शोध-पत्र वाचन किया।

२. २८-३० मई १९९३ तक पुणे में आयोजित अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के अधिवेशन में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए 'वैदिक संहिताओं में अस्त्र-शस्त्र विद्या' शीर्षक से शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

३. १० से १२ जून १९९३ तक संस्कृत अकादमी, देहली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और 'संस्कृत की आध्यात्मिक चिन्तनधारा' विषय पर शोध-पत्र पढ़ा। इस समारोह का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा० शंकर दयाल शर्मा ने किया था।

४. दर्शन विभाग द्वारा मार्च ९३ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित शोध-संगोष्ठी में 'कर्म-सिद्धान्त और वेद' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

५. एक छात्र ने लघु-शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

६. सम्प्रति ९ छात्र पी-एच०डी० हेतु शोध-कार्य कर रहे हैं।

७. डा० रमाकान्त शुक्ल के अभिनन्दन ग्रन्थ 'संस्कृत-सुहास' में 'अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' शीर्षक से शोध-पत्र प्रकाशित हुआ।

८. **सांस्कृतिक व्याख्यान**–कानपुर, ग्वालियर, देहरादून, रुड़की, मुरादाबाद, देहली, कलकत्ता, नागपुर आदि नगरों में आयोजित आर्य सम्मेलनों, वैदिक संगोष्ठियों में लगभग ५० व्याख्यान दिये।

प्रकाशन—१. "वाल्मीकि रामायण में रस-विमर्श" नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ।

२. "वर्तमान युग में वैदिक अर्थव्यवस्था की प्रासङ्गिकता" शोध-लेख प्रकाशित।

३. 'गुण-रीति-वृत्तीनां मिथः सम्बन्धः' संस्कृत शोध-लेख प्रकाशित।

डा० रामप्रकाश शर्मा

(एम.ए., पी.एच.डी., डी. लिट्.)

वर्ष १९९२-९३ में सलेक्शन ग्रेड हेतु रिफ्रेशर कोर्स का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। इनके निर्देशन में चार छात्रों ने पी-एच०डी० उपाधि हेतु मौखिकी परीक्षा समुत्तीर्ण की।

एम०ए० कक्षाओं के छात्रों के लिये काशिकावृत्ति के प्रथम अध्याय की समालोचनात्मक टीका लिख रहे हैं, जिसके लगभग १०० पृष्ठ लिखे जा चुके हैं। अतिशीघ्र उसके प्रकाशन के लिये तत्पर हैं।

डा० सोमदेव शतांशु

(एम.ए., पी-एच.डी.)—रीडर

विभागीय एवं विश्वविद्यालय के अपने समस्त शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कार्यों का पूर्ण निष्ठा सहित सम्पादन किया।

एतदतिरिक्त दिनांक १३-१-९२ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ०प्र०) में आयोजित शोध गोष्ठी में भाग ग्रहण किया।

वैदिक वनस्पतिविज्ञान विषयक एक शोध लेख लिखा।

फरवरी १९९२ में उड़ीसा के फूलवाणी जिले के ईसाईबहुल क्षेत्र राईकिया में व्यापक स्तर पर विश्वकल्याण यज्ञ के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया।

१. दिनांक १३-१-९३ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रभात आश्रम, भोला, मेरठ द्वारा आयोजित शोध गोष्ठी में भाग ग्रहण तथा 'वैदिक संहिताओं में वर्णित दिव्यास्त्र' विषयक शोधलेख पावमानी में प्रकाशित।

२. मार्च ९३ को दर्शन विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कर्मसिद्धान्त विषयक गोष्ठी में भाग ग्रहण।

३. दिनाँक १-८-९३ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, प्रभात आश्रम, भोला, मेरठ द्वारा आयोजित "वैदिक कृषिविज्ञान, आधुनिक कृषि-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में"–विषयक शोध गोष्ठी में भाग ग्रहण तथा यज्ञीय वृष्टि, कृषि तथा वपन के कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों पर शोध लेख प्रस्तुत।

४. पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार-स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती कृत अथर्ववेद भाष्य (प्रथम काण्ड-१-१२ सूक्त तक) का सम्पादन।

५. सामाजिक कार्य–विभिन्न आर्य समाजों में वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान।

डा० ब्रह्मदेव विद्यालंकार

प्रवक्ता

गुरुकुल और विभाग से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में यथावसर भाग लिया गया। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में समायोजित संस्कृत प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों के साथ जाकर उनका दिशा-निर्देश किया। वहाँ से विद्यार्थी प्रथम पुरस्कार जीत कर लाए।

१. 'कर्म सिद्धान्त' विषय पर दर्शन विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।

२. अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन, पूना में मई २८ से ३० तक भाग लेकर 'वाक्यपदीय में करणाधिकार' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

३. गुरुकुल आर्यनगर, हिसार में अक्टूबर ९२ में आयोजित संस्कृत भाषण, श्लोकोच्चारण एवं अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताओं के सहसंयोजक के रूप में कार्य किया।

———

दर्शन विभाग

स्थापना—

दर्शन विभाग की स्थापना वर्ष १९१० में दर्शनशास्त्र के महामनीषी स्वर्गीय पंडित सुखदेव जी दर्शनवाचस्पति के द्वारा हुई। तब से आज तक यह विभाग अपनी पुरातन गरिमा को धारण किये हुए विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है।

अध्यापन-स्तर—

प्रारम्भ में दर्शन विभाग के अन्तर्गत अलंकार तथा दर्शनवाचस्पति की ही कक्षाएँ चलती थीं। १९६७ में इस विभाग में एम०ए० की कक्षाओं का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हुआ। १९८३ से पी-एच०डी० उपाधि हेतु उच्च-स्तरीय शोधकार्य निरन्तर चल रहा है। समस्त भारत के शोधार्थी यहाँ आकर शोधकार्य करते रहे हैं। इस प्रकार इस विभाग ने अपनी यात्रा में उन्नति के कई आयाम प्राप्त किये हैं।

लक्ष्य—

दर्शन विभाग का लक्ष्य भारतीय प्राचीन दर्शन, पाश्चात्य दर्शन एवं समकालीन दर्शन का समन्वयात्मक अध्ययन-अध्यापन रहा है। इसी कारण जहाँ इसमें प्राचीन मौलिक ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है तो दूसरी ओर कान्ट, डेकार्ट, ह्यूम, हीगेल, ब्रैडले आदि पाश्चात्य दार्शनिकों तथा स्वामी दयानन्द, अरविन्द, विवेकानन्द, गाँधी जैसे आधुनिक विचारकों के ग्रन्थों का भी अध्यापन कराया जाता है।

उपर्युक्त अध्ययन-अध्यापन के दृष्टिकोण का लाभ यह हुआ कि यहाँ के छात्र पी०सी०एस०, आई०ए०एस० तथा यू०जी०सी० की प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में दर्शन विषय लेकर सम्मिलित होते हैं और सफलता प्राप्त करते है।

वर्तमान प्राध्यापकवर्ग अपने इस लक्ष्य की साधना में परिश्रम और सच्चाई के साथ अनवरत संलग्न है। इसी का यह सुफल है कि दर्शन विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र देश-विदेश में दर्शनशास्त्र के प्रचार और प्रसार में रत हैं तथा अध्यापन एवं प्रशासनिक सेवाओं में उच्च पदों पर आसीन हैं।

प्रतियोगितात्मक परीक्षाएँ—

गत वर्ष तथा इस वर्ष में अनेक शोधछात्र यू०जी०सी० की फैलोशिप तथा लैक्चररशिप की प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सम्मिलित हुए तथा चयन प्राप्त किया।

विभाग में आई०ए०एस० तथा पी०सी०एस० के लिए दर्शनशास्त्र सम्बन्धी मार्ग निर्देशन की समुचित व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत स्था-नोय तथा बाह्य परीक्षार्थी मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

स्त्री शिक्षा—

विभाग में स्त्रियों के लिए भी एम०ए० की नियमित कक्षाएँ १९९२-९३ के सत्र से प्रारम्भ हुईं और विधिवत् अध्यापन चल रहा है।

सेमिनार—

दर्शन विभाग ने २४ मार्च से २६ मार्च तक आई०सी०पी०आर०, नई दिल्ली के सौजन्य से 'भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धान्त' विषय पर एक विशाल सेमिनार का आयोजन किया जिसमें लगभग २५ विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ प्रोफेसरों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

प्राय: प्रतिवर्ष यह विभाग किसी न किसी विषय पर कांफ्रेंस तथा सेमिनार का आयोजन करता है। इससे समस्त भारत तथा विदेशों में भी दर्शन विभाग की छवि उज्ज्वल हुई है।

छात्र संख्या—

विद्या विनोद	१२
अलंकार	१६

एम०ए०	१६
पी-एच०डी०	१६
योग	६०

प्राध्यापकों की योग्यता एवं कार्य-विवरण—

डा० जयदेव वेदालंकार

प्रोफेसर एवं डीन

एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), न्यायदर्शनाचार्य, पी-एच०डी०, डी०लिट्०

मुख्य शोधग्रन्थ—

१. वैदिक दर्शन
२. भारतीय दर्शन की समस्यायें
३. उपनिषदों का तत्त्वज्ञान
४. महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन
५. महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त

व्याख्यान—

१. अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत अमेरिका से आये छात्रों को 'हिन्दू फिलॉसफी आफ लाइफ' विषय पर सम्बोधित किया।

२. वैदिक दर्शन का समाज दर्शन
३. मुक्ति और उसके साधन
४. ईश्वरवाद
५. वैदिक धर्म
६. सृष्टि रचना
७. उपनिषदों का संदेश
८. अध्यात्मवाद
९. त्रैतवाद
१०. वेद में परिवार व्यवस्था
११. उपनिषदों का आचार-शास्त्र, आदि।

उपर्युक्त विषयों पर आर्य वानप्रस्थाश्रम आदि विभिन्न आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में भाषण दिये।

शोधकार्य—

निम्नलिखित विषयों पर पी-एच॰डी॰ के छात्र शोधकार्य कर रहे हैं—

(क) ज्ञानमीमांसा
(ख) उपनिषदों में संन्यास योग
(ग) भारतीय दर्शनों में प्रमाण
(घ) आयुर्वेद में मनस् तत्त्व
(ङ) भारतीय दर्शनों में कर्मवाद
(च) विद्योदय भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डा॰ विजयपाल शास्त्री

एम॰ए॰ (दर्शन, संस्कृत, हिन्दी), साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य, दर्शनाचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न, पी-एच॰डी॰

डी॰ लिट्॰ हेतु फरवरी १९९२ में 'त्रिक दर्शन का तत्त्वमीमांसीय समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध-प्रबन्ध मेरठ विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया।

पद—रीडर

प्रकाशन—

'पातञ्जल योग विमर्श' शोधग्रन्थ १९९१ में प्रकाशित।

वर्ष १९९२-९३ में प्रकाशित लेख—

१. शैव दर्शन का स्वातन्त्र्य सिद्धान्त, जयराम सन्देश, अप्रैल १९९२।
२. शैवदर्शने सत्कार्यवादस्य स्वरूपम् (संस्कृत लेख), आदर्शः, भगवान दास संस्कृत महाविद्यालय, जून १९९२।
३. श्रीमद्भगवद् गीता में सांख्य योग का तात्पर्य, जयराम सन्देश, अक्टूबर १९९२।

४. वेदस्य लक्षणं तद्‌भेदाश्च (संस्कृत लेख), गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर १९९२।

५. कोऽयमोंकारः (संस्कृत लेख), गुरुकुल पत्रिका, १९९३।

६. तुष्टिर्मोक्षबाधिका (संस्कृत दार्शनिक लेख), गुरुकुल पत्रिका मार्च १९९३।

७. मध्यकालीन दार्शनिक परम्परायें, प्रो० हरवंशलाल शर्मा स्मृति ग्रन्थ, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, १९९३।

संगोष्ठियाँ--

१. 'कर्म सिद्धान्त एवं व्यक्ति स्वातन्त्र्य' विषय पर आई० सी० पी० आर०, नई दिल्ली के सौजन्य से दर्शन विभाग में एक क्षेत्रीय सेमिनार का आयोजन २४-३-९३ से २६-३-९३ तक किया गया जिसमें सक्रिय भाग लिया।

२. 'अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन' नामक एक संगोष्ठी राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा १०-६-९३ से १२-६-९३ तक आयोजित की गई। इसमें सम्मिलित होकर 'भारतीया आध्यात्मिकी चिन्तनधारा संस्कृत भाषा च' इस विषय पर संस्कृत शोधलेख का वाचन किया।

सम्पादकत्व—

गुरुकुल पत्रिका के सह-सम्पादक पद पर निरन्तर कार्यरत।

शोधकार्य--

निम्नलिखित शोधछात्र पी-एच०डी० के लिए निर्देशन में शोधरत हैं :

१. प्रमोद कुमार, विषय—उद्धवगीता का समीक्षात्मक अध्ययन।

२. मनीष कुमार, विषय—वैष्णव दर्शन एवं शाक्त दर्शन की आचार-मीमांसा का तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन।

३. राकेश कुमार शर्मा, विषय—भगवद् गीता के सन्त ज्ञानेश्वर, बाल गंगाधर तिलक एवं विनोबा जी के भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

डा० त्रिलोक चन्द

एम०ए०, पी-एच०डी०, योग में डिप्लोमा कोर्स, योग में सर्टिफिकेट कोर्स
वरिष्ठ प्राध्यापक

प्रकाशन :

पुस्तकें--१. पातञ्जल योग और श्रीअरविंद योग
२. योग से रोग निवारण
३. ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप (अप्रकाशित)

कैसेट--१. योग संगीत भाग १
२. योग संगीत भाग २

रिफ्रेशर कोर्स :

१. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, १९८९
२. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, १९९२

व्याख्यान :

१. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में एक सप्ताह तक व्याख्यान
२. मुजफ्फरनगर में एक सप्ताह तक योग का कार्यक्रम
३. व्यास आश्रम, सप्त सरोवर, हरिद्वार में १ अप्रैल से ५ अप्रैल तक योग शिविर का संचालन
४. रुड़की में अनेकों बार आध्यात्मिक विषयों पर व्याख्यान
५. ऋषिकेश में योग विषय पर कई बार व्याख्यान
६. गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में हुए दर्शन सम्मेलन में भाग लिया।

डा० उमरावसिंह बिष्ट

एम०ए०, पी-एच०डी०
वरिष्ठ प्रवक्ता

रिफ्रेशर कोर्स :

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में १९९२ में रिफ्रैशर कोर्स किया।

संगोष्ठी :

मार्च १९९३ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित क्षेत्रीय सेमिनार में शोधपत्र पढ़ा। ——

मनोविज्ञान विभाग

१९९१-९२ के सत्र में विद्यार्थियों की प्रवेश-संख्या निम्नांकित रही :

एम०ए०–प्रथम वर्ष	१२
एम०ए०–द्वितीय वर्ष	३
अलंकार–प्रथम वर्ष	२५
अलंकार–द्वितीय वर्ष	७
अलंकार--तृतीय वर्ष	४
विद्याविनोद--प्रथम वर्ष	९
विद्याविनोद–द्वितीय वर्ष	--

शोध समिति :

विभाग में १९९१-९२ के सत्र में शोध-समिति की मीटिंग हुई। मीटिंग में मेरठ विश्वविद्यालय के डा० वी० वी० चौहान पधारे और चार शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत विषयों की रूपरेखा पर विचार किया और तीन विषय कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार कर लिये गये।

वरिष्ठ प्रोफेसर श्री ओम्प्रकाश मिश्र पिछले सत्र में मानविकी संकाय के डीन नियुक्त हुए।

प्रो० मिश्र के निर्देशन में श्रीमती शोभना पाण्डेय तथा कु० मंजु रानी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्धों पर ली मौखिक परोक्षा के पश्चात् शोध-उपाधि प्रदान करने का निर्णय लिया गया। इनके निर्देशन में कु० देवेन्द्र भसीन ने अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया तथा शोध समिति द्वारा उनके निर्देशन में दो शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत रूपरेखा को स्वीकार कर लिया गया।

प्रो० मिश्र गढ़वाल विश्वविद्यालय की शोध-समिति के तथा बोर्ड आफ स्टडीज तथा कानपुर विश्वबिद्यालय की शोध-समिति के सदस्य हैं।

ये इस वर्ष मध्यप्रदेश सरकार द्वारा भोपाल विश्वविद्यालय की चयन समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किये गये। प्रो० मिश्र यू०पी०एस०सी० के विशेषज्ञ के रूप में भी कार्य कर रहे हैं।

श्री सतीशचन्द्र धमोजा ने विभागाध्यक्ष के रूप में अपना दूसरा सत्र पूर्ण किया और विभाग में आयोजित अनेक कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन किया। इस सत्र में उनके द्वारा समायोजन परीक्षण की संरचना की जा रही है और इसी वर्ष प्रकाशित हो जायेगा। उन्होंने इस सत्र में मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा Organizational Psychology पर आयोजित रिफ्रैशर कोर्स में भाग लिया। उनके निर्देशन में दो छात्रों ने लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये, जिनके विषय इस प्रकार हैं :

1. A Study of Psychology Correlates of Cardiac Patients.

2. Attitudes of Hindus & Muslims towards Family Planning—A Psychological Study.

डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव को रिसर्च प्रोजेक्ट शीर्षक Job Satisfaction and Motivation—A Comparative Study of Private and Public Sectors पर कार्य करने के लिए गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ने वित्तीय अनुदान स्वीकृत किया है। डा० श्रीवास्तव ने जुलाई १९८९ में उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा आयोजित 28th Annual Conference of Indian Academy of Applied Psychology में भाग लिया एवं Relationship between Managerial Effectiveness and Leadership Styles पर एक शोधपत्र भी पढ़ा। इन्होंने प्रो० ओ० पी० मिश्र के साथ Work Adjustment Inventory पर एक Psychological Test भी बनाया है जो प्रकाशनाधीन हैं।

इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ३ शोधपत्र प्रकाशित हुए, जो कि इस प्रकार हैं—

1. Need Satisfaction and importance among technical and non-technical personnels.

2. An investigation into leadership styles and need satisfaction among supervisors and executives.

3. The relationship between job satisfaction and need satisfaction.

इसके अतिरिक्त डा० श्रीवास्तव ने ४ शोधपत्र विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेज रखे हैं।

डा० चन्द्रपाल खोखर इस सत्र में अपने पद पर स्थायी हुए। उन्होंने जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित Orientation Course में भाग लिया और Planning to Teach नाम से एक पेपर भी पढ़ा। वैदिक पाथ में उनका एक लेख 'Development & Decline of Intelligence' प्रकाशित हुआ। उनके निर्देशन में एक एम०ए० के विद्यार्थी द्वारा लघु शोध-प्रबन्ध तथा विद्यालंकार के ६ विद्यार्थियों ने प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत की। उनके द्वारा ३ शोधपत्र प्रकाशित होने के लिए भेजे गए हैं।

श्री लाल नरसिंह नारायण ने पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रयोग-शाला का कुशलतापूर्वक संचालन किया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सामयिक विषयों तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी रोचक विषयों पर इनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

पूर्व वर्ष के समान इस वर्ष भी विकास अनुदान से प्रयोगशाला में उप-योगी यन्त्रों का क्रय किया गया जिनसे आगामी सत्र में विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

सत्र १९९२-९३ में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का प्रवेश निम्नांकित रहा—

विद्याविनोद–प्रथम वर्ष	४
विद्याविनोद–द्वितीय वर्ष	५
अलंकार–प्रथम वर्ष	१३
अलंकार द्वितीय वर्ष	६

अलंकार-तृतीय वर्ष	७
बी०एस-सी० प्रथम वर्ष	२३
एम०ए० प्रथम वर्ष	३९
एम०ए० द्वितीय वर्ष	५

इस सत्र में बी०एस-सी० के छात्रों को देश के कुछ अन्य विश्वविद्यालयों की भाँति मनोविज्ञान विषय को ऐच्छिक विषय के रूप में लेने की सुविधा प्रदान की गई। विज्ञान के छात्रों ने इसका स्वागत किया और २३ छात्रों ने मनोविज्ञान विषय में प्रवेश लिया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को संस्थागत छात्र के रूप में एम०ए० करने की सुविधा प्रदान की गई। हर्ष का विषय है कि ४० छात्राओं ने मनोविज्ञान विषय में प्रवेश लिया। उनकी शिक्षा-व्यवस्था आनन्दमयी सेवा सदन इण्टर कालेज हरिद्वार में सुचारू रूप से की जा रही है।

बोर्ड आफ स्टडीज़

इस सत्र में मनोविज्ञान की बोर्ड आफ स्टडीज़ की मीटिंग हुई और पाठ्यक्रम का नवीनीकरण किया गया। इसमें प्रो० सतीश चन्द धमीजा, डा० एस०के० श्रीवास्तव और डा० चन्द्रपाल खोखर का योगदान उल्लेखनीय है।

शोध समिति

विभाग की शोध-समिति की बैठक में दो छात्रों का शोध विषय स्वीकार किया गया। सभी शिक्षकों के निर्देशन में विभाग के अन्तर्गत शोधकार्य हो रहा है। १९९३ के दीक्षान्त समारोह में प्रो० ओ०पी० मिश्र के निर्देशन में ३ शोधार्थियों को शोध-उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रो० ओ०पी० मिश्र गढ़वाल विश्वविद्यालय की रिसर्च कमेटी और बोर्ड आफ स्टडीज़ में विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत हुए। कानपुर विश्वविद्यालय ने भी उन्हें अपने यहाँ की रिसर्च डिग्री कमेटी और बोर्ड आफ स्टडीज़ में विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया। इसके अतिरिक्त आप लोक सेवा आयोग नई दिल्ली तथा अन्य प्रदेशीय लोक सेवा आयोग में विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष उनका एक शोधपत्र

तथा दो परीक्षण प्रकाशित हो चुके हैं और तीसरे का मानकीकरण चल रहा है। विश्वविद्यालय के प्रशासन में भी आपका सक्रिय योगदान रहा। मानविकी संकाय के डीन के रूप में आपका कार्यकाल १८ जनवरी को समाप्त हुआ। डा० मिश्र पुस्तकालय के प्रभारी हैं और स्पोर्टस् काउन्सिल के वाइस चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के सेवायोजन केन्द्र के आप प्रमुख हैं।

प्रो० सतीश चन्द्र धमीजा का विभाग की उन्नति में विशेष योगदान है। उनकी अब तक अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और एक परीक्षण का मानकीकरण हो रहा है। उनके द्वारा मनोविज्ञान की शब्दावली के प्रकाशन की विद्वानों ने प्रशंसा की है। उनके अन्तर्गत विभाग में शोधकार्य चल रहा है।

डा० एस०के० श्रीवास्तव एक रिसर्च प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहे हैं और इस हेतु विश्वविद्यालय ने उन्हें वित्तीय अनुदान स्वीकृत किया है। उनके द्वारा दो परीक्षण बनाये गये और चार शोधपत्र प्रकाशित हुए। दो शोधपत्र प्रकाशनाधीन हैं। उनके द्वारा कार्य समायोजन परीक्षण भारत में इस दिशा में किया गया प्रथम प्रयास है। रुड़की विश्वविद्यालय ने उनकी विद्वत्ता से प्रभा-वित होकर उन्हें अपने यहाँ शोध-निर्देशक के रूप में मान्यता दी है।

डा० चन्द्रपाल खोखर के इस वर्ष दो शोधपत्र प्रकाशित हुए और वह अन्य परीक्षण पर कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष सी०बी०एस०ई० इलाहाबाद ने उन्हें तथा प्रो० सतीश चन्द्र धमीजा को अपने यहाँ सरप्राइज इन्स्पेक्टर के रूप में नियुक्त किया। डा० खोखर का पाठ्यक्रम नवीनीकरण में विशेष योगदान रहा। उनके निर्देशन में विभाग के अन्तर्गत शोधकार्य चल रहा है।

विभाग में कार्यभार अत्यधिक होने के कारण अध्यापन में डा० आर० डी० शर्मा और श्री लाल नरसिंह नारायण भी सहयोग दे रहे हैं।

———

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

सत्र १९९१-९२ का प्रारम्भ विभाग के लिए अत्यन्त कष्टकारी रहा। २७ अगस्त '९१ को डा० जवरसिंह सैंगर की गुरुकुल परिसर में हत्या हो गई।

२९ फरवरी '९२ को विभाग के प्रोफेसर डा० बिनोद चन्द्र सिन्हा ने कार्यावकाश ग्रहण किया। इतिहासविद् तथा एक व्यक्ति के रूप में प्रो० सिन्हा की विश्वविद्यालय में लोकप्रियता का सहज ही अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि विभाग द्वारा तथा प्राध्यापक संघ द्वारा पृथक् २ विदाई समारोह आयोजित किये गये। संयोगवश इस अवसर पर डा० ललन जी गोपाल, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, प्रा० भा० इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भी उपस्थित थे। रिक्त प्रोफेसर पद पर विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त चयन समिति की संस्तुति पर विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह को नियुक्त किया गया। सम्प्रति विभाग में एक रीडर तथा एक लैक्चरर का पद रिक्त है।

स्नातकोत्तर परीक्षार्थियों एवं शोध छात्रों की संख्या—

एम०ए० प्रथम वर्ष	१०
एम०ए० द्वितीय वर्ष	२०
शोध छात्र	७

शोध-कार्य—

विभाग में वर्तमान समय तक ३० महत्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य सम्पन्न हो चुका है। इस वर्ष प्रो० सिन्हा के निर्देशन में डा० विनोद कुमार शर्मा जिनका शोध विषय 'गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास' है, अपना शोध कार्य पूर्ण कर चुके हैं तथा श्रीमती रश्मि सिन्हा (विषय: प्राचीन भारत में

समाजवाद), कु० नीरजा (विषय : शुंगकाल में धर्म और कला), कु० ऋचा शंकर (विषय : भारत और तिब्बत के सम्बन्ध) के शोध प्रबन्ध जमा हुए। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थियों के शोधकार्य प्रगति पर हैं—

नाम	शोध विषय	निर्देशक
ऋषिपाल आर्य	प्राचीन भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द का कृतित्व	डा० श्यामनारायण सिंह
रजनी सेंगर	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (वैदिक काल से गुप्त काल तक)	,,
प्रभात सेंगर	बुन्देलखण्ड के प्राचीन मन्दिरों का विवेचनात्मक अध्ययन	,,
सरोजनी नौटियाल	हरिद्वार का साँस्कृतिक इतिहास (प्रा० से १२००)	,,
धर्मेन्द्र सिंह		,,
भारत भूषण	गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा. काश्मीरसिंह भिंडर
अंजना श्रीवास्तव	भारत और अफगानिस्तान के प्राचीन सम्बन्ध	डा० राकेश शर्मा

विभाग की शैक्षणिक गतिविधियाँ

इस सत्र में विभाग के प्रोफेसर सिन्हा के दो शोधलेख प्रकाशित हुए। अभी तक प्रो० सिन्हा की ११ पुस्तकें तथा लगभग ५५ शोधलेख प्रकाशित हो चुके हैं। विभाग के प्राध्यापक डा० राकेश कुमार शर्मा की 'प्राचीन भारत में सम्प्रभुता का विकास (वैदिककाल से गुप्तकाल तक)' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त एक शोधलेख 'वैदिककाल में धार्मिक सहिष्णुता' गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व डा० शर्मा के १० शोधलेख प्रकाशित हो चुके हैं। डा० शर्मा ने इस सत्र में एकेडेमिक स्टाफ कालेज, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान में १६ दिसम्बर '९१ से १० जनवरी '९२ तक चले ओरियन्टेशन कोर्स को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

उत्खनन कार्य

इस सत्र में विभाग द्वारा हरिद्वार के निकट ग्राम अजमेरीपुर में उत्खनन कार्य किया गया। उक्त उत्खनन की योजना को क्रियान्वित करने में निदेशक डा० श्यामनारायण सिंह तथा सह-निदेशक श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, संग्रहपाल। संग्रहालय के अतिरिक्त बिभाग के डा० काश्मीर सिंह तथा डा० राकेश शर्मा, पुरातत्व संग्रहालय के सहायक क्यूरेटर डा० सुखबीर सिंह तथा प्रभात कुमार, संग्रहालय सहायक तथा अन्य कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा। उक्त उत्खनन में एम०ए० प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों का योगदान प्रशंसनीय रहा। उत्खनन में एक चांदी का सिक्का, मृद्‌भाण्ड के ठीकरे, कुछ मिट्टी के खिलौने प्राप्त हुए हैं। अवशेषों के आधार पर लगभग प्रथम श० ई० से मुस्लिम काल तक काल-निर्धारण किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिए विधिवत विस्तृत उत्खनन हेतु प्रस्ताव पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को भेजा गया है।

अन्य उपलब्धियाँ

इस सत्र में विभाग के सदस्यों की संख्या घटी है, फिर भी विश्वविद्यालय प्रशासन के योगदान में विभाग इस वर्ष भी पूर्ण सक्रिय रहा। प्रो० एस० एन० सिंह जहाँ एक ओर पिछले ८ वर्षों से उप-कुलसचिव का कार्यभार ग्रहण किये हुए थे, वहीं दूसरी ओर कुलसचिव डा० जयदेव वेदालंकार के त्यागपत्र देने के बाद उन्हें कुलसचिव का कार्यभार भी ग्रहण करना पड़ा।

विभागीय प्राध्यापक डा० काश्मीर सिंह ने इस वर्ष सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय प्रशासन को उचित योगदान दिया। डा. राकेश शर्मा विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० विभाग को उसके प्रभारी कम्पनी कमांडर के रूप में सुचारू रूप से चला रहे हैं। इस वर्ष डा० शर्मा एन०सी०सी० के एक माह के रिफ्रैशर कोर्स के लिए भी गए। इसी सत्र में डा० राकेश शर्मा को माननीय कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय के प्रोक्टर पद पर मनोनीत किया गया। साथ ही डा० शर्मा ने इस वर्ष परीक्षाओं में नकलविरोधी उड़नदस्ते के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। इसके अतिरिक्त वि० वि० प्रशासन द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य को विभागीय सदस्यों ने पूर्ण उत्साह से पूर्ण किया।

सत्र १९९२-९३ में विभाग में एक प्रोफेसर, दो वरिष्ठ प्रवक्ता निष्ठा-

पूर्वक अपने अध्ययन-अध्यापन के कार्य को सुचारू रूप से कर रहे हैं। विभाग में वर्तमान में भी एक रीडर तथा एक प्रवक्ता का पद रिक्त चल रहा है।

छात्र संख्या

एम०ए० प्रथम वर्ष	१७
एम०ए० द्वितीय वर्ष	७
शोधार्थी	६

शोधकार्य

वर्ष ९३ के दीक्षान्त समारोह में ५ शोधार्थियों को पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया गया। विभाग के निवर्तमान प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० विनोद चन्द सिन्हा के निर्देशन में निम्न शोधार्थियों ने अपने शोधकार्य पूर्ण किये।

नाम	विषय
१–कु० नीरजा मिश्रा	शुंगकाल में धर्म एवं कला
२–डा० विनोद कुमार	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास
३–कु० ऋचा शंकर	भारत तिब्बत सम्बन्ध (७०० ई० से १२०० ई०)
४–कु० रश्मि सिन्हा	प्राचीन भारत में समाजवाद

इसी प्रकार विभाग के वर्तमान प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० श्याम नारायण सिंह के निर्देशन में श्री प्रभात सेंगर (संग्रहालय सहायक, पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय) ने अपना शोधकार्य पूर्ण कर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इनका विषय है 'बुन्देलखण्ड के प्राचीन मन्दिरों का विवेचनात्मक अध्ययन'। डा० एस०एन० सिंह के ही निर्देशन में कार्यरत श्रीमती रजनी सेंगर की पी-एच०डी० उपाधि हेतु मौखिक परीक्षा सम्पन्न हो चुकी है। उपर्युक्त के अतिरिक्त विभाग में उच्चस्तर का शोधकार्य हो रहा है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थी अपना शोधकार्य सम्पन्न करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं।

नाम	विषय	निर्देशक
१–कु० सरोजनी नौटियाल	हरिद्वार का सांस्कृतिक इतिहास	प्रो० एस०एन० सिंह

२–श्रीमती भगवती गुप्ता	रसमंजरी चित्रावली का अध्ययन	प्रो० एस०एन० सिंह
३–अनिल कुमार	प्राचीन भारत में सैन्य संगठन	,,
४–कौसर रजा	उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक अध्ययन	,,
५–अंजना श्रीवास्तव	भारत और अफगानिस्तान के सम्बन्ध	डा० राकेश शर्मा
६–ब्रजेश कुमार सिंह	गुप्तकाल में धार्मिक जीवन	,,
७–दीपक घोष	गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	,,
८–श्रीमती सरोज चौधरी	प्राचीन भारत में वर्ण-व्यवस्था (एक विवेचनात्मक अध्ययन) (वैदिक काल से गुप्त काल तक)	,,

अन्य उपलब्धियाँ

विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० एस०एन० सिंह विभाग से सम्बद्ध पुरातत्व संग्रहालय के निदेशक के रूप में भी कार्यरत हैं।

डा० काश्मीर सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता ने इस सत्र में विश्वविद्यालय के परीक्षाध्यक्ष के रूप में परीक्षाओं का सफल आयोजन कराया।

विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता डा० राकेश शर्मा विश्वविद्यालय के एन. सी.सी. विभाग के प्रभारी हैं। वर्तमान में वे लेफ्टिनेन्ट के पद पर कम्पनी कमांडर के रूप में उक्त विभाग को पूर्ण लगन के साथ चला रहे हैं। डा. शर्मा विश्वविद्यालय के प्रोक्टोरियल बोर्ड में प्रोक्टर के रूप में विश्वविद्यालय प्रशासन को सहयोग दे रहे हैं। इसी प्रकार वे विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग की एडवाइजरी कमेटी तथा विश्वविद्यालय की स्पोर्ट कमेटी के भी सक्रिय सदस्य हैं।

———

पुरातत्व संग्रहालय

विश्वविद्यालय संग्रहालय की स्थापना गंगापार पुण्यभूमि में महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) की प्रेरणा से वर्ष १९०७ में की गई थी। संग्रहालय स्थापना के पीछे संभवतः उनका विचार प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा ज्ञान उपलब्ध कराना था। प्राकृतिक विपदा के रूप में गंगा की बाढ़ से यह संग्रहालय वर्ष १९२४ में नष्टप्रायः हो गया था। वर्ष १९५० में गुरुकुल स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर वेद मन्दिर के प्रथम तल पर पुरातत्व संग्रहालय का पुनर्गठन किया गया। तब से यह निरन्तर विकासोन्मुख है। वर्तमान भवन में स्थानांतरण सन् १९८१ के सत्र में हुआ। सन् १९८२ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संग्रहालय को विधिवत् रूप से विश्वविद्यालय का अंग मान लिया गया। तदोपरान्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से संग्रहालय विकास हेतु आर्थिक अनुदान भी मिला एवं कर्मचारियों की नियुक्ति भी की गई। समय-समय पर उ०प्र० सरकार तथा राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से भी विकास हेतु आर्थिक सहायता प्राप्त होती रही है। विश्वविद्यालय कार्यालय आदेश क्रमाँक ३७०६-३७११ दिनांक ३१-८-९१ के अनुसार संग्रहालय को विभाग का अंग बना दिया गया है। तदनुसार संग्रहालय विभागीय संग्रहालय के रूप में कार्य कर रहा है।

इस सत्र में उ०प्र० सरकार के राजकीय संग्रहालय, लखनऊ के द्वारा २३०७ प्राचीन सिक्के प्राप्त हुए। इस संकलन में १४१ चांदी के सिक्के तथा शेष २०६६ ताँबे के सिक्के हैं।

विश्वविद्यालय के इतिहास में प्रथम बार पुरातात्विक उत्खनन कार्य प्रोफेसर एस०एन० सिंह, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पदेन निदेशक के निर्देशन में सम्पन्न किया गया। उत्खनन कार्य में संग्रहालय के संग्रहपाल श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने सह-निदेशक के रूप में कार्य किया। उत्खनन कार्य में संग्रहालय के सभी कर्मचारियों का सहयोग

उल्लेखनीय है। विशेष रूप से सहायक क्यूरेटर डा० सुखबीर सिंह, संग्रहालय सहायक श्री प्रभातकुमार एवं श्री हंसराज जोशी तथा विश्वविद्यालय के जे. ई. श्री अतुलमोहन अग्रवाल का भी सक्रिय योगदान मिला।

प्राप्त सामग्री में मृदमाण्डों के अतिरिक्त मानवीय एवं पशु मृण्मूर्तियाँ, एक सिक्का (सम्भवत: चाँदी का) तथा अन्य पुरावस्तुएँ हैं। उत्खनन में प्राचीन ईंटों से बनी एक दीवार के अवशेष तथा स्थानीय रूप से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध गोल पत्थरों द्वारा भरी गई नींव के भग्नावशेष मानवीय बसावक्रम की कहानी को उजागर करते हैं।

इस संग्रहालय में लगभग ६७०० दर्शक विभिन्न स्थानों से आये जिनमें से कुछ विशिष्ट दर्शकों के नाम निम्न प्रकार हैं :

१–इन्दु प्रकाश पाण्डे, प्रोफेसर प्राच्य विद्यामन्दिर संस्थान, जर्मनी।

२–डा० शशि अस्थाना, संग्रहपाल, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

३–श्री क्षितीज वेदालंकार, सम्पादक, आर्यजगत।

४–डा० वेदव्रत, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

५–श्री एस० राम बोहर, दक्षिण अफ्रीका।

६–श्री रामसिंह तोमर, भूतपूर्व प्रोफेसर, विश्वभारती, शान्ति निकेतन, कलकत्ता।

७–श्रीमती कणिका तोमर, प्रोफेसर हिन्दी विभाग, शान्ति निकेतन, विश्व भारती, कलकत्ता।

८–डा० आर०सी० जोशी, प्रोफेसर, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की।

९–श्री कुर्ट सोगफ, ओसलो, नार्वे।

१०–श्री कृष्णनारायण, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

११–श्री एस० के० महापात्र, अतिरिक्त सचिव, सांस्कृतिक विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।

१२–श्री शेखर मिश्र, सचिव, हरिद्वार विकास प्राधिकरण।

१३–श्री चन्द्रसेन, क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, हरिद्वार।

१४–श्री उमाकान्त शास्त्री, प्राचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथ धाम, बिहार।

१५–प्रो० मूलचन्द अग्रवाल, पटना, बिहार, आदि।

पुरातत्व संग्रहालय को प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग का अंग बना दिया गया है। विभाग के पदेन अध्यक्ष संग्रहालय के अध्यक्ष हैं।

विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपलब्धियाँ :

निदेशक—

निदेशक के कार्य के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में अध्यापन कार्य किया तथा ग्राम अजमेरीपुर में पुरातात्विक उत्खनन कार्य कराया।

श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, संग्रहपाल

स्वामी सुन्दरानन्द द्वारा हिमालय दर्शन चित्र वीथि से सम्बन्धित अस्थायी रूप से प्रदर्शित चित्रों को हटाने के पश्चात् संग्रहालय के केन्द्रीय कक्ष का पुनर्नियोजन कार्य किया। इस कक्ष में चित्रकला, विशेष रूप से लघु चित्रकला के विभिन्न पक्षों को दर्शकों के हेतु प्रदर्शित किया। राजस्थानी लघुचित्र कला की जयपुर शैली में चित्रित राग-रागनियों एवं बारहमासा, नाथद्वारा शैली में कृष्ण रासलीला से सम्बन्धित चित्रों का चयन करके लगाया। हरिद्वार के उपनगर कनखल के भवनों पर चित्रित कम्पनी सरकार के समय के भित्ति-चित्रों के फोटोग्राफ्स भी इस कक्ष में प्रदर्शित किये। नष्ट होती जा रही इस स्थानीय शैली के यह चित्र संग्रहालय में हरिद्वार की सांस्कृतिक धरोहर हैं। श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव द्वारा संग्रहालय में संकलित मृण्मूर्तियों के संचयन का सामान्य केटेलाग कार्य भी तैयार किया जा रहा है।

समय-समय पर संग्रहालय देखने आने वाले विशेष अतिथियों को संग्रहालय भी दिखाया जिसमें से फ्रांकफुर्ट जर्मनी से आये डा० पाण्डे, दक्षिणी अफ्रीका से पधारे श्री एस० राम वोहर, ओस्लो-नार्वे से आये कुर्ट सोगफ, बंबई से आई सुश्री स्मिता मेहता, शान्ति निकेतन से पधारे प्रो० रामसिंह, प्रो.

कणिका सिंह तथा भारत सरकार के सांस्कृतिक विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री एस०के० महापात्र आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ग्राम अजमेरीपुर में सम्पन्न पुरातात्विक उत्खनन कार्य में स्टैंडिंग कमेटी आफ द सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड आफ आर्कियोलाजी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्वीकृति के अनुसार सह-निदेशक का कार्य सक्रिय रूप से सम्पन्न किया।

तकनीकी सहयोगियों के अभाव में उत्खनन से सम्बन्धित सभी कार्यों को, यथा–उत्खनन स्थल चयनखात नियोजन, उत्खनन कार्य निरीक्षण, फोटोग्राफ्स एवं ड्राईंग आदि का कार्य स्वयं पूरा किया। उत्खनन सामग्री का अध्ययन कर सम्भावित तिथि निर्धारण का कार्य भी पूर्ण किया।

संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त विभाग में शिक्षण कार्य भी किया। इस सत्र में पाँच लेख प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुए जिसमें से एक विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित आंग्लभाषीय पत्रिका वैदिक पाथ में प्रकाशित लेख है 'आन म्यूजियम स्ट्रक्चर'।

डा० सुखबीरसिंह, सहायक क्यूरेटर

संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में विद्याविनोद (समकक्ष इण्टरमीडिएट परीक्षा) के छात्रों को प्रतिवर्ष की भाँति इतिहास विषय का अध्यापन कार्य कराया तथा ग्राम अजमेरीपुर में पुरातात्विक उत्खनन कार्य में सक्रिय भाग लिया। उत्खनित खातों का सीधा निरीक्षण कार्य किया।

श्री प्रभात कुमार, संग्रहालय सहायक

संग्रहालय सहायक के पद पर सितम्बर मास में नियुक्ति हुई। संग्रहालय कार्यों के अतिरिक्त अजमेरीपुर उत्खनन में सक्रिय भाग लिया तथा उत्खनित खातों पर सीधा कार्य किया।

इनकी निम्न पुस्तक एवं लेख प्रकाशित हुए :

१—पुस्तक : "उत्तर भारत की प्रमुख मन्दिर वास्तुकला—एक अध्ययन (देहरादून से प्रकाशन हेतु स्वीकार)।

२—'राजपुताना के प्राचीन मन्दिर', गुरुकुल पत्रिका, अप्रैल '९१ से दिसम्बर '९१ तक।

सत्र ९२-९३ में संग्रहालय को विभिन्न स्थानों से आये लगभग ६७०० दर्शकों ने देखा जिसमें से विशिष्ट महानुभावों के नाम इस प्रकार हैं :—

१—आर्यमित्र बजाज, मंत्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार, आर्य समाज भोगल, जंगपुरा, दिल्ली।

२—प्रो० वी०के० बुघोड़ी, एन०सी०आर०टी०, दिल्ली।

३—डा० के०सी० महेन्द्र, प्राचार्य, डी०ए०वी० कालेज, जालन्धर, पंजाब।

४—श्री रामशरण वर्मा, मन्त्री, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग, उ०प्र०, लखनऊ।

५—उज्ज्वला अरोड़ा, विधायक, पुस्तकालय समिति, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान।

६—श्री छविराम चौहान, विधायक, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान।

७—डा० योगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली।

८—डा० कार्लसेप्ले, कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका।

९—श्री त्रोपमेर रिचर्ड, आस्ट्रिया।

१०—श्री नील बनार्ड, बैलजियम।

११—श्री सत्यपाल सिंह सरोह, लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीट, दिल्ली।

१२—श्री प्रकाशवीर शास्त्री, मंत्री, आर्य विद्या सभा, गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार।

१३—माननीय जस्टिस महावीर सिंह, परिदृष्टा, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

१४—श्री पुरुषोत्तम गोयल, अध्यक्ष, दिल्ली महानगर, दिल्ली।

१५—श्री इन्द्रप्रसाद, अध्यक्ष, आर्य समाज, न्यूयार्क, संयुक्त राज्य अमेरिका।

इस वर्ष हिन्दी पत्रकारिता विभाग के छात्र श्री सुशील कुमार द्वारा संग्रहालय को ८ विभिन्न काल के सिक्के भेंट स्वरूप प्राप्त हुये। इन सिक्कों में एक सिक्के पर राम, लक्ष्मण, सीता एवं भक्त हनुमान के चित्र अंकित हैं। सम्भवत: यह राम-टंका वर्ग का सिक्का है।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष उ०प्र० सरकार द्वारा संग्रहालय विकास हेतु २५,००० रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि से अस्त्र-शस्त्र कक्ष

में नये शो केस बनाने एवं पुराने शो केसों की मरम्मत आदि का कार्य करवाया जा रहा है।

अप्रैल १९९२ में अजमेरीपुर नामक स्थान पर पुरातात्विक उत्खनन कार्य डा० एस०एन० सिंह, अध्यक्ष, प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के निर्देशन में सम्पन्न किया गया। उत्खनन कार्य में संग्रहालय के क्यूरेटर श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने सह-निर्देशक के रूप में कार्य किया। उत्खनन में संग्रहालय के अन्य कर्मचारियों, विशेष रूप से सहायक क्यूरेटर डा० सुखबीर सिंह एवं श्री प्रभात कुमार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उत्खनन में प्राप्त सामग्री में मृदमाण्डों के अतिरिक्त मानवीय एवं पशु मृण्मूर्तियाँ, एक चाँदी का सिक्का (सम्भवतः पूर्व मध्यकाल का) आदि उल्लेखनीय हैं।

संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त डा० सुखबीर सिंह, सहायक क्यूरेटर एवं श्री प्रभात कुमार, संग्रहालय सहायक ने प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में अध्यापन कार्य में भी सहयोग दिया।

डा० प्रभात कुमार सैंगर ने 'बुन्देलखण्ड के प्राचीन मन्दिरों का विवेचनात्मक अध्ययन' पर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की। इनकी 'उत्तर भारत की प्रमुख मन्दिर वास्तुकला—एक अध्ययन' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसी प्रकार श्री हंसराज जोशी संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त गुरुकुल पत्रिका (मासिक शोध-पत्रिका) के प्रबन्धक का कार्य भी कर रहे हैं।

———

अंग्रेजी विभाग

सत्र १९९१-९३ की अवधि में विभाग में निम्नलिखित गतिविधियाँ उल्लेखनीय रहीं—

१—डा० नारायण शर्मा के निर्देशन में अनुसन्धान कार्य कर रहे एक शोध-विद्यार्थी को मुलकराज आनन्द के उपन्यासों पर लिखे गये शोधग्रन्थ "The Novels of Mulk Raj Ananda :A Study In Social Commitment" पर पी-एच०डी० की उपाधि दी गई।

२—डा० नारायण शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय में Canadian Literature पर एक सेमिनार में रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया—"The Self In The Poetry Of Irving Layton".

३—डा० नारायण शर्मा का एक रिसर्च पेपर "Ambivalence In The Poetry Of Purdy" मेरठ विश्वविद्यालय ने छापा।

३—डा० नारायण शर्मा को श्री आरबिन्दो पर मेरठ विश्वविद्यालय ने D. Litt. की उपाधि प्रदान की। विषय था—"Savitri & Shri Aurobindo's Theory of Poetry : A Study In Application".

५—श्री एस० एस० भगत, रीडर, के निर्देशन में एक शोध विद्यार्थी को पी-एच०डी० की उपाधि दी गई। विषय था "Savitri & Vedantic Philosophy".

६—डा० श्रवणकुमार शर्मा के निम्न रिसर्च पेपर छपे जो कि मेरठ विश्वविद्यालय तथा गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ने छापे :

(अ) "Comte & Tagore : A Study in Influence".

(ब) "French Revolution & Byron".

(स) "A Quest For Identity in Miller".

(द) "Lampman's Poetry in Two Halves".

(क) The Self In Literature—Canadian And Indian Experience".

इसके अतिरिक्त डा० श्रवणकुमार शर्मा ने निम्न Workshops में भी भाग लिया।

(a) The Appreciation & Understanding of Canada In India And Vice Versa (मेरठ)

(b) Four Week's Workshop on Canadian Studies (M.S. University, Baroda).

(c) One Week's Workshop in Canadian Studies (Meerut)

७—डा० अम्बुज शर्मा की एक पुस्तक "The Novels of Mulk Raj Ananda" प्रकाशित हुई और वह अनिता देसाई के उपन्यासों पर एक शोध विद्यार्थी को रिसर्च करवा रहे हैं।

—*—

हिन्दी विभाग

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग गुरुकुल के स्थापना-काल जितना पुराना है, पर यहाँ स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन सन् १९६३-६४ से प्रारम्भ हुआ। तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जनक आचार्य पद्मसिंह शर्मा तथा प्रख्यात हिन्दी वैयाकरण आचार्य किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे हैं। अनेक देशी-विदेशी छात्र यहाँ से अध्ययन कर आज उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं।

१९९१-९३ की अवधि में पठन-पाठन का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। विभाग में विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान हुए। इनमें नवभारत टाइम्स के प्रधान सम्पादक डा० विद्यानिवास मिश्र तथा प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा 'भिक्खु' मुख्य हैं। काशी विद्यापीठ के कुलपति डा० त्रिभुवन सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा. सूर्य प्रसाद दीक्षित, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० श्याम सुन्दर शुक्ल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ही हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० विजयपाल सिंह, पी०टी० आई० भाषा के सम्पादक डा० वेद प्रताप वैदिक, बाल पत्रिका 'पराग' के पूर्व सम्पादक डा० हरिकृष्ण देवसरे, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० महेन्द्र कुमार, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा. कृष्ण मुरारि मिश्र तथा मेरठ कॉलेज के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० महेश चन्द विभिन्न कार्यों से विश्वविद्यालय में उपस्थित हुए।

हिन्दी पत्रकारिता के छात्र प्रशिक्षण-यात्रा पर दिल्ली, जयपुर तथा भोपाल गए जहाँ उन्होंने प्रेस की कार्यविधि का अवलोकन किया। इस यात्रा के दौरान उन्हें पत्रकारिता से जुड़े विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान भी सुनने को मिले। पत्रकारिता के छात्रों ने ही प्रायोगिक समाचारपत्र 'शतपथ' का प्रकाशन किया जिसका विमोचन ५ मार्च १९९३ को स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती द्वारा हुआ।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली से अहिन्दी भाषी राज्यों आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र के हिन्दी छात्रों का एक दल अध्ययन यात्रा पर हिन्दी विभाग आया। इस दल को हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं मानविकी संकाय के डीन डा० विष्णुदत्त राकेश ने सम्बोधित किया।

१० मार्च १९९२ तथा ६ फरवरी १९९३ को शोध उपाधि समिति की बैठक हुई जिसमें नौ विषय पी-एच०डी० उपाधि हेतु स्वीकृत हुये। तीन छात्रों को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई तथा आठ छात्रों ने लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए।

शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशनकार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी व अन्य उपलब्धियाँ

डा० विष्णुदत्त राकेश–एम०ए०(आगरा वि०), पी-एच०डी० (जोधपुर वि.), डी० लिट् (विक्रम वि०)।

- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय तथा मध्य प्रदेश शिक्षा अनुदान आयोग की बैठकों में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।
- प्रकाशित कृतियाँ—
  १. देवरात (खण्ड काव्य)
  २. आधुनिक हिन्दी लेखन की ऊर्जा (आलोचना)
  ३. विविध पत्रिकाओं तथा समीक्षा ग्रन्थों में कई लेख प्रकाशित हुए।
- आठ शोध-प्रबन्धों की समीक्षात्मक भूमिकाएँ लिखीं। विश्वविद्यालयों के पी-एच०डी०, डी० लिट्० के शोध-प्रबन्धों का परीक्षण किया।
- जनवरी १९९३ से मानविकी संकाय के डीन के रूप में कार्यरत।
- तीन छात्रों के लघु शोध-प्रबन्ध का निर्देशन किया। कई छात्र पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोध कार्य कर रहे हैं।

डा० सन्तराम वैश्य–एम०ए० (अवध वि०), पी-एच०डी० (काशी हिन्दू वि०)

- 'सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध' शीर्षक ग्रंथ क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।
- तीन लेख प्रकाशित हुए—
  १. उपनिषदों में अध्यात्मक विद्या — जयराम संदेश

२. भ्रमरगीत परम्परा और सूर का भ्रमरगीत — अभिव्यक्ति

३. भारतीय पुनर्जागरण और हिन्दो — गुरुकुल पत्रिका

० तीन लघु शोध-प्रबन्धों का निर्देशन किया—

१. मॉरीशस के हिन्दी लेखक अभिमन्यु अनत और उनकी कृतियाँ
—विरजानन्द उमा, १९९१

२. सद्धर्म प्रचारक और पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
—सुभाष चन्द भाटी, १९९३

३. पं० बुद्धदेव विद्यालंकार की हिन्दी रचनाएँ
—कु० दीपा मल्होत्रा, १९९३

डा० वैश्य के निर्देशन में चार छात्र पी-एच०डो० की उपाधि हेतु शोध-कार्य कर रहे हैं।

१,	राजीव मलिक	आर्य समाज के हिन्दी नाटककार	१९९२ से
२.	गुलजारसिंह चौहान	आचार्य किशोरीरास वाजपेयी प्रणीत तरंगिणी में परम्परा और युगवोध	१९९२ मे
३.	मोहिनी कुकरेती	संत गरीबदास का बानी साहित्य : वस्तु और शिल्प	१९९३ से
४.	कुमकुम वर्मा	हिन्दी के साठोत्तर मिथकीय खण्ड-काव्य	१९९३ से

२९ जनवरी १९९२ को रीडर पद पर नियुक्ति हुई। दिसम्बर १९९२ से विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत।

डा० ज्ञानचन्द रावल

एम०ए०, पी-एच०डी० (गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय)

एकेडेमिक स्टाफ कालेज, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'रिफ्रेशर कोर्स' में भाग लिया।

कई छात्र इनके निर्देशन में शोधकार्य कर रहे हैं।

डा० भगवानदेव पाण्डेय

एम०ए०, पी-एच०डी० (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

० 'हिन्दी संत काव्य में परम्परा और प्रयोग' शीर्षक ग्रंथ माण्डूक्य प्रकाशन वाराणसी से प्रकाशित।

० एकेडेमिक स्टाफ कालेज, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया।

० इनके निर्देशन में शोधकार्य कर रहे दो छात्रों, अमलदार तथा वीना सिंह को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई।

श्री कमलकांत बुधकर, एम.ए. (मेरठ विश्वविद्यालय)

* नवभारत टाइम्स में कई आलेख और टिप्पणियाँ प्रकाशित हुईं।
* इनके निर्देशन में दो छात्रों ने लघु शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया।
* एकेडेमिक स्टाफ कालेज, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया।
* हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों के प्रायोगिक पत्र 'शतपथ' के प्रकाशन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

———

विज्ञान संकाय

जनपद हरिद्वार में पुण्य सलिला माँ गंगा के तट पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आज विशाल वट-वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर यह विश्वविद्यालय वर्तमान में वैदिक शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। विज्ञान संकाय के प्राध्यापक महानुभाव शिक्षणकार्य के साथ २ शोधकार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९२-९३ में इस संकाय में बी०एस-सी० तृतीय वर्ष का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है जबकि वार्षिक मूल्यांकन पूर्णरूपेण वाह्य रहा है। यह अत्यन्त हर्ष और प्रतिष्ठा का विषय है कि इस संकाय से इस वर्ष बी. एस-सी. की उपाधि लेकर निकले अनेक छात्रों को भारतवर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

संकाय के प्राध्यापक शोधकार्य कर एवं करा रहे हैं। प्राध्यापकों की शोध एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सम्बन्धित विभागों को आख्या अवलोकनीय है। यहाँ के शिक्षकों के शोधपत्र लगातार विदेशी एवं भारतीय पत्रिकाओं में छप रहे हैं। पुस्तक लेखन में भी संकाय अपना स्थान बनाये हुए है। संकाय के अनुभवी शिक्षक शोधकार्य का निर्देशन कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रो० डी०के० माहेश्वरी एवं प्रो० एस०एल० सिंह ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/वर्कशाप में भाग लिया। इन्होंने जापान तथा आई० आई०टी० दिल्ली के आयोजनों में भाग लिया।

इस संकाय की एक विशिष्टता यह है कि बी०एस-सी० में कम्प्यूटर विज्ञान को विषय विशेष के रूप में पढ़ाने का प्रबन्ध है। विज्ञान संकाय में बिना सुविधाओं के भी छात्र संख्या निरन्तर बढ़ रही है। सत्र ९२-९३ के प्रवेश अनुसार छात्र संख्या निम्नवत रही :

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी. एस-सी. प्रथम	गणित	१७४
,,	कम्प्यूटर	७३
,,	बायो	७५
,,	मनोविज्ञान	१४
,,	दर्शन	१
बी. एस-सी. द्वितीय	गणित	४४
,,	कम्प्यूटर	२४
,,	बायो	५६
बी. एस-सी. तृतीय	गणित	४३
,,	कम्प्यूटर	२३
,,	बायो	३२
पी. जी. डी. सी. ए.		३०
एम. एस-सी. प्रथम	भौतिकी	२६
,, द्वितीय	,,	१६
,, प्रथम	रसायन	१६
,, द्वितीय	,,	१०
,, प्रथम	गणित	१८
,, प्रथम	माइक्रो	२२
,, द्वितीय	,,	१०

गणित विभाग

सत्र ९१-९२ से गणित विभाग में बी. एस-सी. तथा एम. एस-सी. स्तर पर अध्यापन के साथ पी-एच. डी. के लिए भी छात्र एवं छात्राओं का पंजीकरण किया जाता है। स्नातक तथा स्नातकोत्तर दोनों ही स्तरों पर पाठ्यक्रमों का पुनरीक्षण होता रहता है तथा आवश्यकतानुसार इसमें संशोधन किया गया। आगामी वर्ष से स्नातकोत्तर स्तर पर कम्प्यूटर अनुप्रयोग के पाठ्यक्रम का स्नातकोत्तर (गणित) स्तर पर समावेश किया जाना प्रस्तावित है।

प्रो. एस. एल. सिंह के निर्देशन में कतिपय छात्र/छात्राएँ आधुनिक एवं प्राचीन गणित में पी-एच. डी. हेतु कार्य कर रहे हैं। प्रो० सिंह को विभिन्न विश्वविद्यालयों में गणित शिक्षा पर व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया गया। प्रो० सिंह के ४ शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए तथा उन्होंने निम्न संगोष्ठियों में भाग लिया एवं आमन्त्रित भाषण दिये :

1. National Seminar on Science in Ancient India, Kumaun University, Nainital, Oct. 1991.
2. Varahmihir Memorial National Seminar on Functional Analysis and Its Applications, Vikram University, Ujjain, Feb. 1992.

सत्र १९९२-९३ में स्नातकोत्तर स्तर पर नया पाठ्यक्रम लागू किया गया जिसमें कम्प्यूटर विज्ञान के पठन-पाठन की व्यवस्था की गई। इस सत्र में बी०एस-सी० भाग एक में छात्रों की अधिक संख्या को देखते हुए तीन सेक्शन बनाये गये। छात्रों की बढ़ी हुई संख्या तथा छात्राओं की एम. एस-सी. (गणित) कक्षा प्रारम्भ होने से प्रत्येक अध्यापक पर कार्यभार बढ़ गया। अध्यापन में सहयोगार्थ निर्धारित वेतन पर श्री एम०सी० जोशी (शोध छात्र)

को नियुक्ति प्रदान की गई। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय से गणित (वस्तुत: प्राचीन गणित एवं ज्योतिष) में पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त डा० रमेश चन्द (स्थानीय विद्या मन्दिर में गणित प्रवक्ता) को उनके अनुरोध पर स्नातक कक्षाएँ पढ़ाने का अवसर दिया गया। उनकी इस अवैतनिक सेवा की विभाग अनुशंसा करता है।

गणित विभाग में पंजीकृत शोधछात्रों के रूप में अब तक पाँच छात्र/छात्राओं को पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त हो चुकी है। इनके नाम हैं—डा. उमेश चन्द्र गैरोला (सम्प्रति प्रवक्ता, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर), डा० देवेन्द्र दत्त शर्मा, डा० नीलिमा शर्मा, डा० रेखा तलवार तथा डा० रमेश चन्द। इन सभी लोगों ने प्रोफेसर एस. एल. सिंह के निर्देशन में अपना शोधकार्य पूरा किया।

ज्ञातव्य हो कि डा० गैरोला और डा० दत्त के शोध-प्रबन्ध हिन्दीभाषा में लिखे गये हैं।

प्रो० सिंह के अतिरिक्त विभाग के डा. वीरेन्द्र अरोड़ा तथा डा० एम. पी. सिंह के निर्देशन में शोधछात्रों का पंजीकरण इस सत्र में हुआ। सम्प्रति गणित विभाग में लगभग एक दर्जन अभ्यर्थी पी-एच. डी. हेतु कार्य कर रहे हैं, जिनमें से अधिकतर अधुसन्धित्सों का पंजीकरण हो चुका है।

प्रो० एस. एल. सिंह तथा इनके निर्देशन में कार्यरत शोधार्थियों ने विभिन्न सेमिनार तथा गोष्ठियों में भाग लिया। इनमें से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं :—

(१) गणित गोष्ठी (हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रायोजित), कुरुक्षेत्र वि०वि०, कुरुक्षेत्र। पूर्णतया हिन्दी भाषा में आयोजित यह प्रथम गणित गोष्ठी है जिसमें प्रो. एस. एल. सिंह ने आमंत्रित भाषण दिया तथा श्री महेश चन्द्र जोशी ने शोध प्रपत्र प्रस्तुत किया।

(२) गणितीय विश्लेषण में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी I. I. T. दिल्ली में प्रो. एस.एल. सिंह ने आमंत्रित भाषण दिया। उल्लेख्य है इस संगोष्ठी में देश के हिन्दीभाषी प्रदेशों (बिहार, उ.प्र. हरियाणा,

राजस्थान, हिमाचल प्रदेश) से मात्र एक आमंत्रित भाषण प्रो. सिंह द्वारा दिया गया था।

(३) मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित रिसर्च सेमिनार, रीवा में प्रो. एस. एल. सिंह ने आमंत्रित भाषण दिया।

(४) एकेडेमिक स्टाफ कालेज (गणित), रानी दुर्गावती वि. वि., जबलपुर में प्रो. एस. एल. सिंह ने तीन भाषण दिये जिसमें से वैदिक ज्यामिति विषय पर भी एक भाषण दिया गया था।

(५) अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शोध पत्रिकाओं में प्रो. एस. एल. सिंह, उनके सहकर्मियों एवं शोध छात्रों के साथ लिखे गये चार शोध प्रपत्र प्रकाशित हुए/प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुए।

——

भौतिकी विभाग

१६५८ में विज्ञान महाविद्यालय के उद्घाटन के साथ ही बी.एस-सी. भौतिकी कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। एक लम्बे समयान्तराल के बाद कुल-पति श्री सुभाष विद्यालंकार जी के अथक् प्रयासों के फलस्वरूप १९९१ में एम०एस-सी० भौतिकी विजय में एवं १९९२ से शोधकार्य के लिए यू० जी० सी० द्वारा मान्यता प्राप्त हुई। इस वर्ष एम०एस-सी० प्रथम वर्ष का परीक्षा-फल अत्यन्त सराहनीय रहा।

सत्र १९९२-९३ में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों की संख्या निम्न प्रकार रही—

बी०एस-सी० प्रथम वर्ष	—	२९०
,, द्वितीय वर्ष	—	९८
,, तृतीय वर्ष	—	९६
एम०एस-सी प्रथम वर्ष	—	३० छात्र + ८ छात्राएं
,, द्वितीय वर्ष	—	१६
पी-एच०डी० (रजिस्ट्रेशन)	—	६

इस समय विभाग में शिक्षकों की संख्या निम्न प्रकार से है :

१—रीडर	२	स्थायी
२—लेक्चरर	३	स्थायी
३—लेक्चरर	३	अस्थायी

वर्ष १९९०-९१ से भौतिकी विभाग में राष्ट्रीय स्नातक भौतिकी परीक्षा (National Graduate Physics Examination) का शुभा-रम्भ किया गया। यह परीक्षा IAPT द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर संचा-

लित की जाती है। वर्ष १९९१ में एक छात्र इस परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर उच्चतम स्थान प्राप्त करने वाले १ प्रतिशत छात्रों में था और दो छात्र राज्य स्तर पर उच्चतम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों में से थे। १९९१ में अखिल भारतीय स्तर पर ३०९० तथा राज्य स्तर पर उत्तर प्रदेश में २४९ छात्र बैठे थे। वर्ष १९९२ में भी हमारे भौतिकी विभाग का एक छात्र ४१६ छात्रों में १% उच्चतम छात्रों में से है।

विभाग के शिक्षकगण नियमित अध्यापन के अतिरिक्त शोधकार्य तथा प्रसार व्याख्यान भी देते रहते हैं तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं में भी व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किये जाते हैं।

विभाग में उच्चस्तरीय शोधकार्य चल रहा है तथा शोधछात्र विभाग के प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में अपने-अपने शोधप्रबन्धों पर लगन के साथ कार्यरत हैं।

वर्ष १९९१-९२ तथा ९३-९४ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा तथा विभाग के शिक्षकों एवं छात्रों ने विश्वविद्यालय की शिक्षकेत्तर गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया।

—*—

रसायन विभाग

रसायन विभाग डा० कौशल कुमार की अध्यक्षता में प्रगति पर है। जनवरी '९२ में पी०जी० डिप्लोमा कोर्स को, रोजगारोन्मुख व विशिष्ट एम० एस-सी० पाठ्यक्रम 'कर्मशियल मेथड्स आफ केमिकल एनेलेसिस' में परिवर्तित किया गया। विभाग में पी-एच०डी० कार्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया।

हरिद्वार जनपद की जनता की भावनाओं तथा माँग के साथ न्याय करते हुए कुलपति जी ने जनवरी '९३ से विभाग में एम०एस-सी० स्तर पर महिला शिक्षा की व्यवस्था की तथा कक्षाएँ प्रारम्भ हुईं। विभाग के शिक्षकगण, कार्यभार पहले से ही अधिक होने के बाद भी सहर्ष नयी व्यवस्था में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

एम०एस-सी० प्रथम वर्ष परीक्षा में समस्त छात्रों ने ६४ प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किये।

फरवरी '९३ में शोध समिति की बैठक हुई। डा० रामकुमार पालीवाल तथा डा० रजनीशदत्त कौशिक इस समिति के सम्मानित सदस्य हैं। डा० ए०के० इन्द्रायण, डा० पालीवाल व डा० रणधीर सिंह के निर्देशन में एक-एक शोधछात्र का पंजीकरण किया गया। डा० पालीवाल, एच०एन० विश्वविद्यालय, गढ़वाल के पी-एच०डी० हेतु स्वीकृत निर्देशक भी हैं।

डा० इन्द्रायण, आकाशवाणी नजीबाबाद में विज्ञान विशेषज्ञ हैं तथा उनके कई कार्यक्रम प्रसारित हुए। उन्होंने 'हायर वेलेन्ट सिल्वर' यू०जी०सी० शोध परियोजना पर गत वर्ष कार्य किया।

डा० आर०डी० कौशिक ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अक्टूबर '९२ से एक मास के रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया। डा० कौशिक व डा० रणधीर सिंह के निर्देशन में एम०एस-सी० के छात्रों ने इन्स्टीट्यूट ऑफ ऑशनोग्राफी, गोआ में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

डा० रणधीर सिंह ने सितम्बर '९२ में सरे विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में इण्टरनेशनल सिम्पोजियम में अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया। उनका एक शोध पत्र बुल० जन० इलेक्ट्रोकैमिस्ट्री में प्रकाशनार्थ स्वीकृत हुआ।

डा० कौशल कुमार, डा० इन्द्रायण, डा० पालीवाल, डा० कौशिक व डा० रणधीर सिंह के निर्देशन में दो-दो एम०एस-सी० छात्र, डिसर्टेशन कार्य कर रहे हैं।

विभाग में छात्र संख्या अत्याधिक हो जाने के कारण, कुलपति जी ने एक छोटी लैब निर्माण को स्वीकृति दी, जिसका कार्य प्रगति पर है।

डा० रजनीश कौशिक व शशी भूषण (लैब टेक्निशियन) ने शीघ्रता व सजगता से कार्य करते हुए, यू०जी०सी० प्रदत्त एक लाख रुपये के विकास अनुदान से महत्त्वपूर्ण उपकरण व यन्त्र क्रय करने में विशेष योगदान दिया।

समस्त शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने विभाग के समुचित संचालन में योगदान दिया।

—

जन्तु विज्ञान विभाग

१. विभाग की स्थापना

जन्तु विज्ञान विभाग की स्थापना सन् १९६१ में हुई थी। इस विभाग में अध्यक्ष के रूप में सर्वप्रथम डा० सी०एस० गुप्ता ने कार्य-भार ग्रहण किया, जो सन् १९८० में सेवानिवृत्त हो गये। तत्पश्चात् जन्तु विज्ञान विभाग के अध्यक्ष के रूप में डा० बी०डी० जोशी द्वारा सन् १९८२ में कार्यभार ग्रहण किया गया। आपने जौलाई सन् १९९० तक इस पद की गरिमा को बनाये रखा। वर्तमान में डा० टी०आर० सेठ सन् १९९० से इस विभाग के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

२. विभाग की मौलिक छवि

इस विभाग में आरम्भ से ही स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्यापन कार्यों के साथ-साथ विभिन्न शोध-परियोजनाओं पर भी कार्य किया गया, जिसमें विभाग को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। विभिन्न शोध-परियोजनाओं को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा पर्यावरण मंत्रालय द्वारा भी अनुदान प्रदत्त किये गए हैं।

३. विभागीय कक्षाएँ—(i) बी०एस-सी० (जूलौजी)

(ii) एम०एस-सी० (माइक्रोबायोलॉजी)

"Himalayan Journal of Environment & Zoology" नामक शोध-पत्रिका का नियमित प्रकाशन विगत ७ वर्षों से विभाग के प्राध्यापकों द्वारा अपने ही प्रयास से सुचारू रूप से किया जा रहा है। शिक्षा-जगत में इस शोध-पत्रिका की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ती जा रही है।

विभाग द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का भी आयोजन

किया जाता रहा है। साथ ही विभाग के प्राध्यापक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं।

अतः जन्तु विज्ञान विभाग अपने विभिन्न क्रिया-कलापों द्वारा विश्वविद्यालय के स्तर को निरन्तर ऊंचा उठाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

विभागीय अध्यापकों के शोध एवं प्रसार कार्य—

डा० बी०डी० जोशी, प्रोफेसर

प्रो० जोशी ने वर्तमान सत्र १९९१-९२ में निम्न गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

रेडियो वार्ता

इनकी निम्नलिखित दो वार्तायें आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुई।

(i) पर्वतीय क्षेत्रों के विकास में अप्रवासीय पर्वतियों का योगदान

(ii) वन्य जीवों के संरक्षण के उपाय

आमन्त्रित व्याख्यान

(i) एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सैन्टर, हरिद्वार में "विकास एवं पर्यावरण सुरक्षा के उपाय" नामक विषय पर व्याख्यान।

(ii) II National Symposium on Haematology पटना विश्वविद्यालय, पटना में Key–Note Address.

(iii) उपरोक्त संगोष्ठी के अन्य सत्र में "Haematology of the fishes under stress" नामक विषय पर वार्ता।

(iv) II Natl. Congr. Ind. Inst. of Ecology of Environment (India International Centre, New Delhi) में "Integrated approach towards Eco-restoration in the Himalayan Foot hills" नामक विषय पर व्याख्यान एवं सत्राध्यक्ष का कार्य।

(v) आर्य वानप्रस्थाश्रम, हरिद्वार में निम्न विषयों पर व्याख्यान—

(i) श्रीकृष्ण एवं गीता

(ii) श्री कृष्ण : अवतार एवं पुनर्जन्म

(iii) प्रकृति में काल-चक्र

(iv) ब्राजील (रियो) सम्मेलन एवं पर्यावरण

(v) पृथ्वी का जन्म एवं विकास

(vi) डा० जोशी को "African Association of Physiological Science" द्वारा Plenary lecture के लिए आमन्त्रण मिला था (किन्तु धनाभाव के कारण वे सम्मेलन में भाग न ले सके) इसी African Association द्वारा उन्हें AAPS के Intl. Program Committee का सदस्य मनोनीत किया गया।

(vii) II International Colloquim on Microbiology of Poikilotherms Budapest (हँगरी) में दो शोध-पत्र प्रस्तुतिकरण हेतु स्वीकृत।

विश्वविद्यालय प्रशासन सम्बन्धित कार्यों में भूमिका

(i) चीफ प्रोक्टर

(ii) परीक्षाध्यक्ष एवं सहा० परीक्षाध्यक्ष

(iii) इन्चार्ज-उड़नदस्ता

(iv) कल्चरल कोर्डिनेटर (G.K.V. & A.I.U.)

(v) Member, Grievance Committee

(vi) शिक्षक संघ का अध्यक्ष

संपादन

(i) Himalayan Journal of Enviroment & Zoology नामक शोध-पत्रिका के मुख्य संपादक।

(ii) चार अन्य शोध-पत्रिकाओं की सलाहकार समिति के सदस्य।

शैक्षणिक निकायों में सक्रियता

(i) 92 Academic bodies (देश-विदेश) के सदस्य ।

(ii) विषय-विशेषज्ञ के रूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों की B.O.S. and R.D.C. एवं चयन-समिति के सदस्य ।

शोध परियोजना

Eco-biology of Bhagirathi river in Garhwal Himalaya [D.O. En. Govt. of India Project].

शोध निर्देशन

(i) "Studies on clinical isolates of E. Coll for enterotoxigenicity—transfer of Ent. Factors and their inhibitions" नामक विषय पर शोध-ग्रन्थ Sri V. K. Saxena द्वारा शोध-उपाधि हेतु प्रस्तुत ।

(ii) एक छात्र का शोध-कार्य हेतु पंजीकरण एम०एस-सी० डिर्सटेशन ।

(१) सतेन्द्र कुमार द्वारा "Studies on haematological changes in female patients of Gonorrhoea" विषय पर लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत ।

(२) विशाल वर्मा द्वारा "To study the keeping quality and microbiological changes in the butter sample from Roorkee" विषय पर लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत ।

अन्य

प्रो० जोशी का 'जीवन-अभिलेख' एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक (Ritacimento International) द्वारा "Learned Asia, Vol-I" (Educationists of who's who—p. 229) नामक पुस्तिका में प्रकाशित ।

इस सत्र में प्रो० बी०डी० जोशी के निम्न वैज्ञानिक शोध-पत्र प्रकाशित हुए—

1. Ravikant & Joshi, B. D. (1991). Haematological observations on some selected cases of pregnancy anaemia. *Him. J. Env. Zool.*, 5 : 34-37.

2. Joshi, B.D. & Pathak, J. K. (1991) A relative study of some physico-chemical parameters of sewage water at Uttarkashi. *Him. J. Env. Zool.*, 5 : 53-56.

3. Sharma, T. & Joshi, B.D. (1991). Haematological alterations in a hillstream fish *Garra gotyla* due to trypanosome infection. *Him J. Env. Zool.*, 5 : 57-60.

4. Saxena, V.K., Joshi, B.D. & Yadava, J.N.S. (1991). Prevalence of transferrable enterotoxigenicity and drug resistance among enteropathogenic *E. coli. Him. J. Env. Zool.* 5 : 99-102.

5. Joshi, B. D. & Sharma, T. (1991). Seasonal variation in some haematologic values of a hillstream fish *N. rupicola. Him. J. Env. Zool.*, 5 : 103-108.

Prof. B. D. Joshi, besides teaching, played important role in the following activities :

1. Acting as Chief Proctor of G.K.V. In this capacity he was responsible for the smooth and very peaceful conduction of elections of the students union of G.K.V., which was constituted for the first time.

2. Acting as Dean, Faculty of Life Sciences, w.e.f. 1-7-92.

3. Delivered two talks from A.I.R., Najibabad.

4. Delivered a series of lectures in Vanprashtha Ashram, Jwalapur, Hardwar.

5. Acting as Editor in Chief of the Himalayan Journal of Environment and Zoology.

6. Completed a major research project on 'Eco-biology of River Bhagirathi' sanctioned to him from Department of Environ-

ment, Ministry of Environment and Forest, Government of India.

7. Acted as Incharge, Flying Squad in the Annual Examination of GKV, 1993.

8. Acted as Convenor of a committee to recognise P. C. R. I., B. H. E. L., as a place of research work in collaboration with the G.K.V.

9. Organised one day plantation camp in rural areas of Hardwar under the auspices of Indian Academy of Environmental Sciences, Hardwar.

10. Acting as President, Indian Academy of Environmental Sciences Hardwar.

11. Delivered an Invited Lecture at Deptt. of Bio-sciences, Unit of Jammu, Jammu in March '93.

12. Acted as subject expert in the Academic Councils, Board of Studies and Research Degree Committees of several Indian universities.

13. Member, G.K.V. committee to consider issues of examination's reforms etc.

14. Member, GKV committee to revise Ph. D. rules and regulations.

15. Member, Sports Committee of GKV.

16. Member, Library Committee of GKV.

17. Delivered two lectures on environmental issues at Agricultural extension centre, Gurukula Kangri, Hardwar.

18. The following academic achievements are mention worthy :

    (a) Abstract of two research papers published in the Proceedings of 1st Congress of African Association of Physiological Sciences, held in Nairobi, Kenya, September 21-28, 1992.

    (b) Acted as a counselling member in the International programme committee of AAPS-Congress, Nairobi, 1992.

(c) Following publications were made by Prof. B. D. Joshi during 1992-93 academic session :

BOOK REVIEWS

(i) Aqua-culture Research needs for 2000 A.D. Edited by Prof. J.K. Wang & Dr. P.V. Dehad Rai.

(ii) Fresh water Zooplanktons of India by Dr. S.K. Battish.

RESEARCH PAPERS PUBLISHED

(iii) **Review Article** : On the use of piscine haematological parameters in Fisheries Management, In : Proceed. National Symp. Emerg. Trends in Animal Haematol-II, pp. 96-122, 1992.

(iv) Key Note Address at the inaugural session of 2nd Nat. Symp on Emerg. Trends in Anim. Haematol-1992, pp. 130-133.

RESEARCH PAPERS

1. Joshi, B.D. & Pathania, V. (1992). A preliminary study on the postmortem changes in some biochemical components of liver and muscles of the fish *Tor putitora* in relation to the bacterial population over the skin at the refrigeration temperature. *Him. J. Env. Zool.*, 6 : 147–151.

2. Joshi, B.D., Pathak, J.K., Singh, Y.N. & Bisht, R.C.S. (1992). A Study of minor limno-biotic components of River Bhagirathi from Garhwal-Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 6 : 152-157.

3. Joshi, B.D., Pathak, J.K., Singh, Y.N. & Bisht, R.C.S. (1992). On the roof spectrum of the snow-trout (Schizothorax richardsonii) and the Mahseer *(Tor tor)* from river Bhagirathi in Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 6 : 158-163.

4. Joshi, B.D., Pathak, J.K., Singh, Y.N., Bisht, R.C.S. & Joshi, N. (1993) Phytoplankton production in the snow fed river Bhagirathi in the Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 7 : 60-63.

5. Joshi, B.D., Pathak, J.K., Singh, Y.N., Bisht, R.C.S. and Joshi, P.C. (1993) On the physico-chemical characteristics of river Bhagirathi in the uplands of Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 7: 64-75.

6. Joshi, B.D. & Bisht, R.C.S. (1993). Some aspects of physico-chemical characteristics of western Ganga Canal near Jwalapur at Hardwar. *Him. J. Env. Zool.*, 7 : 77-82.

7. Joshi, B.D. & Bisht, R.C.S. (1993). Seasonal variation in the physico-chemical characteristics of western Ganga canal near Jwalapur at Hardwar. *Him. J. Env. Zool.*, 7: 83-90.

(E) Two M.Sc. dissertation were submitted under his supervision in 1992-93.

(F) Two research scholars were enrolled for their Ph.D. degree in Zoology, under the guidance of Prof. B.D. Joshi.

(i) Km. Laxmi Devi and

(ii) Mr. Naveen Chandra Pandey.

(G) One student, Dr V.K. Saxena was awarded Ph.D. degree in Zoology under the guidance of Prof. B.D. Joshi. This is the first Ph.D. thesis in Zoology, from the faculty of Life Sciences of G.K.V.

(H) Prof. Joshi is scheduled to visit Britain in July-August, 1993, to attend 32nd International Union of Physiological Sciences Congress to be held in Glassgow and II Workshop in Teaching Physiology at Inverners Scotland, U.K.

डा० टी०आर० सेठ, रीडर

डा० सेठ ने विश्वविद्यालय एवं विभाग के क्रिया-कलापों में सक्रिय योगदान दिया। आपने विज्ञान संकाय की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षा अध्यक्ष का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ विभिन्न विश्वविद्यालय की परीक्षा कार्यक्रमों में परीक्षक हैं।

डा० ए०के० चोपड़ा, रीडर

डा० चोपड़ा ने इस सत्र में निम्न गतिविधियों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

1. Research papers published

1. *In vitro* effect of Ayurvedic Anthelmintics on Phosphatase Activity of *Paramphistomum Cervi Rivista Di Parassitologia*, 57 : 309-312, 1990.

2. Hydrogen Ion concentration in the Alimentary Canal of *Schizothorax richardsonii, Him. J. Env. Zool.*, 5 : 45-47, 1991.

3. Pollution of Domestic Sewage entering river Ganga at Rishikesh, *Him. J. Env. Zool.*, 5 : 126, 129.

4. Effect of Abiotic Variables on Primary Productivity of River Yamuna at Naugaon, Uttarkashi-Garhwal. *Indian J. Ecol.*, 17 : 61-64.

5. Leucocytic Changes in *Bufo melanostictus* naturally infected with nematodes *Revista Di Parasitologia*. (Accepted).

2. Editing Work

As Executive Editor of Himalayan Journal of Environment and Zoology.

3. M.Sc. Dissertation

1. Effect of Sewage on Water-Quality of river Ganga at Rishikesh—Mr. Nirmal J. Patrick.

(2) Incidence of some skin-diseases of humans at Hardwar (Being done)—Mr. Charanjeet.

4. Ph.D. Work of Mr. Ravikant

In Progress

5. Minor U.G.C. Project

Epidemiological & Pathological Studies of Parasitic Diseases of human beings at Hardwar. *In Progress*.

6. N.S.S. Programme Coordinator

Since March, 1992.

7. Research Papers Publishəd :

1. A Note on Morphology of the Alimentary Canal of *Schizothorax richardsonii. Him. J. Env. Zool.*, 6 : 71-73 (1992).

2. Disturbances in Glycogen Metabolite few Fresh-water Snails Infected with Digenean Larvae, *Him. J. Env. Zool.*, 6 : 45-49, 1992.

3. Leucocytic Changes in *Bufo melanostictus* Naturally Infected with Nematodes. *Revista di Parassitologia*, 59 : 95-97, 1992.

4. Effect of Domestic Sewage on Physico-chemical Qualities of the Ganga Canal Water at Jwalapur, Hardwar (India). *Intern. J. Environment Studies*, (UK), 41 : 183, 1992.

5. Seasonal and Diurnal rythm of Some Physico-chemical parameters of the River Pinder of Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 6 : 172-175, 1992.

6. Pollution of Waste-water entering Upper Ganga Canal at Jwalapur, Hardwar. *J. Ecobiol.*, 4: 145-149, 1992.

7. Effect of Domestic Sewage on Microbiological Characteristic of Ganga Canal at Jwalapur, Hardwar. *Him. J. Env. Zool.* 6 : 183-187, 1992.

8. A Study on Incidence of Skin Diseases in People at Hardwar. (Ab.). Third Asian Congress of Parasitology, pp. 62, 1993.

9. Seasonal Incidence of Intestinal Infections in People at Hardwar. (Ab.). Third Asian Congress of Parasitology, pp. 80, 1993.

10. Effect of Parasitism on Amino-transferase Activity of Some Freshwater Snails. (Ab.). Third Asian Congress of Parasitology, pp. 101, 1993.

Scientific Article :

1. 'Himalaya Ki Jaleey Paaristhitiki Aur Machilayon per Iska Prabhav', Vigyan Garima Sindhu, Vol. 10, pp. 19-20, 1993.

Conference/Workshop/Training attended :

1. Symposium on Third Asian Congress of Parasitology held at Lucknow, Feb. 18-21, 1993.
2. State Level Workshop on Iodine Deficiency Disorders Control and Women and Child Development held at Lucknow, May 12-13, 1993.
3. Panel Discussion during Training of NSS Programme Officers, held at Roorkee, June 25, 1993.
4. Five week Intensive Course on Natural Language Processing, held at Department of Electronics and Computer Engineering University of Roorkee, Roorkee, June 31 to July 3, 1993.

Radio-talk :

'Insects responsible for spreading different diseases', in Hindi, All India Radio, Najibabad, April, 1993.

Minor UGC Project :

Epidemilogical and Pathological Studies of Parasitic Diseases of Human Beings at Hardwar. *In Progress.*

M.Sc. Dissertation :

1. 'Incidence of Important Skin Diseases'—Mr. Charanjeet
2. Work of Mr. Serjeet Singh is in progress.

Ph.D. Dissertation :

Ph. D. work of Mr. Ravikant and Mr. Nandkishore—In progress.

Editing work :

As Executive Editor of Himalayan Journal of Environment and Zoology.

As NSS Programme Coordinator :

Since March, 1992.

डा० दिनेश भट्ट (प्रवक्ता)

सत्र ९१-९२ में डा० भट्ट की उपलब्धियाँ इस प्रकार रहीं :

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन :

डा० भट्ट ने "International Symposium on Env. & Hormo. approaches to Ornithol" में नवम्बर २७ से १० दिसम्बर १९९१ तक भाग लिया एवं आमन्त्रित शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन :

मार्या शाह् नामक शोध छात्रा का शोध-कार्य हेतु गढ़वाल विश्व-विद्यालय से पंजीकरण कराया गया।

एम०एस-सी० डिस्सर्टेशन :

एम०एस-सी० छात्र रमन प्रसाद का डिस्सर्टेशन (Study of Anti-microbial activity of *Cassia-Occidentalis* on Dermatophy-tes) के कार्य का निर्देशन किया।

संपादन कार्य :

"Himalayan Journal of Environment and Zoology" नामक शोध पत्रिका में "मैनेजिंग एडिटर" का कार्य किया।

पब्लिकेशन :

Circannual Rhythms of reproduction in spotted munia : the Circadicus perspective. Proc. Intl. Symp. Env. Hormo. ornithol. 70, 1991.

कार्यक्रम अधिकारी :

डा० भट्ट राष्ट्रीय सेवा योजना के Programme Officer के पद पर भी काम कर रहे हैं।

सत्र ९२-९३ की अवधि में डा० भट्ट ने निम्न क्रिया-कलापों में भाग लिया।

१. २० जौलाई से ८ अगस्त, १९९२ तक 'काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय' द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया व Structure of Plasma-membrane नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

२. नवम्बर '९२ तक राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रोग्राम आफिसर के पद पर रहते हुए विभिन्न कार्य-क्रमों का संचालन किया।

३. संदीप कुमार (एम०एस-सी० छात्र) का Dissertation निर्देशित किया।

डा० डी०आर० खन्ना, प्रवक्ता

डा० खन्ना ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय क्रिया-कलापों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

शोध-प्रकाशन :

डा० खन्ना के निम्न शोध-पत्र प्रकाशित हुए—

(i) Fish famina of the River Ganga at Hardwar, Aquatic Environment, ed. Ashutosh Gautam.

(ii) Limnology of Dhella river. Aquatic Environment.

(iii) Observation on seasonal trends in Dratomic diversity in the river Ganga at Sapt-Sarovar, Hardwar. Recent Researches in cold water fisheries.

(iv) Plankton Ecology of the river Ganga at Chandighat, Hardwar. Advances in Limnology, ed. H.R. Singh : 171-174.

पुस्तक समीक्षा :

Review on "Ecology and Pollution of Mountain waters by Ashutosh Gautam" Ashutosh Publications, Delhi.

पुस्तक :

"Ecology and Pollution of Ganga river, Ashish Publications, Delhi, 1 : 241.

M.Sc. Dissertation work of Mr. Onkar Singh is in progress.

अन्य :

(i) राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित क्रिया-कलापों में छात्रों का मार्ग-निर्देशन किया व दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया।

(ii) Attended the training Course for N.S.S. Programme Officers organised by T.O.C., University of Roorkee, Roorkee from June 21st to July 3rd, 1993.

सत्र ९२-९३ की अवधि में विभाग में डा० खन्ना का निम्न योगदान रहा :

(i) विभागीय पुस्तकालय में इन्चार्ज के रूप में कार्य किया।

(ii) **कम्प्यूटर कोर्स—**

रुड़की विश्वविद्यालय रुड़की में एन०एल०पी० कम्प्यूटर-कोर्स (दिनांक ८-६-९२ से ११-७-९२) किया।

(iii) **शोध-पत्र तथा लेख :**

(i) Food and feeding habits of some hill stream fishes of Garhwal, Himalaya. Him. J. Env. Zool., 5 : 141-143, 1991.

(ii) "हरिद्वार–गंगा पर्यावरण-प्रदूषण" देश-निर्देश, १७ से १३ जनवरी १९९२।

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में सत्र ९१-९२ में निम्नलिखित शैक्षणिक गतिविधियाँ हुईं :

I. नवम्बर १९९१ में प्रोफेसर बी० हॉंक, अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग, टैक्नीकल यूनीवर्सिटी, म्यूनिख (जर्मनी) ने अपना विशिष्ट व्याख्यान "एन्टीबाडीज द्वारा सूक्ष्मजीवियों की पहिचान" पर दिया।

II जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर अजीत वर्मा, प्रोफेसर ऑफ माइक्रोबायलोजी, स्कूल ऑफ लाइफ सांइस ने 'माइको-रायज़ा' पर ओजस्वी व्याख्यान दिया।

III मई माह में प्रोफेसर के०एस० बिलग्रामी, एफ०एन०ए० भागलपुर विश्व-विद्यालय ने अनुसधान एवं शैक्षणिक क्रिया-कलापों का अवलोकन किया। विभाग में चल रहे विभिन्न अनुसंधानों को सराहा। स्नात-कोत्तर स्तर पर वनस्पति विज्ञान विषय शुरु करने की भी प्रेरणा दी।

IV ग्रीष्म-अवकाश के दौरान, विश्वविख्यात प्रोफेसर जे०जे० शाह एफ.एन.ए., प्रोफेसर इमेरिटस, INSA वड़ोदरा वि० वि० ने भी विभाग का दौरा किया। एम०एस-सी० सूक्ष्म जीव विज्ञान में कार्य आने वाले अन्य उपकरणों को विभिन्न परियोजनाओं के तहत खरीदने व उपलब्ध कराने की कार्य-प्रणाली भी बतलाई। कुछ उपकरण जैसे GAS-CHROMATOGRAPH, ELECTRONIC TOP PAN BALANCE आदि क्रय किये जा चुके हैं।

V ग्रीष्म-अवकाश के दौरान ही, विभागीय शिक्षक वर्ग ने शिक्षकेत्तर वर्ग के सहयोग से करीब १०० स्लाइड (सूक्ष्म जीवी-वर्ग) व माइक्रोफोटो-एलबम तैयार किया। जिसका उपयोग बी०एस-सी० कक्षाओं के अध्यापन में किया जा सकेगा। यह विभाग की एक अपनी अनूठी उपलब्धि है।

VI वनस्पति विज्ञान व सूक्ष्म जैविक वैज्ञानिकों के फोटो भी तैयार किये गए। जो कि इन शाखाओं के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।

VII विज्ञान में कवकों एवं जीवाणुओं पर विशेष शोध-कार्य चल रहा है। कुछ प्रजातियाँ विभाग में ही तैयार की गईं तथा अन्य विभिन्न शोध-संस्थानों से मंगाई गई हैं।

VIII इस वर्ष वनस्पति विज्ञान उद्यान में शीघ्र बढ़ने वाले पौधों की पौध-शाला तैयार की गई जो कि ईंधन-काष्ठ के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। विभाग में कुछ दलहनी पेड़ों के बीजों का भी संचय किया गया तथा कुछ प्रयोग भी किये जा रहे हैं ताकि उनसे उचित मात्रा में कम समय में ईंधन-काष्ठ प्राप्त हो सके।

Progressive activities for strengthening teaching and research : (92-93)

A. Department has produced some sophisticated instruments such as Gas Chromatography, UV-Visible Spectrophotometer and cooling centrifuge.

B. Ph.D. course in Microbiology has been started and two students have already been registered.

C. Some latest periodicals such as Bergey's Mannual of Determinative Bacteriology has been produced for enrichment of knowledge.

D. Dr. Navneet, lecturer along with M.Sc. students visited Himachal Pradesh University, Shimla, Central Potato Research institute, Shimla and Central Potato Research Station, Kufri and other laboratories.

E. Mr I.P. Joshi has been conferred Ph.D. degree in Botany under the supervision of Professor V. Shanker (Retd.) Botany Department.

F. Project entitled "Identification, Screening of aquatic biomass for Energy Generation and enhancing biomass production of certain fast growing fuel wood species."

List of Different Proposals Submitted :

1. Proposal for establishment of an Indian Centre for Germplasm Collection identification and maintenance of medicinal plants of Garhwal Himalayas.

2. Proposal for strengthening of Microbial teaching and research submitted to the Department of Biotechnology, Govt. of India, NEW DELHI.

3. Proposal for establishment of Eco-philosophy Centres in Indian Universities.

Professor D.K. Maheshwari :

P.G. Studies and Research in Microbiology, Department of Botany.

Acting as Head of the Department since January 1992.

Acting as Dean, Student Welfare.

Appointed as Advisor, Foreign Student Cell on the direction of ICCR, New Delhi.

Participated in VII Annual Symposium on BIOENERGY at India International Centre, New Delhi, July 1991.

Attended 13th Indian Botanical Conference held at Lucknow University, Lucknow, Dec. 1991.

Participated in Birbal Sahni birth centenary at Lucknow University, Lucknow.

Convener, Scientific and Technical terminology Workshop sponsored by Ministry of Human resources and Development, Govt. of India, New Delhi, May 1991.

Acted as UGC expert to visit University of Roorkee and Garhwal University, Srinagar during UGC-JRF examinations.

Creative achievements

Candidates conferred Ph.D. degree : Four

Three Candidates awarded Ph.D. degree in Microbiology from Barkatullah University, Bhopal and One candidate got Ph.D. degree in Botany from Meerut University, Meerut.

Eight papers have been published/accepted for publications in International journals.

1. Influence of 2 organocarbamates on growth, oxygen uptake in *Rhizobium japonicum* 2002 and nodulation in *Glycine max*. Zentralblat. Mikrobiol. 146 : 407-412, 1991.

2. Diverse effect of two organocarbamate nematocides on nitrogen assimilation of *Rhizobium japonicum* 2002 in free living culture. Biochem. Physiol. Planzen. 187 : 316-322, 1991.

3. Inhibitory effect of Indole compounds on the production of cell wall degrading enzymes by *Aspergillus niger*. Zentralblat. Mikrobiol. 147 : 35-40, 1992.

4. Wheat straw as a potential substrate for cellulase and protein production. World J. Microbiol. Biotechnol. (In Press).

5. Bioconversion of paper mill sludge by the mixed cultivation of *Trichoderma pseudokoningii* and *Aspergillus niger*. World J. Microbiol. Biotechnol. (Revised submitted).

6. Production of enzymes and ethanol from *Ipomoea aquatica* and *Eichornnia criseps*. J. Basic Microbiol. (Revised submitted).

7. *Bradyrhizobium japonicum* growth characteristics, nodule formation, leghaemoglobin synthesis and nitrogenase activity in *Glycine max* JS 72-44. Biochem. Physiol. Pflanzen. (Revised submitted).

8. Dual behaviour of carbaryl and 2, 4 Dichlorophenoxy acetic acid in *Rhizobium leguminosarum* 2005 under explanta conditions. Zentralblat. Mikrobiol. (Communicated).

Two popular scientific articles communicated in *Vigyan Garima* published from CSTT, Ministry of Human Resources and Development, Govt. of India, New Delhi.

Research Projects : Two, Ministry of Power, Department of Non-Conventional Source of Energy has financially sponsored two major projects under their Biomass programme.

Subject expert in various bodies of Ministry of Human Resources and Development, Department of Science and Technology and U.G.C.

Reviewer :

The National Academy of Sciences,

The Journal of Indian Botanical Society

Indian Journal of Microbiology

Member, Panel of Editorial Board
Bioscience and Industry
Division of Microbiology,
Indian Agricultural Research Institute
New Delhi-110012.

(1992-93)

Subject expert in Microbiology for glossory preparation by Ministry of Human Resources and Development, Govt. of India, New Delhi.

Paper published/accepted for publication in international journals :

1. Inhibitory effects of indole compound on the production of cell wall degrading enzymes by *Aspergillus niger*, Zentralbt. Mikrobiol. 147 : 35-40, 1992.
2. Wheat straw a potential substrate for cellulase and protein production using *Trichoderma reesei*. World J. Mikrobiol. Biotech. 9 : 120-121, 1993.
3. Microbial degradation of aquatic biomass by *Trichoderma viride* 992 and *Aspergillus wentii* 669 with reference to the physical structure. J. Basic Microbiol. 33 : 37-49, 1993.

Communicated :

1. Paper mill sludge as a potential source for cellulase production by mixed cultivation of *Trichoderma reesei* GM 9123 and *Aspergillus niger*. Applied Microbiology letters.

2. On the sensitivity of nitrogenase and uptake hydrogenase activity and root nodules formed by pesticide resistant isolates of *Rhizobium leguminosarum*. Applied Env. Microbiol.

3. Dual behaviour of carbaryl and 2, 4-Dichlorophenoxyacetic acid in *Rhizobium leguminosarum* 2005 under explants conditions. Zentalbt. Microbiol (Accepted) 1993.

Participated in VI International Symposium on Microbial Ecology at Barcelona (Spain), September 6-11. 1992.

Invited to deliver lecture on bio-degradation of lignocellulosic waste material in the Division of Pharmacology, Department of Microbiology, University of Barcelona, Spain, September, 3-4, 1992.

Young-Scientist Medal

Dr. D. K. Maheshwari has been awarded 'Y. S. Murthy' Medal of Indian Botanical Society. This award is given for outstanding research contribution (below 40 years). 15th Indian Botanical Conference, Marathwada University, Aurangabad (Dec. 28-30, 1992).

Dr. G. P. Gupta, Lecturer

A. Paper Published :

1. Fusarium ovule rot of Sago Palm (*Cycas revoluta* Thunb.) from Hardwar, India, A new record. Tropical Pest Management (London) : 36 (3), 1991.

B. Papers Communicated :

1. Studies on pollution reduction potential of *Eichhornia crassipes* grown in industrial effluent. Jour. of Nat. & Physical Sciences (1991).

2. Impact of Nala discharging into Ganga on water quality and algal population in Rishikesh and Hardwar region. Proceedings of SAARC organised by SAARC countries at Bot. Deptt. F.G. College, Raibareilly (U.P.)

C. RESEARCH PROJECT :

Minor Research Project entitled 'Rehabilitation of waste land at Kangri village on Gangetic Plains through aforestation' was sanc-

tioned to me jointly with Dr. Shri Krishna in May, 1991. Project was undertaken and about 300 plants of Calistomon were planted on both sides of the Punyabhumi path along both inside and backside of the main building. Soil of this field was also analysed for various parameters.

About more than 200 plants are surviving well and their biomass production is satisfactory.

(1992-93)

A. PAPER PUBLISHED :

1. Fusarium ovule rot of Sago Palm (*Cycas revoluta* Thunb.) from Hardwar, India, A new record. Tropical pest management (London) : 31 (1) : 106, 1992.

B. ABSTRACT PUBLISHED :

1. Aeromycoflora over potato fields. Proc. of 80th session of Indian Science Congress held at Goa, pp. 22-23.

DR. NAVNEET

Lecturer

A. Papers Published (1991-92) :

1. Fungicides in the control of *Phytophthora* diseases in India. In Botanical Researches in India. Eds. N. C. Aery and B. L. Chaudhary, Himanshu Publications, Udaipur, 433-440, 1991.
2. Fusarium ovule rot of Sago Palm (*Cycas revoluta* Thunb.) from Hardwar, India, A new record. Tropical Pest Management (London) : 36 (3), 1991.

B. Abstracts published :

1. Management of post harvest diseases in India. Symposium on ',Pathological problems of economic crop plants and their management".

2. Plant disease forecasting with special reference to late blight epidemic and its control. Proc. of 78th session of Indian Science Congress held at Indore.

3. Antagonistic potential of phylloplane mycoflora of Potato against *Phytophthora infestants*. Indian J. Mycol. Pl. Pathol. Vol. 21 (1) : 108.

A. Paper published : (92-93)

1. Fusarium ovule rot of Sago Palm (*Cycas revoluta* Thunb.) from Hardwar, India, A new record, Tropical pest Management (London). 38 (1) : 106 (1992).

2. Seed mycoflora of oil seed crops with special reference to mycotoxin production. In current concepts in Seed Biology. Eds. K.C. Mukerji et. al. pp. 177-199 (1992).

B. Abstract Published :

1. Aeromycoflora over potato fields. Proc. of 80th session of Indian Science Congress held at Goa. pp. 22-23.

Identification, screening of aquatic plant residue for energy generation and increasing biomass production by certain fast growing fuel wood species.

Sponsored by

Ministry of Non-Conventional Energy Sources, Govt. of India, New Delhi

Summary of work done in 1992

Principal Investigator

Prof. D.K. Maheshwari

Head, Department of Botany, Gurukula Kangri University
Hardwar-249404

Principal Investigator	:	Prof. D.K. Maheshwari.
Co-Investigator	:	Dr. Navneet.
Research Staff		
i) JRFs	:	Ajay Khandelwal.
	:	Rajesh Sawhney.
ii) TA	:	Surendra Kumar.
Publications	:	One : "Microbial degradation of aquatic biomass by *Trichoderma viride* 992 and *Aspergillus wentii* 669 with reference to the physical structure. J. Basic Microbiol. 33 (1993) 1, 19-25.

Degraded land occupy vast tracts of the country. These lands can be put under tree farming, which in turn will increase productivity and will simultaneously improve these lands. Productivity can be increased if a suitable fertilizer is applied at an optimum rate or it could also be achieved by supplying specific species of aquatic biomass directly in the soil. Further, nitrogen is an essential macro-nutrient in the most vital organs of plant. A severe shortage of nitrogen always results in reduced dry matter production. The nitrogen is required for the well being of high yielding short rotation forest and could be provided by biological fixation. This may be supplemented by applying specific *Rhizobium* as carrier-inoculants to the seeds of the desired plants. A wide variety of aquatic plants are known, but studies on their utilization have not been given due emphasis till recently. A number of workers in India and abroad have discussed the potential of energy generation and bioconversion of aquatic biomass residue into organic chemicals. The present proposal aimed to investigate an overview of aquatic weed utilization, as well as to harness their energy for enhancing the production of fast growing legumes. Not much work however, is available on utilization of aquatic biomass for production of fast growing fuel wood species.

The reason for the great interest in aquatic biomass as a source of energy is that, the aquatic biomass does not effect the atmospheric carbon-dioxide concentration. Aquatic plants are renewable and very fast growing biomass as they are free from water stress as in comparison to that of land biomass.

A vast tract of the land in and around Hardwar is uncultivated and of low grade. Such soil is well drained and attempt of reclamation will be not only fruitful in increasing the productivity of land but also in upgrading the soil for agricultural purposes.

Microbial degradation of aquatic biomass by *Trichoderma viride* 992 and *Aspergillus wentii* 669 with reference to the physical structure was determined. The objective of this experiment was to find out :

i) Changes in structural parameters of substrate which were different in structural feature in the initial stage.

ii) The chemical composition of lignocellulolytic substrate.

iii) The different functional groups present before and after alkali treatment.

iv) Crystallinity indices and amount of crystalline phases of substrate.

v) Influence of cellulose structure on cellulose degradation (Hydrolysis).

vi) Effect of *Eichhornia* and *Ipomoea* substrate on cellulase and Xylanase production.

There was a considerable change in the structural parameter of both *Eichhornia crassipes* and *Ipomoea aquatica*. This change was confirmed by infra-red (IR) spectroscopy and x-ray diffraction data. The crystalline substrate were found to be reduced after treatment with alkali. Cellulose (Endo-glucanase and Exo-glucanase) and Xylanase were found to be increased after treatment of hydrolyzed substrate as also evident by enzymatic hydrolysis of alkali treated substrate.

COMPOST PREPARATION :

Farm yard manure is considered to be the best source of recycling the mineral nutrient of any agricultural land. If compost of same quality is added in degraded soil the mineral deficit can be overcome thus improving the soil quality and productivity.

Efforts were also made to transform the *Eichhornia crassipes* into high potential farm yard manure into biodung using biogas effluent slurry. The extent of degradation was measured by loss total solid attained after degradation. The degrading mass exhibit change in colour after 5 days followed by the characteristic smell of decaying lignocellulosic matter. As the degradation proceed the color turned dark, tissues became soft and crumbled and called 'biodung' due to its dung like appearance. Effect of temperature and pH were also optimized. Change in moisture content and total solid confirm its composting nature.

BIOFERTILIZERS :

Besides compost use of specific biofertilizer can also help in increasing soil productivity via symbiotic nitrogen fixation by the host specific *Rhizobium.* An effort in this dIrection was made so as to select efficient *Rhizobium* strain which could nodulate under stress conditions prevailing in the sub-standard soil.

Survey, isolation and biochemical characterization of *Rhizobia* isolated from *Acacia nilotica* saplings growing naturally in substandard soil were made. Seeds were bacterized and productivity of *A. nilotica* measured in substandard soil after amending with biodung. Experiment were carried out in polyethylene bags (12 *x* 16 cm) revealed that after 60 days of sowing of bacterized seeds various parameters such as root length, shoot length, nodule weight and nodule number increased in comparison to control which were due improved nutritional status of soil and application of suitable biofertilizer. *Rhizobia* for other tree legumes such as *Dalbergia sisoo, Leucaenea leucocephala and Acacia catechu* have also been isolated. These are bio-chemically characterized and their growth behaviour have been measured, their cultural conditions are optimized for bacterization purposes.

Further work is in progress.

—

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग व कम्प्यूटर केन्द्र

इस विश्वविद्यालय में अनुदान आयोग एवं केन्द्र सरकार के इलेक्ट्रानिक्स विभाग (D.O.E.) द्वारा प्रदत्त अनुदान से वर्ष १९८७ में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना की गयी। उसके एक वर्ष बाद जुलाई १९८८ में "कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.सी.ए.)" व बी.एस-सी. (त्रि-वर्षीय पाठ्यक्रम) में कम्प्यूटर समाहित करने के साथ कम्प्यूटर विभाग अस्तित्व में आया। कम्प्यूटर विज्ञान विभाग व केन्द्र ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगष्ठियों एवं पाठ्यक्रमों में भाग लेकर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस समय विभाग में लगभग १८लाख रु० के कम्प्यूटर उपलब्ध हैं जिनमें आधुनिक प्रणाली पर आधारित कम्प्यूटर भी शामिल हैं। इनका उपयोग कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के छात्रों के अतिरिक्त अन्य विभागों के छात्रों / शिक्षकों / शोध छात्रों द्वारा शैक्षणिक व शोध कार्यों के लिये किया जा रहा है। सत्र १९९१-९२ व ९२-९३ की उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार है :-

१—शोध-पत्र प्रकाशित

डा० विनोद कुमार, रीडर एवं विभागाध्यक्ष द्वारा लिखित निम्न शोध–पत्र प्रकाशित हुआ :

Optimization of Terminal and Multiterminal Reliability of a Computer Communication Network. Proceedings of the National System Conference, March 13-15, 1992, University of Roorkee, Roorkee pp. 197-200. (सहलेखक : डा.के.के. अग्रवाल, प्रोफेसर, इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग विभाग, रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज, कुरुक्षेत्र)

२— शोध–पत्र प्रकाशन के लिए स्वीकृत

डा० विनोद कुमार द्वारा लिखित निम्न शोध–पत्र प्रकाशन के लिए

स्वीकृत हुआ : 'Petri Net Modelling and Reliability Evaluation of a Distributed Processing System," Reliability Engineering and System Safety, ENGLAND (सह–लेखक : डा० के. के. अग्रवाल)

३— शोध-पत्र प्रकाशन के लिए प्रस्तुत

डा० विनोद कुमार ने निम्न शोध–पत्र प्रकाशन के लिए भेजा : "Efficient Enumeration of Spanning Trees For Overall Reliability Evaluation of Computer Communication Networks," International Journal of System Science. USA. (सह–लेखक : डा० के. के. अग्रवाल)

४— शोध-सम्मेलनों एवं पाठ्यक्रमों में सहभागिता

१. डा० विनोद कुमार ने सिस्टम सोसाइटी ऑफ इण्डिया द्वारा मार्च १३–१५, १९९३ में रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शोध–सम्मेमन में भाग लिया तथा एक शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

२. डा० विनोद कुमार ने "विश्वविद्यालयों का कम्प्यूटरीकरण : एक भारतीय–कनैडियन परिदृश्य" विषय पर गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा फरवरी १५–१७, १९९३ में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

३. श्री अचल गोयल, प्रणाली विश्लेषक, ने रुड़की विश्वविद्यालय इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग विभाग द्वारा ८ जून से ११ जुलाई तक आयोजित "नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग फॉर टीचर्स/कम्प्यूटर्स प्रोफेशनल्स" पाठ्यक्रम में हिस्सा लिया।

४. श्री दिनेश कुमार बिश्नोई, सिस्टम मैनेजर ने "नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग" विषय पर सीडेक पूना द्वारा अप्रैल १९९२ में आयोजित एक सप्ताह के पाठ्यक्रम में भाग लिया।

५—व्याख्यान

डा० विनोद कुमार ने विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों तथा शिक्षकों को कम्प्यूटर सम्बन्धी विषयों पर व्याख्यान दिये ।

६— अन्य विभागों को सहयोग

कम्प्यूटर विभाग पूरे विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर क्षेत्र में जागरूकता लाने के लिये कटिबद्ध है। डा० विनोद कुमार ने गणित तथा श्री कर्मजोत भाटिया (प्रवक्ता, कम्प्यूटर) ने भौतिकी विभाग को कम्प्यूटर पर आधारित विषयों के स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने में अपना योगदान दिया।

७— कार्यशाला का आयोजन

श्री दिनेश कुमार बिश्नोई द्वारा "निरुक्त पर कम्प्यूटर के अनुप्रयोग" विषय पर फरवरी १९९२ में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके प्रवन्ध में विभाग के सभी सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया।

८— व्याख्यानों का आयोजन

जुलाई १९९२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समिति ने विभाग का निरीक्षण किया तथा इस दौरान वि० वि० अनु० आयोग के कम्प्यूटर सलाहकार प्रोफेसर एस०आर० ठाकरे ने "भारत में कम्प्यूटर का विकास" नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

९— कम्प्यूटरीय सुविधाओं में वृद्धि

१. हाल ही में विभाग में एक अत्याधुनिक कम्प्यूटर रु० २.५२ लाख की लागत से खरीदा गया जो विभागीय कार्यों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों तथा शोध छात्रों की शोध सम्वन्धो आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

२. कम्प्यूटरीय सुविधाओं को और आधुनिक तथा बेहतर बनाने के लिए विभाग को वि०वि० अनु० आयोग से लगभग २० लाख रुपये अनुदान प्राप्त होने की आशा है। इस सन्दर्भ में आयोग की कम्प्यूटर विकास समिति की दो बैठकें हो चुकी हैं जिसमें डा० विनोद कुमार ने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

१०— शोध छात्रों का पी-एच.डी. के लिए पंजीकरण

डा० विनोद कुमार के निर्देशन/सहनिर्देशन में निम्न छात्रों का पो-एच.डी. के लिये पंजीकरण हुआ :

नाम	शोध का विषय
१. प्रदीप कुमार यादव	A study of Mathematical Programming to task allocation and its applications in Distributed Processing System.
२. अरुण कुमार	Some Applications of queuing network Modelling and Analysis Techniques to performance Evaluation of Computer Systems.

११ – प्रशिक्षण पाठ्य-क्रमों का आयोजन

१. विभाग द्वारा एक अंशकालिक त्रिमासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का बैंक तथा विश्वविद्यालय कर्मचारियों के लिये आयोजन किया गया जिससे विश्व-विद्यालय को लगभग ४०,००० रुपये की आय हुई।

२. महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिये भी अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को आयोजित करने के लिये विभाग को रु० ६.४५ लाख के अनुदान की स्वीकृति वि०वि० अनु० से प्राप्त हो चुकी है तथा शीघ्र ही पाठ्यक्रम आरम्भ कर दिये जायेंगे।

३. बैंक व जीवन बीमा निगम के कर्मचारियों के लिये भी ऐसे ही पाठ्य-क्रम आरम्भ करने की विभाग की योजना है।

१२— विभागीय सदस्यों द्वारा पी-एच.डी. के लिए पंजीकरण

१. श्री दिनेश बिश्नोई का रुड़की विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर आर०सी० जोशी के निर्दे-शन में पंजीकरण हुआ।

२. श्री महेन्द्र असवाल (प्रवक्ता) का विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में डा० पी०पी० पाठक के निर्देशन में पी-एच.डी. के लिये पंजीकरण हुआ।

१३ — नये पाठ्य-क्रमों का समावेश

कम्प्यूटर विभाग "कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि (M. C. A.)" पाठ्य-क्रम आरम्भ करने के लिये प्रयासरत हैं। इसके लिये वि० वि० अनुदान आयोग को प्रस्ताव पहले ही भेजा जा चुका है। इस संदर्भ में आयोग में दो बैठकें हो चुकी हैं तथा इस प्रस्ताव के शीघ्र ही स्वीकृत होने की आशा है।

—*—

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८३ वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय वेद-वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्म संग्रह एवं मानवीय विज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रंथों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय बहुविध भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुये है। आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। उत्तर भारत में प्राच्यविद्याओं के साहित्यसंग्रह का यह प्रमुख आगार है।

वर्ष १९९१-९२ में लगभग २५,५०० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है। १– संदर्भ ग्रन्थ संग्रह, २– पत्रिका संग्रह, ३– आर्य साहित्य संग्रह, ४– आयुर्वेद संग्रह, ५– विभिन्न विषयों का हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६– विज्ञान संग्रह, ७– अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८– पं. इन्द्र जी संग्रह, ९– दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०– पाण्डुलिपि संग्रह, ११– गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२– प्रतियोगितात्मक संग्रह, १३– शोध प्रबन्ध संग्रह, १४– रूसी साहित्य संग्रह, १५– आरक्षित पाठ्य-पुस्तक संग्रह, १६– उर्दू संग्रह, १७– मराठी संग्रह, १८–गुजराती संग्रह, १९– गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०– मानचित्र संग्रह, २१– वेद-मंत्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :—

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आँशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन

कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था, जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में दो घण्टे प्रतिदिन कार्य के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है, जिससे वह अपनी शिक्षा का व्यय उठाने में स्वावलम्वी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ४ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :-

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने प्रतियोगितात्मक परीक्षा संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध २० पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इस समय संग्रह में लगभग ५०० पुस्तकें उपलब्ध हैं।

फोटोस्टेट सेवा :--

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों की सुविधा हेतु वर्ष १९८३-८४ से पुस्तकालय में फोटोस्टेट की सुविधा उपलब्ध है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का २८९१३.०० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया है। शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु वर्ष १९८८-८९ में मोदी जीराक्स मशीन भी पुस्तकालय द्वारा क्रय की गयी। प्रशासनिक कार्यों हेतु भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। गत वर्ष पुस्तकालय में फोटो-स्टेट सेवा को और अधिक गतिशील बनाये जाने हेतु नवीनतम मशीन वी.पी. एल.-एस.एफ.टी.-७० क्रय को गयी। इसके द्वारा रंगीन प्रतिलिपियाँ भी वन-वायी जा सकती हैं।

पुस्तकालय कार्यवृत्त पर एक नजर :

	वर्ष-१९९०-९१	९१-९२
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२४५००	२५०००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	५५९	४४४
३. नवीन क्रय की गयी पुस्तकों की संख्या	५३२	२३२३

४.	वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	३०४२	२६००
५.	सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	३२००	२७७५
६.	पत्रिकाओं की संख्या	४६१	४३८
७.	पत्रिकाओं की आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरण-पत्र	३५३	२१०
८.	सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७५०५	७६१७
९.	पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की सँख्या	५३	११२
१०.	पुस्तकों की जिल्दबन्दी	२८००	१२६९
११.	पुस्तकों का कुल संग्रह	१,०८,२००	१,०९,८७६
१२.	सदस्य संख्या	५७७	१०१५

प्रगति के आयाम :—

आलोच्य वर्ष में २ फरवरी १९९२ से १० फरवरी ९२ तक प्रगति मैदान नई दिल्ली में आयोजित पुस्तक मेले में सर्वप्रथम गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगायी गयी । पुस्तकप्रेमियों ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित ग्रंथों को रुचिपूर्वक देखा । उक्त प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय को लगभग ५००० रु० की आय प्राप्त हुई ।

२. विश्व पुस्तक मेले में विश्वविद्यालय हेतु विभिन्न विषयों की नवीनतम पुस्तकों के चयन हेतु प्राध्यापकों को उक्त मेले में भाग लिये जाने हेतु आमंत्रित किया गया । विश्वविद्यालय के विभिन्न विषयों से सम्बद्ध प्राध्यापकों द्वारा पुस्तकों का चयन कर आदेश दिये गये तथा पुस्तकालय द्वारा लगभग ५० हजार रु० की पुस्तकें उक्त पुस्तक मेले से क्रय की गयीं ।

३. गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के विभिन्न प्रकाशनों के विक्रय एवं वितरण का कार्य सुचारु रूप से चला । इन प्रकाशनों के विक्रय के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय को २२,४०० रु० की आय प्राप्त हुई ।

४. १३ अप्रैल १९९२ को श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के नवीनतम प्रकाशन "ऋतम्भरा" का लोकार्पण कार्यक्रम हुआ । इसका विमोचन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा किया गया। इस पुस्तक का प्रणयन डा० विष्णुदत्त राकेश, निदेशक, श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा किया गया।

५. विश्वविद्यालय में प्रारम्भ किये गये नये पाठ्यक्रमों हिन्दी पत्रकारिता, योग में डिप्लोमा, एम०एस-सी० भौतिकी एवं रसायन आदि विषयों की पुस्तकें क्रय किये जाने हेतु विशेष रूप से प्रयत्न किया गया। जिससे कि नये छात्र इनसे लाभ उठा सकें।

६. विश्वविद्यालय पुस्तकालय का आलोच्य वर्ष में जिन विशिष्ट अतिथियों ने अवलोकन किया, उनका विवरण निम्न प्रकार है।

	नाम	दिनाँक
१.	श्री कृष्णनारायण न्यायाधीश, उच्च न्यायालय इलाहाबाद।	२८-५-९१
२.	श्री एस० के० महापात्रा एडिशनल सेक्रेट्री, डिपार्टमैन्ट आफ कल्चर।	
३.	श्री बालेश्वर अग्रवाल नई दिल्ली।	७-१०-९१
४.	श्री मदनमोहन पूर्व कुलसचिव, दिल्ली विश्वविद्यालय	१२-१२-९१
५.	श्री दिलीप कसौटिया स्टेट फायर आफिसर, उ०प्र० शासन	१३-२-९२
६.	श्री टी०सी० ढ़ीगरा फील्ड पब्लिसिटी आफिसर, चण्डीगढ़	१६-२-९२
७.	वेदप्रकाश वैदिक, निदेशक, (भाषा)	२३-५-९२

(१९९२-९३)

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :—

पुस्तकालय का विराट् संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है। १— संदर्भ ग्रंथ संग्रह, २— पत्रिका संग्रह, ३— आर्य साहित्य संग्रह, ४— आयुर्वेद संग्रह, ५— विभिन्न विषयों का

हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६—विज्ञान संग्रह, ७—अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८—पं० इन्द्र जी संग्रह, ९—दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०—पाण्डुलिपि संग्रह, ११— गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२— प्रतियोगितात्मक संग्रह, १३— शोध प्रबन्ध संग्रह, १४— रूसी साहित्य संग्रह, १५— आरक्षित पाठ्य-पुस्तक संग्रह, १६— उर्दू संग्रह, १७— मराठी संग्रह, १८ — गुजराती संग्रह, १९— गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०— मानचित्र संग्रह, २१— वेद मन्त्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :—

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ वि० पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था, जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तका-लय में प्रतिदिन दो घण्टे कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है, जिससे वह अपनी शिक्षा का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना में ६ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :—

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने प्रतियोगितात्मक परीक्षा संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १५ पत्रिकायें नियमित आ रही हैं। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र उक्त प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इस समय संग्रह में लगभग ६०० पुस्तकें उपलब्ध हैं।

फोटोस्टेट सेवा :—

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्रों की सुविधा हेतु वर्ष १९८३-८४ से पुस्तकालय में फोटोस्टेट की सुविधा उपलब्ध है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का २०६७७.५० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। आलोच्य वर्ष में १० पुस्तकें फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित की गयीं। ये पुस्तकें दुर्लभ एवं अप्राप्य कोटि की हैं, जिन्हें सुरक्षित किये जाने

से पुस्तकालय की एक बहुमूल्य सम्पदा का संरक्षण हो सका। अन्य विश्व-विद्यालय के शोध छात्रों को भी पुस्तकालय की शोध सामग्री फोटोस्टेट करा कर उन्हें उनके शिक्षण संस्थान में उपलब्ध कराई गयी।

पुस्तकालय कार्यवृत्त पर एक नजर :—

	वर्ष १९९१–९२	वर्ष १९९२–९३
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२५०००	२६०००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	४४४	४५०
३. नवीन क्रय की गयी पुस्तकों की संख्या	२३२३	१९५०
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	२९००	३०००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	२७७५	२८००
६. पत्रिकाओं की संख्या	४३८	२६०
७. पत्रिकाओं की आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरण-पत्र	२१०	१९५
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	७६१७	७८१३
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	११२	१९६
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	१२६९	९२८
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	१,०९,८७६	१,११,२७६
१२. सदस्य संख्या	१,०१५	१,१७१

सदस्यता :—

पुस्तकालय का सक्रिय रूप से लाभ उठाने वाले सदस्यों की संख्या में गत दो वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। १९९०-९१ में सदस्यों की संख्या जहाँ ५७७ थी वहाँ वर्ष १९९१-९२ एवं १९९२-९३ में पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या क्रमशः १०१५ तथा ११७१ हो गई। विश्वविद्यालय पुस्तकालय में कन्या महाविद्यालय देहरादून की प्राध्यापिकाओं को सदस्य बनाने की जहाँ सुविधा प्रदान की वहाँ आलोच्य वर्ष में छात्राओं को भी पुस्तकालय का सदस्य बनाया गया।

पुस्तकालय खुलने का समय :—

शैक्षणिक सत्र में पुस्तकालय खुलने का समय नौ बजे प्रातः से पांच बजे सायं तक रहता है। सत्रावसन/ग्रीष्मावकाश में पुस्तकालय पाठकों हेतु प्रातः ७ बजे से दोपहर १.३० बजे तक खुला रहता है। पुस्तकालय का सन्दर्भ-विभाग, सजिल्द पत्रिका विभाग तथा मानविकी विभाग (अंग्रेजो संग्रह) ऑपन एसेस के रूप में सभो पाठकों हेतु उपलब्ध है। हिन्दी, संस्कृत एवं विज्ञान पुस्तक संग्रह से छात्रों को उनकी माँग के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं। आलोच्य वर्ष १९९२–९३ में २०,००० पाठकों ने पुस्तकालय की प्रचुर पाठ्य सामग्री का अवलोकन किया।

संदर्भ संग्रह :—

पुस्तकालय का शोध एवं संदर्भ संग्रह समृद्ध है जिसमें विभिन्न विषयों से सम्बद्ध बहुमूल्य एवं दुर्लभ संदर्भ कोष है। विश्वकोष, वार्षिकी, हैण्डबुक, एडवान्सेज, डिक्सनरीज, गजेटियर, एटलस, शब्दकोष आदि संदर्भ ग्रन्थों से यह संग्रह पूर्ण रूप से अलंकृत है। इसके अतिरिक्त इस संग्रह में एक ही लेखकों के सभी प्रकाशन भी एक शृंखलाबद्ध रूप से उपलब्ध हैं। उक्त संग्रह में सम्पूर्ण विवेकानन्द संग्रह, गांधी वाङ्मय, नेहरू वाङ्मय, अरविन्द साहित्य, टैगोर साहित्य, प्रेमचन्द ग्रन्थावली, पन्त ग्रन्थावली एवं सभी प्रसिद्ध लेखकों की ग्रन्थावलियाँ उपलब्ध हैं।

प्रगति के आयाम :-

आलोच्य वर्ष में विभिन्न विषयों से सम्बद्ध २६० पत्रिकायें मंगवाई जाने की व्यवस्था की गयी तथा इस पर १,००,०००/– रुपये व्यय किये गये।

२. सत्र १९९२–९३ में १,७८,१६८.०१ रुपये को विभिन्न विषयों की १९५० पुस्तकें क्रय की गयीं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालय को विभिन्न संस्थानों तथा शिक्षा मन्त्रालय द्वारा ४५० से भी अधिक पुस्तकें भेंटस्वरूप प्राप्त हुईं।

३. गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय को श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के प्रकाशनों से १३,२७४.०० रुपये की आय प्राप्त हुई।

४. १३ अप्रैल १९९२ को श्रद्धानन्द अनु० प्र० केन्द्र के नवीनतम प्रकाशन "श्रुतिपर्णा" का लोकार्पण कार्यक्रम हुआ । इसका विमोचन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा किया गया । इस पुस्तक का प्रणयन डा० विष्णुदत्त राकेश, निदेशक, श्रद्धानन्द अनु० प्र० केन्द्र द्वारा किया गया।

५. विश्वविद्यालय में प्रारम्भ किये गये नये पाठ्यक्रमों हिन्दी पत्रकारिता, योग में डिप्लोमा, एम०एस-सी० भौतिकी एवं रसायन आदि विषयों की पुस्तकें क्रय किये जाने हेतु विशेष रूप से प्रयत्न किया गया जिससे कि नये छात्र इनसे लाभ उठा सकें ।

६. उत्तर प्रदेश शासन द्वारा स्वीकृत १२,०००,००.०० रुपये की लागत से पुस्तकालय का नवीन भवन तैयार हो चुका है। शीघ्र ही इसमें पुस्तकालय के शोध एवम् सन्दर्भ संग्रह को स्थानान्तरित कर दिया जायेगा । उक्त शोध संदर्भ पुस्तकालय से शोध छात्र लाभान्वित होंगे।

७. विश्वविद्यालय द्वारा सभी शोध प्रबन्धों के सार को शोध रूप में प्रकाशित किया गया है, जिसमें विश्वविद्यालय के स्नातकों एवम् प्राध्यापकों द्वारा किये गये शोध कार्य का सार प्रकाशित किया गया है ।

८. पुस्तकालय द्वारा वैदिक साहित्य, आर्य साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की एक वृहत सूची तैयार की गयी है । जिसमें पुस्तकालय में उपलब्ध ८,००० ग्रन्थों को शामिल किया गया है। श्रद्धानन्द अनु० प्र० केन्द्र द्वारा प्रकाशित "क्लासिकल राईटिंग्स ऑन वैदिक एण्ड संस्कृत लिटरेचर" ग्रन्थ पाठकों को पुस्तकालय में उपलब्ध ग्रन्थों की जानकारी हेतु सहायक सिद्ध होगा । पुस्तकालय द्वारा अंग्रेजी से सम्बद्ध पुस्तकों की पृथक बिबलोग्राफी तैयार किये जाने का कार्य प्रारम्भ किया गया है। पाठकों के सन्दर्भ हेतु निकट भविष्य में विभिन्न विषयों के संग्रह की सूची पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किये जाने पर भी तीव्र गति से प्रयास किया जा रहा है ।

९. हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पुस्तकालय को कम्प्यूटरीकृत किये जाने हेतु २,००,०००/– रुपये का अनुदान स्वीकृत

किया जा चुका है। निकट भविष्य में पुस्तकालय के एक भाग के संग्रह को कम्प्यूटरीकृत कर दिया जायेगा। प्राच्य विद्याओं की पुस्तकों का डाटा बैंक भी तैयार हो सकेगा।

१०. पुस्तकालय द्वारा अन्तर्पुस्तकालय ऋण आधार पर पुस्तकें आदान-प्रदान का कार्य इस वर्ष भी जारी रहा। इसके अन्तर्गत अनेक संस्थानों से पुस्तकालय के अन्तर्-सम्बन्ध स्थापित किये गये। इस सन्दर्भ में संसद भवन पुस्तकालय का नाम उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता से भी कुछ पुस्तकें मंगाई गईं।

११. विश्वविद्यालय पुस्तकालय का लाभ उठाने हेतु प्रतिदिन अनेक विश्वविद्यालयों के शोध छात्र यहाँ आते हैं। दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं देश के अन्य विश्वविद्यालयों के शोध छात्रों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग किया गया तथा अनेक विदेशी पाठक भी यहाँ आकर इसका लाभ उठा रहे हैं।

—

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन.सी.सी.)

उपक्रम–१/३१ यू०पी० कम्पनी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (९१–९२)

विश्वविद्यालय में एन.सी.सी. मुख्यालय द्वारा मात्र ५२ छात्र कैडट्स के प्रशिक्षण की क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के लिये स्वीकृति प्राप्त है। पूर्व की भांति इस सत्र में भी १/३१ यू०पी० एन.सी.सी. कम्पनी, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से श्रेष्ठ छात्रों का कैडट्स के रूप में बटालियन मुख्यालय के कमान अधिकारी ले. कर्नल एस० के० पाल एवं कम्पनी कमाण्डर II लेफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा द्वारा चयन कर तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया। उपर्युक्त पंजीकरण के पश्चात् ही विश्वविद्यालय के छात्र देशभर में सबसे बड़े सैन्य संगठन के साथ जुड़ते हैं।

सम्पूर्ण सत्र में उक्त कैडट्स को एन.सी.सी. बटालियन मुख्यालय के कमान अधिकारी ले० कर्नल एस० के० पाल, प्रशासनिक अधिकारी मेजर ग्रीनवुड, एवं कम्पनी कमाण्डर लैफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा के निर्देशन में भारतीय सेना के जूनियर कमीशन अफसरों एवं हवलदारों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर तथा बी. एच. ई. एल. के परेड मैदान में उत्तम प्रशिक्षण दिया गया।

प्रत्येक वर्ष एन.सी.सी. मुख्यालय भारत–सरकार के निर्देश पर बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में यह नवम्बर में रायपुर (देहरादून) में आयोजित किया गया। इस शिविर में वि०व० के २५ कैडट्स ने कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा के नेतृत्व में भाग लिया। जिसमें कैडट्स ने परिश्रम एवं समर्पण की भावना का परिचय देते हुये शिविर में गहन प्रशिक्षण लिया।

एन. सी. सी. के क्रमशः दो तथा तीन वर्ष के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

को पूर्ण कर लेने के उपरान्त कैडट्स को 'बी' तथा 'सी' प्रमाण-पत्र में सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान की जाती है। दोनों प्रमाण-पत्रों में विश्वविद्यालय के कैडट्स के उत्तीर्ण होने का प्रतिशत क्रमश: ८० प्रतिशत एवं ८५ प्रतिशत रहा।

स्वाधीनता दिवस १५ अगस्त ९१ के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय श्रीयुत सुभाष विद्यालंकार ने ध्वजारोहण किया तत्पश्चात् विश्वविद्यालय के कैडट्स को परेड सलामी ली एवं निरीक्षण किया। २६ जनवरी ९२ गणतन्त्र दिवस के अवसर पर उपर्युक्त कार्यक्रम के अतिरिक्त वर्ष ९०-९१ में 'बी' तथा 'सी' प्रमाण-पत्रों में उत्तीर्ण कैडट्स को कुलपति जी द्वारा प्रमाण-पत्र भी वितरित किये गये।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के कम्पनी कमाण्डर डा० राकेश शर्मा को अक्टूबर ९१ में एक माह के प्रशिक्षण के लिये अफसर ट्रेनिंग स्कूल कामठी (नागपुर) भेजा गया। तदुपरान्त डा० राकेश शर्मा को रक्षा मन्त्रालय भारत-सरकार द्वारा लैफ्टिनैन्ट पद पर पदोन्नत किया गया। इसका विवरण भारत सरकार द्वारा प्रकाशित गजट में भी किया गया है।

(१९९२-९३)

एन. सी. सी. मुख्यालय द्वारा विश्वविद्यालय को मात्र ५२ छात्र कैडट्स के प्रशिक्षण की जो यह संख्या स्वीकृत है, यह आज के सन्दर्भ में अत्यधिक कम महसूस की जा रही है। जिसका कारण विभाग में गहन प्रशिक्षण, उत्तीर्ण होने वाले छात्र कैडट्स का उत्तम प्रतिशत एवं पिछले कुछ वर्षों से स्नातक पाठ्यक्रम का तीन वर्ष का हो जाना है। इस दिशा में बटालियन मुख्यालय को लिखित तथा मौखिक दोनों रूपों में आग्रह किया गया है कि वे इस संख्या को कम से कम दुगना अवश्य कर दें। अभी यह प्रयास चल ही रहा है। इस संदर्भ में गुरुकुल इण्टर कालेज में भी विश्वविद्यालय के छात्रों का पंजीकरण किया गया। विश्वविद्यालय के ५२ छात्र कैडट्स का इस सत्र में भी १/३१ यू०पी० एन.सी.सी. कम्पनी, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से छात्रों के आये आवेदन पर, बटालियन मुख्यालय के कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी, विश्व-विद्यालय के कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा द्वारा चयन कर तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया।

गत वर्षों की भांति इस सत्र में उपर्युक्त चयनित छात्र कैडट्स को ३१-यू०पी० एन. सी.सी. बटालियन के कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी, प्रशासनिक अधिकारी मेजर ग्रीनवुड एवं कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा के निर्देशन में भारतीय सेना के जूनियर अफसरों एवं हवलदारों द्वारा गहन प्रषिक्षण दिया गया ।

रक्षा मन्त्रालय भारत- सरकार के निर्देश के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष एन. सी. सी. मुख्यालय द्वारा एन.सी.सी. बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में अत्यन्त हर्ष की बात रही कि गुरुकुल कांगड़ी (पुण्य भूमि) में यह वार्षिक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। उक्त शिविर में विश्वविद्यालय के कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनैन्ट डा० राकेश शर्मा के नेतृत्व में २५ छात्र कैडट्स ने भाग लिया । इस वर्ष अपने पुराने परिसर में शिविर लगाने के कारण विश्वविद्यालय का भी इसमें विशेष सहयोग रहा तथा कैडट्स में भी इस कारण अतिरिक्त उत्साह का संचार हुआ। उन्होंने पूर्ण उत्साह एवं लगन की भावना से इस प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उक्त शिविर में वि० वि० के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार एवं ग्रुप कमाण्डर कर्नल कुलदीप सिंह ने भी कैडट्स के उत्साह एवं परिश्रम की सराहना की।

इस सत्र में अपेक्षाकृत उत्साही कमान अधिकारी के कमान संभालने के कारण कुछ अधिक उत्साह का माहौल रहा। ४ सितम्बर को बटालियन मुख्यालय परिसर के आस-पास नहर पर विराट वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के कैडट्स ने परिश्रम से इस कार्य को निभाया। साथ ही इस वर्ष वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में प्राचीन परिसर (पुण्य भूमि) भूमि कटने से उक्त भवन को जो हानि हो सकती थी, उसके रोक-थाम के लिये भारी मात्रा में पत्थरों को भूमि के साथ–साथ लगाया गया जिसके द्वारा पानी के बहाव को दूर रखने में मदद मिल सके। इस कार्य में विश्वविद्यालय के कैडट्स की उल्लेखनीय भूमिका रही।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय के कैडट्स का 'बी' एवं 'सी' प्रमाण–पत्रों में उत्तीर्ण होने का प्रतिशत अत्यन्त उत्साहवर्धक क्रमशः ८० प्रतिशत एवं ८५ प्रतिशत रहा । उक्त प्रमाण–पत्रों के लिये क्रमशः 'बी'

के लिये दो वर्ष तथा 'सी' के लिये तीन वर्षों का प्रशिक्षण आवश्यक है ।

१५ अगस्त ६२ स्वाधीनता दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया । २६ जनवरी ६३ गणतन्त्र दिवस के अवसर पर मान्य कुलपति जी ने ध्वजारोहण के पश्चात् एन.सी.सी. परेड सलामी ली तथा परेड निरीक्षण करने के उपरान्त 'बी' तथा 'सी' प्रमाण–पत्रों की परीक्षा में उत्तीर्ण कैडट्स को प्रमाण–पत्र वितरित किये ।

———

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग

(१९९१-९२)

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग द्वारा सत्र १९९१-९२ में क्षेत्रीय विकास उपागम के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किये गये :

१. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र	४२
२. जनशिक्षण निलयम	३
३. सतत शिक्षा पाठ्यक्रम	३
४. जन-संख्या कलब	१
५. कार्यात्मक साक्षरता जन-अभियान	

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग के विस्तार हेतु स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम तैयार किया गया, शिक्षा पटल के सदस्य मनोनीत किये गये, जिससे कि सत्र १९९२-९३ के लिए स्वीकृत कर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा सके। विभाग का अन्य विवरण इस प्रकार है :

१. वर्ष १९९१-९२ में ४५ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये, जिनमें से ४२ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का सफल संचालन किया गया। इन केन्द्रों पर कुल ७२८ लोगों को साक्षर किया गया जिनमें महिलाओं की संख्या ३४४ तथा पुरुषों की संख्या ३८४ है।

२. तीन जन-शिक्षण निलयमों का संचालन किया गया, जो क्रमशः जगजीतपुर, वहादरपुर जट्ट तथा काँगड़ी ग्रामों में स्थापित थे। इन पर वर्ष में शैक्षिक, खेल-कूद, मनोरंजन एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी गतिविधियाँ आयोजित की गयीं।

३. कार्यात्मक साक्षरता जन अभियान के अन्तर्गत १२७ स्वयंसेवी छात्रों ने भाग लिया जिन्होंने अपने प्रयास से १९० लोगों को साक्षर किया।

४. सतत शिक्षा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत ३ पाठ्यक्रम संचालित किये गये, जो क्रमशः

i) धूम्ररहित चूल्हा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम — लोधामण्डी, हरिद्वार।

ii) हैण्ड पम्प रिपेयर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम — ग्राम श्यामपुर, हरिद्वार।

iii) फल संरक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम — खन्ना नगर, हरिद्वार।

इन पाठ्यक्रमों में लाभार्थियों की संख्या ४७ है, जिनमें १४ पुरुष तथा ३३ महिलायें हैं।

५. प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस ८ सितम्बर १९९१ के उपलक्ष्य में एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत निम्न कार्यक्रम किये गये :

क) साक्षरता से सम्बन्धित पम्पलेट ग्रामों में बाँटे गये और दीवारों पर चिपकाये गये।

ख) विश्वविद्यालय के समीपीय ग्रामों की दीवारों पर गेरु द्वारा साक्षरता सम्बन्धी नारे लिखे गये।

ग) प्रौढ़ शिक्षाकर्मियों द्वारा प्रभात फेरियाँ आयोजित की गयीं।

घ) जन-शिक्षण निलयमों–जगजीतपुर, बहादरपुर जट्ट तथा काँगड़ी में ८ सितम्बर १९९१ को अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया गया।

ङ) अन्य कार्यक्रम—खेलकूद प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जनसंख्या शिक्षा तथा पर्यावरण पर लेख प्रतियोगिता आदि।

६. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र द्वारा भेजी गयी प्रश्नावली का प्रश्नोत्तर तैयार करके भेजा गया।

संगोष्ठियों में भागीदारी :

१. डा० नारायण शर्मा

क) दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित एकदिवसीय गोष्ठी "साक्षरता और नारी विकास" में १० मई १९९१ को भाग लिया।

ख) साक्षरता सप्ताह १९९१ की प्रतियोगिता समारोहों की अध्यक्षता की एवं सफल निर्देशन किया।

२. डा० जे०एस० मलिक

क) राज्य सन्दर्भ केन्द्र, साक्षरता निकेतन लखनऊ द्वारा आयोजित क्षेत्रबद्ध, समयबद्ध कार्ययोजना निर्माण कार्यशाला में २४-६-६१ से २७-६-६१ तक भाग लिया।

ख) दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित "Institution of Service Area in Population Education" दो दिवसीय संगोष्ठी में १३-१-६१ से १४-११-६१ तक भाग लिया।

ग) भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली द्वारा आयोजित "Orientation Course For Key level Functionaries" में २-१२-६१ से ७-१२-६१ तक भाग लिया तथा सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

घ) U.G.C. National Level Study on activities Under Adult, Continuing Education & Extension Departments in University System for the period 1978 to 1988 and thereafter". पटना विश्वविद्यालय, पटना (बिहार) द्वारा आयोजित संगोष्ठी में २६-१२-६१ से ३१-१२-६१ तक भाग लिया।

ङ) प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस में परियोजना अधिकारी रिफ्रेशर कोर्स ७-१-६२ से १३-१-६२ तक पूर्ण किया।

(१६६२-६३)

प्रौढ़ सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग द्वारा क्षेत्रीय विकास, उपागम के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, जन–शिक्षण निलयम, कार्यात्मक साक्षरता जन–अभियान एवं सतत शिक्षा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पत्रांक D.O.F.1–1/92 (NFE–I), दिनांक २८ मई, १६६२ के आदेशानुसार ३० जून, १६६२ को बन्द कर दिया गया। क्षेत्रीय विकास उपागम के अन्तर्गत ही संचालित जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम को सत्र १६६२–६३ में भी संचालित किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नवीन निर्देशानुसार सत्र १६६२–६३, ६३–६४ एवं ६४–६५ हेतु प्रस्ताव सितम्बर, १६६२ को जमा किया गया। आयोग द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार किया गया। आयोग के पत्रांक : F–5–10/92 (NFE–I) दिनांक ६ मार्च, १६६३ के अनुसार

विभाग को २ लाख रुपये का अनुदान सत्र १९९२–९३ हेतु स्वीकृत किया गया। विभाग को यह पत्र २५ मार्च, १९९३ को प्राप्त हुआ। अतः सत्र १९९२–९३ में कार्यक्रम प्रारम्भ करना संभव नहीं था। इस आशय का एक पत्र लिखकर उक्त राशि सत्र १९९३–९४ में व्यय करने को अनुमति आयोग से मांगी। आयोग ने यह स्वीकृति पत्रांक F–5–10/92 (NFE–I) दिनांक २८ मई, १९९३ के माध्‍ यम से प्रदान की।

सत्र १९९२-९३ में आयोजित कार्यक्रम :

१. जून ३०, १९९२ तक तोन जन--शिक्षण निलयम संचालित किये गये।

२. जून ३०, १९९२ तक कार्यात्मक साक्षरता जन अभियान कार्यक्रम संचालित किया गया।

३. अलंकार (बी०ए०) प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष हेतु पाठ्यक्रम तैयार किया गया एवं बोर्ड ऑफ स्टडीज द्वारा दिनांक २४ जून, १९९२ की बैठक में स्वीकृत किया गया। इस बैठक में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के निदेशक प्रो० एम०बी० मेनन एवं हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो० के०वी० वुधौड़ी विशेषज्ञ के रूप में तथा प्रो० ओ०पी० मिश्र तत्कालीन संकायाध्यक्ष, मानविकी ने स्पेशल इन्वाइटी के रूप में भाग लिया।

४. सुदूर शिक्षा संस्थान स्थापित करने हेतु प्रस्ताव तैयार कर दिनांक ३ जुलाई, १९९२ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई–दिल्ली में जमा किया गया।

५. अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस ८ सितम्बर, १९९२ को एक समूह चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें छात्र, अध्यापक एवं समाजसेवियों ने भाग लिया।

६. अनौपचारिक शिक्षा संकाय गठन हेतु प्रस्ताव तैयार कर दिनांक ३१ अक्टूबर १९९२ को कार्यपरिषद् में रखा गया। कार्य परिषद् ने पृथक सुदूर शिक्षा संकाय गठन करने का प्रस्ताव पास किया।

७. सुदूर शिक्षा संकाय गठन हेतु प्रस्ताव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली को १ जनवरी, १९९३ को प्रेषित किया गया जिसमें २ कन्वेन्शनल एवं १३ प्रोफेशनल कोर्सों की स्वीकृति मांगी गयी। इस

प्रस्ताव के तारतम्य में बी०एड० हेतु प्रस्ताव आयोग को प्रेषित किया गया है। इस विषय में पत्राचार जारी है।

८. जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन २७ फरवरी, १९९३ को किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्र–छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रमाण--पत्रों के साथ पारितोषिक भी वितरित किये गये।

९. जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले समस्त छात्रों को प्रमाण-पत्र एवं प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वालों को पारितोषिक भी वितरित किये गये।

१०. जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत एक दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन मार्च, १९, २०, १९९२ को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

११. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के सौजन्य से एक ६ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनाँक २२-२७ मार्च, १९९३ तक किया गया। इस कार्यशाला में चार राज्यों—उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश एवं दिल्ली की प्राथमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का विश्लेषण किया गया। यह कार्यशाला विभागाध्यक्ष डा० आर०डी० शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

विभागीय अधिकारियों के कार्य-कलाप

डा० आर०डी० शर्मा

विभागाध्यक्ष डा० आर०डी० शर्मा ने निम्नलिखित संगोष्ठी/कार्य-शाला/सम्मेलन में भाग लिया।

१. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के सौजन्य से आयोजित गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार में जून १७—२४, १९९२ तक एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में सुदूर शिक्षा सम्बन्धी साहित्य का सृजन किया गया।

२. भारतीय सामुदायिक शिक्षा समाज द्वारा आयोजित छठवें सम्मेलन में जो कि सितम्बर ११–१३, १९९२ तक चन्द्रापुर (महाराष्ट्र) में आयोजित किया गया, सक्रिय रूप से भाग लिया एवं शोध-पत्र :

दी कॉम्लेक्स नेचर ऑफ अडल्ट लर्निंग प्रस्तुत किया।

३. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित दस-दिवसीय संगोष्ठी में दिनाँक २१–३० दिसम्बर, १९९२ तक भाग लिया। इस संगोष्ठी में सुदूर शिक्षा सम्बन्धी साहित्य का सृजन किया गया।

४. प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा में जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी संगोष्ठी में ४ जनवरी, १९९३ को भाग लिया एवं व्याख्यान दिया।

५. प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी इन्टिग्रेटिड पोपूलेशन एजूकेशन विद लिटरेसी कम्पेन, दिनांक १९, २० मार्च, १९९३ में भाग लिया एवं शोध-पत्र पापूलेशन एण्ड लिटरेसी प्रस्तुत किया एवं संगोष्ठी में निदेशक के रूप में कार्य किया।

६. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई–दिल्ली के सौजन्य से प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में एक ६ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक २२-२७ मार्च, १९९३ में हुआ। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश एवं दिल्ली की प्राथमिक स्तर की पाठ्य–पुस्तकों का विश्लेषण किया गया। इस कार्यशाला में ऑनरेरी डाइरेक्टर के रूप में कार्य किया।

प्रकाशित लेख

१. पोपूलेशन एजूकेशन फॉर आउट ऑफ स्कूल यूथ एण्ड अडल्ट, प्रोग्रेस ऑफ एजूकेशन, वोल्यूम-1, XVIII, संख्या-१, सितम्बर, १९९२।

२. पोपूलेशन इन हायर एजूकेशन, यूनिवर्सिटी न्यूज, फरवरी १५, १९९३।

विश्वविद्यालय छात्रावास

गत वर्षों की भाँति वर्ष १९९१-९३ में भी विश्वविद्यालय छात्रावास में प्राच्य विद्या, मानविकी, विज्ञान एवं जीवविज्ञान संकायों के छात्रों के लिए आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। सीमित छात्रों की व्यवस्था होने के कारण अन्य छात्रों को शहर में रहना पड़ता है। प्रयास चल रहा है कि पी०ए०सी० के द्वारा प्रयुक्त हो रहे छात्रावास को खाली कराकर उसे अपने छात्रों की व्यवस्था हेतु उपलब्ध कराया जाए। भोजनालय की व्यवस्था न होने के कारण छात्रों को काफी असुविधा होती है।

स्नानागार का पुर्ननिर्माण कार्य, शौचालयों की व्यवस्था कराने के बाद भी निम्नलिखित कार्य होने शेष हैं :—

१. चारदीवारी

२. भोजनालय निर्माण

३. सौंदर्यीकरण

४. कमरों का निर्माण

व्यवस्था में सहयोग हेतु डा० भारतभूषण विद्यालंकार का सहयोग साभार प्राप्त हुआ।

——

शारीरिक शिक्षा विभाग

(१९९१-९२)

विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत सत्र ९१-९२ में बास्केटवाल का शुभारम्भ किया गया। वि०वि० की टीम ने उत्तर प्रदेश अन्तर वि०वि० प्रतियोगिता में—इलाहाबाद में भाग लिया तथा इस टीम को चतुर्थ स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रतियोगिया में १४ विश्वविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया था।

इस वर्ष मे अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामिन्ट का भी भव्य स्तर पर आयोजन किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों से २४ टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामिन्ट की विजेता टीम वी०ई०जी० रुड़की तथा दूसरा स्थान जालन्धर की टीम ने प्राप्त किया। यह टूर्नामिन्ट ५ दिनों तक चला तथा पुराने दिनों की याद ताजा की। यह टूर्नामिन्ट सभी लोगों को बड़ा आनन्द-दायी लगा। लगातार पाँच दिनों तक पंचपुरी के हाकीप्रेमियों का इस टूर्नामिन्ट को देखने के लिए ताँता लगा रहा। हरिद्वार के विशिष्ट लोगों से सभी टीमों का परिचय कराया गया। स्पोर्ट्स काऊन्सिल ने भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस वर्ष ए०आई०यू० ने भी गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को नॉर्थ जॉन बैडमिन्टन महिला तथा पुरुषों का दायित्त्व सौंपा। इस दायित्त्व का भी वि०वि० के शारीरिक शिक्षा विभाग ने उत्साहपूर्वक निर्वाह किया तथा बगैर किसी व्यवधान के इन दोनों प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन वी० एच० ई० एल० खेल भवन में किया। इस प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में २८ टीमें तथा महिला वर्ग में १८ टीमों ने भाग लिया। पुरुष तथा महिला दोनों वर्गों में दिल्ली विश्वविद्यालय की टीमें विजेता रहीं। इस प्रतियोगिता की १७ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक निर्विघ्न समाप्त होने की सभी ने सराहना की।

इस वर्ष पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक टीमों ने उ०प्र० अन्तर वि.वि. तथा नॉर्थ जॉन अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया जो इस प्रकार हैं—हॉकी, बास्केटवॉल, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, बैडमिन्टन, टेबिल टेनिस।

इस वर्ष ग्रीष्म कोचिंग कैम्प का भी आयोजन किया गया तथा ये कैम्प बी०एच०ई०एल० के तरणताल तथा बी०एच०ई०एल० खेल भवन की वेट लिफ्टिंग व्यायामशाला में किये गए जिसमें भाग लेकर विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने लाभ उठाया।

(१९९२-९३)

वर्ष ९२-९३ में वि०वि० विभाग की टीम ने अखिल भारतीय वेट लिफ्टिंग तथा शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में भाग लिया। इस वर्ष विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय वेट लिफ्टिंग तथा शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता का आयोजन करने का गौरव प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता का आयोजन १५ जनवरी से १९ जनवरी १९९२ तक किया गया। इसका आयोजन वि० वि० भवन में किया गया। इस प्रतियोगिता में पूरे भारत से ५७ वि०वि० की टीमों ने भाग लिया। पूरे पाँच दिनों तक सिंह द्वार से वि० वि० भवन तक खेलप्रेमियों का ताँता लगा रहा। वेट लिफ्टिंग प्रतियोगिता प्रातःकाल ७.०० बजे से लेकर सायं ६.०० बजे तक रोजाना चली, तथा शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता सायं ७.०० बजे से ९.०० बजे तक रोजाना चली। इस प्रतियोगिता में वेट लिफ्टिंग ट्राफी गुरुनानक देव वि०वि० अमृतसर ने उठाई तथा शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में मणिपुर वि०वि० के श्री अशोक सिंह ६५ किलोग्राम वर्ग ने अन्तर वि०वि० श्री का खिताब लिया। उनका प्रदर्शन बहुत ही सराहनीय रहा। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० के श्री राजीव मोहन ने शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता में चतुर्थ स्थान प्राप्त करके वि०वि० का नाम रोशन किया।

यह प्रतियोगिता पहले भी वि०वि० को आयोजित करने के लिये दी गयी। मगर किन्हीं कारणों से उस समय इस प्रतियोगिता का आयोजन नहीं किया जा सका।

इस प्रतियोगिता में वेट लिफ्टिंग की ओवर ऑल पोजीशन इस प्रकार रही ——

गुरुनानक देव वि०वि० अमृतसर – ४१ अंक लेकर प्रथम स्थान पर

मेरठ वि०वि० मेरठ — १२ अंक लेकर द्वितीय स्थान पर

नागार्जुन वि०वि० — तृतीय स्थान पर

इस वर्ष भी वि०वि० की फुटबाल, हॉकी, बैडमिन्टन, टेबिल टेनिस, कबड्डी, बास्केटबाल तथा क्रिकेट की टीमों ने उत्तर प्रदेश अन्तर वि.वि. तथा नार्थ जोन अन्तर वि०वि० की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया तथा गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० का नाम याद कराया ।

——

राष्ट्रीय सेवा योजना

(१९९१-९२)

राष्ट्रीय सेवा योजना में समाजसेवा के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है। साथ ही सिद्धान्त वाक्य "मुझको नहीं तुझको" द्वारा वैदिक सभ्यता के ढंग से जीवनयापन करने की आवश्यकता का समर्थन करता है।

डा० ए० के० चोपड़ा ने कार्यक्रम समन्वयक का कार्यभार मार्च ९२ को प्रो. जयदेव जी वेदालंकार से ग्रहण किया।

सत्र १९९१-९२ में छात्रों ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हेतु डा० दिनेश भट्ट, प्रोग्राम ऑफीसर रा०से०यो० के नेतृत्व में अनेकानेक कार्य किये। कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

(१) जनपद उत्तरकाशी में भूकम्प राहत कार्य २६ अक्टूबर से ४ नवम्बर ९१ तक किया गया।

(२) १९ नवम्बर १९९१ को मातृ दिवस के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियो-गिता का आयोजन किया गया।

(३) "प्रकृति एवं वन सुरक्षा दिवस" के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन।

(४) एड्स दिवस के अवसर पर व्याख्यान एवं परिचर्चा।

(५) विवेकानन्द जयन्ती का आयोजन।

(६) १७ फरवरी, १५ मार्च व १८ अप्रैल ९२ को सराय ग्राम में कैम्प का आयोजन।

गतिविधियाँ :-

(i) टीकाकरण शिविर — १०८ शिशु

(ii) स्वास्थ्य जांच — १५५ रोगी

(iii) ब्लड ग्रुप टेस्ट — ६२ ग्रामीण

इस कार्यक्रम में ज्वालापुर के मेडिकल स्टाफ की सहायता ली गयी। छात्रों के प्रयास से जिला हरिद्वार के कई वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा ग्रामीणों की समस्याओं के निराकरण की बात।

(७) जन-साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत ६२ निरक्षरों को साक्षर बनाया गया।

(८) १५ नवम्बर १९९२ को ग्राम लोधामण्डी में की गयी गतिविधियाँ :

१. पर्यावरण संवर्धन

२. वृक्षारोपण

३. स्वास्थ्य शिविर — १८८ ग्रामीणों की स्वास्थ्य जाँच

(९) "भारत जनविज्ञान जत्था" के अन्तर्गत जनजागृति के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।

(१०) ग्राम सराय एवं लोधामण्डी के निवासियों का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण तथा विकास योजनाओं की जानकारी।

(१९९२--९३)

डा० डी०आर० खन्ना ने प्रोग्राम ऑफीसर का कार्यभार दिसम्बर १९९२ को डा० दिनेश भट्ट से ग्रहण किया।

सत्र १९९२–९३ में छात्रों ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हेतु डा० डी०आर० खन्ना, प्रोग्राम ऑफीसर रा०से०यो० के नेतृत्व में अनेकानेक कार्य किए। कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

(१) सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन विषय पर वाद–विवाद प्रति–योगिता।

(२) ग्राम लोधामण्डी में तीन एक-दिवसीय शिविर लगाये जिनमें सफाई एवं वृक्षारोपण का कार्य किया गया।

(३) ग्राम काँगड़ी में एक दस-दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक २१-१२-६२ से ३०-१२-६२ तक । इसमें प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

(१) नशाबन्दी के लिए जन–चेतना जागृत करना ।

(२) गाँव वालों का आर्थिक व सामाजिक सर्वेक्षण ।

(३) गाँव में सफाई अभियान।

(४) नदी में बाँध बनाना ।

(४) स्वास्थ्य शिविर —

(i) ग्राम लोधामण्डी — ५० ग्रामीणों की स्वास्थ्य जाँच ।

(ii) ग्राम काँगड़ी — ३०० ग्रामीणों की स्वास्थ्य जाँच व औषधि वितरण।

(iii) ज्वालापुर — १२० रोगियों की स्वास्थ्य जाँच व ६० का ब्लड ग्रुप टेस्ट किया गया।

(५) एड्स दिवस के अवसर पर "एण्ड एण्ड ड्रग्स" विषय पर परिचर्चा ।

——

योग शिक्षा विभाग

१. विभाग की स्थापना—सन् १९८२ में योग प्रशिक्षण के त्रैमासिक प्रमाण-पत्र के साथ विश्वविद्यालय में योग केन्द्र प्रारम्भ हुआ। वर्ष १९८३ में द्वितीय योग प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र से योग विभाग को आधार मिला। १९८४ में प्रशिक्षक की नियुक्ति करके योग विभाग की विधिवत् स्थापना की गयी। तब से लेकर आज तक विभिन्न सोपानों को पार करते हुये विभाग निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

२. विभाग की मौलिक छवि — योग विभाग के क्रिया-कलापों से प्रभावित होकर स्थानीय ही नहीं, बाहर के छात्र तथा आतुर (रोग पीड़ित) व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं। छात्रों की संख्या में वृद्धि हो रही है। वर्ष १९८९ से चतुर्मासीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम को समाप्त करके एक-वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। स्नातक कक्षाओं में "योग शिक्षा" का वैकल्पिक विषय के रूप में अध्यापन कराया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृति मिलने के पश्चात् सत्र ९२-९३ से एम.ए. योग का पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ कर दिया गया है। विभाग दिन-प्रतिदिन सफलता के सोपान पार करता हुआ प्रगतिपथ पर अग्रसर है। छात्रों की संख्या में वृद्धि से पता चलता है कि योग विभाग के प्रति लोगों में रुचि बढ़ी है। अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थाओं द्वारा अपनी शिक्षा-समितियों व परीक्षक-सूची में विभागीय प्राध्यापक को मनोनीत करना, कांफ्रेंस/सेमीनार में आमंत्रित करना आदि विभाग की प्रगति के परिचायक हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में मुख्य निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया जाना विश्वविद्यालय के लिये गौरव का विषय है। स्थानीय लोगों द्वारा चिकित्सा हेतु परामर्श करना व योग-चिकित्सा द्वारा आरोग्यता प्राप्त करना भी विश्व-विद्यालय के लिए गर्व का विषय है।

३. विभागीय क्रियाकलाप — (९१-९२)

(क) डिप्लोमा पाठ्यक्रम में ४८ छात्रों ने प्रवेश लिया। ३१ मार्च तक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अध्यापन पूर्ण कराया गया।

(ख) विद्यालंकार/वेदालंकार प्रथम खण्ड में १४ छात्रों ने योग शिक्षा को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना। द्वितीय खण्ड में ५ छात्र रहे। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अध्यापन ३१ मार्च को पूर्ण करा दिया गया। परीक्षाएँ अप्रैल-मई में सम्पन्न हुई। वर्ष १९९२-९३ से अलंकार तृतीय खण्ड में भी योग शिक्षा विषय का अध्यापन कराया जायेगा।

(ग) छात्रों ने दिसम्बर १९९१ में सहारनपुर में आयोजित उत्तर भारत योग कुमार प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्र सुरक्षित गोस्वामी ने वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा विद्यालय विभाग के छात्र बृजमोहन, मयूरध्वज व अमिताभ ने कनिष्ठ वर्ग में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय तीनों स्थानों पर विजय प्राप्त कर विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। अमिताभ व संदीप कुमार ने वरिष्ठ वर्ग में द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय के यश में वृद्धि की।

(घ) १० अप्रैल से १३ अप्रैल तक एक्युप्रेशर चिकित्सा पद्धति हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें श्री बाबूभाई महात्मा बड़ौदा, गुजरात द्वारा प्रशिक्षण तथा चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। २० छात्रों ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

४. शिक्षकों का शोध कार्य, प्रकाशन कार्य, संगोष्ठियों में भागीदरी तथा अन्य उपलब्धियाँ—

डा० ईश्वर सिंह भारद्वाज

(क) शोधकार्य :—

१. 'उपनिषदों में संन्यासयोग : समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की।

२. उदर रोगों पर यौगिक चिकित्सा का प्रभाव जानने हेतु कार्य किया जा रहा है जिसमें डा० स्वदेश भूषण शर्मा (ऋषिकुल

आयु० महाविद्यालय) तथा डा० सुनील कुमार जोशी (गुरुकुल आयु० महाविद्यालय) का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है ।

(ख) प्रकाशन कार्य :--

१. जनवरी १९९२ में "औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान" पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें ब्रह्म, आत्मा, आचार, योग, मोक्ष आदि तत्त्वों का शास्त्रीय विवेचन है तथा शोध-पूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गयी है ।

२. "उपनिषदों में मानवता के सिद्धाँत" नामक शोध-पूर्ण लेख गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित हुआ ।

३. 'उदर रोगों की यौगिक चिकित्सा' व 'वात रोगों की यौगिक चिकित्सा' नामक लेख "जयराम–संदेश" म प्रकाशित हुए । उक्त पत्रिका में 'योग एवं आरोग्य' स्तम्भ में नियमित लेखनकार्य कर रहे हैं ।

(ग) संगोष्ठियों में भागीदारी :—

१. मार्च १९९२ में योग धाम में आयोजित योग शिविर में योग विषय पर व्याख्यान किया ।

२. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में १३–१८ जून तक योग विषय पर व्याख्यान किये ।

३. जून १९९२ में रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कम्प्यूटर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया ।

(घ) अन्य :--

१. विद्यालय के छात्रों को योग शिक्षा प्रदान की ।

२. विद्यालय छात्रावास की व्यवस्था में सहयोग किया ।

३. विश्वविद्यालय अतिथि गृह की सम्पूर्ण व्यवस्था का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक वहन किया ।

४. सहारनपुर व भेल में आयोजित योग कुमार व योग कुमारी स्पर्धाओं में मुख्य निर्णायक का दायित्व निर्वाह किया ।

५. वी.एच.ई.एल. में आयोजिय योग प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक रहे ।

परीक्षा - परिणाम :--

गत वर्ष का परीक्षा परिणाम डिप्लोमा तथा अलंकार कक्षाओं में उत्तम रहा ।

७. आवश्यकताएँ :—

१. यौगिक चिकित्सालय हेतु उपकरण व भवन ।

२. शिक्षकों की नियुक्ति ।

३. योग अटेण्डेंट, योग प्रयोगशाला सहायक, प्रयोगशाला हेतु उपकरण ।

४. छात्रों के लिये आवास व भोजन सुविधा की समुचित व्यवस्था ।

विभागीय क्रियाकलाप (९२-९३)

(क) डिप्लोमा पाठ्यक्रम में ४० विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया । जिसमें से २२ विद्यार्थी नियमित अध्ययन करते रहे । उनमें से १६ विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुये । परिणाम प्रतीक्षित है ।

(ख) अलंकार प्रथम वर्ष में १३, द्वितीय में ४ व तृतीय में ५ छात्रों को अध्यापन कराया गया । योग शिक्षा विषय में सभी छात्र उत्तीर्ण हुये ।

(ग) एम०ए० (योग शिक्षा) में तीन छात्रों को प्रवेश दिया गया । परीक्षाएँ मई, ९३ में सम्पन्न हुईं । दो छात्र उत्तीर्ण हैं तथा एक छात्र का परीक्षा परिणाम पंजीकरण न होने के कारण अवरुद्ध है ।

उक्त सभी पाठ्यक्रमों का अध्यायन-कार्य ३१ मार्च, १९९३ को पूर्ण करा दिया गया ।

डा० सत्यप्रकाश बिश्नोई तथा डा० विनोद कुमार शर्मा (राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय) ने विभागीय पाठ्यक्रम का अवैतनिक रूप से अध्यापन कराया ।

डा० भारतभूषण (वेद विभाग), डा० मनुदेव बन्धु (वेद विभाग),

डा० रामप्रकाश (संस्कृत विभाग) ने अध्यापनकार्य में सहयोग किया।

शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ :-

(क) अन्तर्राष्ट्रीय योग सप्ताह (ऋषिकेश) में भाग लेने के लिये २३ छात्रों को भेजा गया। जहाँ पर प्रदर्शन करके ख्याति अर्जित की।

(ख) छात्रों ने सहारनपुर में आयोजित उ० प्र० योग कुमार प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्र सुरक्षित कुमार (अलंकार-तृतीय खण्ड) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(ग) स्थानीय लोगों को यौगिक चिकित्सा उपलब्ध कराई गयी।

शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशन कार्य व संगोष्ठियों में भागीदारी :—

(क) **डा० ईश्वर भारद्वाज –**

(१) **शोध-कार्य** :—

'Role of Makarasana and Gomukhasana in Asthma' पर ६० रोगियों को लेकर चिकित्सा की दृष्टि से शोध किया गया। इस कार्य में ऋषिकुल राज० आयु० महा० के डा० स्वदेश भूषण शर्मा तथा गुरुकुल राज० आयुर्वेद महाविद्यालय के डा० सुनील जोशी ने योगदान किया। परिणाम अच्छे रहे।
'शिरोवेदना में सूत्रनेति व जलनेति' पर कार्य किया जा रहा है। परिणाम अच्छे हैं। इस कार्य में भी डा० शर्मा व डा० जोशी सहयोग कर रहे हैं।

इससे पूर्व 'उदर रोगों की यौगिक चिकित्सा' पर इन्हीं के सहयोग से कार्य किया गया जिसका परिणाम अच्छा रहा।

प्रकाशनकार्य :—

(अ) पुस्तकें — १. औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान
२. उपनिषदों में संन्यास योग

(ब) शोधपत्र — १. गुरुकुल पत्रिका—५
२. जयराम संदेश (हरिद्वार)—३

३. देश निर्देश (हरिद्वार)—१

४. प्रौढ़ शिक्षा (दिल्ली)—१

संगोष्ठियों में भागीदारी (१६६२-६३) —

१. अन्तर्राष्ट्रीय योग सप्ताह (ऋषिकेश) में २–७ फरवरी, १६६३ में भाग लिया।

२. अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की राष्ट्रीय सेमीनार (गु०कां० वि०वि०) में मार्च, ६३ में 'योग द्वारा जनसंख्या नियंत्रण' पर भाषण दिया ।

३. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली द्वारा गु०बि०वि० में आयोजित कार्यशाला (२२–२६ मार्च, ६३) में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया ।

४. राष्ट्रीय दर्शन कांफ्रेंस (२४–२६ मार्च, ६३) में गु०वि०वि० में भाग लिया।

५. केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान दिल्ली द्वारा 'दमा की यौगिक चिकित्सा' पर आयोजित राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में १७ मार्च, ६३ को भाग लिया।

६. आल इण्डिया रेडियो नजीबाबाद से १८ मार्च, ६३ को 'योग एवं स्वास्थ्य' पर वार्ता प्रसारित।

७. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में एक सप्ताह तक व्याख्यान दिया ।

अन्य गतिविधियाँ :--

(क) विश्वविद्यालय अतिथिगृह का उत्तरदायित्त्व सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं।

(ख) विश्वविद्यालय छात्रावास के अध्यक्ष पद का दायित्त्व निर्वाह कर रहे हैं ।

(ग) पंजाब विश्वविद्यालय की बी०एड० (योग) परीक्षा हेतु 'महाविद्यालय सम्बद्धता समिति' के विशेषज्ञ–सदस्य के रूप में मनोनीत ।

(घ) हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, सागर वि०वि० व पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षक सूची में नामांकित।

(ङ) कई विश्वविद्यालयों में शिक्षा समिति के सदस्य रूप में नामांकित।

(च) नागपुर की 'वनिता शिक्षण संस्था' द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण (डिप्लोमा योग) हेतु विशेषज्ञ नियुक्त।

(छ) वार्षिकोत्सव पर विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग।

(ज) सहारनपुर में आयोजित उ० प्र० योग कुमार प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक।

(झ) बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में आयोजित योग प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक।

(ट) आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल काँगड़ी में १९८५ से योग विषय पर व्याख्यान कर रहे हैं।

डा० सुरेन्द्र कुमार —

१. विभागीय उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए क्रियात्मक व सैद्धांतिक प्रश्नपत्रों का अध्यापन कराया।

२. ऋषिकेश में सम्पन्न 'अन्तर्राष्ट्रीय योग सप्ताह' में छात्रों का नेतृत्व किया तथा स्वयं भाग लिया।

३. दर्शन कांफ्रेंस में भाग लिया।

६. विभागीय विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ :—

१. योग के २३ छात्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय योग सप्ताह, ऋषिकेश में भाग लिया।

२. सहारनपुर में आयोजित उ०प्र० योग कुमार प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्र सुरक्षित कुमार ने वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

३. बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में आयोजित योग प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में छात्र सुरक्षित कुमार, विद्युत कुमार व सुबोध कुमार ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में छात्र

बृजमोहन, अमिताभ व संदीप कुमार ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

परीक्षा परिणाम :-

डिप्लोमा, अलंकार व एम०ए० का परीक्षा-परिणाम उत्तम रहा।

आवश्यकताएँ :-

(क) स्टाफ-विभाग के कार्य में अधिक प्रगति के लिये निम्नलिखित स्टाफ की अत्यन्त आवश्यकता है-

१. प्रवक्ता — १

२. प्रशिक्षक — २

३. प्रयोगशाला सहायक - १

४. अटैण्डेंट — १

(ख) निम्नलिखित उपकरणों की आवश्यकता है :-

१. दृश्य/श्रव्य उपकरण- जैसे टेलीविजन, वी० सी० आर०, टेपरिकार्डर, स्लाइड प्रोजेक्टर व ओवरहैड प्रोजेक्टर आदि।

२. योग-चिकित्सालय हेतु उपकरण।

(ग) फर्नीचर आदि।

(घ) भवन

(ङ) विभागीय सेमीनार/शिक्षण यात्रा आदि के लिये धन की व्यवस्था।

विभागीय कार्य-संचालन में मान्य कुलपति जी, कुलसचिव जी, वित्ताधिकारी जी, डीन, प्राच्यविद्या संकाय डा० जयदेव वेदालंकार जी, डा० भारतभूषण विद्यालंकार, डा० मनुदेव बन्धु, डा० रामप्रकाश शर्मा (सभी विश्वविद्यालय), डा० स्वदेश भूषण शर्मा (ऋषिकुल आयु० महाविद्यालय), डा० सत्यप्रकाश बिश्नोई, डा० विनोद कुमार शर्मा, डा० सुनील जोशी (सभी गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय) ने सहर्ष सहयोग किया। एतदर्थ उक्त महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

——

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

१. विभाग की स्थापना :-

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना २३ कार्तिक १९८० वि. तदनुसार ८ नवम्बर, १९२३ ई० को दीपावली के शुभ दिन आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा दिल्ली में की गयी। स्व० आचार्य श्री रामदेव जी तथा स्व० आचार्या सुश्री विद्यावती जी सेठ के संरक्षण में पलकर उनके त्याग, तप व बलिदान से सिंचित यह नन्हा पौधा दिल्ली से १ मई १९२७ ई० को देहरादून लाया गया। स्व० आचार्य रामदेव जी की सुपुत्री आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर के परिश्रम व लगन से आज यह एक विशाल वृक्ष बन अपनी सुरभि देश-विदेश में बिखेर रहा है, जिससे आकर्षित हो न केवल भारत के विभिन्न प्राँतों से, वरन् अफ्रीका, फिजी, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों से छात्रायें यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आती हैं। १ जनवरी १९८६ में विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस संस्था को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर घोषित किया गया।

२. विभाग की मौलिक छवि :—

महाविद्यालय में एक ओर वेद, प्राचीन भारतीय संस्कृति, प्राचीन इतिहास, कला, संगीत आदि अर्वाचीन साहित्य की शिक्षा दी जाती है, वहीं दूसरी ओर ब्रह्मचर्य के नियमों का पूर्णरूपेण पालन करते हुये मानसिक व शारीरिक उन्नति पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। संस्था के पास बृहद् पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों की उपयोगी पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में दैनिक पत्र-पत्रिकायें नियमित रूप से आती हैं।

(१९९१-९२)

संस्कृत विभाग :-

जनवरी ९१ में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम पूर्ण किया। गुरुकुल जन्मोत्सव पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली विषय पर

सुन्दर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त संस्कृत दिवस पर संस्कृत गीत अन्त्याक्षरी, नाटक आदि द्वारा संस्कृत भाषा का महत्त्व प्रदर्शित किया ।

अंग्रेजी विभाग :—

पर्यावरण के विषय से संबद्ध प्रतियोगिता में कन्याओं ने वैल्हम्स स्कूल में भाग लेकर संस्था का नाम उज्ज्वल किया। इसके अतिरिक्त छात्राओं ने अंग्रेजी में नाटक किया तथा सॉनेट्स भी गाये।

हिन्दी विभाग :—

तरुणोत्सव वाद-विवाद प्रतियोगिता में कन्याओं ने भाग लिया तथा शील्ड लेकर संस्था का नाम उज्ज्वल किया। इसके अतिरिक्त वैल्हम्स गर्ल्स स्कूल में हुई हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में कन्याओं ने भाग लिया।

चित्रकला विभाग :—

इस सत्र में देहरादून जनपद में होने वाली तरुणोत्सव अल्पना प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने अति उत्साह से भाग लिया तथा प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कारों को प्राप्त कर महाविद्यालय के गौरव को बढ़ाते हुये शील्ड प्राप्त की। साथ ही अनेक अवसरों पर, जैसे जन्मोत्सव या राष्ट्रीय पर्व २६ जनवरी आदि पर मंच सज्जा में चित्रकला की छात्राओं ने प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पुष्प सज्जा आदि का प्रदर्शन किया। कक्षा कार्य के अतिरिक्त छात्राओं ने फेब्रिक पेण्टिग, बातिक पेण्टिग भी सीखा।

संगीत विभाग :—

भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित समूह गान प्रतियोगिता में छात्राओं ने भाग लिया तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अलंकार तृतीय वर्ष की छात्रा कु० अर्चना ने "तरुण युवा मंच" द्वारा आयोजित भजन प्रतियोगिता में भाग लिया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय में होने वाले प्रत्येक कार्यक्रमों में छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया।

अन्य गतिविधियाँ :—

कन्या गुरुकुल परिसर में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में छात्राओं ने अति विशिष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

अंग्रेजी विभाग की श्रीमती हेमलता के० ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अभिविन्यास कार्यक्रम पूर्ण किया ।

संस्कृत विभाग की श्रीमती सरोज नौटियाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय से पुनश्चर्या पाठ्यक्रम पूर्ण किया ।

क्रीड़ा :—

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में सम्पन्न हुई North Zone Interuniversity Badminton प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की टीम ने भाग लिया तथा Dnicet बैडमिन्टन टूर्नामेंट में महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया । Women festival में कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा चयनित छात्रायें मंडलीय स्तर पर बरेली खेलने गयीं । Women festival में चक्का फेंक प्रतियोगिता में कुमारी सीमा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जो मंडलीय स्तर पर खेलने लखनऊ गयीं । महाविद्यालय की छात्राओं की Inter-House प्रतियोगिता भी करवाई गयी ।

सरस्वती यात्रा : –

अक्टूबर, नवम्बर मास में विद्यालंकार की छात्रायें कलकत्ता, दार्जिलिंग आदि दर्शनीय स्थानों पर यात्रा के लिये गयीं ।

परीक्षा परिणाम :—

विद्यालंकार तीनों खण्डों का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहा । कुमारी अर्चना ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये ।

(१९९२–९३)

संस्कृत विभाग :—

महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में व्याख्यान, नाटक, संस्कृत गीत प्रस्तुत किये गये ।

अंग्रेजी विभाग :—

कन्याओं ने जन्मोत्सव पर मैकबेथ के अध्याय का मंचन किया । इसके

अतिरिक्त शनिवार को यहाँ अंग्रेजी में कन्यायें छोटे-छोटे भाषण तथा कविता-पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया करती हैं।

हिन्दी विभाग :

तरुणोत्सव वाद-विवाद प्रतितोगिता में कन्याओं ने भाग लिया और शील्ड लाईं। इसके अतिरिक्त डी०ए०वी० में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी कन्याओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके संस्था को शील्ड दिलवाई। यहाँ होने वाली सभाओं में भी कन्यायें भाग लेती रही हैं।

चित्रकला विभाग :-

इस वर्ष सीमित साधनों के बावजूद टाउन हाल में होने वाली प्रतियोगिता में छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किये। अल्पना सज्जा तथा चित्रकला सम्बन्धी वाद-विवाद सभा में छात्राओं ने भाग लिया जिसमें उनकी कला अभिरुचि का विकास होकर ज्ञानवर्धन हुआ।

संगीत विभाग :-

नवम्बर मास में कन्या गुरुकुल जन्मोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। छात्राओं ने विभिन्न साँस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किये। भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित "समूह गान प्रतियोगिता" में छात्राओं ने भाग लिया तथा विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। वैल्हम गर्ल्स कॉलेज में शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में कु० मीना ने भाग लिया तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। "तरुण युवा मंच" द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा समूह गान प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

क्रीड़ा :—

Women festival में छात्राओं ने कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लिया। Athletics में कुमारी रितु और सोनिया ने चक्का फेंक प्रतियोगिता में भाग लिया। कु० रितु चक्का फेंक में जिलास्तर पर प्रथम रहीं तथा मंडलीय स्तर पर खेलने के लिये प्रदेशीय रैली में इलाहाबाद गयीं।

अन्य गतिविधियाँ :-

हिन्दी विभाग की श्रीमती रंजना राजदान ने इलाहाबाद विश्व-

विद्यालय से नवम्बर १९९२ में पुनश्चर्या पाठ्य-क्रम पूर्ण किया।

संगीत गायन विभाग की श्रीमती प्रतिभा शर्मा ने दिसम्बर मास में लखनऊ विश्वविद्यालय में ओरिएन्टेशन कार्यक्रम पूर्ण किया तथा मार्च मास में गोरखपुर विश्वविद्यालय में अभिविन्यास पाठ्य-क्रम पूर्ण किया।

चित्रकला विभाग की श्रीमती भगवती जी गुप्ता ने दिसम्बर मास में लखनऊ विश्वविद्यालय से ओरिएन्टेशन कार्यक्रम पूर्ण किया। साथ ही मार्च-अप्रैल में गोरखपुर विश्वविद्यालय में अभिविन्यास पाठ्यक्रम पूर्ण किया।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी छात्राओं ने गुरुकुल परिसर में होने वाले सभी कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लिया। जन्मोत्सव पर पूर्व कुलपति महोदय ने कार्यक्रमों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

सरस्वती यात्रा : -

अक्टूबर मास में विद्यालंकार की छात्राएँ वैष्णव देवी तथा जम्मू यात्रा पर गयीं।

परीक्षा परिणाम :—

विद्यालंकार तीनों खण्डों का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विद्यालंकार तृतीय खण्ड की सभी छात्राओं ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की तथा कु० सविता ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

——

विश्वविद्यालय के शिक्षक/शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सूची

प्राध्यापकों की सूची

प्राच्य विद्या संकाय

वैदिक साहित्य

१. प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, एम० ए०, आचार्य/उपकुलपति, विभागाध्यक्ष
२. डा० भारत भूषण, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रोफेसर
३. डा० मनुदेव, एम०ए०, पी-एच०डी, रीडर
४. डा० रूपकिशोर शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता
५. डा० दिनेश चन्द्र, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता

२- संस्कृत साहित्य

१. श्री वेद प्रकाश शास्त्री, एम०ए०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. डा० महावीर अग्रवाल, एम०ए०, पी-एच०डी०
३. डा० सोमदेव शतांशु, एम०ए०, पी-एच०डी०, रीडर
४. डा० रामप्रकाश, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी० लिट्, प्रवक्ता
५. डा० ब्रह्मदेव, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता

३- प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व

१. डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. डा० कश्मीर सिंह, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता
३. डा० राकेश कुमार, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता

४- दर्शन शास्त्र

१. डा० जयदेव वेदालंकार, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्, प्रोफेसर

२. डा. विजयपाल शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा० त्रिलोक चन्द, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता
४. डा० उमराव सिंह बिष्ट, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता

५- योग शिक्षा विभाग

१. डा० ईश्वर भारद्वाज, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता

मानविकी संकाय

१- हिन्दी साहित्य

१. डा० विष्णुदत्त राकेश, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी० लिट्०, प्रोफेसर
२. डा० सन्तराम वैश्य, एम०ए०, पी-एच०डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा० ज्ञान चन्द्र रावल, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता
४. डा० भगवान देव पाण्डेय, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरिष्ठ प्रवक्ता
५. श्री कमलकान्त बुधकर, एम.ए., प्रवक्ता

२- अंग्रेजी साहित्य

१- श्री सदाशिव भगत, एम.ए., रीडर
२- डा. नारायण शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., रीडर, विभागाध्यक्ष
३- डा. श्रवण कुमार शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
४. डा. अम्बुज कुमार, एम.ए., पी-एच.डी., प्रवक्ता
५- डा. कृष्ण अवतार अग्रवाल, एम.ए., पी-एच.डी., प्रवक्ता

३- मनोविज्ञान

१- प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र, एम.ए., प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२- श्री सतीश चन्द्र धमीजा, एम.ए., रीडर
३- डा. सूर्य कुमार श्रीवास्तव, एम.ए., पी-एच.डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
४- डा. चन्द्रपाल खोखर, एम.ए., पी-एच डी., प्रवक्ता

४- शारीरिक शिक्षा विभाग

१- श्री आर.के. एस. डागर, एम.ए., एम.पी.ई., डी.पी.ई.

४- कम्प्यूटर साइंस शिक्षा विभाग

१- डा. विनोद कुमार शर्मा, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर, विभागाध्यक्ष

६- श्री कर्मजीत भाटिया, प्रवक्ता

५- कम्प्यूटर केन्द्र

१- श्री दिनेश चन्द्र बिश्नोई, सिस्टम मैनेजर

२- श्री अचल कुमार गोयल, प्रोग्रामर

३- श्री महेन्द्र सिंह असवाल, आपरेटर

४- श्री मनोज कुमार, आपरेटर

५- श्री द्विजेन्द्र पन्त, आपरेटर

६- श्री वेदव्रत, तकनीकी सहायक

७- श्री विनीत कपूर, तकनीकी सहायक

जीव विज्ञान संकाय

१- वनस्पति विज्ञान

१- डा. डी. के. माहेश्वरी, एम.एस-सी., पी-एच. डी., प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष तथा डीन, छात्र कल्याण

२- डा. पुरुषोत्तम कौशिक, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता

३- डा. गंगा प्रसाद गुप्ता, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

४- डा. नवनीत, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

२- जन्तु विज्ञान

१- डा. वी. डी. जोशी, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रोफेसर

२- डा. टी.आर. सेठ, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर, विभागाध्यक्ष

३- डा ए.के. चोपड़ा, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर

४- डा. दिनेश चन्द्र भट्ट, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

५- डा० देवराज खन्ना, एम. एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

कन्या महाविद्यालय देहरादून (द्वितीय परिसर)

१-	श्रीमती प्रतिभा शर्मा,	एम.ए., संगीत	प्राचार्या/प्रवक्ता
२-	,, भगवती गुप्ता	एम.ए. ड्राइंग एवं पेन्टिंग	प्रवक्ता

३-	श्रीमती सुनृता चौहान	एम.ए., पी-एच.डी. वेद	प्रवक्ता
४-	" सरोज नौटियाल	एम.ए., संस्कृत	"
५-	" मीरादास गुप्ता	एम.ए., संगीत	"
६-	" रंजना राजदान	एम.ए., पी-एच.डी., हिन्दी	"
७-	" हेमलता के.	एम.ए., अंग्रेजी	"
८-	" बलवीर कौर	एम.ए., डी.पी.ई.	पी.टी.आई.

स्थापना विभाग

१-	डा. शिवचरण विद्यालंकार	सहायक कुलसचिव
२-	श्री करतार सिंह	सम्पदाधिकारी
३-	श्री वेदपाल सिंह	सुरक्षाधिकारी
४-	श्री गन्धर्व सैन	उद्यान अधिकारी
५-	श्री सत्येन्द्र पाल सिंह	सचिव, कुलपति
६-	श्री कमलेश नैथानी	पी. ए., कुलसचिव
७-	श्री संजीव कुमार	अवर अभियन्ता
८-	श्री आनन्द सिंह	कनिष्ठ सहायक
९-	श्री देवी प्रसाद	कनिष्ठ सहायक
१०-	श्री कैलाश वैष्णव	विद्युतकार
११-	श्री हेमन्त कुमार	जूनियर असिस्टैण्ट-कम-टाइपिस्ट
१२-	श्री मदन गोपाल उपाध्याय	" "
१३-	श्री कुमुद जोशी	" "
१४-	श्री दीपक घोष	" "
१५-	श्री जगमोहन सिंह	दफ्तरी
१६-	श्री अशोक कुमार	भृत्य-कम-काष्ठकार
१७-	श्री सत्य सिंह	भृत्य
१८-	श्री चन्द्रभान	"
१९-	,, महेशचन्द्र जोशी	"
२०-	,, योगेन्द्र सिंह	"
२१-	,, मदन मोहन सिंह	"
२२-	,, घासीराम	"
२३-	,, श्रीराम	ड्राईवर
२४-	,, मांगेराम	भृत्य

५— प्रौढ़, सतत शिक्षा

१- डा. आर.डी. शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., सहायक निदेशक
२- डा. जे.एस. मलिक, एम.ए., पी-एच.डी., परियोजना अधिकारी
३- श्री सुदर्शन लाल मल्होत्रा, सहायक–कुलसचिव

विज्ञान संकाय

१ — गणित

१- डा. एस. एल. सिंह, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रोफेसर
२- श्री विजयपाल सिंह, एम.एस-सी., रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा. बीरेन्द्र अरोड़ा, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर
४. डा. विजयेन्द्र कुमार शर्मा, एम.एस-सी. पी-एच.डी., रीडर
५- डा. महिपाल सिंह, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर
६- डा. हरवंश लाल गुलाटी, एम.एस-सी., डी.फिल. वरिष्ठ प्रवक्ता

२- रसायन विज्ञान

१- डा. कौशल कुमार, एम.एस-सी. पी-एच.डी., रीडर, विभागाध्यक्ष
२- डा. ए.के. इन्द्रायण, एम.एस-सी., पी-एच.डी. रीडर
३- डा. रामकुमार पालीवाल, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर
४- डा. रजनीश दत्त कौशिक, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता
५- डा. रणधीर सिंह, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता
६- डा. श्रीकृष्ण, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

३- भौतिक विज्ञान

१- डा. बुध प्रकाश शुक्ला, एम.एस-सी., पी-एच.डी., रीडर, विभागाध्यक्ष
२- श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर, एम.एस-सी., रीडर
३- डा. राजेन्द्र कुमार, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता
४- डा. पी.पी. पाठक, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता
५- डा. यशपाल सिंह, एम.एस-सी., पी-एच.डी., प्रवक्ता

स्थापना विभाग

२५- श्री दिवान सिंह	भृत्य
२६- ,, गिरिश चन्द्र जोशी	भृत्य-कम-प्लम्बर
२७- ,, माता प्रसाद	चौकीदार
२८- ,, रुल्हा सिंह	,,
२९- ,, राम सिंह	,,
३०- ,, जल सिंह	,,
३१- ,, ईसम सिंह	,,
३२- ,, भूरि सिंह	,,
३३- ,, योगेन्द्र शर्मा	,,
३४- ,, राम बहादुर	,,
३५- , हिम्मत सिंह	,,
३६- ,, रमेशचन्द्र	,,
३७- ,, श्याम सिंह	,,
३८- ,, चन्द्र कुमार मल	..
३९- ,, हरि राम	माली
४०- ,, श्याम लाल	,,
४१. ,, घिर्राऊ	,,
४२. ,, देवेन्द्र कुमार	,,
४३. ,, बाबू लाल	,,
४४. ,, रामचन्द्र	सफाई कर्मचारी

लेखा अनुभाग

१. श्री नन्द गोपाल आनन्द	अनुभाग अधिकारी
२. ,, मोल्हड़ सिंह	कोषपाल
३. ,, राम नरेश शर्मा	कनिष्ठ सहायक
४. ,, राजकिशोर शर्मा	जूनियर असिस्टैंट-कम-टाईपिस्ट
५. ,, अशोक डे	,, ,, ,,
६. ,, वीरेन्द्र असवाल	,, ,, ,,
७. ,, नन्द किशोर	,, ,, ,,
८. ,, वीर सिंह	,, ,, ,,
९. ,, बलबीर सिंह	भृत्य
१०. ,, राम कृष्ण	,,
११. ,, महेश चन्द्र जोशी (प्रथम)	,,

शिक्षा-परीक्षा विभाग

१.	श्री सूर्य प्रकाश	अनुभाग अधिकारी
२.	,, महेन्द्र सिंह नेगी	सहायक
३.	,, प्रेमचन्द्र जुयाल	सहायक
४.	,, कालूराम त्यागी	जूनियर असिस्टैण्ट-कम-टाईपिस्ट
५.	,, डा. प्रदीप कुमार जोशी	,, (जन सम्पर्क अधिकारी)
६.	,, महावीर सिंह यादव	,,
७.	,, बालकृष्ण शुक्ला	,,
८.	,, महानन्द	भृत्य
९.	,, हरपाल सिंह	,,
१०.	,, दयाल सिंह	,,

प्राच्य विद्या संकाय

१-	श्री राजपाल सिंह	कनिष्ठ सहायक
२-	,, राजेश कुमार	भृत्य
३-	,, प्रेमसिंह	"
४-	" महेन्द्र सिंह	"
५-	" रामसुमत	माली

मानविकी संकाय

१-	श्री गिरीशचन्द्र सुन्दरियाल	कार्यालयाध्यक्ष
२-	श्री लाल नरसिंह नारायण	प्रयोगशाला सहायक
३-	श्री सुभाष चन्द्र	लिपिक
४-	श्री कुंवर सिंह	भृत्य
५-	श्री हरेन्द्र सिंह	भृत्य
६-	श्री शिवकुमार	भृत्य
७-	श्री राजेन्द्र कुमार	भृत्य
८-	श्री भानसिंह	चौकीदार
९-	श्री सन्तोषकुमार	फील्ड अटेंडेंट
१०-	श्री बलजीत	सफाई कर्मचारी

विज्ञान महावि

१-	श्री यशपाल सिंह राणा	कनिष्ठ सहायक
२-	" कृष्ण कुमार	कनिष्ठ सहायक

३-	श्री धर्मवीर सिंह	कनिष्ठ सहायक
४-	" रामदास	भृत्य
५-	" राजपाल	भृत्य
६-	" रतनलाल	भृत्य
७-	" विनोद कुमार	सफाई कर्मचारी

रसायन विज्ञान

१-	श्री शशिभूषण	लैब टैक्नीशियन
२-	" सुरेश गर्ग	लैब असिस्टेंट
३-	" मानसिंह	गैस मैन
४-	" नरेश सलीम	लैब ब्वाय
५-	" जयपाल	"

भौतिक विज्ञान

१-	श्री प्रमोद कुमार	लैब टैक्नीशियन
२-	श्री ठकरा सिंह	लैब असिस्टैंट
३-	श्री पुरुषोत्तम कुमार	
४-	श्री सुमेर सिंह	

वनस्पति विज्ञान

१-	श्री रुद्रमणि	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२-	" चन्द्र प्रकाश	प्रयोगशाला सहायक
३-	" विजय सिंह	लैब अटैंडैंट
४-	" वीरेन्द्र सिंह	माली/सेवक
५-	" राम अजोर	माली
६-	" राजकुमार	सफाई कर्मचारी

जन्तु विज्ञान

१-	श्री हरीश चन्द्र	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२-	श्री रजत सिन्हा	स्टोर-कीपर
३-	श्री प्रीतमलाल	प्रयोगशाला भृत्य
४-	श्री शशीकान्त धीमान	प्रयोगशाला सहायक
५-	रिक्त	भृत्य

संग्रहालय

१-	श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
२-	डा. सुखवीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
३-	डा. प्रभात सेंगर	संग्रहालय सहायक
४-	श्री हंसराज जोशी	लिपिक
५-	श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
६-	,, ओमप्रकाश	भृत्य
७-	,, गुरुप्रसाद	माली
८-	,, फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

कम्प्यूटर

१-	श्री दिनेश बिश्नोई	सिस्टम मैनेजर
२-	,, अजय गोयल	सिस्टम प्रोग्रामर
३-	,, मनोज कुमार	कम्प्यूटर आपरेटर
४-	,, वेदव्रत	तकनीकी सहायक
५-	,, रामसिंह	भृत्य

पुस्तकालय

१-	पुस्तकालयाध्यक्ष	डा. जगदीश विद्यालंकार	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच.डी., बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।
२-	सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजारसिंह चौहान	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स।
३-	प्रो. असिस्टैन्ट	श्री उपेन्द्र कुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
४-	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री ललित किशोर	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
५-	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री मिथलेश कुमार	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, सी.पी.आर., सी. सी. पी.

६-	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७-	सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री अनिलकुमार धीमान	एम.एस-सी., एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स, आई. जी. डी. बाम्बे, डिप्लोमा पत्रकारिता विज्ञान, बी.एड, डिप्लोमा इन यू. एन. व आई.यू. सी.सी.पी., डी. सी. ए.
८-	पुस्तकालय लिपिक	श्री सोमपाल सिंह	एम.ए.
९-	पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा
१०-	पुस्तकालय लिपिक	श्री रामस्वरूप	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
११-	पुस्तकालय लिपिक	श्री मदनपाल सिंह	इन्टर, सी. लाइब्रेरी साइंस, आई.टी.आई., की आपरेटर (मोदी जीराक्स)
१२-	बुक बाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल
१३-	बुक लिफ्टर	,, गोविन्द सिंह	मिडिल
१४-	सेवक	,, घनश्याम सिंह	मिडिल
१५-	,,	,, शशीकान्त धीमान	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१६-	,,	,, बुन्दू	——
१७-	,,	,, शिवकुमार	मिडिल
१८-	,,	,, कुलभूषण शर्मा	मध्यमा आपरेटर मोदी जीराक्स
१९-	,,	,, रामपदराय	कक्षा ५ पास
२०-	चौकीदार	,, रामप्रसाद राय	——
२१-	स्वीपर	,, सुशील कुमार	कक्षा ६ पास
२२-	लिपिक	,, लालकुमार कश्यप	——

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

१-	श्रीमती बिनीता कुमारी	आश्रम अध्यक्षा
२-	,, सुदेश खन्ना	पुस्तकालयाध्यक्षा
३-	,, भागेश्वरी देवी	स्टोरकीपर
४-	श्री ओमप्रकाश नवानी	लिपिक
५-	श्रीमती महेश्वरी देवी	सेविका
६-	श्री मुन्नालाल	माली
७-	श्री सूरतसिंह राणा	भृत्य
८-	श्रीमती विमला	सफाई कर्मचारी

——

वित्त एवं लेखा

सितम्बर १९९२ में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनाँक ३०-१०-९२ में प्रस्तुत किया गया। वित्त समिति ने निम्नलिखित बजट स्वीकृत किया।

बजट साराँश

	संशोधित अनुमान ९२–९३	बजट अनुमान ९३-९४
१. वेतन एवं भत्ते आदि	1,18,33,560	1,20,48,130
२. अंशदायी भविष्यनिधि	1,87,500	2,14,550
२. अन्य व्यय	23,32,040	22,56,150
योग व्यय	1,43,53,100	1,45,18,830
आय	14,57,100	10,27,830
	1,28,96,000	
	1,C0,480	
योग	1,29,96,480	1,34,91,000

समीक्षाधीन वर्ष १९९२–९३ में वित्त समिति एवं कार्य परिषद् द्वारा 1,29,96,480 का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1,18,15,C00 रु० का अनुदान ही दिया गया। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुये हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार है :–

वर्ष १९९२–९३

क्रम सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	1,50,000	वि.वि. अनुदान आयोग	शिक्षकेत्तर कर्मचारी क्वार्टर

क्रम सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
2.	4,33,086	वि.वि. अनुदान आयोग	वेतन विकास अनुदान कर्मचारी
3.	5,00,000	"	उपकरण विकास अनुदान
4.	3,00,000	"	पुस्तकालय पुस्तकें विकास अनुदान
5.	6,25,000	"	भवन निर्माण (पुस्तकालय)
6.	83,797-50	"	विजिटिंग प्रो/फैलो०
7.	30,000	"	माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा०ए०के० इन्द्रायण
8.	30,000	आई.सी.पी.आर.नईदिल्ली	दर्शन सेमीनार
9.	4,000	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	प्रौढ़ शिक्षा विभाग

वित्त अधिकारी

आय का विवरण

१९९२-९३

क्रम सं०	आय का मद	धनराशि
(क)	अनुदान —	
1.	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	1,18,15,000.00
	योग (क)	1,18,15,000.00
(ख)	शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—	
1-	पंजीकरण शुल्क	26,434.00
2-	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	9,470.00
3-	पी-एच०डी० मासिक शुल्क	15,690.00
4-	परीक्षा शुल्क	1,99,648.00
5-	अंकपत्र शुल्क	13,778.00
6-	विलम्ब दण्ड एवं टूट-फूट	35,219.00
7-	माइग्रेशन शुल्क	6,215.00
8-	प्रमाणपत्र शुल्क	1,380.00
9-	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों का शुल्क	41,430.00
10-	सेवा आवेदनपत्र	4,740.00
11-	शिक्षा शुल्क	3,43,141.00
12-	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	26,530.00
13-	भवन शुल्क	52,481.00
14-	क्रीड़ा शुल्क	1,00,956.00
15-	पुस्तकालय शुल्क	61,517.00
16-	परिचय पत्र शुल्क	5,245.00
17-	ऐसोसिएशन शुल्क	23,744.00
18-	प्रयोगशाला शुल्क	1,88,714.00

क्रम सं०	आय का मद	धनराशि
19-	मंहगाई शुल्क	42,573.00
20-	पुस्तकालय से आय	24,011.00
21-	विकास	72,850.00
22-	पड़ताल शुल्क	660.00
23-	पत्रिका शुल्क	26,662.00
24-	अन्य आय	93,094.00
25-	किराया प्रोफेसर क्वार्टर	34,420.00
26-	वाहन ऋण	79,453.00
27-	छात्रावास	2,850.00
28-	प्रो० फण्ड अंशदान	4,55,222.00
29-	श्रद्धानन्द प्रकाशन	17,857.00
30-	निर्धनता शुल्क	5,475.00
31-	साईकिल स्टैण्ड शुल्क	49,250.00
32-	संग्रहालय	268.00
	योग (ख)	20,60,977-00
	सर्वयोग (क+ख)	1,38,75,977-00

वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

१९९२-९३

क्रम सं० व्यय की मद	धनराशि
(क) वेतन	
1- वेतन	1,06,88,792.80
2- भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	1,64,577.00
3- ग्रेच्युटी	12,431.00
4- पेंशन	6,56,765.00
योग (क)	1,15,22,565.80
(ख) अन्य	
1- विद्युत व जल	1,18,614.00
2- टेलीफोन	40,031.00
3- मार्ग व्यय	74,763.00
4- वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	64,801.00
5- लेखन सामग्री व छपाई	1,06,786.00
6- डाक एवं तार	8,044.00
7- वाहन एवं पैट्रोल	1,65,433.00
8- विज्ञापन	19,325.00
9- कानूनी व्यय	21,748.00
10- आतिथ्य व्यय	42,397.00
11- आडिट व्यय	27,410.00
12- दीक्षान्त उत्सव	— —
13- लॉन संरक्षण	5,752.00
14- भवन मरम्मत	53,277.00

क्रम सं. व्यय की मद	धनराशि
15– उपकरण	2,05,061.00
16– फर्नीचर एवं साज–सज्जा	1,45,194.00
17– एन०सी०सी०	980.00
18– छात्रों की छात्रवृत्ति	28,439.00
19– खेलकूद एवं क्रीड़ा	97,650.00
20– सांस्कृतिक कार्यक्रम	3,660.00
21– सरस्वती यात्रा	14,004.00
22– वाग्वर्धनी सभा	1,278.00
23– वेद प्रयोगशाला	2,500.00
24– मनोविज्ञान प्रयोगशाला	5,465.00
25– रसायन प्रयोगशाला	93,133.00
26– भौतिक प्रयोगशाला	48,262.00
27– वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	62,342.00
28– जन्तु विज्ञान प्रयोगशाला	59,159.00
29– गैस प्लान्ट	6,053.00
30– गणित	68.00
31– समाचार पत्र एवं पत्रिकायें	86,967.00
32– पुस्तकें	19,225.00
33– जिल्दबन्दी एवं पुस्तक सुरक्षा	9,359.00
34– केटेलॉग एण्ड कार्डस्	3,708.00
35– वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्य भट्ट, गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका मिश्रित	62,070.00
36– आकस्मिक	5,325.00
37– सदस्यता अंशदान	46,600.00
38– सेमीनार	1,108.00
39– पढ़ते हुये कमाओ	3,680.00
40– वाहन हेतु ऋण	—
41– मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्यूटी प्रतिभूति	—
42– योग	7,390.00
43– मिश्रित	37,350.00

क्र.सं.	व्यय का मद	धनराशि
44–	एल०टी०सी०	—
45–	श्रद्धानन्द प्रकाशन	19,980.00
46–	कम्प्यूटर रख–रखाव	57,680.00
47–	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	—
48–	प्रौढ़ शिक्षा ट्रेनिंग प्रोग्राम	—
49–	निर्धन छात्र कोष	200.00
50–	इतिहास विभाग	800.00
51–	कम्प्यूटर लेखन सामग्री	13,573.00
52–	कम्प्यूटर सोफ्टवेयर	6,000.00
53–	इंग्लिश लैब	875.00
54–	हिन्दी पत्रकारिता	6,734.00
	योग (ख)	19,10,253.00
	(ग) परीक्षा सम्बन्धी	
55–	परीक्षकों का पारिश्रमिक	89,865.00
56–	मार्गव्यय परीक्षक	57,080.00
57–	निरीक्षण व्यय	22,992.00
58–	प्रश्न–पत्रों की छपाई	71,496.00
59–	डाक-तार व्यय	26,336.00
60–	लेखन सामग्री	19,913.00
61–	नियमावली तथा पाठविधि छपाई	— — —
62–	उत्तर पुस्तिका का मूल्य	15,527.00
63–	अन्य व्यय	888.00
	योग (ग)	3,14,097.00
	योग (ख+ग)	22,24,350.00
	सर्वयोग (क+ख+ग)	1,37,45,915.80

वित्ताधिकारी

दीक्षान्त समारोह १९९३ पर अलंकार उपाधि पाने वाले छात्रों की सूची (१९९२)

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
				विद्यालंकार (१९९२)				
1.	450	890267	कु० अनीता	श्री रामस्वरूप शास्त्री	प्रथम	वै०लौ०-सं०सा० अंग्रेजी-भा. संस्कृति	हिन्दी, इतिहास	देहरादून
2.	451	890268	,, अन्जू	,, दिवाकर पाण्डेय	,,	,,	हिन्दी, संगी.वा.	,,
3.	452	890269	,, अर्चना	,, जटाशंकर उपाध्याय	,,	,,	,, संगी.गा.	,,
4.	453	890270	,, घोषा	,, विजयबहादुर सिंह	,,	,,	हिन्दी, संगी.वा.	,,
5.	454	890271	,, इन्दिरा	,, रमाशंकर शुक्ल	,,	,,	हिन्दी, संगी.गा.	,,
6.	455	890274	,, कुमुद	,, एकबाल प्रसाद	,,	,,	हिन्दी, चित्रकला	,,
7.	456	890266	,, नीलम	,, शंकरलाल वर्मा	द्वितीय	,,	हिन्दी, इतिहास	,,
8.	457	890273	,, रंजना	,, अर्जुन प्रसाद	प्रथम	,,	हिन्दी, संगी.वा	,,
9.	458	890295	,, शिवानी	,, भारतभूषण	,,	,,	हिन्दी, संगी.गा.	,,
10.	459	890296	,, सुनीता	,, देवसिंह राणा	,,	,,	हिन्दी, संगी.वा.	,,
11.	460	890272	,, सुरभि	,, अखिलेश पाण्डेय	,,	,,	हिन्दी, इतिहास	,,
				वेदालंकार (१९९२)				
1.	475	890220	एस. हरिकिशन रेड्डी	श्री एस. गोपाल रेड्डी	प्रथम	वेद, संस्कृत, दर्शन अंग्रेजी	मनोविज्ञान	गु.का.वि.वि.
2.	476	890278	विजेन्द्र कुमार आर्य	,, धुरेन्द्र कुमार	,,	,,	हिन्दी	,,

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
				विद्यालंकार (१९९२)				
1.	461	910344	कु० कुलदीप	श्री सन्तसिंह	द्वितीय	वै.लौ.-सं.सा. अंग्रेजी भा. संस्कृति	हिन्दी, दर्शन	हाथरस
2.	462	910343	,, नीलम	,, रामकृपाल सिंह	प्रथम	,,	,,	,,
3.	463	910342	,, रजनी	,, भगवती प्रसाद	द्वितीय	,,	,,	,,
4.	464	910341	,, रीता	,, बाबूसिंह	प्रथम	,,	,,	,,
5.	465	910340	,, शान्ति	,, इन्द्र सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
6.	466	910339	,, सुनीता	,, जगदीश सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
7.	467	910338	,, सुषमा	,, महेश चन्द	प्रथम	,,	,,	,,
8.	468	910337	,, विजय लक्ष्मी	,, रामस्नेही	प्रथम	,,	,,	,,
9.	469	890302	देवेन्द्र कुमार आर्य	,, निर्भयसिंह	प्रथम	,,	,,	,,
10.	470	890048	हृदय प्रकाश	,, जलेश्वर नाथ	द्वितीय	,,	इतिहास, दर्शन	गु.का.वि.वि.
11.	471	890196	रामवीरसिंह	,, रामकलासिंह	द्वितीय	,,	हिन्दी, मनोविज्ञान	,,
12.	472	890046	संजयकुमार सिंह	,, इन्द्रदेव सिंह	प्रथम	,,	हिन्दी, मनोविज्ञान	,,
13.	473	890198	ताजवीर सिंह	,, श्रीपाल सिंह	द्वितीय	,,	इतिहास, मनोवि०	,,
14.	474	890045	विनय कुमार	,, लोटन सिंह	प्रथम	,,	हिन्दी, इतिहास	,,
						,,	हिन्दी, दर्शन	,,
				एम०ए० (१९९२)				
				वैदिक साहित्य				
1.	712	820152	सत्यदेव	श्री धर्मवीर	प्रथम	वैदिक साहित्य		

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
2.	713	900199	वाचस्पति मिश्र	श्री सत्यप्रिय शास्त्री	प्रथम	वैदिक साहित्य		
				दर्शन शास्त्र				
1.	714	890121	कामेश्वर पाण्डेय	श्री रामजी पाण्डेय	द्वितीय	दर्शन शास्त्र		
2.	716	830104	वृजकिशोर मित्तल	,, शिवचरन लाल	प्रथम	,,		
				संस्कृत साहित्य				
1.	717	900250	अजयकुमार कौशिक	श्री चरणसिंह	तृतीय	संस्कृत साहित्य		
2.	723	900313	कु० दर्शना देवी	,, शेरसिंह	द्वितीय	,,		
3.	724	900204	कु० गीता आर्या	,, जोगेन्द्र सिंह	प्रथम	,,		
4.	725	890275	कु० गीता देवी	,, ओमप्रकाश	द्वितीय	,,		
5.	726	890182	कु० कमलादेवी	,, रामफल	प्रथम	,,		
6.	727	890217	कु० कृष्णा	,, खजानसिंह	द्वितीय	,,		
7.	728	900011	कु० मधुलता	,, महेन्द्रसिंह	प्रथम	,,		
8.	729	900246	कु० नीरा ठकराल	,, केवलकृष्ण ठकराल	प्रथम	,,		
9.	730	900263	श्रीमती निर्मलादेवी	,, हरिसिंह	द्वितीय	,,		
10.	732	890231	कु० रामरती	,, रामसिंह	द्वितीय	,,		
11.	735	910290	कु० सुषमादेवी	,, सूरजभान	द्वितीय	,,		
12.	736	900245	कु० सुषमा	,, किशनसिंह	द्वितीय	,,		
13.	737	890259	कु० सुखदा आर्या	,, गोविन्द सिंह	द्वितीय	,,		

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
14.	738	910044	कु० सुरक्षा देवी	श्री भीमसिंह	प्रथम	संस्कृत साहित्य		
15.	740	890133	कु० शकुन्तला	श्री सुबेसिंह	द्वितीय	,,		
16.	741	900287	कु० सरस्वती आर्या	श्री चन्दन सिंह	द्वितीय	,,		
17.	601	850014	कु० अन्जूरानी वर्मा	श्री इन्द्रसिंह वर्मा	द्वितीय	,,		
				हिन्दी साहित्य				
1.	745	870068	रमेश चन्द	श्री पीतमसिंह वर्मा	प्रथम	हिन्दी साहित्य		
2.	746	910256	सत्यवान आर्य	श्री रामस्वरूप	प्रथम	,,		
3.	747	900201	दशरथ कुमार	श्री शिवरामसिंह	द्वितीय	,,		
4.	749	900297	कु० अंजनी पाण्डेय	श्री रमेशचन्द पाण्डेय	तृतीय	,,		
5.	751	900310	कु० कमलेश आर्या	श्री होतीलाल	द्वितीय	,,		
6.	752	900275	कु० लोकेश कुमारी	श्री महेन्द्र कुमार त्यागी	तृतीय	,,		
7.	753	890140	कु० मीना	श्री सूरजभान	द्वितीय	,,		
8.	754	900299	कु० नीलम	श्री सुरेशचन्द्र	प्रथम	,,		
9.	755	890237	कु० रीता सोती	श्री सुभाषचन्द्र सोती	द्वितीय	,,		
10.	757	890153	कु० शोभा ममगाई	श्री गोवर्धन प्रसाद	द्वितीय	,,		
11.	761	890256	कु० मंजू शर्मा	श्री सत्यनारायण	तृतीय	,,		
12.	762	890305	चूड़ामणि परगाई	श्री दुर्गादत्त परगाई	तृतीय	,,		

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
13.	763	880252	तनवीर भारती	श्री शरीफ अहमद	द्वितीय	हिन्दी साहित्य		
14.	633	890180	श्रीमती मिथिलेश कु०	श्री बुद्धसिंह त्यागी	द्वितीय	,,		
			प्रा० भा० इतिहास					
1.	764	870065	ब्रजेश कुमार सिंह	श्री जगदीशसिंह चन्देल	द्वितीय	प्रा०भा० इतिहास		
2.	765	900262	देवेश प्रसाद उप्रेती	,, धर्मेन्द्र प्रसाद उप्रेती	द्वितीय	,,		
3.	766	900215	राहुल कुमार	,, रणसिंह	द्वितीय	,,		
4.	767	900238	सुनील कुमार तिवारी	,, शिवशंकर तिवारी	तृतीय	,,		
5.	768	900281	सुनीलसिंह पंवार	,, महेन्द्रसिंह पंवार	द्वितीय	,,		
6.	1270	910008	पविन्द्रसिंह	,, जरनैलसिंह	द्वितीय	,,		
7.	770	860220	गजेन्द्र प्रसाद	,, गिरजादत्त	तृतीय	,,		
8.	773	890152	कु० सुपर्णा घोष	,, ए० टी० घोष	द्वितीय	,,		
			एम०ए० अंग्रेजी साहित्य					
1.	775	900202	नरेन्द्र चौहान	श्री रवीन्द्रसिंह चौहान	द्वितीय	अंग्रेजी सा०		
2.	776	890293	संजय हाण्डा	,, सोमप्रकाश हाण्डा	द्वितीय	,,		
3.	781	900248	कु० शिवानी	,, रमेन्द्र कुमार शर्मा	द्वितीय	,,		
4.	783	900225	कु० सुनीत कौर	,, गुरुदयालसिंह	प्रथम	,,		
5.	784	900010	कु० विभा	,, विद्यादत्त	प्रथम	,,		

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
6.	1265	900226	कु० वन्दना वर्मा	श्री वाई० वर्मा	द्वितीय	अंग्रेजी सा०		
7.	785	890247	,, आशा	,, पेड़ाराम	द्वितीय	,,		
8.	787	870165	मित्रभास्कर शाह	,, गोविन्दलाल शाह	द्वितीय	,,		
				मनोविज्ञान				
1.	793	820013	श्रीमती गीता गुप्ता	श्री रामभक्त प्रसाद	द्वितीय	मनोविज्ञान		
				गणित				
1.	1231	870015	अतुलकुमार शर्मा	श्री हुलाशचन्द्र शर्मा	द्वितीय	गणित		
2.	1233	890221	दीदारसिंह	,, प्रेमसिंह	तृतीय	,,		
3.	1235	840029	संजीवकुमार गुप्ता	,, दौलतराम गुप्ता	प्रथम	,,		
				माइक्रोबायलोजी				
1.	1246	870191	चरणजीत	श्री हरीचन्द्र	प्रथम	माक्रोबायलोजी		
2.	1247	870007	हेमेन्द्रकुमार	,, कन्हैयालाल	प्रथम	,,		
3.	1248	870196	नवीनचन्द पाण्डेय	,, प्रेमबल्लभ पाण्डेय	प्रथम	,,		
4.	1249	900190	प्रतुलकुमार बिश्नोई	,, राजकुमारसिंह	प्रथम	,,		
5.	1250	870103	संजीवकुमार भारद्वाज	,, पी.एल. भारद्वाज	प्रथम	,,		
6.	1251	860177	सच्चिदानन्द द्विवेदी	,, घनश्याम द्विवेदी	प्रथम	,,		
7.	1252	900192	विरेन्द्र पठानिया	,, ओमप्रकाश पठानिया	प्रथम	,,		

क्र.सं.	अनु०	पं० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
8.	1254	910193	विकास आर्य	श्री हंसराज आर्य	प्रथम	माइक्रोबायलोजी		

बी०एस-सी० (१९९२)

गणित ग्रुप

क्र.सं.	अनु०	पं० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
1.	891	890067	अजयकुमार मिश्रा	श्री राजमणि मिश्रा	द्वितीय	रसायन, भौतिकी, गणित		
2.	892	890078	अरविन्दकुमार पाठक	,, विश्वनाथ पाठक	द्वितीय	,,		
3.	893	890066	आशीषकुमार जैन	,, ए०के० जैन	द्वितीय	,,		
4.	894	890218	अशोक गाड़े	,, हरबंशलाल गाड़े	द्वितीय	,,		
5.	895	890080	भारतभूषण सैनी	,, दीपचन्द सैनी	द्वितीय	,,		
6.	896	890096	भूपेन्द्रसिंह	,, हरचरणसिंह	प्रथम	,,		
7.	897	890012	चरनजीतसिंह	,, तेजसिंह	प्रथम	,,		
8.	898	890091	देवेन्द्रप्रतापसिंह	,, रामसिंह	द्वितीय	,,		
9.	899	890103	धर्मदेव शर्मा	,, के० डी० शर्मा	द्वितीय	,,		
10.	900	890110	गीतेश अनेजा	,, सरवन्सराज अनेजा	द्वितीय	,,		
11.	901	890083	हेमचन्द्र गौनियाल	,, सुरेन्द्रदत्त गौनियाल	द्वितीय	,,		
12.	902	880094	जनभेदसिंह जग्गी	,, एस०एस० जग्गी	द्वितीय	,,		
13.	903	890081	मयंककुमार	,, पी०के० गुप्ता	प्रथम	,,		
14.	904	890168	मिथिलेश कु. पाण्डेय	,, भगवानदेव पाण्डेय	प्रथम	,,		

क्र.सं.	अनु०	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
15.	905	890076	राकेश गाकरे	श्री एम०ए० गाकरे	द्वितीय	रसायन, भौतिकी, गणित		
16.	906	890186	मुस्तफीजुर्रहमान	,, हबीबुर्रहमान	प्रथम	,,		
17.	907	890112	नरेशचन्द्र	,, सोरणसिंह	द्वितीय	,,		
18.	908	890106	नौशादअली	,, मौ० अशरफअली	द्वितीय	,,		
19.	909	890009	नवीन कुमार	,, एल०पी० सिंह	द्वितीय	,,		
20.	910	890084	राजीव गुप्ता	,, लाजपतराय गुप्ता	द्वितीय	,,		
21.	911	890087	राजीव कुमार	,, रुद्रमणि	द्वितीय	,,		
22.	912	890093	राजीव शर्मा	,, कृष्णकुमार शर्मा	प्रथम	,,		
23.	914	890086	राजेश जोशी	,, इन्द्रप्रसाद जोशी	प्रथम	,,		
24.	915	890107	रमन भारती	,, श्याममनोहर भारती	द्वितीय	,,		
25.	916	890010	संजय सोनी	,, ओ०पी० सोनी	प्रथम	,,		
26.	917	890115	सतीश कुमार	,, सुरेन्द्रसिंह	प्रथम	,,		
27.	918	880126	सुनील कुमार धंजल	,, नन्दलाल धंजल	द्वितीय	,,		
28.	919	890011	तरुणकुमार पाठक	,, के०के० पाठक	द्वितीय	,,		
29.	920	890189	वागीश पालीवाल	,, विष्णुदत्त राकेश	प्रथम	,,		
30.	921	890077	वीरेन्द्रकुमार शर्मा	,, रमेशचन्द शर्मा	प्रथम	,,		
31.	922	880238	विवेककुमार गोयल	,, महेन्द्रकुमार गोयल	प्रथम	,,		
32.	923	890063	विवेक सागर	,, मेघसिंह	द्वितीय	,,		

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
33.	924	890057	विवेक शर्मा	श्री रामकिशोर शर्मा	प्रथम	रसायन, भौतिकी, गणित		
34.	965	880121	भूपेन्द्र कुमार	,, गोविन्दलाल सचदेवा	द्वितीय	,,		
35.	966	890169	दुर्गादास धीमान	,, हरिशचन्द्र धीमान	,,	,,		
36.	967	890092	रूपेशकुमार	,, तेजवीरसिंह	,,	,,		
37.	1264	890004	राजीव भारद्वाज	,, एन०के० त्यागी	,,	,,		

बी०एस-सी० १९९२ कम्प्यूटर

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
1.	925	890170	आलोककुमार	श्री जोगेन्द्रलाल जग्गी	प्रथम	भौतिकी, गणित, कम्प्यूटर		
2.	926	890007	अरविन्द मोहन	,, एम०एस० जुवली	प्रथम	,,		
3.	927	890065	आशीष जैन	,, वी०के० जैन	,,	,,		
4.	928	890190	अवधेश कुमार	,, जगदीश प्रसाद	द्वितीय	,,		
5.	929	890055	भरतसिंह बिष्ट	,, मोहनसिंह बिष्ट	प्रथम	,,		
6.	930	890056	कमल कद	,, रविन्द्रकुमार कद	,,	,,		
7.	931	890071	मनीषकुमार छाबड़ा	,, हरिकिशनलाल छाबड़ा	,,	,,		
8.	932	890053	नवीन जण्डवानी	,, रामचन्द्र जण्डवानी	,,	,,		
9.	933	890070	प्रदीपकुमार	,, सन्तराम सिखौला	,,	,,		
10.	934	880052	राजेश अरोड़ा	,, डी०डी० अरोड़ा	,,	,,		
11.	935	890172	रविदत्त	,, के०एस० दत्त	,,	,,		
12.	936	890068	सुशील सैनी	,, शीशराम	द्वितीय	,,		

क्र.सं.	अनु०	पं० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
13.	937	890005	विकास दीप	श्री सत्यपाल लखेड़ा	प्रथम	भौतिकी, गणित, कम्प्यूटर		
14.	938	890117	विपिन कुमार गर्ग	,, धर्मपाल गर्ग	,,	,,		
15.	939	890051	योगेन्द्र कुमार	,, भुवनप्रकाश चौहान	,,	,,		
				बायो ग्रुप				
1.	941	890041	आदेश कुमार	श्री राजकुमार शर्मा	प्रथम	रसायन, वनस्पति, जन्तु०		
2.	942	890032	आनन्दकुमार तिवारी	,, महेशचन्द्र तिवारी	द्वितीय	,,		
3.	943	890023	अनुराग शर्मा	,, कपिलदेव शर्मा	प्रथम	,,		
4.	944	890021	हर्षपालसिंह	,, शीतलसिंह	,,	,,		
5.	945	890008	मौ० आफताब बेग	,, ईदरीस बेग	,,	,,		
6.	946	890035	मुकेश कुमार	,, हुकमसिंह	द्वितीय	,,		
7.	947	890027	नरेशचन्द्र थपलियाल	,, प्रेमलाल थपलियाल	द्वितीय	,,		
8.	948	890038	पंकज शुक्ला	,, जगदीशप्रसाद शुक्ला	द्वितीय	,,		
9.	949	890031	प्रदीपकुमार	,, नगेशचन्द्र वर्मा	द्वितीय	,,		
10.	950	890167	राजकुमार	,, मामराजसिंह	प्रथम	,,		
11.	951	890030	सुखदेवसिंह	,, नेतरामसिंह	द्वितीय	,,		
12.	952	890034	सुमित्र पाण्डेय	,, ज्ञानेन्द्र पाण्डेय	प्रथम	,,		
13.	953	890024	तुषार कुमार	,, सत्यपालसिंह	प्रथम	,,		
14.	954	890022	उमेश कुमार	,, ओमप्रकाशसिंह	द्वितीय	,,		

क्र.सं.	अनु०	पंजी० सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
15.	955	890026	उमेश लूथरा	श्री एस०एस० लूथरा	प्रथम	रसायन, वनस्पति, जन्तु०		
16.	956	890020	विनय कुमार शर्मा	,, रामसेवक शर्मा	प्रथम	,,		
17.	957	890037	विजय गुप्ता	,, लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता	प्रथम	,,		
18.	958	890039	यशपालसिंह	,, रामस्वरूपसिंह	द्वितीय	,,		
19.	959	890033	कृष्णकुमार जोशी	,, मायाराम जोशी	द्वितीय	,,		
				डुप्लीकेट १९८७/२०४४				
	427	850145	नन्दकिशोर	,, सुरेशचन्द गुप्ता	द्वितीय	,,		

————

ओ३म्

वार्षिक विवरण

१९९३-९४

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
प्रो० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

दिसम्बर १९९४ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :
जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर
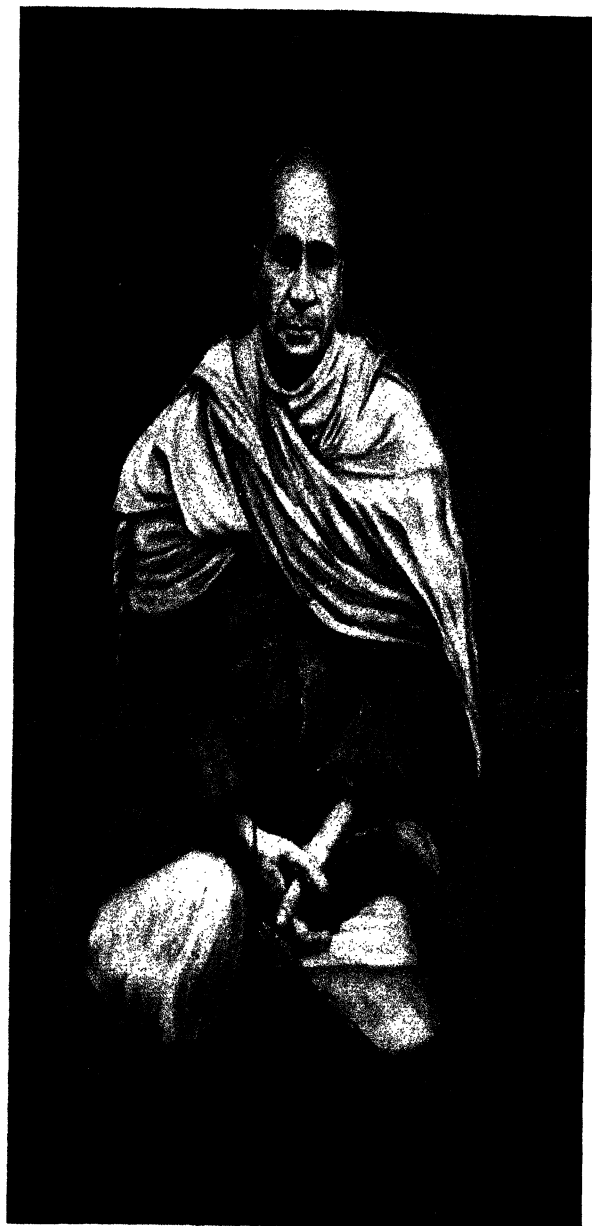
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	—प्रो० शेरसिंह
कुलपति	—डा० धर्मपाल
आचार्य एवं उपकुलपति	—प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कोषाध्यक्ष	—श्री सूर्यदेव
कुलसचिव	—प्रो० जयदेव वेदालंकार
डीन, प्राच्य विद्या संकाय	—प्रो० जयदेव वेदालंकार
डीन, मानविकी संकाय	—प्रो० विष्णुदत्त राकेश
डीन, विज्ञान संकाय	—प्रो० एस. एल. सिंह
डीन, जन्तु विज्ञान संकाय	—प्रो० बी. डी. जोशी —प्रो० डी. के. माहेश्वरी (१९९४ से)
डीन, छात्र कल्याण	—प्रो० डी. के. माहेश्वरी
वित्त अधिकारी	—श्री जयसिंह गुप्ता
संग्रहालयाध्यक्ष	—प्रो० श्याम नारायण सिंह डा० काश्मीर सिंह राही (१९९४ से)
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

——

सम्पादक-मण्डल

* प्रो० जयदेव वेदालंकार, कुलसचिव

* श्री जयसिंह गुप्ता, वित्ताधिकारी

* डा० विष्णुदत्त राकेश

  आचार्य, हिन्दी विभाग एवं डीन, मानविकी संकाय

* डा० प्रदीप कुमार जोशी

  जनसम्पर्क अधिकारी

विषय-सूची

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल

ध्वजारोहण करते हुए कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह

दीक्षान्त समारोह के प्रारंभ मे यज्ञ करते हुए मुख्य अतिथि
श्री खन्ना, कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह, कुलपति डा० धर्मपाल

मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि श्री इन्द्रजीत खन्ना, सचिव, वि० वि० अनुदान आयोग तथा पदाधिकारीगण

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के ९४ वर्ष पूरे कर रहा है। भारत में पुनर्जागरण और निर्माण की मशाल जलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के समानान्तर भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रवर्त्तन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के रूप में किया। प्राचीन भारतीय विद्याओं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का हिन्दी माध्यम से उच्चतर अध्ययन और अध्यापन-अनुसन्धान कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, दीनबन्धु एण्ड्रूज, पण्डित मदनमोहन मालवीय, मान्य गोखले, महाकवि रविन्द्रनाथ, नरेन्द्र देव, जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा इन्दिरा गाँधी जैसे लोकनायक मनीषियों ने की है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद विज्ञान, वैदिक ज्ञान, प्राच्य विद्या और मानविकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय में कुलपति जी के आमन्त्रण पर इस वर्ष संस्कृत विभाग में लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डा० शिवशेखर मिश्र, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा तथा रांची विश्वविद्यालय के डा० आर० पी० दुबे ने अपने विशिष्ट व्याख्यान दिए।

हिन्दी विभाग में चेक गणराज्य के भारत में राजदूत तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री ओदोलेन स्मेकल, काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा० त्रिभुवन सिंह, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डा० गंगा प्रसाद विमल, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० महेन्द्र कुमार आदि अनेक विद्वान् पधारे तथा अमूल्य व्याख्यान दिए।

अंग्रेजी विभाग में सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० सैलेस का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्याख्यान हुआ।

वनस्पति विभाग में पधारने वाले विद्वानों में जर्मनी के प्रोफेसर कोनिग, हंगरी के प्रोफेसर बेला प्रमुख हैं।

कम्प्यूटर विभाग में इस वर्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर ओ० पी० चौधरी तथा जे०एन०यू० के प्रोफेसर जी०वी० सिंह के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए।

इस वर्ष के दीक्षान्तोत्सव पर विश्वविद्यालय में माननीय श्री अर्जुन सिंह, शिक्षा मंत्री, भारत सरकार को ओर मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव माननीय श्री इन्द्रजीत खन्ना ने दीक्षान्त भाषण पढ़कर सुनाया।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने अपने प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत समीपस्थ ग्रामों में शिक्षा, घरेलू उपकरणों के प्रयोग, जनसंख्या पर रोक तथा स्वरोजगारों की सूचना आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया।

विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर के एम०सी०ए० पाठ्यक्रम के प्रथम सत्र का हरिद्वार तथा कन्या गुरुकुल देहरादून में विधिवत् अध्यापन हुआ।

विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान् प्राध्यापक विदेशों में विशिष्ट व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित किए गए। जिनमें डा० बी० डी० जोशी जर्मनी, डा० ए० के० इन्द्रायण जापान तथा डा० डी०के० माहेश्वरी जापान गए।

विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० विष्णुदत्त राकेश, डीन मानविकी संकाय के खण्ड काव्य "देवरात" को मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'अखिल भारतीय भवानीप्रसाद मिश्र काव्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। हिन्दी के वरिष्ठ कवि पद्मभूषण डा० शिवमंगल सिंह सुमन ने १४ अप्रैल ९४ को रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित सम्मान समारोह में यह चर्चित पुरस्कार डा० राकेश को प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के आचार्यों ने लेखन-प्रकाशन तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों तथा शोध समितियों में भाग लेकर अपने पद की गौरववृद्धि की। कुछ शिक्षकों को प्रोन्नति मिली। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति विवरण में अलग-अलग इन विद्वानों के निजी क्रिया-कलापों का विस्तृत ब्यौरा उपलब्ध है।

अन्त में, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षा पटल, कार्य परिषद् तथा शिष्ट परिषद् के माननीय सदस्यों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रो० जयदेव वेदालंकार
कुलसचिव

गुरुकुल काँगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ९४ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन: धरती में सँजो लिया और फिर इन्हीं शाखाओं मे नई टहनियाँ फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल काँगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धी एवं उपयोगिता से भारत-वर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंगलैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अत: गुरुकुल काँगड़ी की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांत की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रांति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति को उनकी पुस्तक समर्पित करते हुए मुख्य अतिथि, साथ में हैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० विजयेन्द्र स्नातक

कुलपति डा० धर्मपाल, मुख्य अतिथि श्री इन्द्रजीत खन्ना को विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भेंट करते हुए।

भारतीय मूल के जर्मन उद्योगपति श्री अशोक चौहान को वि० वि० की सर्वोच्च मानद उपाधि विद्यामार्तण्ड प्रदान करते हुए कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह तथा कुलपति डा० धर्मपाल

शिक्षा सम्बन्धी विचार थे, जिन्हें वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसन्धान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकर्षित किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया।

इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, मटिंडू, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे :

१. वेद महाविद्यालय

२. साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ में गंगा में भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार

से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गाँधी, पं० मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुँजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्यामसिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्या-

लंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल काँगड़ी के ५० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम०ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुईं। अब चार विषयों में पी-एच.डी. (शोध व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियों से पूर्ण रहा। कुलपति आर०सी० शर्मा के कार्यकाल में गुरुकुल व्यवसायिक शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयों में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ९४ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल, शैक्षिक

एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम काँगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालग की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिये पूर्व कुलपति श्री हूजा ने ५००) रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और वहां स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

महाविद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय (प्राच्य संकाय)

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद, संस्कृत, दर्शन, इतिहास तथा योग में एम०ए० और पी-एच०डी० की उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय (मानविकी संकाय)

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तथा पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की जा सकती है। सत्र ९२-९३ से छात्राओं के लिए भी एम०ए० कक्षाओं की अलग से व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही बी०ए० (अलंकार सामान्य) का पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

विज्ञान महाविद्यालय (विज्ञान संकाय)

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, कम्प्यूटर और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ गणित, भौतिकी, रसायन में चल रही हैं। विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान संकाय की अलग से व्यवस्था की गई है जिसमें बी०एस-सी० के अतिरिक्त माइक्रोबायोलोजी में स्नातकोत्तर तथा पी-एच डी. की व्यवस्था है। साथ ही जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान में पी-एच०डी० उपाधि हेतु भी व्यवस्था है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिए जाने के बाद इस महाविद्यालय में पर्याप्त विस्तार हुआ है तथा भविष्य में इसके तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जन-कल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय गुरुकुल के जो भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत चार वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों

को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत छः वर्षों से चल रहा है। अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा का तीनमासीय दक्षता प्रमाणपत्र' पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त एक प्रोजेक्ट वनस्पति विज्ञान विभाग में चल रहा है। साथ ही शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने माननीय अधिकारियों — परिदृष्टा महोदय, कुलाधिपति जी एवं कुलपति जी के दिशा-निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसरित है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त–समारोह के अवसर पर

कुलपतिप्रतिवेदनम्

श्रद्धेयाः संन्यासिनः माननीयाः परिद्रष्टा–महोदयाः, कुलाधिपति-महोदयाः, मानवसंसाधनविकासमन्त्रालये मन्त्रीपदलङ्कुर्वाणाः मान्याः अर्जुन-सिंह महोदयाः, मञ्चस्थाः विद्वांसः, नवस्नातकाः ब्रह्मचारिणः, विश्वविद्यालयस्य सहयोगिनश्च !

अद्य गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालयस्य त्रिनवतितमे दीक्षान्तसमारोहावसरे भवतां समेषाम् अभिनन्दनं कुर्वन् महतीं प्रसन्नताम् अनुभवामि। अद्य अस्माकम् अस्ति सौभाग्योदयः यत् अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहे उपस्थितानां समेषाम् अभिनन्दनं कुर्वन् प्रार्थये यत् यदि आतिथ्यक्रमे काचित् त्रुटिः जायेत नूनं खलु सा क्षम्या ।

हे नवस्नातकाः ! अमरहुतात्मनः स्वामिश्रद्धानन्देन अस्य गुरुकुलस्य स्थापना भगवत्याः भागीरथ्याः पवित्रे तटे त्रिनवतिवर्षेभ्यः प्राक् कृता। अस्माद् गुरुकुलात् विद्यारससिक्ताः स्नातकाः ये उपाधिवन्तः समभवन् तेषु लब्धकीर्तयः पण्डित-इन्द्र-विद्यावाचस्पति-आचार्य-रामदेव-स्वामी-समर्पणानन्द-आचार्य - अभयदेव - आचार्य-प्रियव्रत-डॉ० सत्यकेतु-पण्डित-चन्द्र गुप्ता-विद्यालङ्कार-डा० रामनाथ-वेदालङ्कार-प्रभृतयः अद्यापि गुरुकुलस्य कीर्ति विष्वक् प्रसारयन्ति। अस्माकम् अयम् अस्त्येव विश्वासः नव्याः स्नातकाः अस्य विश्वविद्यालयस्य परम्पराम् अग्रतः प्रसारयिष्यन्ति। समेषां स्नातकानां जीवनम् उत्तरोत्तरं बहुविधं विकासम् अवाप्स्यति ।

उपस्थिताः आर्यबान्धवाः ! अद्य दीक्षान्त–समारोहे विश्वविद्यालयस्य किञ्चिदपि संक्षिप्तं विकास-यात्रायाः चित्रं चित्रयितव्यम् । यद्यपि अर्थ वाधा उन्नतिं न तथा प्रवर्धयन्ति, तथापि सर्वं सङ्कटकुलम् अपाकुर्वन् गुरुकुलम् उत्तरोत्तरं वर्धत एव।

जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित ''अलंकार'' के प्रवेशांक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

सम्प्रति अस्मिन् विश्वविद्यालये वैदिकसाहित्ये, संस्कृतसाहित्ये, दर्शन-शास्त्रे भारतीयेतिहासे, हिन्दीसाहित्ये, आङ्ग्लसाहित्ये च विभागाः यथा स्वकार्यरताः सन्ति तथैव विज्ञान महाविद्यालये वनस्पतिविज्ञान-जन्तुविज्ञान-रासायन - माइक्रोबायलोजी - कम्प्यूटर -गणित-भौतिकीविभागेषु उच्चश्रेण्याः पाठ्यक्रमः प्रसरति। विश्वविद्यालयस्य विभिन्नविभागानां संक्षिप्तं विवरणं दिग्रूपेण प्रस्तूयते।

वैदिकसाहित्यम्—वेदविभागाध्यक्षस्य प्रो० रामप्रसाद वेदालङ्कारस्य अनेकाः कृतयः वेदविषये प्रकाशिताः सन्ति। वेदविभागे वैदिकप्रयोगशाला प्रवर्तते। अस्मिन् विभागे विश्वविद्यालयस्य अनुदान-सहायतया एका वदिक वाङ्मय निर्वचन कोषनाम्नी बृहद्शोधयोजना डा० रूपकिशोरस्य निर्देश-कत्वे प्रचलति। वेदविभागे डा० भारतभूषणः, डा० मनुदेव बन्धुः, डा० रूपकिशोरः, डा० दिनेशचन्द्रश्च अध्यापने शोधकर्मणि च निरताः सन्ति।

संस्कृतसाहित्यम्—संस्कृतविभागः विभागाध्यक्षाणां प्रो० वेदप्रकाश-शास्त्रिणामाध्यक्षे निरतां शोध कर्मणि संस्कृतभाषायाः सर्वविधप्रचारे-प्रसारे च संलग्नः वर्तते। सम्प्रति विंशतितमाः शोधछात्राः शोधकार्यरताः। अस्मिन्नेव समारोहे नवछात्राः शोधोपाधिना अलंक्रियन्ते। अस्य विभागस्य उपाध्यायाः पूनानगरे सम्पन्ने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यासमारोहे भागं गृहीतवन्तः तत्र डा० महावीरेण स्वशोधपत्रं प्रस्तुतम्। अस्मिन् विभागे प्रोन्नतियोजनायां रीडरपदे नियुक्तस्य डॉ० रामप्रकाशस्य डा० सोमदेवस्य डा० ब्रह्मदेवस्य च सान्निध्यम् अवाप्य छात्राः विद्यां लभन्ते। अस्य विभागस्य प्रो० वेदप्रकाश-शास्त्रिणः अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु विषयविशेषज्ञरूपेण तस्तैः विश्वविद्यालयैः सादरमामन्त्रिताः।

दर्शनविभागः - दर्शनविभागे सम्प्रति चत्वारः प्राध्यापकाः सन्ति। अस्य विभागस्य आचार्याः डा० जयदेव वेदालङ्काराः प्राच्यविद्यासङ्कायस्य अध्यक्षा सन्ति। कुलसचिवपदभारमपि वहन्ति। डा० विजयपालशास्त्री, डा० त्रिलोकचन्द्रः, डा० उमरावसिंहः विष्टश्च स्व-स्व निर्देशने शोधकार्यं कारयन्ति। डा० जयदेब बेदालङ्कारस्य निर्देशकत्वे प्राच्यविद्यासङ्कायान्तर्गतमेकं राष्ट्रिय-विद्वत्सम्मेलनम् अभूत्।

प्राचीनभारतीयेतिहास विभाग:—विभागाध्यक्षस्य डा. श्यामनारायणस्य निर्देशकत्वे बहव: शोधछात्रा: शोधकार्यं कुर्वन्ति। अस्मिन् वर्षे डा० कश्मीर-सिंह: रीडरपदेऽभिषिक्त:। डा० राकेश शर्मा अस्मिन् विभागे चारुतया स्वकार्यं साधयति।

योगविभाग:—योगविभागे प्रथमे क्रमे योग प्रमाण-पत्रस्य कार्यम् आरब्धम्। अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तर श्रेण्यां योगपाठ्यक्रम: समारब्ध:। डा० ईश्वर भारद्वाज: अस्य विभागस्य सम्प्रति अध्यक्षपदभारं वोढुमर्हति।

हिन्दीसाहित्यम् – हिन्दीविभागे सम्प्रति डा० संतराम-वैश्य: अध्यक्षस्य कार्यं करोति। अस्मिन् विभागे डा० विष्णुदत्त-राकेश: आचार्यपदभार वहन् मानविकीसङ्कायस्य अध्यक्षपदम् अपि अलङ्करोति। अस्मिन् विभागे डा० भगवान्देवपाण्डेय, डा० ज्ञानचन्द रावल उभावपि प्रोन्नतियोजनायां रीडरपदे नियुक्तौ। डा० कमलकान्त-बुधकर: पत्रकारितायां स्वरुचिं वितनुते। अस्मिन् विभागे चेकगणराज्यस्य भारते राजदूत: श्रीमान् डॉ० ओदोलेन स्मेकल: भाषणम् अभाषत। डॉ० विष्णुदत्त: राकेश: मध्यप्रदेश-साहित्यपरिषदा एकादशसहस्ररूप्यकै: सम्मानित:।

अङ्ग्रेजीविभाग:—अस्मिन् विभागे प्रायश: सर्वेषाम् अध्यापकानां निर्देशकत्वे शोधकार्यं प्रभवति। विभागाध्यक्षस्य डॉ० नारायण-शर्मण: निर्देश-कत्वे राष्ट्रीयं सम्मेलनम् आङ्ग्लभाषायां समभवत्। अस्मिन् विभागे सुप्रसिद्धस्य समाजशास्त्रविद:-डॉ० एस० सैलेसस्य व्याख्यानमभूत्। अस्मिन् विभागे प्रो० सदाशिव-भगत-डॉ० श्रवणकुमारशर्मा-डॉ० अम्बुजशर्मा–डॉ० कृष्णावतार अग्रवालादय: कार्यरता: सन्ति।

मनोविज्ञानविभाग:—अस्मिन् विभागे प्रो० ओ० पी० मिश्रमहोदयस्य अध्यक्षतायां पाठ्यक्रमसमिति: शोधसमितिश्च पूर्णतां गता। अस्मिन् विभागे डॉ० सतीशचन्द्र धमीजा डॉ० एस०के० श्रीवास्तव डॉ० चन्द्रपाल खीखर प्रभृतय: कार्यरता: सन्ति। अस्मिन् विभागे समेषाम् उपाध्यायानां निर्देश-कत्वे बहव: शोध छात्रा: शोधकार्यनिरता:।

वनस्पतिविज्ञानविभाग:—अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तर शिक्षणकार्येण सह शोधकार्यमपि प्रवर्तते। पूर्ववत् विभागस्य अध्यापकै: अन्तर्राष्ट्रीय

शोधपत्रिकासु स्वशोध लेखा: प्रेषिता:। विभागाध्यक्ष: डा० जी०के० माहेश्वरी प्रोफेसर पदभाक् जापानदेशेन सादरम् आमन्त्रित:। अस्मिन् विभागे डा० पुरुषोत्तम कौशिक: प्रोन्नतियोजनार्या रीडर पदं प्राप्तवान्। अस्मिन् विभागे डा० गङ्गा प्रसाद गुप्ता डा० नवनीतश्च कार्यरतौ स्त:। विभागे डा० स्वर्णजितसिंहेण स्वव्याख्यानेन छात्रा: विबोधिता:। विभागे समये-समये विभिन्ना: शोधयोजना: निर्मीयन्ते।

जन्तुविज्ञानविभाग:—विभागेऽस्मिन् स्नातकोत्तर शिक्षाक्रमे चारुतया कार्यं प्रसरति। विभागाध्यक्षा: डा० बी०डी० जोशी महोदया: विभागस्य समुचिताम् उन्नतिम् कुर्वन्ति। विभागे समये-समये राष्ट्रिय-संगोष्ठीनाम् आयोजन क्रियते। अस्य विभागस्य विभिन्नेषु क्रिया कलापेषु महती भूमिका दृश्यते, शोध-कार्यमपि तीव्रगत्या अस्मिन् विभागे प्रसरति। डा० तिलकराज सेठ, डा० अशोक कुमार चोपडा, डा० दिनेश भट्ट, डा० देवराज खन्ना प्रभुतय: कार्यरता: सन्ति।

गणितविभाग:—विभागाध्यक्षा: प्रो० विजयपाल सिंह: सन्ति। विभागेऽस्मिन् डा० श्यामलाल सिंहा: प्रोफेसर पदं वहन्त: विज्ञानसङ्कायस्य अध्यक्षपदमपि अलङ्कुर्वन्ति। अस्मिन् विभागे शोधकार्यं प्रसरति। डॉ० वीरेन्द्र अगेड़ा डॉ० विजयेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० महीपालसिंह:, डॉ० गुलाटीप्रभृतय कार्यरता: सन्ति।

भौतिकविज्ञानविभाग:—अस्मिन्विभागे डॉ० हरिश्चन्द्र ग्रोवर: अध्यक्षस्य कार्यं करोति। डॉ० बी०पी० शुक्ल, डॉ० राजेश कुमार, डॉ० पी०पी० पाठक, डॉ० यशपालादय: विभागे अध्यापनकार्ये संलग्ना: सन्ति। अस्मिन् विभागे वेदानुपजोव्य वैदिक भौतिकी विषयोऽपि स्नातकोत्तर कक्षासु अध्याप्यते। अस्य विश्वविद्यालयस्य भौतिकविज्ञान क्षेत्रे इयमभिनवा उपलब्धि:।

कम्प्यूटरविज्ञानविभाग: — विभागेऽस्मिन् डॉ० विनोदकुमारशर्मा अध्यक्षपदभारं वहन्ति। अस्मिन्नेव वर्षे कम्प्यूटरविभागे एम०सी०ए० पाठ्यक्रम: नवीने क्रमे विश्वविद्यालय अनुदान आयोगस्य सहाय्येन प्रचलति। विभागे डॉ० दिनेश, अचल गोयल, सुनीलकुमार-करमजीत भाटिया प्रभृतय: कार्यरता: सन्ति। कम्प्यूटरविभागे वारद्वयं पाक्षिकं प्रशिक्षणं समभवत्। शोधछात्राणामपि पञ्जीकरणमस्मिन्नेव वर्षे सञ्जातम्। अभिनवप्रयोगशालाया: निर्मिति: प्रारब्धा।

पुरातत्त्वसंग्रहालयः—पुरातत्त्वसंग्रहालये संगृहीतानाँ पाण्डुलिपीनां परिरक्षणाय प्रकाशनाय च केन्द्रीय-मानवसंसाधन-मन्त्रालयेन अनुदानं दत्तम्। संग्राहलये नैकाः प्राचीनाः प्रतिमाः मुद्राश्च सन्ति। अस्य संग्रहालयस्य दर्शकाः अस्मिन् वर्षे सप्तसहस्रसंख्यकाः गुरुकुलमुपयाताः।

पुस्तकालयः—अस्य विश्वविद्यालयस्य पुस्तकालयः अतीव रुचिरः समृद्ध आकर्षकश्च अस्ति। पुस्तकालये संस्कृत साहित्यस्य वैदिक साहित्यस्य दर्शन-साहित्यस्य च दुर्लभाः ग्रन्थाः लक्षसंख्यामपि अतिक्रामन्ति। अस्मिन् वर्षे विभिन्नानां विषयानां लक्षद्वयेन ग्रन्थाः क्रीताः। प्रायशः पुस्तकालयम् उपेत्य पाठकाः भवन्ति लाभ भाजः। अस्मिन् पुस्तकालये मेधाविछात्राणां कृते सौविध्येन पुस्तकानि दीयन्ते। आचार्य-प्रियव्रत-वेदवाचस्पतीनां 'वेद का राष्ट्रिय गीत' ग्रन्थस्य प्रकाशनं पुनरपि पुस्तकालयेन कृतम्। छात्राणां सुविधां हृदि निधाय प्रतियोगिता-परीक्षाम् उत्तरितुं विभिन्नाः सज्जा कोष्ठाः निर्मिताः।

विश्वविद्यालयस्य कार्यालये प्रथमावसरे सहायक कुलसचिव पदस्य सृजनंजातं तत्र कर्मचारिणः प्रोन्नतियोजनायाम् उन्नीताः। कार्यालयस्य पूर्वस्यां दिशि नवीन भवनस्य निर्मितिः जाता।

प्रियाः स्नातकाः!

येषां शाश्वतजीवनमूल्यानां रक्षणाय, राष्ट्रीय एकतायाः अखण्डतायाः चरित्रतायाः धार्मिकसद्भावस्य च परिरक्षणाय गुरुकुलीय शिक्षापद्धतिरुद्-भाविता संजीविता च तान्येव जीवनमूल्यानि भवतां जीवने स्थितिं विधाय प्रतिपदं उन्नतिं दास्यन्ति। यद्यपि नात्र संशयो विद्यते यत् वर्तमान काले जटिलाः समस्याः प्रादुर्भवन्ति परं भवतां आत्मविश्वासो गुरुजनाना-माशीर्वादेन सह निर्भयं जीवनं उन्नेष्यति। युष्माकं जीवनं ससुखं कर्तुं परमात्मानं प्रार्थये।

विश्वविद्यालयस्य सर्वाङ्गीणविकासे अधिकारिणां शिक्षकानां कर्म-चारिणां ब्रह्मचारिणां अभिभावकानां च सहयोग एव प्रशंस्यते। कुलाधिपति प्रोफेसर शेरसिंह महोदयानां श्रीमतां महावीरसिंह परिद्रष्टा महोदयानां निर्देशने विश्वविद्यालयः प्रगतिपथमारुढः।

हे सज्जना: !

नूनमद्य अस्माकं सौभाग्योदयो यत् अस्माकं मध्ये केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालयस्य मंत्रिण: श्रीमन्त: अर्जुनसिंह महोदया: दीक्षान्त भाषणाय सम्प्राप्ता: शोभन्ते। एषां समग्रं जीवनं राष्ट्राय समर्पितं विद्यते। राजनीति क्षेत्रे भवतां कर्मपद्धति: वृक्षच्छायेव समेषां परितापहर्त्री विद्यते भवता गुरुकुलमुपेत्य गुरुकुलीयशिक्षांप्रति निजानुराग: प्रकटित:। मध्ये गुरुकुलं भवन्तमालोक्य सर्वेऽपि कुलवासिनोवयं धन्या:। भवतां निरुपमेयेन साहाय्येन विश्वविद्यालयस्य विश्वम् परिवृद्धि: प्रतिष्ठा च प्रवर्तत्स्यते।

अन्तेचाहं उपस्थितानां समेषां महानुभावानां धन्यवादं व्याहरन् परमेश्वरं अभ्यर्थये—

काले वर्षतु पर्जन्य: पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभ रहित: सज्जना: सन्तु निर्भया:॥

१४ अप्रैल, १९९४ **डॉ० धर्मपाल:**
कुलपति:

———

दीक्षान्त-भाषण

द्वारा

माननीय श्री अर्जुन सिंह जी

मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार

(दिनांक 15 अप्रैल, 1994 : स्थान–हरिद्वार)

माननीय कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा जी, कुलपति जी, आचार्यगण, बन्धुओं, बहनों तथा नवस्नातकों !

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त सभागार में नवस्नातकों को सम्बोधित करने का अवसर पाकर मेरा प्रसन्न होना स्वाभाविक है। देश के विश्वविद्यालयों में इस विश्वविद्यालय की अपनी पहचान इसके संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के कारण बनी और इसके स्नातकों ने राष्ट्र निर्माण, स्वाधीनता आन्दोलन, समाज सेवा, हिन्दी प्रचार, धर्म, संस्कृति, साहित्य, समाजदर्शन तथा इतिहास लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करके अपूर्व ख्याति अर्जित की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है और इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना कर भारतीय शिक्षा पद्धति को और आगे बढ़ाया। उस समय पाश्चात्य सभ्यता और साँस्कृतिक विचार-धाराओं के प्रचारार्थ अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने समूचे देश की सांस्कृतिक महत्ता को महत्वविहीन करने के लिये कोई भी कदम नहीं छोड़ा परन्तु महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर तब स्वामी जी ने पूरब और पश्चिम को, प्राच्य विद्याओं के साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को, अध्यात्म के साथ भौतिक यथार्थ

को तथा व्यक्ति निर्माण के साथ राष्ट्रोन्नति के लक्ष्य को एकाकार करने की चेष्टा की और उसे मूर्त रूप देने के लिए गुरुकुल की स्थापना की। उनका दूसरा साहसपूर्ण कार्य था हिन्दी के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था। यह कितना चुनौतीपूर्ण कार्य था, इसका अन्दाजा इससे मिल जाता है कि हिन्दी में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के तकनीकी शब्दों का अभाव था। १९१०-११ के आसपास वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी के लेखन कार्य करने की चुनौती उनके निर्देशन में गुरुकुल ने स्वीकार की।

आप उनके जीवन से त्याग, बलिदान, देश सेवा, धर्म निरपेक्षता, जातीय सद्भाव तथा हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकता की प्रेरणा लें। आज के सामाजिक तनाव की स्थिति में स्वामी जी के अछूत और दलित वर्ग के लिए कार्य के अवलोकन मात्र से ही एक नई प्रेरणा मिलेगी। उनके बाद के दशकों में राष्ट्रपिता ने समाज को अपनी ही जर्जर व्यवस्था से संवेदनशील बनाया कि एक नये जागरण का प्रारम्भ हुआ। मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि आप उस जागरण का शंख लेकर उठें और धर्मांधता, कट्टरता, जातीय नफरत, रंगभेद, नस्लभेद, आंतक और पृथकतावाद को ध्वस्त करें। बिखरते हुए देश को एकजुट होकर संगठित करें तथा अध्यात्म के साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान को जोड़कर देश के करोड़ों निर्धन, असहाय तथा ग्रामीण परिवेश में पिछड़ा जीवन जी रहे लोगों को समृद्धि, सुख और शान्ति का जीवन जी पाने के अवसर प्रदान करें। देश को बाहर और भीतर से तोड़ने वाली शक्तियों को कुंठित करने के लिए त्याग, साहस, विवेक, संगठन, सौहार्द और कर्मयोग की आवश्यकता है। मैं आशा करता हूँ कि आप मानव समाज की सेवा का लक्ष्य जीवन में सर्वोपरि मानेंगे। पुस्तकीय ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह हमारे व्यवहार का अंग हो।

आधुनिक शिक्षा की एक कमी रही है, उसका समाज से कटा होना। किसी राष्ट्र को सम्पन्न एवं शक्तिशाली बनाने के लिए शिक्षा को समाज से जोड़ना आवश्यक होता है। शिक्षा को इसीलिए मानव संसाधन का माध्यम माना जाता है। परन्तु शिक्षा का अर्थ संस्कार, चरित्र, मूल जीवन मूल्यों का विकास भी है। ये वही धरोहर हैं जो राष्ट्र निर्माण में सहायता तो करती ही हैं और राष्ट्र जब भी किसी संकट में होता है तो एकजुट हो जूझने की प्रेरणा भी देती हैं। इसीलिए सभ्यताएँ ऊपर उठीं और लुप्त हो गईं पर हमें गर्व है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता अभी तक मनुष्य जाति की पथप्रदर्शक तथा

हितैषी है।

सामाजिक न्याय, नैतिकता तथा ज्ञान प्राप्ति की उत्कृष्ट लालसा शिक्षा का उद्देश्य है। इसे अपसंस्कृति, हिंसा तथा स्वार्थपरता से लड़ने के लिए समयानुकूल बदलना होगा। हमें इस ओर अत्यावश्यक ध्यान देना है अन्यथा शिक्षा, समाज और जीवन मूल्यों का संकट हमें पूरी तरह निगल जाएगा। सामाजिक न्याय, मानवीय एकता और राष्ट्रीय समृद्धि ही हमारा और हमारे जीवन का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। शिक्षा इसी लक्ष्यपूर्ति का साधन है।

शिक्षा चाहे वह प्राथमिक स्तर पर हो, माध्यमिक स्तर पर हो या उच्चस्तरीय अध्ययन और शोध स्तर पर। उसे ग्रामोत्थान से लेकर विश्व-भूगोल तक जुड़ना है। आर्थिक प्रगति की दौड़ में भाग लेकर भी अपनी साधारण भूमि से जुड़े रहना है। जनसंख्या के इस भयंकर विस्फोट और आर्थिक तंगी के बढ़ते माहौल में शिक्षा द्वारा ही जनता को प्रशिक्षित करना है। व्यावसायिक शिक्षा की परिकल्पना आर्थिक संकटों से निकलने का मार्ग ढूंढ़ने के लिए बनाई गई थी।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। यू.जी.सी. ने इस सम्बन्ध में निर्णय किया है कि १९९४-९५ के सत्र से देश के कुछ विश्वविद्यालयों/कालेजों में डिग्री कोर्स में व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ करेंगे। मैं समझता हूँ कि यदि आप इस दिशा में कार्य कर सकें तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भी इसे फैलाने में सहायक होगा। एक दूसरा पहलू जिसके ऊपर शिक्षाविदों को गहराई से सोचना है, वह है—उच्च शिक्षा के साधनों को जुटाने में गैर-सरकारी स्रोत को ढूंढ़ना। विश्व के कई देशों में यह प्रयोग सफल हुआ है। शिक्षण संस्थाएँ अधिक से अधिक छूट प्राप्त कर आय के स्रोत जुटा सकें, तथा कम से कम मात्रा में सरकार की मुखापेक्षी हों, इसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने आवश्यक आदेश निर्गत कर दिए हैं तथा आपका विश्वविद्यालय भी उस सूची में है जिन्हें यह छूट उपलब्ध होगी। अब इसके लिये विश्वविद्यालयों को गम्भीरता से निर्णय लेने होंगे। स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता के लिए आत्मविश्वास और आर्थिक पवित्रता का ध्यान भी रखना होगा।

प्यारे स्नातकों! आज जब आकाश के रास्ते अपसंस्कृति की मार हम पर पड़ रही है, देशी-विदेशी विघटनकारी ताकतें हमारी राष्ट्रीय भावना,

दर्शन विभाग के प्राध्यापक डा० त्रिलोक चन्द्र की पुस्तक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

पत्रकारिता विभाग के पत्र 'शतपथ' का विमोचन करते मुख्य अतिथि
श्री इन्द्रजीत खन्ना तथा कुलपति डा० धर्मपाल

शोभायात्रा में नवस्नातक

धर्म और सामाजिक कर्तव्यों को नकारात्मक ढंग से प्रभावित कर रही हैं, सम्प्रदायवाद हमें टुकड़े-टुकड़े करने के सतत् प्रयास में है, जातीय द्वेष से समाज ग्रसित है तब हम कितना ही कहें कि हम लोकतांत्रिक देश के सदस्य हैं पर यह सिर्फ मन को मनाने की बात होगी क्योंकि वर्ग-भेद सब नकार जाता है। अतः जरूरत है कि हम ऊँच-नीच की भावना से ऊपर उठें तथा समाज के रचनात्मक बदलाव में योगदान करें। हम प्रतिभावान हैं और दुनियाँ में राष्ट्र इस बात का साक्षी है पर हमारी प्रतिभाएँ भारत के काम आएँ और प्रतिभा पलायन रुके, यह तभी सम्भव है जब हमारी प्रतिभाएँ अन्तर्मन से प्रसन्न हों और अपने जीवन के लक्ष्यों को राष्ट्र के लक्ष्यों के साथ समन्वित करें।

आज आपका दीक्षान्त हो रहा है। औपचारिक रूप से यहाँ आपकी शिक्षा समाप्त हुई पर क्या यह शिक्षा का समाप्ति बिन्दु भी है? आप अनवरत शिक्षा से जुटे रहें, लोगों को शिक्षित करें, तभी आपकी शिक्षा सफल हो सकती है। आप अपने जीवन में निरन्तर सुख और समृद्धि की ओर अग्रसर होते जाएँ यही मेरी शुभकामना है। मेरी अपेक्षा है कि आप राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बनें।

अन्त में, आपके लिए मंगलकामना करते हुए आपको बधाई तथा कुलाधिपति, परिद्रष्टा तथा कुलपति जी को धन्यवाद देता हूँ कि मुझे यह अवसर प्रदान किया।

प्राच्य विद्या एवं मानविकी संकाय

१. १६ जुलाई १९९३ को यज्ञोपरान्त सत्र प्रारम्भ हुआ।

२. इस वर्ष संकाय में अलंकार कक्षाओं के साथ-साथ सामान्य अलंकार (बी०ए०) पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया। यह पाठ्यक्रम छात्राओं में काफी लोकप्रिय हो रहा है।

३. १५ अगस्त १९९३ को मुख्य कार्यालय के प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारोहण कुलपति महोदय द्वारा किया गया।

४. दिनांक ८ सितम्बर को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में संस्कृत दिवस का आयोजन किया गया इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री ऋषिकेशवानन्द जी पधारे।

५, दिनांक १२-९-९३ को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी में एक सत्संग आयोजित किया गया।

६. संस्कृत विभाग के अन्तर्गत दिनांक १५-१०-९३ को डा० शिवशेखर मिश्र का व्याख्यान हुआ।

७. २३ दिसम्बर १९९३ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इसके पश्चात् विश्वविद्यालय से एक शोभा यात्रा निकाली गई जो श्रद्धानन्द चौक से शिवमूर्ति होती हुई डा० हरिराम आर्य इण्टर कालेज के प्राँगण में श्रद्धांजलि सभा में परिणित हुई। इस शोभा यात्रा में हजारों व्यक्ति सम्मिलित हुए।

८. दिनांक २६ जनवरी १९९४ को केन्द्रीय कार्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

९. दिनांक २ फरवरी १९९४ को संस्कृत विभाग के अन्तर्गत प्रो. आर.पी. दुबे, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग रांची विश्वविद्यालय का विशिष्ट व्याख्यान हुआ ।

१०. दिनांक १९ फरवरी १९९४ को दर्शन विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

११. दिनांक १३-१४-१५ मार्च १९९४ को अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित हुआ जिसमें भारतीय एवं कैनेडियन विश्वविद्यालय, इन्डोकैनेडियन दिल्ली एवं कैनेडियन एम्बैसी के विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया।

१२. अंग्रेजी विभाग में इस सत्र में कैनेडियन समाजशास्त्री डा० शैलेश का भाषण हुआ।

१३. दिनांक २८ मई १९९४ को मानविकी संकाय की शिक्षा समिति की बैठक हुई, इसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में डा० त्रिलोक सिंह जी, आचार्य मनोविज्ञान विभाग काशी विद्यापीठ बाराणसी तथा प्रो० महेन्द्र कुमार आचार्य हिन्दो विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने भाग लिया। इस बैठक में अलंकार सामान्य (बी०ए०) स्तर पर वैकल्पिक विषयों के रूप में अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र जैसे विषयों के अध्यापन के प्रबन्ध करने जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लिये गए। समिति ने तीसरे माननीय सदस्य प्रो० बी० डी० शर्मा, प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग कुमाऊँ विश्वविद्यालय का सहवरण किया।

१४. दिनाँक ४ अप्रैल १९९४ को चेक गणराज्य के हिन्दी कवि डा० ओदोलेनस्मेकल के सम्मान में एक गोष्ठो का आयोजन किया गया।

१५. दिनांक १९ अप्रैल १९९४ से वार्षिक परीक्षाएं आयोजित की गई।

१६. दिनाँक १७ मई १९९४ को सत्रावसान हुआ।

१७. शिक्षा सत्र में छात्रों की संख्या इस प्रकार रही।

नाम कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
विद्याविनोद	—	३	—
विद्यालंकार	१२	६	८

नाम कक्षा		प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
वेदालंकार		१२	५	२
बी०ए०		४५	—	—
एम०ए०	मनोविज्ञान	५२	२६	
	अंग्रेजी	३३	६	
	हिन्दी	२८	१७	
	संस्कृत	१५	१७	
	वेद	८	—	
	दर्शन	६	५	
	इतिहास	११	५	
	योग	५	३	
योग डिप्लोमा		४४		
हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा		२५		
अंग्रेजी दक्षता प्रमाण-पत्र		१८		

———

वेद विभाग

जनपद हरिद्वार में पुण्य सलिला भागीरथी (गंगा) के तट पर सन् १६०० ई० में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय आज एक विशालकाय वट-वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। यह विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय मनीषियों के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलते हुए व्यावहारिक ज्ञान के साथ वैदिक साहित्य एवं संस्कृति के उच्चतम अध्ययन-अध्यापन तथा चिन्तन का प्रमुख केन्द्र है।

इस विभाग की स्थापना गुरुकुल की स्थापना के साथ-साथ हुई। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट पद्धति से साङ्गोपाङ्ग वेदों के अध्ययन की परम्परा निर्बाध रूप से आज भी चल रही है। इस विभाग को पं० दामोदर सातवलेकर, पं० जयदेव शर्मा, पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड, पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, आचार्य अभयदेव, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, स्वामी ब्रह्ममुनि, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति और डा० रामनाथ वेदालकार आदि सुप्रसिद्ध विद्वान् अलंकृत करते रहे हैं। इस विश्वविद्यालय के अनेक वैदिक विद्वान् अपनी कीर्तिपताका सम्पूर्ण विश्व में फैलाते रहे हैं और उन्होंने वेदों, उपवेदों, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, वेदाङ्गों और उपाङ्गों के भाष्य किये तथा अनेकों पुस्तकों की रचना भी की।

वर्तमान काल में भी इस विभाग से अनेकों भारतीय एवं विदेशी छात्र एम०ए० एवं पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करते रहे हैं। अब तक बीस छात्र शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं तथा अनेकों छात्र विभागीय प्राध्यापकों के निर्देशन में शोधकार्य कर रहे हैं। यह विभाग विदेशी छात्रों के अतिरिक्त इंजीनियरों, डाक्टरों, मनोवैज्ञानिकों और अध्यात्म-प्रेमी जनों को भी अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर वेद-सम्मेलन का सफल

आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० भारतभूषण विद्यालंकार, डा० मनुदेव बन्धु, डा० रूपकिशोर शास्त्री, डा० दिनेश चन्द्र धर्ममार्तण्ड, डा० वेदप्रकाश उपाध्याय और श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय आदि वैदिक पण्डितों ने अपने व्याख्यानों तथा उपदेशों से जनता को सम्बोधित किया। अन्त में गुरुकुल के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने सभी वक्ताओं और श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

५ नवम्बर १९९३ को भारत विकास परिषद् भेल शाखा तथा वेद विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में वेद मन्दिर में एक "बृहद् मन्त्र-पाठ प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। जिसमें पंचपुरी के सभी छात्र-छात्राओं ने सोत्साह भाग लिया। प्रतियोगिता में सामवेद के कुछ मन्त्र, ईशोपनिषद् और गीता के कुछ श्लोकों का पाठ किया। विजयी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये गये। इस प्रतियोगिता में विभाग के डा० मनुदेव बन्धु और डा० दिनेशचन्द्र ने सक्रिय भाग लिया।

विभाग के छात्रों को वैदिक कर्मकाण्ड में प्रयोगात्मक ज्ञान कराने हेतु "वैदिक संग्रहालय एवं प्रयोगशाला" की स्थापना की गयी है, इसमें ब्राह्मणग्रन्थों और सूत्रग्रन्थों में निर्दिष्ट सभी प्रकार के यज्ञीय पात्रों का संग्रह किया गया है। अनेकों प्रकार के हवनकुण्ड, अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियाँ तथा अनेकों वैदिक पुस्तकों का संकलन किया गया है। पौर्णमास यज्ञ का वीडियो कैसेट भी तैयार किया गया है। छात्रों को षोडश संस्कारों के अतिरिक्त दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि आदि श्रौतयज्ञों का ज्ञान कराया जाता है।

वेद विभाग में इस समय चौदह छात्र शोधकार्य में निरत हैं। इस वर्ष एक छात्रा ने "यजुर्वेद में ईश्वर का स्वरूप—स्वामी दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में" विषय पर शोधोपाधि प्राप्त की।

इस समय वेद विभाग में पाँच उपाध्याय अध्यापन कार्य में संलग्न हैं। उनका व्यक्तिगत विवरण तथा कार्य निम्न प्रकार है :—

(१) प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
एम०ए० (वेद)
(आचार्य एवम् उपकुलपति) अध्यक्ष

अब तक ५२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष (१) सुख का धाम

(२) कौन तुझको भजते हैं (३) जुआ मत खेलो, पुरुषार्थ करो (४) वैदिक पुष्पाञ्जलि आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं। कुछ पुस्तकों का पुनः प्रकाशन भी हुआ।

वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, वैदिक अध्यात्म, वैदिक पारिवारिक जीवन, वैदिक यज्ञ आदि विषयों पर बम्बई, बड़ौदा, दिल्ली, हरयाणा और उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान हुए।

भाषा विभाग, पटियाला (पंजाब) की ओर से देहरादून में आयोजित हिन्दुत्व विषयक सेमिनार में व्याख्यान दिया।

११ अप्रैल '९३ से जून '९३ तक कुलपति पद का भी कार्यभार संभाला।

इस वर्ष एक छात्र शोधकार्य कर चुका है। जिसका विषय है 'वेदों में अध्यात्म—महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में'।

अनेकों वेद सम्मेलनों एवं सेमिनारों में मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष के रूप में भाग लिया।

(२) प्रो० भारतभूषण वेदालंकार
एम०ए०, पी-एच०डी०
(प्रोफेसर, वेद विभाग)

एक छात्रा कुमारी सत्यवती ने "यजुर्वेद में ईश्वर का स्वरूप—स्वामी दयानन्द भाष्य के परिप्रेक्ष्य में" विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। छः शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं।

विभिन्न पत्रिकाओं में ५ लेख प्रकाशित।

विशिष्ट व्याख्यान :

(१) हिमोत्कर्ष शोध संस्थान, ऊना हिमाचल प्रदेश में "वैदिक पर्यावरण" विषय पर व्याख्यान दिया।

(२) प्रभात आश्रम, मेरठ में वैदिक कृषि विषय पर व्याख्यान दिया।

(३) गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में १६-२१ फरवरी १६६४ को आयोजित "शिक्षा में पर्यावरण एवं मूल्यों का महत्त्व" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में संयोजकत्व एवं शोधपत्र वाचन किया। (४) १२ अप्रैल ६४ को गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर "वेद एवं आयुर्वेद सम्मेलन" का संयोजन किया। (५) ११ अप्रैल ६४ को गुरुकुल काँगड़ी के वार्षिकोत्सव पर भाषण दिया। (६) आर्यसमाज मुरादाबाद द्वारा आयोजित वेद सम्मेलन को अध्यक्षता की और व्याख्यान दिया। (७) वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, मेरठ, दिल्ली आदि की आर्य संस्थाओं में वैदिक व्याख्यान।

(३) डा० मनुदेव बन्धु
एम०ए० (वेद, संस्कृत, हिन्दी, दर्शन)
व्याकरणाचार्य, पी-एच०डी०, लब्धस्वर्णपदक
रीडर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग

शोध निर्देशन—एक छात्र ने "वैदिक युग्म एवं गणदेवता" विषय पर अपना शोध प्रबन्ध कार्यालय में परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया है। इस समय चार छात्र वेद एवं उपनिषद् विषय पर पी-एच०डी० कार्य कर रहे हैं।

अध्यापन—एम०ए० वेद के छात्रों के अतिरिक्त एम०ए० योग के छात्रों को सांख्य दर्शन और सांख्य कारिका आदि ग्रन्थों को पढ़ाया।

लेखन तथा प्रकाशन—अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। (१) बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन (२) भाष्यकार दयानन्द (३) वेद मन्थन (४) मानवता की ओर (५) चरित्र निर्माण (६) वेदोऽखिलो धर्म-मूलम् (७) साधना क्षेत्र यह संसार है (१६६४)।

अनेकों लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

शोधपत्र वाचन (१) गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में १६-२१ फरवरी ६४ को आयोजित "शिक्षा पद्धति में पर्यावरण और मूल्यों का महत्त्व" राष्ट्रिय संगोष्ठी में "ब्राह्मण ग्रन्थों में शिक्षा और पर्यावरण" विषय पर शोधपत्र का वाचन किया और यह लेख प्रकाशित हुआ।

(२) १-८ अगस्त ६३ आर्यमित्र में "विवाह सम्बन्ध : एक वैदिक चिन्तन" लेख प्रकाशित हुआ।

विशिष्ट व्याख्यान—(१) ११ अप्रैल १९९४ को गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के वेद सम्मेलन में "मानसिक प्रदूषण की समस्या तथा उसका वैदिक समाधान" विषय पर व्याख्यान दिया।

(२) १२ अप्रैल १९९४ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव के वेद एवं आयुर्वेद सम्मेलन में "वेदों में आयुः सम्वर्धन" विषय पर व्याख्यान दिया।

(३) आर्य समाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद में होली पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

(४) जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड मद्रास, पर्यावरण मन्त्रालय भारत सरकार तथा जीव दयामण्डल, हरिद्वार द्वारा आयोजित पञ्चदिवसीय प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया और "भारतीय अस्मिता में जीव-जन्तुओं का महत्त्व" विषय पर भाषण दिया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कार्य—मई १९९४ में कन्या गुरुकुल हाथरस में अलंकार की छात्राओं के वेद विषय की प्रयोगात्मक परीक्षा ली। कन्या गुरुकुल हाथरस की वार्षिक परीक्षा में पर्यवेक्षक के रूप में कार्य किया।

वेद प्रचार कार्य—वैदिक साहित्य, वैदिक संस्कृति, वैदिक विज्ञान, औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान, सामवेद में भक्तिधारा, अथर्ववेद में राष्ट्रियता का उपदेश, कर्मसिद्धान्त, ईशावास्यमिदं सर्वम् आदि विषयों पर भारत के विभिन्न आर्य संस्थाओं में व्याख्यान दिये।

सदस्यता—(१) भारत विकास परिषद् भेल, ज्वालापुर (२) जीव दया मण्डल, हरिद्वार (३) जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड मद्रास (४) अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन, पूना।

अन्य कार्य—(१) वेद विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय तथा भारत विकास परिषद् भेल, ज्वालापुर के सहयोग से ५ नवम्बर १९९३ को आयोजित "बृहद् मन्त्र पाठ प्रतियोगिता" में निर्णायक का पदभार ग्रहण किया।

(२) महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतीकुण्ड (कनखल), गुरुकुल काँगड़ी में सत्र ९२-९३ में एम०ए० वेद की छात्राओं को नियमित अध्यापन किया।

डा० रूपकिशोर शास्त्री
(प्रवक्ता, वेद विभाग)
एम०ए०, पी-एच०डी०

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में तीन लेख प्रकाशित। विभिन्न स्थानों पर चार संगोष्ठियों में भाग लिया। एक शोधार्थी का शोध हेतु पंजीकरण हुआ। कुल दो शोधार्थियों के लिए शोध निर्देशन। "वैदिक वाङ्मय-एक भूमिका" नामक पुस्तक का लेखन-कार्य लगभग ५० प्रतिशत हुआ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत बृहद्-शोध-योजना के अन्तर्गत "वैदिक वाङ्मय-निर्वचन कोश" पर कार्य प्रगति पर।

डा० दिनेशचन्द्र धर्ममार्तण्ड
(प्रवक्ता, वेद विभाग)
एम०ए०, पी-एच०डी०

सेमिनार—गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में १९-२-९४ से २१-२-९४ तक "शिक्षा-नीति में पर्यावरण एवं मूल्यों का महत्त्व" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में सक्रिय भाग ग्रहण एवं "पर्यावरण प्रदूषण, असंतुलन तज्जन्य दुष्प्रभाव एवं उसके निवारण का वैदिक उपाय" विषय पर शोध-पत्र-वाचन।

संयोजन—(१) वेद विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय और भारत विकास परिषद् भेल ज्वालापुर के सहयोग से ५ नवम्बर १९९३ को आयोजित "बृहद्-मन्त्र-पाठ प्रतियोगिता" का सफल संयोजन किया।

(२) अप्रैल १९९४ को 'प्रौढ़ सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार' द्वारा आयोजित प्रतियोगिता का मुख्य निर्णायकत्व वहन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम—(१) ११-४-९४ को गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'वेद सम्मेलन' में 'वेदों का विश्व में संदेश' विषय पर व्याख्यान दिया।

(२) १२-४-९४ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर 'वेद एवं आयुर्वेद सम्मेलन' में 'पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान एवं आधुनिक विज्ञान' विषय पर भाषण दिया।

(३) वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, रुड़की, मोदीनगर, पटियाला एवं हापुड़ आदि विशेष आर्यसामाजिक स्थानों पर लगभग १६ विशेष व्याख्यान दिये।

एतदतिरिक्त गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय और विभाग से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में यथावसर भाग लिया।

प्रकाशन—(१) वेद एवं संस्कृत से सम्बन्धित आंग्लभाषानभिज्ञ छात्रों की योरोपीय वैदिक विद्वानों के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व से सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिए 'पाश्चात्य वेद-मनीषी' पुस्तक का लेखनकार्य लगभग ६० प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। अतिशीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रस्तुत।

(२) 'मानवीय-मूल्य—वैदिक वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर एक ग्रन्थ-लेखन की योजना। कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

(३) १२ लेख प्रकाशित/प्रकाशनार्थ स्वीकृत—

(i) वेद शब्द बिमर्श: (संस्कृत), गुरुकुल पत्रिका, सितम्बर १९९३।

(ii) वैदिक जीवनस्योच्चतमन्निदर्शनम् (संस्कृत), भारतोदय:, सितम्बर-अक्टूबर १९९३।

(iii) भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा (संस्कृत), भारतोदय:, नवम्बर १९९३।

(iv) वेद-संदेश: (संस्कृत), भारतोदय:, मार्च १९९४।

(v) वेदों में राष्ट्र की स्थिरता के लिए सात धारक तत्त्व, दयानन्द सन्देश, सितम्बर १९९३।

(vi) वैदिक सात मर्यादायें, दयानन्द सन्देश, दिसम्बर १९९३।

(vii) वेद एवं भगवद्गीता का जीवात्म-चिन्तन, गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर १९९३।

(viii) पर्यावरण–प्रदूषण, असंतुलन तज्जन्य दुष्प्रभाव एवं उसके निवारण का वैदिक उपाय, दयानन्द सन्देश, मई १९९४; गुरुकुल पत्रिका, संयुक्तांक अप्रैल–जून १९९४।

(ix) मानवीय मूल्यों के शिक्षा–तत्त्व [Human values based education role of teachers & parents], आर्यजगत्, जून १९९४

(x) वैदिक भक्तिः (संस्कृत) — प्रकाशनार्थ स्वीकृत (तस्य ते भक्तिवांसः स्याम)।

(xi) अहिंसा का वैदिक स्वरूप—प्रकाशनार्थ स्वीकृत।

(xii) मौद्गल्यकृत अथर्वभाष्य की समीक्षा—प्रकाशनार्थ स्वीकृत।

अन्य गतिविधियाँ—

[i] पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, रा० सं० सस्थान दिल्ली और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को परीक्षक-सूची में नामांकित।

[ii] महिला महाविद्यालय सतीकुण्ड, कनखल में सत्र १९९३-९४ में एम०ए० वेद की कक्षाओं में नियमित अध्यापन।

[iii] वार्षिकोत्सव पर विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग।

एतदतिरिक्त विभागीय एवं विश्वविद्यालयीय अपने समस्त शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कार्यों का पूर्ण निष्ठा सहित सम्पादन किया।

———

संस्कृत-साहित्य विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग का प्रारम्भ से ही गौरव-शाली स्वरूप रहा है। वैदिक एवं लौकिक साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् श्रद्धेय डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने प्रथम विभागाध्यक्ष के रूप में इस विभाग में अध्ययन-अध्यापन के साथ उच्चस्तरीय शोधकार्य की जो परम्परा प्रारम्भ की थी वह अद्यावधि अक्षुण्ण रूप से चल रही है। संस्कृत में स्नातकोत्तर एवं शोधो-पाधि प्राप्त इस विश्वविद्यालय के स्नातक देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य करते हुए अपनी योग्यता एवं कर्मनिष्ठा की अमिट छाप अंकित कर रहे हैं। प्रशासनिक सेवा, पत्रकारिता, समाज-सेवा आदि क्षेत्रों में भी संस्कृत के स्नातकों ने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा प्रदर्शित की है। इस विभाग के उपाध्याय एवं छात्र वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में उल्लेख-नीय कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष विभाग की ओर से सितम्बर '९३ में संस्कृत दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसमें हरिद्वार नगर के अनेक मनीषियों एवं संस्कृतानुरागियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में डा० गणेशदत्त शर्मा, प्राचार्य लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद तथा मुख्य वक्ता के रूप में डा० गिरिजा शंकर त्रिवेदी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डी०ए०वी० कालेज देहरादून ने पधार कर उत्सव की शोभावृद्धि की। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने की। इस समारोह को उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदा-लंकार एवं कुलसचिव डा० जयदेव वेदालंकार ने अपने विद्वत्तापूर्ण उद्‌बोधनों से आनन्दित किया। विभाग में डा० शिवशेखर मिश्र, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष लखनऊ विश्वविद्यालय, डा० निगम शर्मा, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय तथा डा० आर० पी० दुबे, राँची विश्वविद्यालय के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए।

विभागीय छात्रों ने अखिल भारतीय कालिदास समारोह के अन्तर्गत आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब विश्व-

विद्यालय चंडीगढ़ एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओ में भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किये।

विभागाध्यक्ष प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री एवं डा० महावीर ने अनेक सम्मेलनों में जाकर वैदिक, लौकिक साहित्य पर अनुसन्धानपरक व्याख्यान दिए।

१५ अप्रैल १६६४ के दीक्षान्त समारोह में संस्कृत के शोधार्थियों को पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया गया।

मार्च '६४ में शोध समिति की बैठक में ७ छात्रों के शोध विषय पी-एच० डी० हेतु पंजीकृत किये गये। विभागाध्यक्ष प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री के अध्यक्षत्व में इस वर्ष डा० रामप्रकाश शर्मा चयनित होकर रीडर पद पर प्रतिष्ठित हुए।

वर्तमान में प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत विभाग तथा प्राच्य विद्या संकायाध्यक्ष के कुशल निर्देशन में विभाग निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

विभाग के उपाध्यायों का कार्य विवरण निम्नवत् है :

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

(१) ७ अगस्त ६३ को गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर की शिक्षा समिति में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित होकर कार्य किया।

(२) ४ से ८ अक्टूबर ६३ तक एन० सी० आर० टी० के द्वारा आहूत विशेषज्ञों की समिति में ऊखीमठ में भाग लेकर संस्कृत-हिन्दी कोश का निर्माण किया।

(३) ८ नवम्बर ६३ को कुमायूं विश्वविद्यालय नैनीताल में शोध समिति में विशेषज्ञ का कार्य किया।

(४) ४ दिसम्बर ६३ को पी-एच०डी० की मौखिक परीक्षा लेने श्रीनगर गढ़वाल गये।

(५) १० दिसम्बर ६३ को मल्लीमनाला संस्कृत महाविद्यालय का निरीक्षण कार्य किया।

(६) २८ अक्टूबर ६३ को मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ में शोध समिति में विशेषज्ञ का कार्य किया।

(७) ७ फरवरी ९४ को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पी-एच०डी० की मौखिक परीक्षा ली।

(८) २७-२८ फरवरी ९४ में निर्धन निकेतन में संस्कृत विद्वद् गोष्ठी में भाग लिया।

(९) ९३-९४ में तीन शोधार्थी आपके निर्देशन में पी-एच०डी० उपाधि से अलंकृत हुए।

(१०) इस समय ८ शोधार्थी आपके निर्देशन में शोध कार्यरत हैं।

(११) ११ मई ९४ में नैनीताल विश्वविद्यालय में शोध समिति में विशेषज्ञ का कार्य किया।

(१२) १९-२०-२१ फरवरी ९४ में 'अखिल भारतीय शिक्षा पद्धति में पर्यावरण एवं मूल्यों का महत्त्व' गोष्ठी में भाग लिया।

डा० महावीर अग्रवाल
वरिष्ठ रीडर

शैक्षिक योग्यता—एम.ए. (संस्कृत, वेद, हिन्दी) पी-एच०डी०, व्याकरणाचार्य।

शोध निर्देशन—इस वर्ष ३ शोधार्थियों को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त हुई, २ शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये जा चुके है, तथा ८ शोध-छात्र शोधकार्य कर रहे हैं। इस सत्र में ६ छात्रों ने लघुशोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

शोध-संगोष्ठियाँ—मई ९३ में पूणे में आयोजित अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन में भाग लिया और शोध-लेख प्रस्तुत किया।

जून ९३ में दिल्ली में आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और शोध-लेख 'संस्कृत साहित्य में आध्यात्मिक चिन्तनधारा' प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन का उद्घाटन राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किया था, जिसमें सम्पूर्ण देश के अग्रणी विद्वान् एवं कुलपतिगण सम्मिलित हुए थे।

दिसम्बर ९३ में उज्जैन में आयोजित कालिदास-समारोह में कालिदास साहित्य पर शोध-लेख प्रस्तुत किया।

१३ जनवरी ९४ को स्वामी समर्पणानन्द शोध-संस्थान प्रभात आश्रम में "वैदिक संहिताओं में राष्ट्रीयता" विषय पर शोध-पत्र पढ़ा। १० मार्च ९४ को ऋषि-बोधोत्सव पर विद्या मन्दिर स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, कानपुर में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा 'वर्तमान समय में वैदिक जीवनमूल्यों की उपयोगिता' विषय पर व्याख्यान दिया।

अप्रैल ९४ में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव में 'संस्कृति सम्मेलन' में तथा महाविद्यालय ज्वालापुर के वेद सम्मेलनों में विशिष्ट व्याख्यान दिये।

डा० सोमदेव शतांशु

प्रवाचक

सत्र १९९३-९४ के शिक्षा सत्र में अपने विभाग तथा विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षण तथा शिक्षणेत्तर दायित्वों का सम्यग् रूप से निर्वहन किया। एतदतिरिक्त स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, प्रभात आश्रम मेरठ द्वारा अगस्त एवं जनवरी मासों में आयोजित शोध संगोष्ठियों में अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत किये। विभिन्न आर्य समाजों में वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान दिये।

डा० रामप्रकाश शर्मा

इनके निर्देशन में चार शोधार्थियों ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

ब्रह्मदेव विद्यालंकार

वर्ष १९९३-९४ में संस्कृत विभाग अथवा प्राच्य विद्या संकाय के तत्त्वावधान में विहित आयोजनों में यथा-निर्दिष्ट-कार्य को दत्तचित होकर किया।

संस्कृत प्रसार-प्रचार हेतु पं० रामकृष्ण शास्त्री, बैंगलोर द्वारा बुलाई गई दो सगोष्ठियों में भाग लिया।

'विश्वसंस्कृतम्' त्रैमासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ 'वाक्यपदीये सम्प्रदानाधिकारः' लेख भेजा और दिसम्बर ९४ में होने वाले अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन में भाग लेने के लिए सदस्यता प्राप्त की और शोध-पत्र भेजा जा रहा है।

दर्शन शास्त्र विभाग

दर्शन विभाग को यह गौरव प्राप्त हुआ कि इस विभाग के प्रोफेसर डा० जयदेव वेदालंकार ने इस वर्ष प्राच्य विद्या संकाय के डीन पद पर कार्य किया तथा विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद पर भी आप ही कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष दर्शन विभाग की यह भी उपलब्धि रही कि इसने १६ फरवरी ६४ से २१ फरवरी ६४ तक "शिक्षा पद्धति में पर्यावरण एवं मूल्यों का महत्त्व" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया जिसमें राष्ट्रीय स्तर के अनेक शिक्षाविदों और दार्शनिक विद्वानों ने अपने शोधपत्र पढ़े।

डा० यू. एस. विष्ट ने इस वर्ष रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर में रिफ्रैशर कोर्स पूर्ण किया।

डा० विजयपाल शास्त्री ने "त्रिक दर्शन का तत्त्वमीमांसीय समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर डी. लिट्. की उपाधि प्राप्त की।

डा० त्रिलोक चन्द

पुस्तकें प्रकाशित–दो (पातञ्जल योग और श्री अरविन्द योग व योग से रोग निवारण)

कैसेट—दो (योग संगीत भाग एक व भाग दो)

१६६३–१६६४ के अन्तर्गत किए गए कार्य :

१. जबलपुर विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र का रिफ्रैशर कोर्स किया।

२. जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३८ वें अधिवेशन में मई मास में भाग लिया।

३. आर्य वानप्रस्थाश्रम में एक सप्ताह तक योग विषय पर व्याख्यान दिये।

४. आर्य वानप्रस्थाश्रम के वार्षिक उत्सव में व्याख्यान दिया।

५. व्यास आश्रय सप्त सरोवर में १ अप्रैल से ५ अप्रैल तक योग शिविर का संचालन किया।

६, ऋषिकेश में योग विषय पर व्याख्यान दिए।

७, आर्यसमाज रुड़की में साप्ताहिक सत्संगों के अवसर पर कई बार व्याख्यान दिए।

८. इस वर्ष एक विद्यार्थी ने निदेशन में लघुशोध प्रबन्ध लिखा जिसका बिषय नीति शास्त्र है।

———

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग (प्राच्य विद्या संकाय) की स्थापना का श्रेय इतिहासविद् पं० हरिदत्त वेदालंकार को है। विभाग की ख्याति में डा० सत्यकेतु विद्यालकार, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालं-कार, डा० विनोद चन्द सिन्हा आदि इतिहासविदों ने अपना-अपना अमूल्य योगदान दिया। वर्तमान में विभाग के समस्त प्राध्यापक, विभागीय प्रोफेसर डा० श्यामनारायण सिंह की अग्रता में सहयोग देते हुये अध्ययन-अध्यापन, सर्वेक्षण, लेखन, उत्खनन, अनुसंधान आदि कार्य पूरी लगन के साथ निर्वाहित कर स्थापित परम्परा को आगे बढ़ाने में प्रयासरत हैं।

शोध—स्थापना वर्ष से विभाग में शोध कार्य को अध्यापन के समान ही महत्व दिया गया। अब तक ३५ शोधार्थियों द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि ली जा चुकी है। अप्रैल १९९४ में दीक्षान्त में एक शोधार्थी को पी-एच. डी. की उपाधि दी गई। एक उच्चस्थ अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी (एम०ए०) को गोल्ड मैडल दिया गया। इतिहास विभाग को यह गोल्ड मैडल श्री सुनील पाण्डे, निवासी कनखल, संवाददाता जनसत्ता द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाता है। डा० श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में ३, डा० कश्मीर सिंह भिण्डर के निर्देशन में २ पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। वर्तमान में डा० श्याम नारायण सिंह के निर्देशन में ७ छात्र, डा० आर. के. शर्मा के निर्देशन में चार छात्र शोध कार्य कर रहे हैं। एक छात्र ने शोध निबंध पूरा कर कार्यालय में जमा कर दिया है। इसके निर्देशक डा० श्यामनारायण सिंह हैं। विभाग में २ पद रिक्त होने के कारण समस्त कार्यभार केवल तीन प्राध्यापकों को ही छात्र हित में करना पड़ रहा है। अध्यापन कार्य के अतिरिक्त वार्षिक परीक्षा के अध्यक्ष का कार्य भी गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी डा० कश्मीर सिंह भिण्डर ने किया। दीक्षान्त समारोह में सांस्कृतिक सम्मेलन के संयोजक के दायित्व को सफलतापूर्वक पूरा किया। डा० राकेश कुमार शर्मा के निर्देशन

में एन. सी. सी. विभाग लगातार प्रगति पथ पर है। डा० शर्मा का अनुशासन समिति में सक्रिय योगदान रहा।

विभाग अपने उत्तरदायित्वों का पूर्ण निर्वाह करता हुआ सदैव प्रबंध व प्रशासनतन्त्र को विश्वविद्यालय हित में सहयोग करने में अग्रणीय रहा।

———

पुरातत्त्व संग्रहालय

प्रत्यक्ष ज्ञान की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुये शिक्षाविद् महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) द्वारा सन् १९०७ में गुरुकुल संग्रहालय की स्थापना की गई थी। सन् १९२४ में गंगा की बाढ़ से प्रभावित गुरुकुल एक लम्बे समय तक पुनः संग्रहालय नियोजन करने में सफल नहीं हो पाया। स्वतन्त्रता के पश्चात् तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द जी द्वारा उत्तर प्रदेश के संग्रहालयों के विकास हेतु संग्रहालय पुनर्गठन समिति का गठन किया गया। समिति ने हरिद्वार क्षेत्र में एक क्षेत्रीय संग्रहालय की आवश्यकता पर विशेष संस्तुति प्रस्तुत की थी। उक्त समिति की संस्तुति के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन गुरुकुल प्रशासन ने अपने पुरा संग्रह को पुरातत्व संग्रहालय के रूप में नियोजित करने का निश्चय किया। तदनुसार सन् १९५० में आयोजित गुरुकुल स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर पुनर्गठित वर्तमान संग्रहालय का विधिवत् उद्घाटन वेद मन्दिर के प्रथम तल पर किया गया। तदोपरान्त गुरुकुल प्रशासन के अन्तर्गत पुरातत्व संग्रहालय निरन्तर विकासोन्मुख रहा।

संग्रहालय विकास की दृष्टि से सन् १९८० का दशक विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वर्तमान भवन में स्थानान्तरण १९८१ में किया गया। सन् १९८२ के सत्र में पुरातत्व संग्रहालय को शिक्षा मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का विधिवत् अंग स्वीकार किया गया। १९८४ के वर्ष में संग्रहालय में सृजित नये पदों पर नियुक्तियां हुयीं। परिणामतः पुरातत्व संग्रहालय को वर्तमान कलेवर प्राप्त हुआ है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अतिरिक्त संग्रहालय विकास के लिए उत्तर प्रदेश सरकार एवं राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा समय-समय पर अनुदान प्राप्त होता रहा है।

विश्वविद्यालय के इस संग्रहालय का बहुउद्देशीय विभिन्न प्रकार का

संग्रह एवं नियोजित प्रदर्शन क्षेत्र के क्षेत्रीय संग्रहालय की आवश्यकता की पूर्ति करता रहा है तथा कर रहा है।

इस सत्र में संग्रहालय को उत्तर प्रदेश सरकार से विकास हेतु २५,०००) रुपए का अनुदान प्राप्त हुआ है। इस राशि से संग्रहालय भवन के प्रथम तल पर अस्त्र-शस्त्र कक्ष में देवदार निर्मित वाल शोकेसेज बनवाये गये हैं। इसके अतिरिक्त प्रवेश कक्ष में प्रदर्शित संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी के तैल चित्र पर आधुनिक अलम्यूनियम शोकेस तैयार कराया गया है।

मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय अभिलेखागार के माध्यम से पाण्डुलिपियों के परिरक्षण सम्बन्धी वित्तीय सहायता योजना के अन्तर्गत रुपये ६६,६६७) की राशि स्वीकृत की गई है। भारत सरकार का अंश रुपए ५०,०००) विश्वविद्यालय को प्राप्त हो गया है। प्रस्तुत परियोजना के अनुसार कार्य प्रगति पर है।

अग्नि शमन विधा के अन्तर्गत संग्रहालय में अग्निशामक कैपसूल लगाए जाने की आंशिक व्यवस्था की गयी है। दर्शकों की सुविधा हेतु संग्रहालय में जन सुविधा उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की गई है।

इस सत्र में लगभग ६२८० राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दर्शक संग्रहालय में आए। इनमें से कुछ विशिष्ट दर्शकों में आस्ट्रीया (यूरोप) के प्रोफेसर त्रोपामेयर रिचर्ड, बेलजियम से प्रोफेसर स्टीवज, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, मंत्री आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, माननीय महावीर सिंह जी परिद्रष्टा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, श्री पुरुषोत्तम गोयल, अध्यक्ष, दिल्ली महानगर परिषद्, दिल्ली, श्री इन्द्र प्रसाद, प्रधान, आर्यसमाज न्यूयार्क, संयुक्त राज्य अमेरिका, रोहतक विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, श्री एस. सिंह, वेंकटवेला, हंगरी राज्य से आर्य सभा मारीशस के मुख्य पुरोहित कोषाध्यक्ष, शीतला प्रसाद, आर्य उपदेशक धर्मेन्द्र रिकाई एवं उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्री श्री सुन्दर सिंह बघेल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपलब्धियाँ :—

निदेशक—

निदेशक के कार्य के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में अध्यापन कार्य किया।

संग्रहपाल, श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव—

काश्मीर राज्य के उत्पलन राजवंश के दुर्लभ स्वर्ण सिक्के की पहचान की, जिसका कवरेज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाचारपत्रों एवं लखनऊ दूरदर्शन द्वारा किया गया। वर्तमान में पाण्डुलिपियों के परिरक्षण के साथ-साथ संग्रहालय परिचय नामक पुस्तिका के लेखन का कार्य भी किया जा रहा है, जो शीघ्र ही विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाएगी।

सहायक संग्रहपाल, डा० सुखबीर सिंह—

संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में अध्यापन का कार्य किया। इसी प्रकार श्री हंसराज जोशी संग्रहालय कार्य के अतिरिक्त गुरुकुल पत्रिका (मासिक शोध-पत्रिका) के प्रबन्धक का कार्य भी कर रहे हैं।

——

योग शिक्षा विभाग

१. विभाग की स्थापना :—

१९८४ में योग विभाग की स्थापना के साथ विश्वविद्यालय में गुरुकुलीय पद्धति के अनुरूप शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास की एक नई शुरुआत हुई। डा० ईश्वर भारद्वाज के नेतृत्व में यह विभाग निरन्तर सफलता के सोपान पार करता हुआ गतिशील है। विभाग में एकवर्षीय डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाएँ चल रही हैं।

२. विभाग की मौलिक छवि :—

योग विभाग के शैक्षिक एवं चिकित्सा सम्बन्धी कार्यक्रमों के प्रति लोगों में रुचि बढ़ रही है। स्थानीय ही नहीं, पश्चिम उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा के अनेक रोगियों ने विभाग से चिकित्सा एवं प्रशिक्षण की सुविधा प्राप्त की है। विभाग में छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

डा० ईश्वर भारद्वाज को अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा अपनी बोर्ड आफ स्टडीज का सदस्य, कालेज एफिलिएशन समिति का सदस्य, पी-एच० डी०, एम० पी० एड०, पी० जी० डिप्लोमा, जूनियर डिप्लोमा आदि का परीक्षक नियुक्त किया जा रहा है। विभिन्न प्रतियोगिताओं में मुख्य निर्णायक की भूमिका के लिए आमंत्रित किया जाता है। योग व एक्यूप्रेशर चिकित्सा हेतु अनेक रोगी विश्वविद्यालय में आकर लाभ उठा रहे हैं।

३. विभागीय क्रियाकलाप :—

१. डिप्लोमा कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल ३१ विद्यार्थियों ने परीक्षा दी।

२. अलंकार/बी० ए० के प्रथम खण्ड में १२, द्वितीय खण्ड में २ तथा तृतीय खण्ड में ४ छात्र रहे।

३. एम० ए० द्वितीय खण्ड में ३ छात्र रहे। एक छात्र ने लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। एम० ए० प्रथम खण्ड में से ५ विद्यार्थियों में से एक उपस्थिति कम होने के कारण परीक्षा में नहीं बैठ सका। ४ छात्र परीक्षा में सम्मिलित हुए।

४. आर्यसमाज आनन्दपुरी मुजफ्फरनगर द्वारा आयोजित योग एवं ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर में डा० ईश्वर भारद्वाज, विभागाध्यक्ष तथा ब्रह्मचारी सुरक्षित गोस्वामी (एम० ए०) व ब्रह्मचारी धर्मपाल (वेदालंकार) ने भाग लिया। शिविर २१ जून से २८ जून, ९४ तक पूर्णकालिक था। शिविराध्यक्ष डा० ईश्वर भारद्वाज तथा दोनों ब्रह्मचारियों के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त छात्रों तथा उनके अभिभावकों में वैदिक सिद्धान्तों, योग एवं ब्रह्मचर्य के प्रति रुचि जाग्रत की गई। सैकड़ों रोगियों को योग एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा भी उपलब्ध कराई गई।

५. ब्रह्मचारी सुरक्षित गोस्वामी (एम० ए०) प्रथम खण्ड ने पद्मश्री भारतभूषण जी के निर्देशन में योग के दिल्ली दूरदर्शन पर प्रसारित "योग साधना" धारावाहिक में कार्य किया।

६. अन्तर्राष्ट्रीय योग सप्ताह (२-७, फरवरी) ऋषिकेश में ११ छात्रों ने भाग लिया।

७. विभाग में ओवरहेड प्रोजेक्टर क्रय किया गया तथा स्लाइड प्रोजेक्टर का क्रय करना प्रस्तावित है। छात्रों के प्रशिक्षण हेतु स्लाइड तैयार कराई गई है।

८. एम० ए० पाठ्यक्रम में प्राकृतिक चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा का समावेश किया गया है, जिससे इस पाठ्यक्रम की उपयोगिता में वृद्धि हुई है।

४. शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशन कार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी तथा अन्य उपलब्धियाँ :—

१. डा० ईश्वर भारद्वाज :
एम० ए०, पी-एच० डी० (हिन्दी, दर्शन)

शास्त्री, साहित्याचार्य।

(क) शोध कार्य :

१, "शवासन व नाड़ीशोधन प्राणायाम का उच्च रक्तचाप पर प्रभाव" विषय पर छात्र प्रतीक मिश्रपुरी के लघुशोध प्रबन्ध का निर्देशन किया।

२. "उदर रोगों की यौगिक चिकित्सा" पर डा० स्वदेश भूषण शर्मा (ऋषिकुल आयुर्वेद महाविद्यालय) व डा० सुनील जोशी (गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय) के सहयोग से कार्य किया जा रहा है।

३. यौगिक चिकित्सा पर डा० शर्मा व डा० जोशी के सहयोग से कार्य किया जा रहा है।

(ख) प्रकाशन कार्य :

(अ) पुस्तकें :

१. "औपनिषदिक अध्यात्म विज्ञान" प्रकाशित

२. "उपनिषदों में संन्यास योग" प्रकाशित

३. "यौगिक चिकित्सा" प्रकाशनाधीन

(ब) शोध पत्र :

१. गुरुकुल पत्रिका–५

२. देश–निर्देश–१

(ग) संगोष्ठी में भागीदारी :

१, आन्ध्र विश्वविद्यालय में आयोजित "योग व मनोविज्ञान पर राष्ट्रीय कान्फ्रेंस व कार्यशाला" (२२-२४ जनवरी, ९४) में भाग लिया तथा "रोल आफ मकरासन एण्ड गोमुखासन आन अस्थमा" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

२. गुरुकुल विश्वविद्यालय में आयोजित "शिक्षानीति में पर्यावरण व मूल्य पर राष्ट्रीय सेमीनार" (१९–२१ फरवरी, ९४) में भाग लिया तथा

"शिक्षा में नैतिक मूल्य योग के सन्दर्भ में" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

३. केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान दिल्ली तथा स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार द्वारा योग चिकित्सा पर आयोजित राष्ट्रीय कान्फ्रेंस (३–५ फरवरी, ६४) में भाग लिया तथा "उच्च रक्तदाब पर शवासन व नाड़ी-शोधन प्राणायाम का प्रभाव" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

(घ) रेडियो वार्ता :

आकाशवाणी नजीबाबाद पर "योग एवं स्वास्थ्य" विषय पर दो रेडियो वार्ताएं प्रसारित हुईं।

(ङ) अन्य :

१. विश्वविद्यालय अतिथि गृह के प्रभारी के पद का दायित्व निष्ठा-पूर्वक निर्वाह किया।

२. हिमाचल विश्वविद्यालय की योग विभाग की "बोर्ड आफ स्टडीज" में विषय विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित।

३. लखनऊ व कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा योग विभाग की "बोर्ड आफ स्टडीज" में विषय विशेषज्ञ के रूप में नामांकित।

४. पंजाब विश्वविद्यालय की कालेज एफिलिएशन कमेटी में विषय विशेषज्ञ के रूप में नामांकित।

५. सागर विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, हरियाणा, हिमा-चल विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षक के रूप में नामांकित।

६. आर्यसमाज रुड़की में "योग का महत्व व आवश्यकता" विषय पर भाषण दिया।

७. गुरुकुल पत्रिका के प्रकाशन सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन कार्य में सहयोग किया।

८. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में योग विषय पर व्याख्यान श्रृंखला।

२. डा० सुरेन्द्र कुमार
प्रशिक्षक (अस्थाई) एम० ए०, पी-एच० डी०

१. विभागीय दायित्व वहन करते हुए डिप्लोमा व अलंकार/बी० ए० कक्षाओं को सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों का अध्यापन व क्रियात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया।

२. शिक्षा नीति में पर्यावरण व मूल्य विषय पर गुरुकुल विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

३. विभागीय कार्य में विभागाध्यक्ष का सक्रिय सहयोग किया।

५. आवश्यकताएँ :—

१. स्टाफ—प्रवक्ता, प्रशिक्षक, प्रयोगशाला सहायक, प्रयोगशाला अटेण्डेंट, सेवक।

२. उपकरण :

(क) टेलीविजन, वी० सी० आर०, टेपरिकार्डर, वीडियो व आडियो कैसेट।

(ख) प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण।

(ग) योग चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण।

३. भवन : प्रयोगशाला, व्याख्यान कक्ष, प्रशिक्षण हाल, चिकित्सालय

४. फर्नीचर : रैक, अलमारी, कुर्सियां, मेज आदि।

५. सेमीनार/विजिटिंग फैलो/शैक्षिक यात्रा हेतु धन की व्यवस्था।

६. विभागीय कार्य में सहयोग : विभागीय कार्य में निम्नलिखित महानुभावों द्वारा सहयोग प्रदान किया गया जिसके लिए उनके प्रति विभाग की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

(क) एम० ए० पाठ्यक्रम :

१. प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र—सप्तम पत्र (उत्तरार्द्ध)

२. डा० आर० डी० शर्मा—सप्तम पत्र (पूर्वार्द्ध)

३. डा० विजयपाल शास्त्री—अष्टम पत्र (निबन्ध वैकल्पिक)

४. डा० स्वदेश भूषण शर्मा (ऋषिकुल आयु० महा०)—षष्ठम पत्र (पूवार्द्ध)

५. डा० विनोद कुमार शर्मा (गुरुकुल आयु० महा०) चतुर्थ पत्र

६. डा० भारत भूषण विद्यालंकार—द्वितीय पत्र (पूवार्द्ध)

७. डा० मनुदेव बन्धु—द्वितीय पत्र (उत्तरार्द्ध)

(ख) शोध कार्य :

१. डा० स्वदेश भूषण शर्मा (ऋषिकुल आयु० महा०)

२. डा० सुनील जोशी (गुरुकुल आयु० महा०)

३. डा० विनोद कुमार शर्मा (गुरुकुल आयु० महा०)

४. डा० दयानन्द शर्मा (गुरुकुल आयु० महा०)

५. डा० सत्यप्रकाश बिश्नोई (गुरुकुल आयु० महा०)

(ग) व्यवस्था सम्बन्धी :

मान्य कुलपति डा० धर्मपाल, मान्य आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद, मान्य कुलसचिव एवं डीन प्राच्य विद्या संकाय प्रो० जयदेव वेदालंकार जी, मान्य वित्ताधिकारी श्री जयसिंह गुप्ता जी द्वारा उत्साहवर्धन किया गया तथा सुव्यवस्था में सहयोग किया गया। अत: उपर्युक्त महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

——

हिन्दी विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग गुरुकुल के स्थापना-काल जितना पुराना है, पर यहां स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन सन् १९६३-६४ से प्रारम्भ हुआ। तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जनक आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा तथा प्रख्यात हिन्दी वैयाकरण आचार्य किशोरी दास वाजपेई हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे। देश के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त मॉरीशस तथा फीजी आदि देशों के छात्र भी यहां अध्ययन करते रहे हैं। इनमें से अनेक स्नातकोत्तर तथा शोध उपाधि प्राप्त कर आज उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग के अन्तर्गत तीन वर्षों से हिन्दी पत्रकारिता में एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चल रहा है। विद्वानों तथा पत्रकारिता जगत के मनीषियों ने इस पाठ्यक्रम की प्रशंसा की है। उनका सक्रिय सहयोग भी इस पाठ्यक्रम को बराबर मिलता रहा है। हिन्दी विभाग में महिला शिक्षा के अन्तर्गत छात्राओं के लिए स्नातकोत्तर अध्ययन की व्यवस्था है।

सत्र १९९३-९४ की अवधि में हिन्दी विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ। विभाग में विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान हुए। इनमें सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि चेक गणराज्य के भारत में राजदूत श्री ओदोलेन स्मेकल मुख्य हैं। काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा० त्रिभुवनसिंह, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली के निदेशक डा० गंगा प्रसाद विमल, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० महेन्द्र कुमार, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा० कृष्ण मुरारि मिश्रा, डी० ए० वी० कालेज देहरादून के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पंजाबी लाल शर्मा, आर० आर० पी० जी० कालेज अमेठी के डा० माधव प्रसाद पाण्डेय विभिन्न कार्यों से विश्वविद्यालय पधारे। फीजी के सीनियर एजूकेशन आफीसर (हिन्दी) श्री नेतराम शर्मा तथा गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग के अध्यापक श्री प्रेमचन्द शर्मा की पी-एच० डी० मौखिक परीक्षा सम्पन्न हुई।

हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों ने विधान सभा चुनाव में हरिद्वार विधान सभा क्षेत्र के मतदाताओं की मानसिकता जानने के लिए ६,७ और ८ नवम्बर को पूरे क्षेत्र में घूम कर व्यापक चुनाव सर्वेक्षण किया। छात्रों का दल विश्व पुस्तक मेला में भाग लेने नई दिल्ली भी गया। पत्रकारिता के छात्र प्रशिक्षण यात्रा पर ग्वालियर तथा दिल्ली गए जहाँ उन्होंने प्रेस की कार्यविधि का अवलोकन किया। इस दौरान उन्हें विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान भी सुनने को मिले।

विभाग के प्राध्यापक डा० ज्ञानचन्द रावल तथा डा० भगवान देव पाण्डेय की रीडर पद पर प्रोन्नति हुई। विभाग के गौरव प्रो० डा० विष्णुदत्त राकेश (सम्प्रति-डीन, मानविकी संकाय) को उनके बहुचर्चित खण्डकाव्य 'देवरात' पर मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् का 'अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्रा' पुरस्कार मिला।

शिक्षकों का शोधकार्य, प्रकाशन कार्य, संगोष्ठियों में भागीदारी व अन्य उपलब्धियाँ :—

डा० विष्णुदत्त राकेश :
एम० ए० (आगरा वि०), पी-एच० डी० (जोधपुर वि०), डी० लिट्० (विक्रम वि०)।

—प्रोफेसर तथा डीन, मानविकी संकाय।

• खण्डकाव्य 'देवरात' पर मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् का 'अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्रा' पुरस्कार मिला।

० अनेक वेद मंत्रों का हिन्दी काव्यान्तरण किया।

० विविध पत्रिकाओं तथा समीक्षा ग्रन्थों में अनेक लेख प्रकाशित हुए।

० विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोध प्रबंधों का परीक्षण किया।

० विभिन्न साहित्यिक संगोष्ठियों तथा समारोहों में व्याख्यान दिया।

० इनके निर्देशन में कार्य कर रहे दो छात्रों—श्री नेतराम शर्मा को

'फौजी में हिन्दी प्रचार का इतिहास' तथा श्री प्रेमचन्द शर्मा को 'साहित्य दर्पण की हिन्दी टीकाओं का तुलनात्मक अनुशीलन' विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई।

० इनके निर्देशन में कई छात्र पी-एच० डी० को उपाधि हेतु कार्य कर रहे हैं।

डा० सन्तराम वैश्य :
एम० ए० (अवध वि०), पी-एच० डी० (काशी हिन्दू वि०)।

—रीडर एवं अध्यक्ष।

० २-११-९३ से रीडर पद पर स्थायी हुए।

० विविध पत्रिकाओं तथा समीक्षा ग्रंथों में अनेक लेख प्रकाशित हुए।

० दो विश्वविद्यालयों के शोध प्रबंधों का परीक्षण किया।

० इनके निर्देशन में निम्नलिखित छात्रों ने लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया :—

नाम	विषय

१. सुशील कुमार—मंदिर-मस्जिद विवाद और हिन्दी पत्रकारिता।

२. कु० प्रीति अग्रवाल—देवरात : एक आलोचनात्मक अध्ययन।

३. सुमेधा रानी—सोहन लाल द्विवेदी कृत 'संजीवनी' का आलोचनात्मक अध्ययन।

४. सुगंध पाण्डेय—नरेश मेहता के खण्डकाव्यों का अनुशीलन।

० कई छात्र पी-एच० डी० उपाधि हेतु शोधकार्य कर रहे हैं।

० विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली में विभाग का प्रतिनिधित्व किया।

डा० ज्ञानचन्द रावल :
एम० ए०, पी-एच० डी० (गुरुकुल कांगड़ी वि०)।

—रीडर।

० एकेडमिक स्टाफ कालेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित हिन्दी रिफ्रैशर कोर्स में भाग लिया।

० इनके निर्देशन में कई छात्र पी-एच० डी० उपाधि हेतु कार्य कर रहे हैं।

डा० भगवान देव पाण्डेय :
एम० ए०, पी-एच० डी० (काशी हिन्दू वि०) :

—रीडर।

० इनके निर्देशन में दो छात्राओं ने लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया।

० इनके निर्देशन में कई छात्र पी-एच० डी० उपाधि हेतु कार्य कर रहे हैं।

श्री कमल कान्त बुधकर :
एम० ए० (मेरठ वि०)।

—प्राध्यापक।

० नवभारत टाइम्स में कई आलेख और टिप्पणियाँ प्रकाशित हुई।

० हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों के प्रायोगिक समाचार पत्र 'शतपथ' के प्रकाशन में सक्रिय सहयोग दिया।

० एकेडमिक स्टाफ कालेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित हिन्दी रिफ्रैशर कोर्स में भाग लिया।

० अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सक्रिय भागीदारी।

——

अंग्रेजी विभाग

सत्र १९९३-९४ की अवधि में अंग्रेजी विभाग का विवरण निम्न-लिखित उल्लेखनीय है :—

छात्र प्रवेश संख्या :

विभाग एवं विभागीय विस्तार पटल योजना के अन्तर्गत छात्रों की प्रवेश संख्या इस प्रकार है :—

एम. ए. प्रथम वर्ष	...	३३
एम. ए. द्वितीय वर्ष	...	०९
बी. ए. प्रथम वर्ष	...	३५
अलंकार प्रथम वर्ष	...	१२
अलंकार द्वितीय वर्ष	...	०६
अलंकार तृतीय वर्ष	...	०८

शोध समिति :

विभाग में उक्त सत्र में शोध समिति की मीटिंग हुई। मीटिंग में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो० बी. एस. दाहिया (वर्तमान कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) पधारे। तीन शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत विषयों की रूपरेखा पर विचार किया गया और तीनों ही विषयों को स्वीकार कर लिया गया।

सेमीनार एवं व्याख्यान :

अंग्रेजी विभाग ने इण्डियन एसोसिएशन फॉर कनैडियन स्टीज के सहयोग से Themes and Movements in Litt. : Canada and

India विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जिसमें भारतीय एवं कनैडियन विश्वविद्यालयों, शास्त्री इन्डो–कनैडियन इन्स्टीच्यूट, देहली, कनैडियन एम्बैसी के विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर आए हुए दो विदेशी विद्वानों ने विभाग में विशेष व्याख्यान दिए। कनाडा के प्रसिद्ध उपन्यासकार डा० एम.जी. वासनजी ने Immigrant Writers in Canada विषय पर एवं डा० टी. आर. क्रोले Guelph Univ. Canada ने Quebec and Canada : An Unresolved Debate पर व्याख्यान दिए।

इसके अतिरिक्त विभाग के तत्वावधान में एक कनैडियन समाजशास्त्री डा० सैलेस ने Present Turmoil in Canada विषय पर व्याख्यान दिया।

प्राध्यापकों का कार्य विवरण :

डा० नारायण शर्मा ने पिछले सत्र में रोटेशन प्रणाली के अन्तर्गत विभागाध्यक्ष का भार सम्भाला। इसी सत्र में डा० शर्मा को प्रोफेसर पद पर नियुक्त किया गया।

प्रो० शर्मा विभिन्न विश्वविद्यालयों की शोध समितियों एवं बोर्ड आफ स्टीज के सदस्य हैं। इस वर्ष उन्हें गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा उक्त समितियों के लिए आमंत्रित किया गया। सत्र के मध्य में उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र में आयोजित किए जा रहे Orientation Course में दो व्याख्यान दिए। विभाग में हुए सेमीनार का निर्देशन भी प्रो० शर्मा द्वारा किया गया। इनके निर्देशन में सात शोधार्थी कार्य कर रहे हैं।

श्री सदाशिव भगत ने विभागाध्यक्ष के रूप में रोटेशन प्रणाली के अन्तर्गत अपना सत्र पूरा किया और विभाग में आयोजित अनेक कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन किया। श्री भगत के निर्देशन में श्रीमती शशि प्रभा मेहरोत्रा द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध Human Relationship in Anita Desai's Novels पर ली मौखिक परीक्षा के पश्चात् शोध उपाधि प्रदान करने का निर्णय लिया गया। इनके निर्देशन में तीन अन्य शोधार्थी कार्य कर रहे हैं।

डा० श्रवण कुमार शर्मा ने विभाग में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार का संयोजन किया। डा०शर्मा की एक पुस्तक Tagore As a Poet देहली से एवं एक शोध लेख A Study of Shelley's Poetry in the Light of **Vakrokti**, Meerut Univ. Comparative Journal में प्रकाशित हुआ। इनके निर्देशन में श्री शम्भु प्रसाद सुन्दरियाल द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध **The Bhagavadagita** and the Poetry of W. B. Yeats : A Study in Influence पर ली मौखिक परीक्षा के पश्चात् शोध उपाधि प्रदान करने का निर्णग लिया गया। डा० शर्मा के निर्देशन में चार अन्य शोधार्थी कार्यरत हैं।

डा० अम्बुज शर्मा ने विभागीय सेमीनार में सक्रिय रूप से भाग लिया। इनके निर्देशन में तीन शोधार्थी कार्यरत हैं जिनमें दो शोधार्थियों के विषय पिछले सत्र की शोध समिति में स्वीकार किए गए। सत्रारम्भ से डा० शर्मा इलैक्ट्रानिक प्रचार प्रसार मीडिया के अन्तर्गत बन रही वैदिक गीतों की कैसेट में मनोयोग से संलग्न हैं।

डा० कृष्णावतार अग्रवाल ने विभाग के सभी क्रियाकलाषों में सहयोग देते हुए निम्नांकित दो किताबें William Shakespeare's Twelfth Night, Essays and Essayists प्रकाशित कीं।

डा० अग्रवाल के पिछले सत्र में निम्नलिखित लेख भी प्रकाशित हुए :—

1. The Poetic Achievement of **Toru** Dutt.
2. हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छंदवाद।
3. शिक्षा के बदलते मूल्य।
4. Great Britain, The New E. C. President.

इन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एक Orientation Course एवं रुड़की विश्वविद्यालय से एक Computer Course किया।

——

मनोविज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र १९९३-९४ में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का प्रवेश निम्नांकित रहा :—

बी. एस-सी./अलंकार/बी. ए. प्रथम वर्ष		१४१
बी. एस-सी./अलंकार	द्वितीय वर्ष	१२
अलंकार	तृतीय वर्ष	६
एम. ए /एम. एस-सी.	प्रथम वर्ष	५१
एम. ए./एम. एस-सी.	द्वितीय वर्ष	२६
शोध छात्र		११

बोर्ड आफ स्टडीज :

इस सत्र में मनोविज्ञान की बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग हुई जिसमें मेरठ विश्वविद्यालय से विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो० एस. एन. राय ने भाग लिया। इस मीटिंग में पाठ्यक्रम का नवीनीकरण किया गया। पाठ्यक्रम के नवीनीकरण में विभाग के सभी सदस्यों का योगदान उल्लेखनीय है।

शोध समिति :

इस सत्र में विभाग की शोध समिति की बैठक में पांच छात्रों का शोध विषय स्वीकार किया गया। सभी शिक्षकों के निर्देशन में विभाग के अन्तर्गत शोधकार्य चल रहा है। शोध समिति में विषय विशेषज्ञ के रूप में सागर विश्वविद्यालय से डा० ए. के. पुरोहित ने भाग लिया।

इस सत्र में विभाग के सभी शिक्षकों की शैक्षणिक/शोध सम्बन्धित गतिविधियां इस प्रकार हैं :—

प्रो० ओ. पी. मिश्र :

प्रो० ओ. पी. मिश्र गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गढ़वाल विश्वविद्यालय की रिसर्च कमेटी और बोर्ड आफ स्टडीज में विषय-विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत हुए। कानपुर विश्वविद्यालय ने भी उन्हें अपने यहां की रिसर्च कमेटी और बोर्ड आफ स्टडीज में विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया। इस वर्ष काशी विद्यापीठ ने भी प्रो० मिश्र को अपने यहां रिसर्च डिग्री कमेटी में विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया। इसके अतिरिक्त आप लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली तथा अन्य प्रदेशीय लोक सेवा आयोग में विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रो० मिश्र विश्वविद्यालय के सेवायोजन केन्द्र के प्रमुख भी हैं। प्रो० मिश्र के निर्देशन में ५ शोध छात्र पी-एच. डी. कार्य कर रहे हैं तथा १० एम. ए./एम. एस-सी. के विद्यार्थियों ने अपना लघु शोध प्रबंध पूरा किया। इस वर्ष कानपुर बिश्वविद्यालय में इण्डियन साइकोलाजी एसोसियेशन द्वारा आयोजित कान्फ्रेन्स के एक सेशन के चेयरमैन के रूप में आमंत्रित किये गये।

श्री सतीशचन्द्र धमीजा :

श्री सतीश चन्द्र धमीजा का विभाग की उन्नति में विशेष योगदान है। इनके निर्देशन में १० एम. ए./एम. एस-सी. के विद्यार्थियों ने अपना लघु शोध प्रबंध पूरा किया तथा आप पी. एच-डी. कार्य करने के लिए पंजीकृत हैं।

डा० एस. के. श्रीवास्तव :

डा० एस. के. श्रीवास्तव की शैक्षणिक एवं शोध सम्बन्धित गतिविधियां इस प्रकार हैं :—

(१) एम. ए./एम. एस-सी. के १० विद्यार्थियों ने इनके निर्देशन में लघु शोध प्रबध पूरा किया।

(२) तीन शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं तथा तीन शोधपत्र प्रकाशित होने के लिए स्वीकार किये गये हैं।

(३) जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा आयोजित एनुअल कान्फ्रेन्स आफ इण्डियन एकेडमी आफ एप्लाईड साइकोलॉजी में भाग लिया

तथा 'कोरेलेशन स्टडी आफ एडजस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेन्ट मोटीवेशन' विषय पर शोधपत्र भी पढ़ा।

(४) ८१वें इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसियेशन (राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) में भाग लिया तथा 'एनजाइटी एण्ड एडजस्टमेन्ट अमंग इण्डस्ट्रीयल एम्प्लायज' विषय पर शोधपत्र भी पढ़ा।

(५) डा० श्रीवास्तव को २३वें इण्टरनेशनल कांग्रेस आफ एप्लाइड साइकोलॉजी (मैड्रिड स्पेन) में 'लीडरशिप स्टाइल्स एण्ड देयर इफैक्टिवनेस अमंग प्राइवेट सेक्टर एम्प्लाइज इन ए डेवलपिंग कन्ट्री' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया है। इसके निर्देशन में दो छात्र शोध कार्य कर रहे हैं।

डा० सी. पी. खोखर :

डा० सी. पी. खोखर के निर्देशन में ८ विद्यार्थियों ने (एम. ए./एम. एस-सी.) अपना लघु शोधप्रबंध पूरा किया तथा दो छात्र शोधकार्य कर रहे हैं।

विभाग में कार्यभार अत्यधिक होने के कारण श्री लाल नरसिंह नारायण का भी सहयोग लिया गया तथा दो शोध छात्रों श्री तन्मय भट्टाचार्य एवं श्री सतीश चन्द्र पाण्डेय की नियुक्ति प्रवक्ता पद पर तदर्थ आधार पर भी की गई।

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग

प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पत्रांक एफ-५-१०/६२ (एन० एफ० ई०-१), दिनांक मार्च ६,१९९३ के माध्यम से दो लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। सत्र १९९३-९४ में निम्नलिखिय कार्यक्रम संचालित किये गये :—

१- जन-शिक्षण निलयम –५

२- सतत् शिक्षा कोर्स –५

३- जनसंख्या शिक्षा क्लब –१

४- साक्षरता कार्यक्रम

१. जन-शिक्षण निलयम :

विभाग द्वारा जमालपुर न्याय पंचायत में पांच जन-शिक्षण निलयम-जमालपुर, गाड़ोवाली, अजीतपुर, जगजीतपुर एवं सराय में संचालित किये गये। इन निलयमों में पत्र, पत्रिकायें एवं खेल का सामान ग्रामीणों को विभाग की ओर से निःशुल्क उपलब्ध कराया गया।

२. सतत् शिक्षा कोर्स :

विभाग द्वारा ८ (आठ) लघु प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। ये प्रशिक्षण–बिजली के घरेलू उपकरणों की मरम्मत, पेन्टिग, धूम्ररहित चूल्हा, सिलाई, सौन्दर्य एवं मेहन्दी सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये।

३. जमसंख्या शिक्षा :

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार भी वितरित किये गये।

४. साक्षरता कार्यक्रम :

विभाग द्वारा जमालपुर न्याय पंचायत में परिवार सर्वेक्षण कराया गया। सर्वेक्षण में पाया कि क्षेत्र में ४,००० निरक्षर एवं २,२०० स्वयं सेवी हैं। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु ग्रामीण स्तर पर साक्षरता समितियों का गठन किया गया। साक्षरता समितियों के माध्यम से चयनित क्षेत्र में २५०० साक्षरता किटें बांटी गयीं।

प्रकाशन :

"जनसंख्या शिक्षा" (निबंध संकलन) नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई।

संगोष्ठी/कार्यशाला सहभागिता :

डा० आर. डी. शर्मा, विभागाध्यक्ष ने निम्नलिखित संगोष्ठी/कार्यशाला में भाग लिया :—

१- यूनीसेफ एवं अवध विश्वविद्यालय द्वारा एड्स सम्बन्धी कार्यशाला में दिनांक ११-१३ जनवरी, १९९४ को अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में भाग लिया।

२- दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा "जनसंख्या नीति" पर एकदिवसीय संगोष्ठी में दिनांक १५ जनवरी, १९९४ को भाग लिया।

——

गणित विभाग

सत्र १९९३-९४ में छात्र संख्या पर्याप्त अच्छी रही। वस्तुत: बी० एस-सी० भाग एक, दो व तीन में क्रमश: तीन, दो व एक खण्ड (सेक्शन) थे। स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र एवं छात्राओं की अलग-अलग परिसरों में कक्षाओं का संचालन हुआ। परिणाम पर्याप्त अच्छे रहे। उल्लेख्य है कि एम० ए०/एम० एस-सी० उत्तरार्द्ध (गणित) में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वालों की संख्या (लगभग) दस है।

विभागाध्यक्ष श्री विजयपाल सिंह के संयोजकत्व में आगामी (१९९४-९५) एवं इसके बाद के सत्रों हेतु स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम का पुनर्मूल्यांकन किया गया तथा नियमित छात्रों हेतु पूर्वार्द्ध में कम्प्यूटर विज्ञान का एक प्रश्न-पत्र पढ़ाये जाने की व्यवस्था की गई है।

प्रो० एस. एल. सिंह, डा० वीरेन्द्र अरोड़ा एवं डा० एम पी सिंह के निर्देशन में गणित की नवीन विधाओं एवं प्राचीन भारतीय गणित में कतिपय अभ्यर्थी पी० एच-डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं।

प्रो० एस.एल. सिंह ने विज्ञान परिषद् आफ इण्डिया के तत्वावधान में एच. बी. टी. आई. कानपुर में आयोजित सम्मेलन (अगस्त १९९३) में भाग लिया। इसके अतिरिक्त Mathematics for Industrial Develp-ment (आगरा, मार्च १९९४) में आमंत्रित भाषण दिया तथा सत्र की अध्यक्षता भी की। जून १९९४ में University of Wisconsin, Eau-Clairs (U. S. A.) में शोध कार्य हेतु प्रो० सिंह की यात्रा हुई तथा वहां गणित की प्राचीन एवं नवीन विधाओं पर चार भाषण दिए।

प्रो० सिंह के निर्देशन में दो अभ्यर्थियों ने अपना पी० एच-डी० शोध कार्य पूर्ण किया।

———

भौतिकी विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में एक Visiting Prof, २ रीडर तथा ३ प्रवक्ता स्थाई तथा २ प्रवक्ता अस्थाई कार्य कर रहे हैं। इस समय चार प्रयोगशाला बी० एस-सी० प्रथम, द्वितीय वर्ष तथा तृतीय वर्ष एवं एक M.Sc.(P.) Physics, तथा एक M.Sc. (Final) Physics तथा दो श्याम प्रकोष्ठ हैं। B.Sc. एवं M.Sc. के लिए पुस्तकें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विकास अनुदान U. G C. Dev. grant से खरीदी गई हैं। विभाग में एक Colour T.V. भी विद्यमान है जो कि B.Sc. एवं M.Sc. Physics के विद्यार्थियों को U. G. C. प्रोग्राम दिखाने के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो रहा है। M.Sc. Physics कक्षाओं में Vedic Thought का भी समावेश कर दिया गया है।

सन् १९९३-९४ में भौतिक विज्ञान विभाग में छात्रों की संख्या

B.Sc.–I	254
B.Sc.–II	171
B.Sc –III	61
M.Sc.–(Prev)	10
M.Sc. Final 1992	20
M.Sc. Final (93-94) Including Girls.	20
Resecrch में पंजीकरण	6

सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

परीक्षा परिणाम :

पिछले वर्षों की भांति १९९२-९३ का परीक्षा परिणाम अच्छा रहा।

प्रगति रिपोर्ट

विभाग में २३-१-६४ को राष्ट्रीय स्नातक परीक्षा (N.G.P.E-94) सम्पन्न कराई गई तथा Dr. Pathak को एक शोध पत्रिका में Refree के रूप में कार्य करने का गौरव प्राप्त हुआ। तथा एक पत्र Geophysical Research (D-part) छपने के लिए स्वीकृत हुआ। डा० यशपाल सिंह ने B.Sc.–I के लिए प्रयोगात्मक पुस्तक को Publish कराया।

——

रसायन विज्ञान विभाग

रसायन विज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय को गौरवान्वित करने में सदैव अग्रणी रहा है। विभाग में एम० एस-सी० केमिस्ट्री (कॉमर्शियल मेथड्स ऑफ केमिकल एनेलिसिस) कोर्स चल रहा है। विश्वविद्यालय की गरिमा के अनुरूप, वेदों और आयुर्वेद में रसायन विज्ञान के अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए "कैमिस्ट्री इन वैदिक लिटरेचर एवं आयुर्वेदिक ड्रग्स" नाम से विशेष प्रश्नपत्र का उक्त कोर्स में समावेश किया गया है। भारत सरकार की नीति के अनुसार यह विशिष्ट रोजगारोन्मुख कोर्स है तथा अभी तक जिन छात्रों ने इसके अन्तर्गत अध्ययन किया है, वे सभी देश के प्रतिष्ठित उद्योगों में सम्मानित पदों पर कार्य करते हुए, विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे हैं। विभाग में पी० एच-डी० प्रोग्राम के अन्तर्गत डा० आर. के. पालीवाल, डा० ए. के. इन्द्रायण, डा० कौशल कुमार, डा० आर. डी. कौशिक एवं डा० रणधीर सिंह के निर्देशन में विभिन्न विषयों पर शोधार्थी कार्य कर रहे हैं।

डा० इन्द्रायण ने जापान में अक्टूबर, १९९३ में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया एवं अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इनका एक शोधपत्र "एशियन जर्नल ऑफ कैमिस्ट्री" में प्रकाशित हुआ। साथ ही इनकी पुस्तक "फन्डामेन्टल्स इन कैमिस्ट्री" के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन हुआ।

डा० रणधीर ने दो शोधपत्र प्रकाशनार्थ भेजे। डा० आर.डी. कौशिक की रेडियोधर्मिता विषय पर आकाशवाणी नजीबाबाद से वार्ता प्रसारित हुई। उन्हें रीडर पद पर प्रोन्नति प्रदान की गई।

डा० कौशल कुमार ने वारंगल (आ० प्र०) में हुई राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में भाग लिया एवं अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इनका एक शोधपत्र "कैमिस्ट्री ऑफ ट्रेडीशनल रैसपीज यूज्ड इन लीवर डिसआर्डर" अगस्त, १९९४ में, जुटेन्डो यूनिवर्सिटी, टोक्यो (जापान) में हो रही अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के लिये स्वीकृत हुआ।

डा० श्रीकृष्ण ने अनेक विभागीय कार्य सम्पन्न कराने में उल्लेखनीय सहयोग दिया।

विभाग के शिक्षकों के निर्देशन में, एम० एस-सी० के छात्रों ने अपने शोध डिजर्टेशन पूर्ण किये तथा उन्होंने डा० आर. के. पालीवाल तथा डा० कौशल कुमार के साथ, पी० सी० आर० आई०, बी० एच० ई० एल० जाकर विभिन्न उपकरणों की कार्यप्रणाली को समझ कर, ज्ञान अर्जित किया।

विभाग में एक छोटी उपकरण प्रयोगशाला एवं एक शोध प्रयोगशाला का निर्माण कराया गया। माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी के प्रयास से बी० एस-सी० के छात्रों के लिए एक नयी प्रयोगशाला का निर्माण कराया गया।

श्री शशिभूषण (लैब टैक्नीशियन), श्री सुरेश कुमार गर्ग (प्रयोगशाला सहायक), श्री जयपाल सिंह, श्री मानसिंह एवं श्री नरेश सलीम ने विभाग को सुचारू रूप से चलाने के लिए पूर्ण लगन एवं तत्परता से सहयोग किया।

——

जीव-विज्ञान संकाय

संकाय के सभी प्राध्यापक शिक्षण-कार्य के साथ-साथ शोधकार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९४ में भी इस संकाय का बी० एस-सी० तृतीय वर्ष का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संकायों में सर्वाधिक विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी अर्जित की। यह अत्यन्त हर्ष और विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा का विषय है कि इस संकाय से निकलने वाले स्नातक व स्नातकोत्तर अनेक महत्वपूर्ण संस्थानों जैसे Cipla, Cadila, Ranbaxy, Lupin, Unichem, Max, Dabur, Mohan Meakins आदि उच्चकोटि की कम्पनियों में भिन्न-भिन्न पदों पर आसीन हैं।

संकाय में अनुभवी शिक्षकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का शोधकार्य भी कराया जा रहा है। विभिन्न परियोजना (भारत सरकार द्वारा प्रदत्त राशि) के तहत बहुत ही उपयोगी उपकरणों का समावेश इस संकाय में निरन्तर हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि गत सत्र में प्रोफेसर डी०के० माहेश्वरी, डीन जीव विज्ञान संकाय को जापान सरकार ने अपने यहां Visiting Professor के रूप में आमंत्रित किया। भविष्य में उनको चार सप्ताह के प्रवास हेतु जर्मनी के उल्म विश्वविद्यालय ने guest Professor के रूप में आमंत्रित किया है। प्रो० बी. डी. जोशी, भू० पू० डीन संकाय, ब्रिटेन में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने गए तथा अन्य विश्वविद्यालय भी Visit किए।

वनस्पति विज्ञान में अनेक गणमान्य वैज्ञानिक मुख्य रूप से प्रोफेसर कोनिग (जर्मनी), प्रोफेसर बेला (हंगरी) के नाम विशेष रूप से उल्लेखित करना आवश्यक है। ये दोनों वैज्ञानिक भारत सरकार के Bilateral Programmes के अन्तर्गत, प्रो० माहेश्वरी के निमंत्रण पर संकाय में पधारे तथा अपने उच्चकोटि के शोधकार्य से विद्यार्थियों को लाभान्वित कराया। इस संकाय की विशेषता यह है कि यहां भारत सरकार के ही नहीं अपितु

विदेशों के वैज्ञानिक भी यहाँ हो रहे शोधकार्य में विशेष रुचि ले रहे हैं।

भविष्य में प्रोफेसर निशीमुरा (जापान), एक माह के लिए संकाय में पधार रहे हैं। आशा है उनकी इस यात्रा से संकाय में विशेष आयाम जुड़ेंगे और शीघ्र ही यह संकाय भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेशों में भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का नाम रोशन करेगा।

उपाध्यायों का कार्य-विवरण

Professor D. K. Maheshwari,
Dean, Faculty of Life Sciences,
P. G. Studies and Research in Microbiology,
Department of Botany

—Acting as Dean, Student Welfare.

—Elected Executive Councillor, Indian Botanical Society for period of three years.

—Invited as Guest Professor for a period of 4 weeks to visit University of Ulm (Germany) in the year 1995.

—Invited to participate in the 7th International Union of Microbiological Societies Conference at Institute of Microbiology, Videnska, Prague (Czech Republic) from July, 3-8 1994.

—Invited to deliver lecture at 82nd session Indian Science Congress Association to be held at Jadhavpur, Calcutta.

Invited as Resource person :

(a) In the UGC Refresher Course on 'Biodiversity' at APS University, Rewa.

(b) Invited to deliver lecture in the Department of Microbiology, G. N. Khalsa College, Kurukshetra University, Yamuna Nagar.

(c) Rotary Club, Kotdwar.

(d) Acted as Resource person and delivered lecture at University of Rajasthan, Lucknow University, Kurukshetra University College, R. D. University, Jabalpur.

—Acted as UGC expert to visit University of Roorkee and Delhi University during UGC JRF/Lecturership.

—Submitted Major research project to DSIR, UGC etc. for financial support.

—Chief-course co-ordinator, Vocational Course submitted for grant-in-aid to UGC, New Delhi.

Expert Member :

Board of Studies in Microbiology at R. D. University Jabalpur and Dr. H. S. Gaur University, Sagar.

Expert in Panel of :

INSA, UGC, DBT, MNES and DST.

—Appointed as subject expert in Microbiology, Ministry of Human Resource, Govt. of India, New Delhi.

—Some rare plant species have been planted in the Botanical Garden of the Department under the supervision of Prof. Maheshwari.

Creative Achievements :

—Ph. D. Awarded to Dr. Surendra Kumar on the topic "Studies on waste water, the irrigation potential and effect on leguminous plants and rhizobia" from Gurukula Kangri University, Hardwar.

—Ph. D. thesis submitted in Microbiology on the topic "Production of ethanol by aquatic biomass residues", Barkatullah University, Bhopal.

Research Publications in International Journals : 08.

1- Paper mill sludge as a potential source for cellulase Production by *Trichoderma reesei* Qm 9123 and *Aspergillus niger* using mixed cultivation. Carbohydrate polymers (England) 23, 161-163, 1994.

2- Bioconversion of Cellulose-Facts and prospects. In Frontiers of Microbial Technology (P. S. Bisen ed.), CBS Publisher and Distributors Delhi, India, 279-289, 1994.

3- Lipids variation at different temperature on two species of *Xenorhabdus*. J. Basic Microbiol. (Germany) 34 (4) : (1994)

4- On the sensitivity of carabaryl and 2,4-d to nitrogenase and uptake hydrogenase activity in agar culture and root nodules formed by *Rhizobium leguminosarum*. J. Gen. Appl. Microbiol. (Japan), (Revised submitted), 1994.

5- Saccharification of lignocellulosic waste by *Trichoderma Pseudokiningii* cellulase. Carbohydrate polymers (England) communicated, 1994.

6- Influence of nitrogen sources on cellulase biosynthesis in *Trichoderma piluriferra*. Mycol. Res. (UK), (Revised submitted) 1994.

7- Bioconversion of water hyacinth to compost and its chemical characteristics. Compost Sci. Utilization (USA) (Communicated), 1994.

8- Effect of Carbaryl and 2,4-D on growth, nitragenase and uptake hydragenase activity in agar culture and root nodules formed by *Bradyrhizobium japonicum*. Microbiol. Res. (Germany), Accepted 1994.

इस संकाय से इस वर्ष बी० एस-सी० की उपाधि लेकर निकले अनेक छात्रों को भारतवर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

सत्र १९९३-९४ के प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्न रही।

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी० एस-सी० प्रथम	बायो०	७५
बी० एस-सी० द्वितीय	बायो०	४९
बी० एस-सी० तृतीय	बायो०	५२
एम० एस-सी० प्रथम	माइक्रो	१२
एम० एस-सी० द्वितीय	माइक्रो	११

——

जन्तु विज्ञान विभाग

१. विभाग की स्थापना :

जन्तु विज्ञान विभाग की स्थापना सन् १९६१ में हुई थी। इस विभाग के सर्वप्रथम अध्यक्ष के रूप में डा० सी. एस. गुप्ता ने कार्यभार ग्रहण किया, जो सन् १९८० में सेवानिवृत्त हो गए। तत्पश्चात् जन्तु विज्ञान विभाग के अध्यक्ष के रूप में डा० बी. डी. जोशी द्वारा सन् १९८२ में कार्यभार ग्रहण किया गया। आपने जौलाई सन् १९९० तक इस पद की गरिमा को बनाए रखा। तत्पश्चात् डा० टी. आर. सेठ द्वारा जौलाई १९९० से दिसम्बर १९९२ तक अध्यक्ष पद सुशोभित किया गया। दिसम्बर १९९२ से अब तक पुन: डा० बी. डी. जोशी द्वारा विभागाध्यक्ष का कार्यभार सम्भाला हुआ है। वर्तमान में डा० बी. डी जोशी के नेतृत्व में विभाग प्रगति-पथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है।

२. विभाग की मौलिक छवि :

इस विभाग में आरम्भ से ही स्नातक एवं स्नातकोत्तर माइक्रोबायोलाजी कक्षाओं के अध्यापन कार्यों के साथ-साथ विभिन्न शोध परियोजनाओं पर भी कार्य किया गया। जिसमें विभाग को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। विभिन्न शोध परियोजनाओं को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा पर्यावरण मंत्रालय द्वारा अनुदान प्रदत्त किए गए हैं। विभाग में सन् १९९२-९३ से जूलोजी विषय में स्नातक (आनर्स) कक्षा का अध्यापन कार्य भी प्रारम्भ हो गया है।

Himalayan Journal of Environment & Zoology नामक शोध पत्रिका का नियमित प्रकाशन विगत् ८ वर्षों से विभाग के प्राध्यापकों द्वारा अपने ही प्रयास से सुचारू रूप से किया जा रहा है। शिक्षा जगत में इस शोध पत्रिका की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर बढ़ती जा रही है। विभाग द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का भी आयो-

जन किया जाता रहा है। साथ ही बिभाग के प्राध्यापक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं।

अतः जन्तु विज्ञान विभाग अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा विश्वविद्यालय के स्तर को निरन्तर ऊँचा उठाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

३. विभागीय शिक्षक :

नाम	पद	शोध कार्य का क्षेत्र
डा० बी. डी. जोशी	प्रोफेसर/अध्यक्ष	फिश-फिजियोलॉजी/ एन्वायरमैन्टल बायोलॉजी
डा० टी. आर. सेठ	रीडर	एनाटॉमी/मारफोलॉजी
डा० ए. के. चोपड़ा	रीडर	पैरासिटोलॉजी/फिश-बायोलॉजी
डा० डी. भट्ट	प्रवक्ता	एन्वायरमैन्टल बायोलॉजी/ एनिमल बिहेवियर
डा० डी. आर. खन्ना	प्रवक्ता	लिम्नोलॉजी/फिश-बायोलॉजी

इनके अतिरिक्त इस वर्ष विभाग में निम्न दो अन्य महानुभावों ने तदर्थ नियुक्ति पर अध्यापन का कार्य किया।

(१) डा० आर. सी. एस. विष्ट
(२) श्री रविकान्त

४. विभागीय शिक्षकेत्तर कर्मचारी :

(१) श्री हरीश चन्द्र, प्रयोगशाला सहायक
(२) श्री प्रीतम लाल, प्रयोगशाला अटैन्डैन्ट
(३) श्री शशिकान्त धीमान, सेवक
(४) श्री रजत सिन्हा, स्टोर कीपर/लिपिक
(५) प्रयोगशाला सहायक—एक पद रिक्त
(६) प्रयोगशाला अटैन्डैन्ट—एक पद रिक्त

१. डा० बी. डी. जोशी, प्रोफेसर :

प्रो० जोशी विभागाध्यक्ष के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के अनेक

महत्वपूर्ण कार्य भी देख रहे हैं। वर्तमान में प्रो० जोशी जन्तु विज्ञान संकाय के डीन (संकायाध्यक्ष) का कार्यभार भी सम्भाले हुए हैं।

(२) प्रो० जोशी माइक्रोबायोलॉजी विषय के कोआर्डिनेटर पद का भार भी वहन कर रहे हैं। उनके निर्देशन में माइक्रोबायोलॉजी विषय निरन्तर प्रगति कर रहा है और हमारे छात्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल का यश फैला रहे हैं। इसी श्रृंखला में प्रो० जोशी के निर्देशन में इस सत्र में निम्न चार छात्र अपना M.Sc. थिसीस का कार्य कर रहे हैं :—

१. कु० गायत्री भसीन २. कु० सीमा त्यागी ३. श्री सुमित्र पाण्डे
४. श्री संगमा मैती।

(३) प्रो० जोशी ने विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के कार्यक्रमों को सफलता॰ पूर्वक निभाया।

(४) प्रो० जोशी वर्तमान में विश्वविद्यालय के चीफ प्रोक्टर का कार्य भी कर रहे हैं।

(५) प्रो० जोशी ने इस सत्र में पुनः वार्षिक परीक्षाओं में उड़नदस्ता प्रमुख का कार्य किया।

(६) प्रो० जोशी ने नवम्बर १९९३ में दिल्ली में हुई "पीपुल्स कमीशन आन इनवायरोनमेन्ट एण्ड डेवलपमेन्ट इण्डिया" के तत्वावधान में हुई राष्ट्रीय गोष्ठी में विशेष आमंत्रित विद्वान के रूप में भाग लिया। उक्त गोष्ठी में प्रो० जोशी द्वारा व्यक्त विचारों को उक्त कमीशन की पुस्तिका में बहुत जगह उद्धत किया गया है।

(७) प्रो० जोशी ने इस सत्र में जम्मू विश्वविद्यालय के 'बायोसाइन्स' विभाग में एक व्याख्यान दिया।

(८) प्रो० बी डी. जोशी ने जुलाई-अगस्त १९९३ में ब्रिटेन की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान प्रो० जोशी ने "Physiology Teaching Workshop for Scientists from Developing Countries" के 2nd International Workshop में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उक्त कार्यशाला इनवरनेस में 25 July से

31 July 1993 तक हुई। तदुपरान्त प्रो० जोशी ने Glasgow University में हुई 32nd International Congress of Physiological Sciences में १ अगस्त से ७ अगस्त ९३ तक भाग लिया तथा अपना एक शोधपत्र प्रस्तुत किया। वहां प्रो० जोशी ने ग्लासगो विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान एवं माइक्रोबायलॉजी विभागों में जाकर विचार विमर्श किया तथा सम्पर्क स्थापित किये।

डा० बी. डी. जोशी के विगत सत्र में निम्नलिखित शोधपत्र प्रकाशित हुए :—

1-Joshi B. D., Pathak, J. K., Singh, Y. N., Bisht, R. C. S. and Joshi, N. (1993) Phytoplankton production in the snow fed river Bhagirathi in the Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, *7* : 60-63.

2-Joshi, B. D., Pathak, J. K., Singh, Y. N., Bisht, R. C. S. and Joshi, P. C. (1993) On the physico-chemical characteristics of river Bhagirathi in the uplands of Garhwal Himalaya. *Him. J. Env. Zool.*, 7 : 64-75.

3-Joshi, B.D., Bisht, R. C. S. (1993). Some aspects of physicochemical characteristics of western Ganga Canal near Jwalapur at Hardwar. *Him. J. Env. Zool.*, *7* : 77-82.

4-Joshi, B. D. and Bisht, R. C. S. (1993). Seasonal variation in the physico-chemical characteristics of western Ganga canal near Jwalapur at Hardwar. *Him. J. Env. Zool.*, *7* : 83–90.

5-Joshi, B. D., Pathak, J.K., Singh, Y.N. Bisht, R. C. S., Joshi, P. C. & Joshi, Namita (1993). Assessment of water quality of river Bhagirathi at Uttarkashi. *Him. J. Env. Zool.*, 7 : 118-123.

6-Joshi, B. D. (1993). Effect of accessory pneumectomy on some haematological values of air breathing fish *Clarias batrachus*. *Him. J. Env. Zool.*, 7 : 183-190.

(९) प्रो० बी. डी. जोशी एवं डा० एम. एल. दीवान के सम्पादन में 'वैदिक फिलासफी एण्ड हिमालयन इको डेवलपमेन्ट' पुस्तक का विमोचन फरवरी १९९४ में इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर के तत्वावधान में डा० कर्णसिंह द्वारा किया गया।

(१०) प्रो० जोशी के निर्देशन में डा० राकेश चन्द्र सिंह बिष्ट को सत्र १९९३-९४ में जन्तु विज्ञान विषय में पी० एच-डी० की उपाधि प्रदान की गई।

(११) वर्तमान में भी प्रो० जोशी के निर्देशन में चार छात्र (१) श्री राजेश कुमार सोनी (२) कु० लक्ष्मी भगत (३) श्री त्रिलोकीनाथ जोशी (४) श्री विनोद प्रकाश सेमवाल शोधरत हैं।

२. डा० टी. आर. सेठ, रीडर :

डा० सेठ ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय क्रियाकलापों में सक्रिय योगदान दिया। आपने विज्ञान संकाय की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। डा० सेठ बिभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षा कार्यक्रमों में परीक्षक हैं।

३. डा० ए. के. चोपड़ा, रीडर :

Research papers published :

(i) Study on potability of water from different sources of two villages of Hardwar. In : *Advances in Limnology & Conservation of Endangered Fish species*, pp. 63-68, 1993.

(ii) Effect of Strigeid metacercaria on gills of *Schizothorax richardsonii. Acta parasitologica.* 38 : 99-100, 1993.

(iii) Sexual Dimorphism in *Psuedecheneis sulcatus* (M'Clelland). *Him. J. Env. Zool., 7 :* 101-102, 1993.

(iv) Relationship of Abiotic Variables and Benthic Fauna in river Yamuna of Garhwal-Himalaya, *Indian J. Ecol. 20 :* 53-58, 1993.

Scientific Articles :

(i) Ecology of River Yamuna and its Impact on Rural Life in Garhwal Himalaya, In : *Vedic Philosophy for Himalayan Ecosystem Development, Cincept's Discovery Himalayan* Series, No. 3 pp. 75-79, 1993.

(ii) Kya Jante Hein Aap Sanpo Ke Bare Mein, In : *Amar Ujala* p. 8, April 16, 1994.

Conference/workshop attended :

(i) Appreciation course in Parliamentary processes and procedures organised by BPST, Lok Sabha Secretariat, July, 19-23, 1993.

(ii) Planning workshop on AIDS Control and ORT Promotor through the Universities of Uttar Pradesh, organised by Dept. of Adult, Continuing and Extension Education, Avadh University, Faizabad, Jan 12-13, 1994.

Minor UGC project :

Epidemiological and pathological studies of parasitic diseases of human beings at Hardwar (Completed)

M.Sc. Dissertation :

(i) Partial purification of oxalate decarboxylase from *Collybia velutipes* and its diagnostic use in human urine for oxalate detection Mr. Sarjeet Singh.

(ii) Work of Mr. K. N. Joshi, Mr. Vijay Gupta and Miss Seema Sekhari is in progress.

Ph.D Work :

Ph.D work of Mr. Ravikant and Mr. Nandkishore is in progress.

Editing work :

As Executive Editor of Himalayan Journal of Environment and Zoology.

As NSS programme Coordinator—since March, 1992,

(i) Organized Essay Competition 'Swami Vivekanand and His Vision of India' at district level in Sept., 1993.

(ii) Organized prize-distribution function for the winners of the above essay competition in March, 1994.

४. डा० दिनेश भट्ट, प्रवक्ता :

डा० भट्ट के दो शोधपत्र निम्न दो अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में

प्रस्तुतिकरण हेतु स्वीकृत हुए एवं प्रोसीडिंग्स में प्रकाशित हुए।

1. Effect of pinealectomy on the Circannual feeding rhythm in a tropical bird. Spotted munia. *Intl. Congr. Physiol. Sciences. Glasgow. U.K. Aug. 1993.*

2. Effect of different photocycles on the Circannual avian testicular rhythm. *Intl. Symp. Solar activity & other environmental factors Moscow* (Russia) *Sept./Oct. 1993.*

Ph.D. Work :

Ph.D. work of Ms. Marya Shah & Mr. Ramesh Sharma is in progress.

Editing Work :

Managing Editor of *Him. J. Env. Zool.*

M.Sc. Dissertation :

Antimicrobial effects of a few herbal extracts—Sandeep Singh.

Dissertation work of two other students are in progress.

Scientific Article :

In : Vedic philosophy for Himalaya Ecosystem Development, concept Discovery Himalayan Series. No. 3, 1993.

५. डा० डी. आर. खन्ना--प्रवक्ता :

डा० खन्ना ने विश्वविद्यालय एवं विभागीय क्रियाकलापों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पुस्तक—

"Ecology and Pollution of Ganga river, Ashish Publications, Delhi, 1 : 241

M.Sc. Dissertation work of two students is in progress.

(i) Iclithyofauna of the River Ganga at the foot hills of Garhwal Himalaya. Journal of Natural & Physical Science.

(ii) राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित क्रियाकलापों में छात्रों का मार्ग निर्देशन किया व दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन कांगड़ी ग्राम में किया।

(iii) Attended the Appreciation course in Parliamentary Process and Procedures for Professors/Lecturers, organised by BPST, Lok Sabha Secretariat from 19-23 July 1993.

(iv) Attended the training course for N.S.S. Programme officers organized by TOC, University of Roorkee, Roorkee, from June 21 to July 3 1993.

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में बी० एस-सी० वनस्पति विज्ञान और एम० एस-सी० मायक्रोबायलॉजी की कक्षाओं का पठन-पाठन होता रहा है। देश विदेश से निम्न विद्वान विभाग में आए।

१. डा० आर. पी. सिंह, बायोसाइन्स और बायो टेक्नोलॉजी विभाग रुड़की।

२. डा० स्वर्णजीत सिंह, वैज्ञानिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मायक्रोबियल टेक्नोलॉजी चण्डीगढ़।

३, डा० एच. कोनिंग, प्रोफेसर ऑफ मायक्रोबायलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ अल्म, जर्मनी।

४. डा० एल. बेला, डिपार्टमेन्ट ऑफ एप्लाइड माइक्रोबायलॉजी एवं बायोटेक्नोलॉजी, डेविसन विश्वविद्यालय, हंगरी।

५. डा० जी. डी. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष मेडिश्नल एण्ड एरोमेटिक प्लान्ट्स, प्लान्ट व ब्रीडिंग विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार।

विभाग में कुछ नई प्रजातियों का भी रोपण किया गया। अन्यत्र से कुछ इन्डस्ट्रीज में काम आने वाले सूक्ष्मजीवियों को Procure किया।

ग्रीष्म–अवकाश के दौरान ही विभागीय शिक्षक वर्ग ने शिक्षकेत्तर वर्ग के सहयोग से करीब ६५ औषधीय पौधों का वैज्ञानिक विश्लेषण कर हरबेरियम तैयार किया जिसका उपयोग बी० एस-सी० कक्षाओं के अध्ययन–अध्यापन में किया जा सकेगा।

विभाग में विभिन्न परियोजनाओं के तहत कुछ अत्यन्त संवेदनशील

उपकरणों का इन्स्टालेशन भी किया जा चुका है।

अतिसीमित सुविधाओं के बावजूद विभाग अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की ओर अग्रसर है। आशा है कि विश्वविद्यालय प्रशासन के सहयोग से शीघ्र ही बी० एस-सी० माइक्रोबायोलॉजी वर्ग की कक्षाएँ भी शुरू हो जाने का लक्ष्य है।

विभाग में पूर्व चली परियोजना "हैमालिक आर्किड" की पार्यवर्णिक जीव विज्ञान में रोपण किये गये रेयर आर्किड विभाग में लकड़ी के कोयले पर चल रहे हैं और बनस्पति विज्ञान और सूक्ष्म जीव विज्ञान के विद्यार्थियों के अध्ययन अध्यापन हेतु प्रयोग किये जा रहे हैं।

Dr. PURSHOTAM KAUSHIK reviewed the following two books.

1. Himalayan Botanical Researches by Prof. S. P. Khullar and Dr. M. P. Sharma of Punjab University Chandigarh. Puhlished by Ashish Publishing House, New Delhi.

2. Ecology of the Mountain Waters. Edited by S. D. Bhatt and R. K. Pande. Published by Ashish Publishing House, New Delhi.

Dr. Kaushik published the following write ups.

1. Antibacterial potential of *Pholidota articulata*—a study *in vitro* (Paper is jointly with Nand Kishore.) J. Orchid Soc. India 5 (1,2) : 93-96. 1991.

2. एन्टन वान लेवन हॉक विज्ञान गरिमा में सिंधु वैज्ञानिक तथा तकनिकी शब्दावली आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग भारत सरकार अंक ११।

3. The Cell : Structure and Function.
Jour. Sc. Res. Pl. & Med. 12 (3,4) : 5-23

4. D. N. A. and Reincarnation

"डी. एन. ए. और पुर्नजन्म" महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों पर आधारित।

Jour. Sc. Res. Pl. & Med. Volume 13-14 page 6-22

Dr. Kaushik also visited the World Book Fair on February 11,12 1994.

Dr. G. P. Gupta
Lecturer
P. G. Studies & Research in Microbiology
Deptt. of Botany
Gurukula Kangri University, Hardwar.

1. Attended a refresher course in "Plant tissue culture and biotechnology" at Botany Deptt., University of Rajasthan, Jaipur, Sept-Oct. (1993).

2. Arranged a academic tour with Prof. D. K. Maheshwari for M.Sc. final students to visit I. D. P. L. Virbhadra, RISHIKESH. (1994).

3. One dissertation entitled "Studies on miciflora associated with certain drug during storage period" was submitted and approved for award of M.Sc. degree in microbiology under my supervision (1993).

Dr. Navneet :
Lecturer

Attended orientation course at Academic Staff College, Kurukshetra University, Kurukshetra, from 27/7/93 to 23/8/93.

Attended XVIth Botanical Conference held at the Department of Biological Science, R. D. University, Jabalpur from 3rd to 5th of December, 1993.

Accompanied the team which participated in Inter University North Zone Quiz Contest at Ch. Charan Singh, Haryana Agriculture University, Hissar on 17th-18th of December, 1993.

A dissertation entitled, "Isolation and characterization of certain lipolytic fungi from oil mill wastes" has been submitted by Mr. Kushal Pal Tyagi under my supervision for the award of M.Sc. degree in Microbiology.

Joined as Life Member of Association of Microbiologists of India.

Research Papers Published :

1. Phytophthora Taxonomy—A recent approach in Fungal Ecology and Biotechnology. Eds. N. K. Dubey, B. Rai, D. K. Arora and P. D. Nariana. pp. 129-135. Rastogi Publications, Meerut, India. (1993).

2. Effect of some fungicides on soil dehydrogenase activity. Indian Journal of Microbial Ecology. 3 : 11-18 (1993).

3. Plant disease forecasting with special reference to late blight epidemic and its control. In Crop Epidemics, Microbes and Ecosystem Coservation. Eds. G. P. Agarwal and S. K. Hasija. pp. 17-22. Narendra Publishing House, Delhi, India.

——

Identification, screening of aquatic plant residue for energy generation and increasing biomass production by certain fast growing fuel wood species.

Sponsored by

Ministry of Non-Conventional Energy Sources, Govt. of India, New Delhi

Summary of work done in 1993-94

Principal Investigator : Prof. D. K. Maheshwari

Co-Investigator : Dr. Navneet

Research Staff : Ajay Khandelwal

: Rajesh Sawhney

: Hemendra Kumar

: Ravindra Kumar

Publications : Two

: "Microbial degradation of aquatic biomass by *Trichoderma viride* 992 and *Aspergillus wentii* 669 with reference to the physical structure". J. Basic Microbiol. 33 (1993) 1, 19-25.

: "Bioconversion of water hyacinth into compost and its chemical characteristics" Compost Sci, & Utilization. (Communicated).

"SUMMARY"

The physico-chemical parameters viz. Temperature, pH, Total solids, Cellulose, Hemicellulose, Lignin and C : N ratio were monitored during the bioconversion of water Hyacinth to compost. Maximum biodegradation of water hyacinth took place in the temperature range of 30°C-40°C and a shift in pH towards alkalinity was noticed. A significant reduction in Total solids, Cellulose, Hemicellulose and increase in Lignin content was observed. For mature compost C : N ratio was found to be 17 : 1. The response of *Acacia nilotica, A. catechu, Dalbergia sissoo* and *Leucaena leucocephala* to the application of compost was also assessed. The compost proved beneficial by increasing the Vegetative growth of all the four tree species alongwith Net Primary Productivity and Gross Primary Productivity.

The fresh shoot weight (FSW) of all the tree legumes under study showed a progressive increase with the age of plant. Under the influence of *Eichhornia* compost the maximum FSW of *D. sissoo, Leucaena leucocephala, Acacia catechu* and *A. nilotica* was 1.9, 3.42, 0.32 and 0.3 folds higher respectively in comparison to that in the garden soil while the application of the *Enhydra* compost increased the FSW by 75%, 116%, 24% and 19% respectively over that in the garden soil. Among all the four plant species, the maximum dry matter production was attained by *A. nilotica* growing in soil containing *Eichhornia* compost.

The Shoot length (SL) of all the tree species exhibited an increase in all the three sets in comparison to substandard soil. It was observed that the maximum shoot length in *Dalbergia sissoo* and *Leucaena leucocephala* recorded due to application of *Eichhornia* compost was 36% and 71% higher that in the garden soil. On the other hand, the shoot length of *Acacia catechu* and *Acacia nilotica* growing in compost *(Eichhornia)* mulched soil was 44% and 4% higher. Further, the observations indicated that *A. nilotica* attained highest shoot length under the influence of *Eichhornia* compost.

Leaf area was closely related to increase in age in all the four tree species. Further, it was interesting to note that SLA declined to the lower values with initial increasing pattern. In all the cases SLA

was minimum in the plants surviving in the *Eichhornia* compost mulched soil at the final stage of observations. While maximum SLA was observed under the influence of substandard soil, it was observed that the increased pattern of specific leaf weight at the concluding stages of observations.

It was observed that the improved soil status lowered the number of nodules in all the four tree species. The nodule number was minimum in response to application of *Eichhornia* compost. The observations on weight of nodule showed that the application of compost significantly increased the weight of nodules. Nodule weight per plant was minimum for *A. catechu* grown in substandard soil, while the maximum weight of nodule observed in *D. sissoo. The* nodule were also evaluated for their size. The application of compost significantly increased size of nodule. Smallest nodules were observed in plants grown in the substandard soils.

The increase in the productivity was maximum in *Acacia nilotica* followed by *Acacia catechu, Leucaena leucocephala, Dalbergia sissoo* recorded the lowest productivity after 120 days of germination. The response of tree legumes to the application of water hyacinth compost is indicative that the compost significantly increase the productivity of the plants. In all the fuel wood plant species the NPP was found to be increased significantly when grown in compost mulched soil. The application of the host specific *Rhizobium* also played a significant role in increasing the productivity of all the four tree legume under study.

Characterization of Rhizobial strain so as to have a better understanding about their potential is an important step, therefore, characterization and systematization of the Rhizobial strains isolated from the nodules of tree species was also carried out and we could systematically classify them with the help of various biochemical and genetical studies.

Optimization of nutritional requirement was carried out. Studies on utilization of carbohydrates as carbon source revealed that all the three strains of *R. loti* could utilized sucrose more efficiently than the fructose and dextrose. However, the mannitol proved to be

the best among all the carbohydrates sources. It was further observed that the percentage utilization of dextrose (79%) by *Bradyrhizobium* spp. was better than sucrose (64%). The general pattern for utilization of carbohydrate in case of *R. loti* in the manner Mannitol > Sucrose > Dextrose > Fructose while *Bradyrhizobium* spp. could utilize Mannitol more efficiently followed by Dextrose > Sucrose > Fructose. The kinetics of sucrose utilization was calculated and Vmax value of 38, 42, 41 and 42 nh/ug protein/hr and the Km values were calculated as 21.425, 21.39, 21.39 and 23.573 uM of sucrose for *Bradyrhizobium, R. loti* 3206, *R. loti* 3134 and *R. loti* 2249 respectively.

Their enzymatic potential were studied and was observed that the Vmax values of Nitrate Reductase enzyme was 460, 510, 680 and 410 nM of nitrate reduced/min/ug protein for *Bradyrhizobium, R. loti* 3134, *R. loti* 2249 and *R. loti* 3206 respectively. For the same enzyme the Km values were 255 nM, 300 nM, 405 nM and 225 nM of nitrite reduced/min/ug protein respectively.

It was noticed that on deviation from neutral pH the amount of EPS secretion increased thereby, indicating its stimulatory response to the adverse conditions.

Besides observing their feasibility of being used as biofertilizer, effect of storage condition on the lignite based biofertilizer was also studied and it was observed that the viable counts were well above the minimum recommended level of 10^7 cell ml^{-1} upto 18 weeks at normal room temperature ($28 + 1^0$ C). However, maximum number of viable cells were found at refridgeration temperature ($5 + 1^0$ C). while the viable count ml^{-1} decreased rapidly and fall upto 50% at temperature above room temperature ($38 + 1^0$ C).

-- —

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग अपने अस्तित्व काल से ही विश्वविद्यालय में कम्प्यूटरीय शिक्षा के विस्तार के लिए प्रयासरत है। इस विभाग के सदस्य डा० विनोद कुमार, रीडर एवं विभागाध्यक्ष, श्री कर्मजीत भाटिया प्रवक्ता, श्री सुनील कुमार, प्रवक्ता, श्री वेदव्रत, तकनीकी सहायक, श्री द्विजेन्द्र पन्त, तकनीकी सहायक एवं श्री राम सिंह, भृत्य, विभिन्न प्रकार से विभाग के विकास में योगदान प्रदान कर रहे हैं। गत पांच वर्षों से विभाग में "कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा" तथा बी० एस-सी० में कम्प्यूटर पाठ्यक्रम चल रहे हैं जिनकी प्रगति को देखते हुए विश्वविद्यालय अनु० आयोग ने विभाग को त्रिवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम—मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लिकेशन्स (एम. सी. ए.) आरम्भ करने की अनुमति प्रदान की है। विभाग की सत्र ९३-९४ की गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार है :—

१. नए पाठ्यक्रमों का समावेश :

(१) विश्वविद्यालय अनु० आयोग की स्वीकृति पर सत्र ९३-९४ से "पी० जी० डी० सी० ए०" के स्थान पर "मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लिकेशन्स" पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया जिसका विधिवत् उद्घाटन माननीय कुलाधिपति प्रोफेसर शेर सिंह जी द्वारा किया गया।

(२) डा० विनोद कुमार के दिशा निर्देश में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में एक कम्प्यूटर लैब की स्थापना की गई तथा छात्राओं के लिए एम० सी० ए० पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। इस पाठ्यक्रम व लैब का उद्घाटन भी माननीय कुलाधिपति प्रोफेसर शेर सिंह जी द्वारा किया गया।

२. शोध पत्र प्रकाशित :

डा० विनोद कुमार द्वारा लिखित निम्न शोधपत्र प्रकाशित हुआ Petri Net Modelling and Reliability Evaluation of a

Distributed Processing System, Reliability Engineering and System Safety (ENGLAND), Vol. 41, 1993, pp. 167-176. (सह लेखक : डा० के० के० अग्रवाल, प्रोफेसर, इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग विभाग, रीजनल इन्जीनीयरिंग कालिज, कुरुक्षेत्र।

३. शोधपत्र प्रकाशन हेतु प्रस्तुत :

निम्न शोधपत्र प्रकाशन हेतु भेजे गए :—

(१) लेखक डा० विनोद कुमार

"Efficient Enumeration of Spanning Trees for Overall Reliability Evaluation of Computer Communication Networks". International Journal of System Science (USA).

(सह लेखक : डा० के. के. अग्रवाल)

(२) लेखक डा० विनोद कुमार एवं सुनील कुमार

"Reliability Tree—A New concept for Performance Evaluation of a Computer Communication Network" IEEE Trans. on Reliability (USA)

(सह लेखक : डा० के. के. अग्रवाल)

४. शोध सम्मेलनों/पाठ्यक्रमों/प्रदर्शनियों में सहभागिता :

(१) डा० विनोद कुमार ने डिजिटल इक्विपमेन्ट कॉरपोरेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "हाई परफॉरमेन्स इन्जीनीयरिंग एण्ड साइन्टिफिक कम्प्यूटिंग विद् एलफा ए० एक्स० पी०", विषय पर आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

(२) श्री कर्मजीत भाटिया ने ४-५ फरवरी, १९९४ को विभिन्न कम्प्यूटर फर्मों द्वारा हयात रीजेन्सी होटल, नई दिल्ली में आयोजित सेमिनार व प्रदर्शनी में भाग लिया।

(३) श्री सुनील कुमार ने १०-११ फरवरी को नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में भाग लिया।

५. विभागीय सदस्यों द्वारा व्याख्यान :

विभाग के सदस्य, बी० एस-सी० व एम० सी० ए० के छात्रों को, कम्प्यूटर सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु, समय-समय पर मुख्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विषयों पर भी व्याख्यान देते रहते हैं। डा० विनोद कुमार ने रसायन विज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों को "कम्प्यूटरी शिक्षा के आधारभूत तथ्य" विषय पर व्याख्यान दिया। डा० विनोद कुमार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा व्याख्यानों के लिए आमंत्रित किया गया।

६. अन्य विभागों को सहयोग :

पूरे विश्वविद्यालय में कम्प्यूटरीय शिक्षा में विस्तार के लिए विभाग प्रयासरत है। डा० विनोद कुमार के सुझाव से गणित, भौतिकी व रसायन विभाग के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में कम्प्यूटर सम्बन्धी एक-एक विषय समाहित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग को भी कम्प्यूटर लैब की स्थापना तथा कम्प्यूटर सम्बन्धी विषय आरम्भ करने में विभाग अपना पूरा योगदान दे रहा है।

७. आमंत्रित व्याख्यानों का आयोजन :

(१) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय ब्रिगेडियर ओ० पी० चौधरी द्वारा "संस्कृत के कम्प्यूटरीय शिक्षा में प्रयोग की सम्भावनाएँ" विषय पर व्याख्यान दिया गया।

(२) मीरा कम्प्यूटर्स लिमिटेड, नई दिल्ली के विशेषज्ञों द्वारा "यूनिक्स एण्ड लेन इण्टरफेस" विषय पर व्याख्यान दिए गए तथा प्रयोगात्मक प्रदर्शन भी किया गया।

(३) परटेक कम्प्यूटर लिमिटेड (पी. सी. एल.), देहरादून के विशेषज्ञों द्वारा "लोकल एरिया नेटवर्क्स" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

(४) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जी. बी. सिंह द्वारा "नेचुरल लेंग्वेज प्रोसेसिंग प्रिंसिपल्स" विषय पर व्याख्यान दिया गया।

(५) बी० एच० ई० एल० हरिद्वार की लेखा इकाई के अवकाश प्राप्त महाप्रबन्धक श्री आर० जे० द्विवेदी एवं श्री हरिश्चन्द्र द्वारा एम० सी०

ए० के छात्रों को "एकाउन्टिग एण्ड फाइनेन्शियल मैनेजमैन्ट" विषय पर व्याख्यान दिए गए।

८. भवन निर्माण :

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के लिए एक पृथक् भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस भवन का शिलान्यास माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी द्वारा किया गया।

९. कम्प्यूटरीय सुविधाओं में वृद्धि :

उपर्युक्त भवन में एक प्रयोगशाला की स्थापना का भी प्रावधान है। प्रयोगशाला के लिए कम्प्यूटर क्रय करने हेतु विश्वविद्यालय अनु० आयोग से रु० २० लाख की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है जिससे कम्प्यूटर सम्बन्धी उपकरण क्रय करने की प्रक्रिया पहले ही आरम्भ की जा चुकी है। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के कम्प्यूटर विभाग में भी दो नए कम्प्यूटर क्रय किए जा रहे हैं।

१०. शोध-छात्रों का पी० एच-डी० के लिए पंजीकरण :

डा० विनोद कुमार के निर्देशन में दो शोधछात्र श्री प्रदीप कुमार यादव एवं श्री अरुण कुमार पहले से ही पी० एच-डी० के लिए शोधकार्य कर रहे हैं। इस वर्ष निम्न शोध-छात्र पी० एच-डी० के लिए पंजीकृत हुआ :—

नाम	शोध का विषय
अवनीश कुमार	A study of some optimization techniques and Their applications to Computer Comnunication Networks.

११. प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन :

डा० विनोद कुमार के संयोजकत्व में महाविद्यालयों के शिक्षकों/कर्मचारियों के लिए अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया। इसके लिए विभाग को रु० ६.४५ लाख का अनुदान प्राप्त हुआ। इस अनुदान से तीन पन्द्रह-दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसका विवरण निम्न प्रकार है :—

(१) प्रथम प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ३ जनवरी—१५ जनवरी, १९९४ तक आयोजित किया गया। इसमें १२ महाविद्यालयों के १९ कर्मचारियों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन माननीय कुलपति डा० धर्मपाल जी द्वारा किया गया।

(२) द्वितीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन २८ फरवरी से १२ मार्च, १९९४ तक किया गया। इसमें ८ महाविद्यालयों के १६ कर्मचारियों ने भाग लिया।

(३) तृतीय पाठ्यक्रम का आयोजन ३० मई से ११ जून, १९९४ तक किया गया। इसमें ८ महाविद्यालयों के १३ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र माननीय न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी (परिदृष्टा गु० कां० विश्वविद्यालय) द्वारा प्रदान किए गए।

उपरोक्त तीनों पाठ्यक्रमों से विभाग को रु० १००००/- के मूल्य का एक साफ्टवेयर प्राप्त हुआ तथा विश्वविद्यालय को रु० ३००००/- की आय हुई। इन पाठ्यक्रमों के आयोजन में विभाग व केन्द्र के सभी सदस्यों ने पूरा योगदान दिया।

१२. विश्वविद्यालय के कार्यों के कम्प्यूटरीकरण में सहयोग :

विभाग में कार्यरत तकनीकी सहायक श्री वेदब्रत जहां पूरी लगन से कम्प्यूटर उपकरणों के रख-रखाव का कार्य कर रहे हैं, वहीं दूसरे तकनीकी सहायक श्री द्विजेन्द्र पंत प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक कार्यों में सहायता प्रदान करने के अतिरिक्त विश्वविद्यालय कर्मचारियों के वेतन व उससे सम्बन्धित अन्य विवरण तैयार करने के लिए साफ्टवेयर डिजाइन करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं। यह साफ्टवेयर अब लगभग पूर्ण हो चुका है।

१३. शैक्षणिक निकायों में सक्रियता :

डा० विनोद कुमार "सिस्टम सोसाइटी ऑफ इण्डिया" के आजीवन सदस्य हैं तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों की शिक्षा समितियों में बाह्य विशेषज्ञ मनोनीत हैं।

१४. पुस्तकालय की स्थापना :

श्री सुनील कुमार जी के निर्देशन में विभाग में स्नातकोत्तर छात्रों के

लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की गई। इसमें श्री कर्मजीत भाटिया ने भी अपना पूर्ण सहयोग दिया।

१५. भविष्य की योजनाएं :

(१) विभाग में पी-एच०डी० कार्यक्रम आरम्भ कराना।

(२) गणित, भौतिकी व रसायन विज्ञान विभागों के लिए पृथक कम्प्यूटर लैब की स्थापना करना।

(३) प्राच्यविद्या संकाय व मानविकी संकाय में कम्प्यूटरी शिक्षा आरम्भ कराना।

(४) पूरे विश्वविद्यालय में कम्प्यूटरीय शिक्षा के विस्तार हेतु शिक्षकों व छात्रों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन करना।

कम्प्यूटर केन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से १९८७ में की गई थी। १९८८ में कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P.G.D.C.A.) एवं बी० एस-सी० त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम को विधिवत शुरू किया। साथ ही विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों को कम्प्यूटरीकृत करने के विभिन्न कार्य शुरू किए।

श्री दिनेश बिश्नोई, अध्यक्ष, कम्प्यूटर केन्द्र, श्री अचल गोयल, प्रणाली विश्लेषक, श्री मनोज कुमार एवं श्री महेन्द्र असवाल, कम्प्यूटर आपरेटर, श्री अरुण कुमार, ट्रेनी प्रोग्रामर, श्री शशिकान्त, स्टेनोग्राफर, श्री राजेन्द्र ऋषि, लैब अटेण्डैण्ट आदि ने केन्द्र की प्रगति में पूर्ण सहयोग दिया। कम्प्यूटर केन्द्र की गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार से है :—

१. कम्प्यूटर केन्द्र का बिस्तार :

कम्प्यूटर केन्द्र की प्रगति को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्ष १९९३ में प्रयोगशाला का विस्तार करने के लिए ५ लाख रु० की स्वीकृति प्रदान की। इसके साथ ही प्रयोगशाला के लिए नवीन कम्प्यूटर क्रय करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से २० लाख रु० की अतिरिक्त स्वीकृति प्राप्त हुई। कम्प्यूटर उपकरण क्रय को प्रक्रिया अति शीघ्र पूरी होने वाली है, जिससे कम्प्यूटर प्रयोगशाला की क्षमता पहले से कई गुनी हो जाएगी।

(२) श्री दिनेश बिश्नोई एवं श्री अचल कुमार गोयल ने ४-५ फरवरी १९९४ को दिल्ली में ऐपल कम्प्यूटर तकनीक पर आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया।

(३) श्री दिनेश बिश्नोई ने रुड़की विश्वविद्यालय में आयोजित

कार्यशाला में कम्प्यूटर विज्ञान विषय में निम्न शोधपत्र प्रस्तुत किया।

"Generating of Hindi Sentences using Conceptual Graph Notation".

(४) श्री दिनेश बिश्नोई ने आई० आई० टी०, कानपुर में कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में "Advanced Natural Language Processing" पर पांच सप्ताह की कार्यशाला में भाग लिया।

(५) श्री दिनेश बिश्नोई ने निम्न शोधपत्र प्रकाशन के लिए भेजा—"Lexical Organization in Generation of Hindi Sentences"

(६) श्री महेन्द्र असवाल ने डा० विनोद कुमार के साथ निम्न शोधपत्र प्रकाशन के लिए भेजा :—

"Optimization of Terminal and Multiterminal Reliability of a Computer Communication Network".

(७) श्री मनोज कुमार शर्मा ने यू० जी० सी० के INFLIBNET Programme के अन्तर्गत National Conference on Library Automation में भाग लिया।

(८) श्री मनोज कुमार शर्मा ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का वेतन व उससे सम्बन्धित अन्य विवरण तैयार करने के लिए साफ्टवेयर बनाया।

(९) अतिशीघ्र ही श्री दिनेश बिश्नोई के निर्देशन में विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के विभिन्न कार्यों का कम्प्यूटरीकरण करने की योजना है।

——

विज्ञान संकाय

विज्ञान संकाय के प्राध्यापक महानुभाव शिक्षण कार्य के साथ-साथ शोधकार्य में संलग्न हैं। वर्ष १९९३-९४ में इस संकाय में बी० एस-सी० तृतीय बर्ष का परीक्षा फल अति उत्तम रहा है। यह अत्यन्त हर्ष एवं प्रतिष्ठा का विषय है कि इस संकाय से इस वर्ष बी० एस-सी० की उपाधि लेकर निकले अनेक छात्रों को भारतवर्ष के अन्य प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिल चुका है।

प्राध्यापकों की शोध एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सम्बन्धित विभागों की आख्या अवलोकनीय है।

इस संकाय की एक विशिष्टता यह है कि बी० एस-सी० में कम्प्यूटर विज्ञान को विषय विशेष के रूप में पढ़ाने का प्रबन्ध है। विज्ञान संकाय में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है और छात्र संख्या निरन्तर बढ़ रही है। संकाय में प्रत्येक ग्रुप के मेधावी छात्रों को वरीयता क्रम के अनुसार प्रति ग्रुप में ५-५ छात्रों को संकाय द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त जिन्दल ट्रस्ट नई दिल्ली से भी छात्रों को छात्र-वृत्ति प्रदान की गई है। सत्र १९९३-९४ में प्रवेशानुसार छात्र संख्या निम्नवत् रही :—

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी. एस-सो. प्रथम	गणित	१०८
बी. एस-सी. प्रथम	कम्प्यूटर	७०
बी. एस-सी. प्रथम	मनोविज्ञान	७५
बो. एस-सी. प्रथम	दर्शन	१४
बी. एस-सी. द्वितीय	गणित	१११
बी. एस-सी. द्वितीय	कम्प्यूटर	६२

कक्षा	ग्रुप	छात्र संख्या
बी. एस-सी. द्वितीय	मनोविज्ञान	५
बी. एस-सी. तृतीय	गणित	३७
बी. एस-सी. तृतीय	कम्प्यूटर	२४
बी. एस-सी. तृतीय	मनोविज्ञान	
एम. एस-सी. प्रथम	भौतिकी	१०
एम. एस-सी. द्वितीय	भौतिकी	२१
एम. एस-सी. प्रथम	रसायन	१२
एम. एस-सी. द्वितीय	रसायन	१८
एम. एस-सी. प्रथम	गणित	७
एम. एस-सी. द्वितीय	गणित	३

——

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय समस्त देश के शोध छात्रों का पावन मंदिर है। प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध साहित्य की दृष्टि से यह पुस्तकालय एक राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिए निम्न रूप से विभाजित किया हुआ है।

१-संदर्भ ग्रन्थ संग्रह, २-पत्रिका संग्रह, ३-आर्य साहित्य संग्रह, ४-आयुर्वेद संग्रह, ५-विभिन्न विषयों का हिन्दी संग्रह, ६-विज्ञान संग्रह, ७-अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८-पं० इन्द्रजी संग्रह, ९-दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०-पाण्डुलिपि संग्रह, ११-गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२-प्रतियोगितात्मक संग्रह १३-शोध प्रबन्ध संग्रह, १४-रूसी साहित्य संग्रह, १५-आरक्षित पाठ्य पुस्तक संग्रह, १६-उर्दू संग्रह, १७-मराठी सग्रह, १८-गुजराती संग्रह, १९-गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०-मानचित्र संग्रह, २१-वेद मंत्र कैसेट संग्रह।

सदस्य :

पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या में गत पाँच वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। वर्ष १९९०-९१ में जहां सदस्य संख्या ५७७ थी वहीं वर्ष १९९१-९२ से ९३-९४ तक क्रमशः १०१५, ११७१ एवं १४८२ हो गई है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय की सुविधाओं का लाभ कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को भी दिया जा रहा है। पुस्तकालय के सदस्यों द्वारा आलोच्य वर्ष १९९३-९४ में ३३७२१ पुस्तकों को इश्यू कराया गया तथा १२३३० पुस्तक लौटाई गई।

विभागीय पुस्तकालय :

विश्वविद्यालय के छात्रों की सुविधा एवं उपयोग हेतु विभिन्न विभागों में विभागीय पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। जिसके अन्तर्गत रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, वेद एवं हिन्दी पत्रकारिता आदि विभागों में विभागीय पुस्तकालय हैं। आलोच्य वर्ष १९९३-९४ में ६२२ पुस्तकों को विभागीय पुस्तकालयों हेतु इश्यू किया गया। इसी प्रकार कन्या महाविद्यालय हरिद्वार की छात्राओं हेतु विभागीय पुस्तकालय बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। सत्र १९९४-९५ में इसकी पृथक से स्थापना कर दी जाएगी।

पुस्तकालय का समय :

पुस्तकालय खुलने का समय प्रातः ९ से ५ बजे तक है। सत्रावसान में पुस्तकालय प्रातः ७ से १.३० बजे तक खुला रहता है।

नवीनतम संदर्भ कक्ष :

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों हेतु नए भवन में संदर्भ कक्ष की स्थापना कर दी गई है। जिसमें अनुसंधानकर्ताओं की सुविधा हेतु २५,००० संदर्भ ग्रन्थों का विशाल प्रकोष्ठ बनाया गया है। सम्बद्ध विभागाध्यक्ष की संस्तुति के आधार पर शोध छात्रों को निश्चित अवधि हेतु प्रवेश की अनुमति दी जाती है। आलोच्य वर्ष ९३-९४ में १९८ प्रवेश-पत्र छात्रों को इश्यू किए गए।

पुस्तकालय की विशिष्टताएँ :

यह पुस्तकालय देश का एकमात्र ऐसा पुस्तकालय है जहां आर्यसमाज की पुस्तकों का संग्रह एक पृथक वीथिका के रूप में किया गया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातकों एवं प्राध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तकों का पृथक प्रकोष्ठ पुस्तकालय में बनाया हुआ है। पुस्तकालय का संदर्भ विभाग प्राच्य विद्याओं के सभी प्रमुख संदर्भों को समेटे हुए है।

प्रगति के आयाम :

आज पूरे देश में आर्थिक सुधारों का जोर है। आर्थिक सुधार की प्रथम कड़ी के रूप में कार्य संस्कृति पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। इस

परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल पुस्तकालय देश का ऐसा पहला पुस्तकालय है जहां कार्य संस्कृति के आधार पर किए कार्य के अनुसार भुगतान का सिद्धान्त स्वीकृत है तथा पुस्तकालय का बहुत-सा कार्य इस कार्य संस्कृति के आधार पर किया जा रहा है।

यह पुस्तकालय देश का पहला ऐसा पुस्तकालय है जहां निर्धन एवं मेधावी छात्रों को पुस्तकालय में आंशिक रोजगार देकर उन्हें उनकी शिक्षा दीक्षा के कार्यों में सहायता प्रदान की जाती है।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के द्वारा प्रतिवर्ष एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वर्ष १९९३-९४ में आचार्य प्रियव्रत जी की पूर्व प्रकाशित पुस्तक "वेद का राष्ट्रीय गीत" का पुर्नप्रकाशन किया गया। यह ग्रन्थ कुछ वर्षों से अप्राप्य हो गया था तथा इस ग्रन्थ की मांग प्राय: विश्वविद्यालय से की जाती रही थी।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र के प्रकाशनों के विक्रय से आलोच्य वर्ष में १२१२३)रु० की राशि प्राप्त हुई।

फोटोस्टेट मशीन द्वारा वर्ष १९९३-९४ में ३९५८९-९० रु० का कार्य विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं शोध छात्रों का किया गया तथा १५ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट कर सुरक्षित किया गया।

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोध छात्र अपने शोध कार्य हेतु पुस्तकालय का उपयोग करते रहते हैं। आलोच्य वर्ष में ३० शोध छात्रों ने सुदूर स्थानों से पुस्तकालय में आकर अपने विषय से सम्बद्ध ग्रन्थों का अवलोकन किया।

नवीनतम पुस्तकों के चयन हेतु नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में फरवरी ९४ में प्रत्येक विभाग से एक-एक प्राध्यापक को भेजे जाने की व्यवस्था की गई।

भारत सरकार के सहयोग से आयोजित १० से १२ अप्रैल तक पुस्तकालयाध्यक्षों के जयपुर में आयोजित सम्मेलन में पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा भाग लिया गया तथा सरकार की पुस्तकालयों के सम्बन्ध में नीति पर अनेक मुद्दे भी उठाए गए।

पुस्तकालय कार्यवृत्त—एक नजर :

	वर्ष १९९१-९२	वर्ष १९९२-९३	वर्ष १९९३-९४
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय उपयोग।	२५०००	२६०००	२८०००
२. भेंट स्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या।	४४४	४५०	९३९
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या।	२३२३	१९५०	१७०८
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या।	२९००	३०००	२७००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या।	२७७५	२८००	२६३३
६. पत्रिकाओं की संख्या।	४३८	२६०	२२८
७. पत्रिकाओं की आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरण-पत्र।	२१०	१९५	१७५
८. सजिल्द पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या।	७६१७	७८१३	७९०१
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या।	११२	१९६	८८
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी।	१२६९	९२८	१४००
११. पुस्तकों का कुल संग्रह।	१,०९८७६	१११२७६	११३९२३
१२. सदस्य संख्या।	१०१५	११७१	१४८२
१३. पुस्तकों पर विलम्ब शुल्क।	—	—	२५६०.५० रु०
१४. गुम पुस्तकों का मूल्य।	—	—	३७०७.१० रु०

——

राष्ट्रीय छात्र-सेना (एन. सी. सी.)

उपक्रम १/३१ यू० पी० कम्पनी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

सत्र ९३-९४ के लिए १/३१ यू० पी० एन० सी० सी० कम्पनी, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों से आए आवेदन पत्रों पर कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी, कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनेन्ठ डा० राकेश शर्मा द्वारा श्रेष्ठ छात्रों का एन. सी. सी. कैडट के रूप में चयन कर तदनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया।

विगत सत्रों की भांति इस सत्र में भी उपर्युक्त चयनित छात्र कैडट्स को ३१ यू० पी० एन० सी० सी० बटालियन के कमान अधिकारी ले० कर्नल सुरेश जोशी, प्रशासनिक अधिकारी मेजर ग्रीनवुड एवं कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनेन्ट डा० राकेश शर्मा के निर्देशन में भारतीय थल सेना के प्रशिक्षक जूनियर कमीशन अधिकारियों एवं हवलदारों द्वारा गहन प्रशिक्षण दिया गया।

रक्षा मंत्रालय भारत सरकार से सम्बद्ध एन. सी. सी. मुख्यालय द्वारा एन० सी० सी० बटालियन स्तर पर वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में भी पूर्व सत्र की भांति यह शिविर प्राचीन गुरुकुल कांगड़ी (पुण्य-भूमि) कांगड़ी गांव में बटालियन की ओर से आयोजित किया गया। उक्त शिविर में विश्वविद्यालय के कम्पनी कमाण्डर लेफ्टिनेन्ट डा० राकेश शर्मा के नेतृत्व में २७ छात्र कैडट्स ने १२ दिन के उक्त शिविर में भाग लिया। अपने प्राचीन परिसर में शिविर लगने के कारण विश्वविद्यालय प्रशासन का इसमें विशेष सहयोग रहा तथा शिविर के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डा० धर्मपाल के निरीक्षण हेतु आगमन से कैडट्स में अतिरिक्त उत्साह का संचार हुआ। छात्रों ने पूर्ण उत्साह एवं लगन की भावना से इस प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त

किया। जिसकी सराहना ग्रुप कमाण्डर कर्नल कुलदीप सिंह ने अपने निरीक्षण के दौरान की।

एन० सी० सी० के क्रमश: दो तथा तीन वर्ष के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को पूर्ण कर लेने के उपरान्त कैडट्स को 'बी' तथा 'सी' प्रमाण-पत्र में सम्मलित होने की अनुमति प्रदान की जाती है। 'बी' तथा 'सी' प्रमाण-पत्रों की सत्र ९३-९४ की परीक्षा में विश्वविद्यालय के कैडेट्स के उत्तीर्ण होने का प्रतिशत पूर्व की भांति ८० प्रतिशत से अधिक रहा। स्वाधीनता दिवस १५ अगस्त ९३ के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डा० धर्मपाल ने ध्वजारोहण किया। इसी प्रकार २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के अवसर पर कुलपति जी ने ध्वजारोहण पश्चात् विश्वविद्यालय के केडैट्स की परेड सलामी ली। इसके उपरान्त ९२-९३ सत्र के 'बी' तथा 'सी' प्रमाण-पत्रों में उत्तीर्ण होने वाले कैडेट्स को कुलपति जी द्वारा प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया।

सत्र ९३-९४ में तृतीय वर्ष के कैडट मनीष शर्मा का देहरादून ग्रुप से २६ जनवरी ९४ गणतन्त्र दिवस दिल्ली में आयोजित परेड के लिए चयन हुआ। तत्पश्चात् उक्त छात्र ने लखनऊ कैम्प में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

—

विश्वविद्यालय छात्रावास

सत्र १९९३-९४ से छात्रावास अध्यक्ष का दायित्व डा० एस. के. श्रीवास्तव (मनोविज्ञान विभाग) को सौंपा गया है। विश्वविद्यालय छात्रा-वास में सभी संकायों के छात्रों को आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। छात्रावास में सीमित कमरों के कारण अधिकांश छात्रों को शहर में रहना पड़ता है। छात्रावास के छात्रों के लिए भोजन व्यवस्था हेतु शीघ्र ही मेस एवं कैन्टीन खुलने जा रही है। विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, कमरों का निर्माण होना आवश्यक है। एम० सी० ए० के छात्रों के लिए अलग से प्राइवेट तौर पर छात्रावास को सुविधा प्रदान की गई है।

——

शारीरिक शिक्षा विभाग

विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी टीमों को बाहर भेजा गया जिसमें अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता में श्री सुरेशपाल अलंकार प्रथम वर्ष के छात्र ने भाग लिया तथा तीन राउंड जीतने के बाद उसे चौथे स्थान पर रहने का गौरव प्राप्त हुआ जो कि विश्वविद्यालय के लिए एक गौरव का प्रतीक है। नोर्थ जॉन अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय की ६ टीमों में भाग लिया तथा इन सभी टीमों का प्रदर्शन सराहनीय रहा तथा सभी टीमों के खिलाड़ियों ने बाहर जाकर दूसरे विश्वविद्यालय से खेलने का अच्छा अनुभव प्राप्त किया। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का स्थान इस प्रकार है जहां जाकर विश्वविद्यालय की टीमों ने भाग लिया :—

(१) हैण्डबाल	फैजाबाद विश्वविद्यालय
(२) बैडमिन्टन	लखनऊ विश्वविद्यालय
(३) टेबल टैनिस	पालमपुर हिमाचल प्रदेश
(४) बास्केटबाल	पी. ए. यू. चण्डीगढ़
(५) हॉकी	ए. एम. यू. अलीगढ़
(६) क्रिकेट	जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली

और इसी प्रकार विश्वविद्यालय की ७ टीमों ने यू. पी. अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा अच्छे खेल के प्रदर्शन के साथ-साथ दूसरी विश्वविद्यालय की टीमों से भी खेलने का अनुभव प्राप्त हुआ तथा सभी टीमों ने, जहां भी बाहर गई, अपने Discipline के द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम को ऊपर बनाए रखा तथा सभी खेलों में सच्चे खिलाड़ी की भावना से भाग लिया। विश्वविद्यालय की टीमों ने जिन उत्तर प्रदेश अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया, उसका

विवरण इस प्रकार है :—

(१) टेबल टेनिस	झाँसी
(२) बैडमिन्टन	आगरा
(३) हॉकी	उन्नाव
(४) हैण्डबाल	फैजाबाद
(५) वालीबॉल	कानपुर
(६) बास्केटबाल	इलाहाबाद
(७) फुटबाल	फैजाबाद

विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के बजट से नोर्थ जॉन जाने वाली हरेक टीम को किट दिया गया तथा आने जाने तथा टीमों का ३० रु० प्रतिदिन के हिसाब से डी. ए. का खर्च भी विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया गया तथा विश्वविद्यालय की तरफ से नियम के अनुसार तीन साल में एक बार के आधार पर नोर्थ जॉन में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को ट्रैक सूट भी दिए गए।

विश्वविद्यालय की तरफ से इस वर्ष पहली बार विश्वविद्यालय की टीम ने नोर्थ जॉन कलचरल फैस्टीवल में भाग लिया तथा पी. ए. यू. चण्डीगढ़ में आयोजित इस Youth Festival में विश्वविद्यालय की टीम के खिलाड़ियों ने मैडल तथा एक शील्ड अच्छे प्रदर्शन की वजह से प्राप्त की। इस वर्ष जुलाई १९९३ से जनवरी १९९४ तक खिलाड़ियों की प्रेक्टिस, टीमों के चयन तथा टीमों का बाहर खेल कर आने जाने का कार्यक्रम चलता रहा तथा सत्र ९३-९४ निर्विघ्न समाप्त हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना

स्वतन्त्रता के पश्चात् छात्रों के लिए समाज सेवा के कार्यों को विधिवत् सुधार लाने के साथ-साथ शिक्षित जनशक्ति की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए समझा गया। अत: २४ सितम्बर, १९६९ को तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री वी० के० आरवीराव ने राष्ट्रीय सेवा योजना को ३७ विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ कराया। जिसका प्रत्यवचन "मुझको नहीं तुमको" द्वारा वैदिक सत्यता के ढंग से जीवनयापन करने की आवश्यकता का समर्थन करता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई लगभग १२ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई थी जिसके प्रथम कार्यक्रम अधिकारी प्रो० बी. डी. जोशी रहे।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी छात्रों की श्रमशक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किए गए।

(१) २४ सितम्बर, १९९३ को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया तथा AIDS के विषय में जानकारी नेपाल के श्री ध्रुवराज जी ने छात्रों को दी।

(२) छात्रों द्वारा विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किए गए।

(३) एकदिवसीय कैम्प, पांवधोई (ज्वालापुर), सीतापुर लोधामंडी (हरिद्वार) व कांगड़ी ग्राम में आयोजित किए गए। जिनमें मुख्य रूप से नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं दवा वितरण तथा रक्त-वर्ग परीक्षण किए गए।

(४) दस दिवसीय बिशेष वार्षिक शिविर दिनांक २८-१-९४ से ६-२-९४ तक कांगड़ी ग्राम में आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के परिदृष्टा श्री महावीर सिंह जस्टिस द्वारा किया गया। इस शिविर में जनसाक्षरता पथ निर्माण एवं नालियों की सफाई एवं सोकपिटों का

निर्माण, सड़क की मरम्मत, विश्वविद्यालय के पुराने परिसर भवन के आस-पास गंगा की ठोकरों में, खाली स्थानों में पत्थरों को डालकर उन्हें मजबूत किया गया।

सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण व स्वास्थ्य परीक्षण जैसे कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया गया।

स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा शिविर का संचालन मेडिकल प्रेक्टिशनर एसोसिएशन के चिकित्सकों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

शिविर का समापन विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने किया।

(५) उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त हर सप्ताह छात्र विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय सेवा एवं अपने व्यक्तित्व के निर्माण के कार्यों में सलंग्न रहे हैं।

(६) पचास छात्र निरक्षरों को साक्षर बनाने के कार्यों में प्रयासरत हैं।

(७) इस सत्र में कार्यक्रम अधिकारी डा० डी. आर. खन्ना ने प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास केन्द्र, रुड़की विश्वविद्यालय की एन. एस. एस. की ट्रेनिंग में भाग लिया।

(८) सद्भावना निबन्ध प्रतियोगिता ९३ का जिला स्तरीय आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम आने वाले दो छात्रों को दो-दो हजार रुपए का नगद पुरस्कार कुलपति जी के कर-कमलों द्वारा दिया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डा० ए. के. चौपड़ा की प्रेरणा व डा० खन्ना कार्यक्रम अधिकारी के प्रयास से रा० सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियाँ सुचारू रूप से चलाई जा रही हैं।

——

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

महाविद्यालय की स्थापना :

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना २३ कार्तिक १९८० वि० तदनुसार ८ नवम्बर, १९२३ ई० को दीपावली के शुभ दिन आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा दिल्ली में की गई। स्व० आचार्य श्री रामदेव जी तथा स्व० आचार्या सुश्री विद्यावती जी सेठ के संरक्षण में पलकर उनके त्याग, तप व बलिदान से सिंचित यह नन्हा पौधा दिल्ली से १ मई १९२७ ई० को देहरादून लाया गया। स्व० आचार्य रामदेव जी को सुपुत्री आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर के परिश्रम व लगन से आज यह एक विशाल वृक्ष बन अपनी सुरभि देश-विदेश में बिखेर रहा है, जिससे आकर्षित हो न केवल भारत के विभिन्न प्रान्तों से, वरन अफ्रीका, फिजी, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों से छात्राएँ यहां शिक्षा ग्रहण करने आती हैं। १ जनवरी १९८६ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस संस्था को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का द्वितीय परिसर घोषित किया गया।

महाविद्यालय की मौलिक छवि :

महाविद्यालय में एक ओर वेद, प्राचीन भारतीय संस्कृति, प्राचीन इतिहास, कला, संगीत आदि अर्वाचीन साहित्य की शिक्षा दी जाती है, वहीं दूसरी ओर ब्रह्मचर्य के नियमों का पूर्णरूपेण पालन करते हुए मानसिक व शारीरिक उन्नति पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। संस्था के पास बृहद पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न विषयों की उपयोगी पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं।

संस्था की नवीन उपलब्धि :

आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित कम्प्यूटर विभाग की स्थापना हमारे नए कुलपति डा० धर्मपाल जी तथा कुलसचिव डा० जयदेव जी के

सतत् प्रयत्नों से की गई। इससे प्राचीन संस्कृति की संस्था का आधुनिकीकरण हो गया है। यह हमारे विश्वविद्यालय के समय के साथ चलने का प्रमाण है। कम्प्यूटर विभाग का उद्घाटन कुलाधिपति श्री शेरसिंह जी के कर-कमलों द्वारा किया गया।

संस्कृत विभाग :

महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न उत्सवों में छात्राओं ने संस्कृत में भाषण तथा सामूहिक गान प्रस्तुत किए। संस्कृत-दिवस पर संस्कृत भाषा का महत्त्व बताते हुए छात्राओं ने नाटक एवं गीत प्रस्तुत किए।

हिन्दी विभाग :

१९९३ में तरुण उत्सव द्वारा आयोजित "बहुर्राष्ट्रीय कम्पनियों का भारत में प्रवेश हानिकारक है" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में पारितोषिक प्राप्त करके संस्था का नाम उज्ज्वल किया।

इसके अतिरिक्त डी. ए. वी. कॉलेज में आयोजित "वर्तमान में नैतिक मूल्य अपना महत्त्व खो चुके हैं" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेकर छात्राओं ने संस्था का नाम रोशन किया।

फरवरी १९९४ में चित्तौड़गढ़ में सम्पन्न हुए "मीरा का जनमानस पर प्रभाव" विषय पर सेमिनार में भाग लिया।

अंग्रेजी विभाग :

"थियोडोर ड्राइजर के उपन्यास फाइनान्सियर" पर शोध-पत्र लिखा। इसके अतिरिक्त ए. एस. आर. सी. हैदराबाद में सम्पन्न होने वाले समर कोर्स में प्रशंसनीय भागीदारी की। वाद-विवाद प्रतियोगिता में सहयोग दिया। इसके साथ ही परिसर में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में छात्राओं को दिशा-निर्देश दिया।

चित्रकला विभाग :

गत वर्षों की तरह चित्रकला विभाग की छात्राओं ने विभिन्न अवसरों पर अत्यन्त उत्साहपूर्वक कार्य किए। कम्प्यूटर विभाग के उद्घाटन अवसर पर विभाग को सुरुचिपूर्ण ढंग से सुसज्जित करके प्रशंसा पाई। नगर में होने

वाली अल्पना एवं रंगोली तथा मेहन्दी आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

संगीत विभाग :

संगीत वादन विभाग की श्रीमती मीरा दास गुप्ता ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय देहली से १९९३ सितम्बर माह में अभिविन्यास पाठ्य-क्रम सम्पन्न किया तथा फरवरी १९९४ में लखनऊ विश्वविद्यालय से दूसरा अभिविन्यास पाठ्यक्रम किया।

कम्प्यूटर विभाग के उद्घाटन अवसर पर छात्राओं ने नृत्य संगीत तथा ड्रिल इत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सुन्दर प्रदर्शन किया। जिसके लिए उपस्थित अभ्यागतों सहित कुलाधिपति एवं कुलपति, कुलसचिव जी ने प्रशंसा की।

अन्य वर्षों की भांति परिसर में होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्य-क्रमों में छात्राओं ने प्रशंसनीय प्रस्तुतिकरण किया।

जनवरी १९९४ में विजिटर महोदय के आगमन के अवसर पर छात्राओं ने नृत्य एवं गीत आदि का सुन्दर प्रदर्शन किया।

क्रीड़ा विभाग :

वर्ष १९९३-९४ में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओं ने महिला खेल कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मंडलीय स्तर पर कु० मीरा एवं कु० शालिनी विद्यालंकार प्रथम वर्ष का चयन हुआ, जो कि नरेन्द्रनगर टिहरी में सम्पन्न हुआ। उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कु० मीरा एवं शालिनी का प्रदेशीय स्तर पर भी चयन हुआ और वे दोनों लखनऊ खेलने गई।

महिला खेल एथलैटिक्स प्रतियोगिता में भी कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने भाग लिया। चक्का फेंक (डिस्कस थ्रो) प्रतियोगिता में कु० ऋतु विद्यालंकार द्वितीय वर्ष ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मंडलीय स्तर पर कु० ऋतु का भी चयन हुआ। मंडलीय स्तर की प्रतियोगिता देहरा-दून में सम्पन्न हुई। कु० ऋतु ने चक्का फेंक प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कम्प्यूटर विभाग के उद्घाटन अवसर पर छात्राओं ने ड्रिल का सुन्दर प्रदर्शन किया।

परीक्षा परिणाम :

विद्यालंकार की छात्राओं का परीक्षा परिणाम प्रशंसनीय रहा। कु० ऋचा अलंकार तृतीय खण्ड विश्वविद्यालय में सर्वोच्च रही एवं कु० विभूति विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान पर रही। अन्य छात्राओं ने भी प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

सरस्वती यात्रा :

जनवरी ९४ में विद्यालंकार तथा कम्प्यूटर विभाग की छात्रा धनोल्टी सुरकंडा की यात्रा पर गई।

——

निर्माण विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का निर्माण विभाग विश्वविद्यालय में पुराने तथा नए निर्माण कार्य, अवर अभियन्ता श्री संजीव आर० के निर्देशन में निरन्तर प्रगति पर है। वर्ष ९३-९४ में किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार से है।

(१) रसायन विभाग की नई प्रयोगशाला का निर्माण।

(२) भौतिक विभाग की नई प्रयोगशाला का निर्माण कार्य।

(३) मुख्य कार्यालय का विस्तार कार्य लगभग पूर्ण।

(४) कम्प्यूटर विज्ञान की नई प्रयोगशाला का निर्माण कार्य चल रहा है।

(५) मुख्य अतिथि गृह में कमरों के साथ स्नानगृह तथा शौचालयों का निर्माण।

(६) विश्वविद्यालय परिसर में सुरक्षा चौकियों तथा सुरक्षाधिकारी के कार्यालय का निर्माण।

(७) कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में कम्प्यूटर प्रयोगशाला का नव-निर्माण तथा अध्यापन कक्ष, कार्यालय का मरम्मत कार्य।

(८) कन्या गुरुकुल, देहरादून में छात्राओं के छात्रावास का निर्माण कार्य।

(९) कम्प्यूटर केन्द्र में प्रयोगशाला का निर्माण कार्य।

(१०) विश्वविद्यालय के मानविकी संकाय का निर्माण कार्य प्रारम्भ।

(११) विज्ञान संकाय तथा जीव विज्ञान संकाय में दो अध्यापन कक्षों का निर्माण।

(१२) विश्वविद्यालय में एक इनडोर स्टेडियम का निर्माण कार्य प्रारम्भ।

विश्वविद्यालय के शिक्षक/शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सूची

प्राध्यापकों की सूची

प्राच्य विद्या संकाय

वैदिक साहित्य

१. प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार, एम० ए०, आचार्य/उपकुलपति, विभागाध्यक्ष

२. डा० भारत भूषण, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर

३. डा० मनुदेव, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर

४. डा० रूपकिशोर शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

५. डा० दिनेश चन्द्र, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

२- संस्कृत साहित्य

१. श्री वेद प्रकाश शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष

२. डा० महावीर अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी०

३. डा० सोमदेव शतांशु, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर

४. डा० रामप्रकाश, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्, रीडर

५. डा० ब्रह्मदेव, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

३- प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व

१. डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष

२. डा० कश्मीर सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर

३. डा० राकेश कुमार, एम० ए०, पी-एच० डी०, वरि० प्रवक्ता

४- दर्शन शास्त्र

१. डा० जयदेव वेदालंकार, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्, प्रोफेसर

२. डा० बिजयपाल शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा० त्रिलोक चन्द्र, एम० ए०, पी-एच० डी०, वरि० प्रवक्ता
४. डा० उमराव सिंह बिष्ट, एम०ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता

५- योग शिक्षा विभाग

१. डा० ईश्वर भारद्वाज, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

मानविकी संकाय

१- हिन्दी साहित्य

१. डा० विष्णुदत्त राकेश, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी० लिट्०, प्रोफेसर
२. डा० सन्तराम वैश्य, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा० ज्ञान चन्द्र रावल, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
४. डा० भगवान देव पाण्डेय, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर
५. श्री कमलकान्त बुधकर, एम० ए०, प्रवक्ता

२- अंग्रेजी साहित्य

१. डा० नारायण शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. श्री सदाशिव भगत, एम० ए०, रीडर
३. डा० श्रवण कुमार शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, वरि० प्रवक्ता
४. डा० अम्बुज कुमार, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
५. डा० कृष्ण अवतार अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

३- मनोविज्ञान

१. प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, एम० ए०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
२. श्री सतीश चन्द्र धमीजा, एम० ए०, रीडर
३. डा० सूर्य कुमार श्रीवास्तव, एम० ए०, पी-एच०डी०, वरि० प्रवक्ता
४. डा० चन्द्रपाल खोखर, एम० ए०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

४- शारीरिक शिक्षा विभाग

१. श्री आर. के. एस. डागर, एम० ए०, एम. पी. ई., डी. पी. ई.

५- प्रौढ़, सतत शिक्षा

१- डा० आर. डी. शर्मा, एम. ए., पी-एच. डी., सहायक निदेशक
२- डा० जे. एस. मलिक, एम.ए., पी-एच.डी., परियोजना अधिकारी
३- श्री सुदर्शन लाल मल्होत्रा, सहायक कुलसचिव

विज्ञान संकाय

१- गणित

१- डा० एस. एल. सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी., प्रोफेसर
२- श्री विजयपाल सिंह, एम. एस-सी., रीडर, बिभागाध्यक्ष
३- डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, एम. एस-सी., पी-एच. डी., रीडर
४- डा० बिजयेन्द्र कुमार शर्मा, एम. एस-सी., पी. एच-डी., रीडर
५- डा० महिपाल सिंह, एम. एस-सी., पी. एच-डी., रीडर
६- डा० हरवंश लाल गुलाटी, एम. एस-सी., डी. फिल. वरिष्ठ प्रवक्ता

२- रसायन विज्ञान

१- डा० कौशल कुमार, एम.एस-सी., पी.एच-डी., रीडर, विभागाध्यक्ष
२- डा० ए. के. इन्द्रायण, एम. एस-सी., पी-एच. डी., रीडर
३- डा० रामकुमार पालीवाल, एम. एस-सी., पी-एच. डी., रीडर
४- डा० रजनीश दत्त कौशिक, एम.एस-सी., पी-एच.डी., वरि. प्रवक्ता
५- डा० रणधीर सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
६- डा० श्रीकृष्ण, एम. एस-सी., पी-एच. डी., प्रवक्ता

३- भौतिक विज्ञान

१- डा० बुध प्रकाश शुक्ला, एम. एस-सी., पी-एच. डी., रीडर, बिभागाध्यक्ष
२- श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर, एम. एस-सी., रीडर
३- डा० राजेन्द्र कुमार, एम. एस-सी., पी-एच. डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
४- डा० पी. पी. पाठक, एम. एस-सी., पी-एच. डी., वरिष्ठ प्रवक्ता
५- डा० यशपाल सिंह, एम. एस-सी., पी-एच. डी., प्रवक्ता

४- कम्प्यूटर साइंस शिक्षा विभाग

१. डा० विनोद कुमार शर्मा, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
२. श्री कर्मजीत भाटिया, प्रवक्ता

५- कम्प्यूटर केन्द्र

१. श्री दिनेश चन्द्र विश्नोई, सिस्टम मैनेजर
२. श्री अचल कुमार गोयल, प्रोग्रामर
३. श्री महेन्द्र सिंह असवाल, आपरेटर
४. श्री मनोज कुमार, आपरेटर
५. श्री द्विजेन्द्र पन्त, आपरेटर
६. श्री वेदव्रत, तकनीकी सहायक
७. श्री विनीत कपूर, तकनीकी सहायक

जीव विज्ञान संकाय

१- वनस्पति विज्ञान

१. डा० डी. के. माहेश्वरी, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष तथा डीन, छात्र कल्याण
२. डा० पुरुषोत्तम कौशिक, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर
३. डा० गंगा प्रसाद गुप्ता, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
४. डा० नवनीत, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

२- जन्तु विज्ञान

१. डा० बी. डी. जोशी, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रोफेसर
२. डा० टी. आर. सेठ, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर, विभागाध्यक्ष
३. डा० ए. के. चोपड़ा, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, रीडर
४. डा० दिनेश चन्द्र भट्ट, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता
५. डा० देवराज खन्ना, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, प्रवक्ता

कन्या महाविद्यालय देहरादून (द्वितीय परिसर)

१.	श्रीमती प्रतिभा शर्मा	एम० ए०, संगीत	प्राचार्या/प्रवक्ता
२.	,, भगवती गुप्ता	एम० ए०, ड्राईंग एवं पेन्टिंग	प्रवक्ता

३.	श्रीमती सरोज नौटियाल	एम० ए०, संस्कृत	प्रवक्ता
४.	,, मीरादास गुप्ता	एम० ए०, संगीत	प्रवक्ता
५.	,, डा० रंजना राजदान	एम० ए०, पी-एच० डी० हिन्दी	प्रवक्ता
६.	,, हेमलता के०	एम० ए०, अंग्रेजी	प्रवक्ता
७.	,, निपुर	एम० सी० ए०	प्रवक्ता
८.	,, बलबीर कौर	एम० डी० पी० ई०	पी० टी० आई०

प्रशासन

डा० धर्मपाल	कुलपति
डा० जयदेव वेदालंकार	कुलसचिव
श्री जयसिंह गुप्ता	वित्त अधिकारी

स्थापना अनुभाग

१.	डा० शिवचरण विद्यालंकार	सहायक कुलसचिव
२.	श्री करतार सिंह	सम्पदा अधिकारी
३.	,, वेदपाल सिंह	सुरक्षाधिकारी
४.	,, गन्धर्व सैन	उद्यान अधिकारी
५.	,, सत्येन्द्र पाल सिंह	सचिव, कुलपति
६.	,, कमलेश नैथानी	नि० स०, कुलसचिव
७.	,, संजीव कुमार राजपूत	अवर अभियन्ता
८.	,, आनन्द कुमार सिंह	सहायक
९.	,, देवी प्रसाद	सहायक
१०.	,, कैलाश चन्द्र वैष्णव	विद्युतकार
११.	,, हेमन्त कुमार	जूनियर असिस्टैण्ट-कम-टाइपिस्ट
१२.	,, मदन गोपाल उपाध्याय	,, ,,
१३.	,, कुमुद चन्द्र जोशी	,, ,,
१४.	,, दीपक घोष	,, ,,
१५.	,, जगमोहन सिंह नेगी	दफ्तरी
१६.	,, अशोक कुमार	भृत्य-कम-काष्ठकार
१७.	,, सत्य सिंह	भृत्य
१८.	,, चन्द्र भान	,,
१९.	,, महेश चन्द्र जोशी	,,

२०. श्री योगेन्द्र सिंह	भृत्य
२१. ,, मदन मोहन सिंह	,,
२२. ,, घासीराम	,,
२३. ,, श्रीराम	ड्राईवर
२४. ,, मांगेराम	भृत्य
२५. ,, दिवान सिंह	भृत्य
२६. ,, गिरिश चन्द्र जोशी	भृत्य-कम-पलम्बर
२७. ,, माता प्रसाद	चौकीदार
२८. ,, रुल्हा सिंह	,,
२९. ,, राम सिंह	,,
३०. ,, जल सिंह	,,
३१. ,, ईसम सिंह	,,
३२. ,, भूरि सिंह	,,
३३. ,, योगेन्द्र शर्मा	,,
३४. ,, रामबहादुर	,,
३५. ,, हिम्मत सिंह	,,
३६ ,, रमेश चन्द्र	,,
३७. ,, श्याम सिंह	,,
३८. ,, चन्द्र कुमार मल	,,
३९ ,, हरिराम	माली
४०. ,, श्याम लाल	,,
४१. ,, घिराउ	,,
४२. ,, देवेन्द्र कुमार	,,
४३. ,, बाबूलाल	,,
४४. ,, बालेश्वर	सफाई कर्मचारी
४५. ,, रामचन्द्र	,,

लेखा अनुभाग

१- श्री नन्दगोपाल आनन्द	अनुभाग अधिकारी
२- " मोल्हड़ सिंह	जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट
३- " रामनरेश शर्मा	सहायक
४- " राजकिशोर शर्मा	जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट
५- " अशोक डे	" "

६- श्री वीरेन्द्र असवाल — जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट
७- " नन्द किशोर — " "
८- " वीर सिंह — " "
९- " बलबीर सिंह — भृत्य
१०- " रामकृष्ण — भृत्य
११- " महेश चन्द्र जोशी (प्रथम) — भृत्य

शिक्षा परीक्षा अनुभाग

१. श्री सूर्य प्रकाश — अनुभाग अधिकारी
२. " महेन्द्र सिंह नेगी — सहायक
३. " प्रेमचन्द्र जुयाल — सहायक
४. " कालूराम त्यागी — जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट
५. " डा० प्रदीप कुमार जोशी (जन सम्पर्क अधिकारी) — " "
६. " महावीर सिंह यादव — जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट
७. " बालकृष्ण शुक्ला — " "
८. " महानन्द — भृत्य
९. " हरपाल सिंह — भृत्य
१०. " कमल सिंह पुण्डीर — भृत्य
११. " रामस्वरूप — जूनियर असिस्टैन्ट कम-टाइपिस्ट

प्राच्य विद्या संकाय

१- श्री राजपाल सिंह — कनिष्ठ सहायक
२- ,, राजेश कुमार — भृत्य
३- ,, प्रेम सिंह — भृत्य
४- ,, महेन्द्र सिंह — भृत्य
५- ,, रामसुमत — माली

मानविकी संकाय

१- श्री गिरीशचन्द्र सुन्दरियाल — कार्यालयाध्यक्ष
२- श्री लाल नरसिंह नारायण — प्रयोगशाला सहायक
३- श्री सुभाष चन्द्र — लिपिक
४- श्री कुँवर सिंह — भृत्य

५- श्री हरेन्द्र सिंह	भृत्य
६- श्री शिवकुमार	भृत्य
७- श्री राजेन्द्र कुमार	भृत्य
८- श्री भानसिंह	चौकीदार
९- श्री सन्तोष कुमार	फील्ड अटैंडेंट
१०- श्री बलजीत	सफाई कर्मचारी

विज्ञान महाविद्यालय

१- श्री यशपाल सिंह राणा	कनिष्ठ सहायक
२- श्री कृष्ण कुमार	कनिष्ठ सहायक
३- श्री धर्मवीर सिंह	कनिष्ठ सहायक
४- श्री रामदास	भृत्य
५- श्री राजपाल	भृत्य
६- श्री रतनलाल	भृत्य
७- श्री विनोद कुमार	सफ़ाई कर्मचारी

रसायन विज्ञान

१. श्री शशिभूषण	लैब टैक्नीशियन
२. ,, सुरेश गर्ग	लैब असिस्टैन्ट
३. ,, मानसिंह	गैस मैन
४. ,, नरेश सलीम	लैब ब्वाय
५. ,, जयपाल	,,

भौतिक विज्ञान

१. श्री प्रमोद कुमार	लैब टैक्नीशियन
२. श्री ठकरा सिंह	लैब असिस्टैन्ट
३. श्री पुरुषोत्तम कुमार	
४. श्री सुमेर सिंह	

वनस्पति विज्ञान

१. श्री रुद्रमणि	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२. ,, चन्द्र प्रकाश	प्रयोगशाला सहायक

३. श्री विजय सिंह	लैब अटेंडेंट
४. ,, वीरेन्द्र सिंह	माली/सेवक
५. ,, राम अजोर	माली
६. ,, राजकुमार	सफाई कर्मचारी

जन्तु विज्ञान

१. श्री हरीश चन्द्र	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
२. ,, रजत सिन्हा	स्टोर-कीपर
३. ,, प्रीतमलाल	प्रयोगशाला भृत्य
४. ,, शशीकान्त धीमान	प्रयोगशाला सहायक
५. रिक्त	भृत्य

संग्रहालय

१. श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
२. श्री डा० सुखवीर सिंह	सहायक क्यूरेटर
३. श्री डा० प्रभात सेंगर	संग्रहालय सहायक
४. श्री हंसराज जोशी	लिपिक
५. श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
६. श्री ओमप्रकाश	भृत्य
७. श्री गुरुप्रसाद	माली
८. श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी

कम्प्यूटर

१. श्री दिनेश बिश्नोई	सिस्टम मैनेजर
२. ,, अजय गोयल	सिस्टम प्रोग्रामर
३. ,, मनोज कुमार	कम्प्यूटर आपरेटर
४. ,, वेदव्रत	तकनीकी सहायक
५. ,, रामसिंह	भृत्य

पुस्तकालय

१- पुस्तकालयाध्यक्ष	डा० जगदीश विद्यालंकार	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, पी-एच. डी., बी. एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग।

२- सहा. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री गुलजारसिंह चौहान	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स।
३- प्रो० असिस्टैन्ट	श्री उपेन्द्र कुमार झा	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
४- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री ललित किशोर	एम ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स।
५- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री मिथलेश कुमार	एम.ए., सी. लाइब्रेरी साइन्स, सी.पी.आर., सी. सी. पी.
६- सेमी प्रो. असिस्टैंट	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, हिन्दी स्टेनोग्राफी।
७- सेमी प्रो. असिस्टैन्ट	श्री अनिल कुमार धीमान	एम.एस-सी., एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स, आई. जी. डी. बाम्बे, डिप्लोमा पत्रकारिता बिज्ञान, बी. एड., डिप्लोमा इन यू. एन. व आई.यू. सी.सी.पी., डी. सी. ए.
८- पुस्तकालय लिपिक	श्री सोमपाल सिंह	एम. ए.
९- पुस्तकालय लिपिक	श्री जगपाल सिंह	मध्यमा
१०- पुस्तकालय लिपिक	श्री रामस्वरूप	इण्टर. सी. लाइब्रेरी साइन्स
११- पुस्तकालय लिपिक	श्री मदनपाल सिंह	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स, आई.टी आई., की आपरेटर (मोदी जीराक्स)
१२- बुक बाइन्डर	श्री जयप्रकाश	मिडिल
१३- बुक लिफ्टर	,, गोविन्द सिंह	मिडिल
१४- सेवक	,, घनश्याम सिंह	मिडिल

१५- सेवक	,, शशीकान्त धीमान	इण्टर, सी. लाइब्रेरी साइन्स
१६- सेवक	,, बुन्दू	—
१७- सेवक	,, शिवकुमार	मिडिल
१८- सेवक	,, कुलभूषण शर्मा	मध्यमा, आपरेटर मोदी जीराक्स
१९- सेवक	,, रामपद राय	कक्षा ५ पास
२०- चौकीदार	,, रामप्रसाद राय	—
२१- स्वीपर	,, सुशील कुमार	कक्षा ६ पास
२२- लिपिक	,, लालकुमार कश्यप	—

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

१- श्रीमती विनीता कुमारी	आश्रम अध्यक्षा
२- श्रीमती सुदेश खन्ना	पुस्तकालयाध्यक्षा
३- श्रीमती भागेश्वरी देवी	स्टोर कीपर
४- श्री ओमप्रकाश नवानी	लिपिक
५- श्रीमती महेश्वरी देवी	सेविका
६- श्री मुन्नालाल	माली
७- श्री सूरतसिंह राणा	भृत्य
८- श्रीमती विमला	सफाई कर्मचारी

——

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1993 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति को बैठक दिनांक 1-11-93 में प्रस्तुत किया गया। वित्त समिति ने निम्नलिखित बजट स्वीकृत किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 93-94	बजट अनुमान 94-95
1. वेतन एवं भत्ते आदि	1,30,52,090	1,37,31,730
2. अंशदायी भविष्यनिधि	1,82,700	2,06,000
3. अन्य व्यय	27,85,050	25,91,750
योग व्यय	1,60,19,840	1,65,29,480
आय	18,70,740	23,29,480
योग	1,41,49,100	1,42,00,000

समीक्षाधीन वर्ष 1993-94 में वित्त समिति एवं कार्य परिषद् द्वारा 1,41,49,000 का अनुरक्षण अनुदान स्वीकृत किया गया था किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1,34,50,000 रु० का अनुदान ही दिया गया। अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/भारत सरकार तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं उनका विवरण निम्न प्रकार है :—

वर्ष 1993-94

क्रम सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	3,00,000.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	वेतन विकास अनुदान
2.	4,50,000.00	,,	पुस्तकालय पुस्तकें (विकास अनुदान)

क्रम सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
3.	5,00,000.00	वि० वि० अनुदान आयोग	उपकरण विकास
4.	2,89,586.00	,,	अन-असाइन्ड ग्रान्ट
5.	15,000.00	,,	अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, नई दिल्ली
6.	2,00,000.00	,,	प्रौढ़ शिक्षा एवं सतत शिक्षा कार्यक्रम
7.	4,614.00	,,	जनशिक्षा निलयम कार्यक्रम
8.	6,45,000.00	,,	कम्प्यूटर सेमिनार
9.	2,50,000.00	,,	पी०जी०डी०सी०ए०
10.	1,00,000.00	डिपार्टमेंट ऑफ नॉन कनवेन्शनल एनर्जी सोर्सेज, नई दिल्ली	प्रोजेक्ट-वनस्पति अनुसंधान
11.	37,500.00	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट डॉ० रूपकिशोर शास्त्री
12.	50,000.00	गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया, नैशनल आर्काइज, नई दिल्ली	पाण्डुलिपि संरक्षण

– वित्ताधिकारी

आय का विवरण

1993-94

क्र० सं०	आय का मद	धनराशि
[क]	अनुदान :—	
1-	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	1,38,50,000.00
2-	प्रौढ़ शिक्षा अनुदान	2,00,000.00
	योग [क]	1,40,50,000.00
[ख]	शुल्क तथा अन्य स्रोतो से आय :—	
1-	पंजीकरण शुल्क	28,240.00
2-	पी-एच० डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	4,830.00
3-	पी-एच० डी० मासिक शुल्क	34,865.00
4-	परीक्षा शुल्क	3,54,911.00
5-	अंकपत्र शुल्क	23,307.00
6-	विलम्ब दण्ड एवं टूट–फूट	61,324.00
7-	माइग्रेशन शुल्क	8,775.00
8-	प्रमाणपत्र शुल्क	11,440.00
9-	नियमावली, पाठ्यविधि तथा फार्मों का शुल्क	58,326.00
10-	सेवा आवेदन	16,440.00
11-	शिक्षा शुल्क	6,52,813.00
12-	प्रवेश व पुन: प्रवेश शुल्क	85,510.00
13-	भवन शुल्क	51,540.00
14-	क्रीड़ा शुल्क	1,25,014.00
15-	पुस्तकालय शुल्क	76,205.00
16-	परिचयपत्र शुल्क	6,610.00

क्र० सं०	आय का मद	धनराशि
17-	एसोसियेशन शुल्क	13,155.00
18-	प्रयोगशाला शुल्क	3,44,189.00
19-	मंहगाई शुल्क	55,020.00
20-	पुस्तकालय से आय	21,295.00
21-	विकास	64,660.00
22-	पड़ताल शुल्क	2,380.00
23-	पत्रिका शुल्क	33,353.00
24-	अन्य आय	50,131.00
25-	किराया प्रोफेसर क्वार्टर	29,980.00
26-	वाहन ऋण	69,589.00
27-	छात्रावास	4,320.00
28-	श्रद्धानन्द प्रकाशन	12,523.00
29-	निर्धनता शुल्क	6,295.00
30-	साईकिल स्टैण्ड शुल्क	59,050.00
31-	संग्रहालय	522.00
32.	विद्युत	1,950.00
33.	कमरा किराया (अतिथि गृह)	15,792.00
	योग [ख]	23,84,354.00
	सर्वयोग [क+ख]	1,64,34,354.00

—वित्ताधिकारी

——

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1993-94

क्रम सं०	व्यय की मद	धनराशि
(क)	वेतन	
1-	वेतन	1,18,62,948.00
2-	भविष्य निधिपर संस्था का अंशदान	3,13 491.00
3-	ग्रेच्युटी	51,638.00
4-	पेंशन	3,08,990.00
	योग (क)	11,25,37,067.00
(ख)	अन्य	
1-	विद्युत व जल	1,54,686.00
2-	टेलीफोन	47,950.00
3-	मार्ग व्यय	1,60,441.00
4-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	18,356 00
5-	लेखन सामग्री व छपाई	1,42,758.00
6-	डाक एवं तार	14,611.00
7-	वाहन एवं पैट्रोल	1,73,516.00
8-	बिज्ञापन	32,825.00
9-	कानूनी व्यय	53,033.00
10-	आतिथ्य व्यय	67,419.00
11-	आडिट व्यय	24,570 00
12-	दीक्षान्त उत्सव	35,492.00
13-	लॉन संरक्षण	7,575.00
14-	भवन मरम्मत	8,46,041.00

क्र० सं०	व्यय का मद	धनराशि
15-	मिश्रित	98,988.00
16-	उपकरण	2,87,033.00
17-	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	1,16,037.00
18-	सदस्यता अंशदान	75,500 00
19-	परीक्षकों का पारिश्रमिक	1,05,563.00
20-	मार्ग व्यय परीक्षक	54,531.00
21-	निरीक्षण व्यय	31,273.00
22-	प्रश्नपत्रों की छपाई	1,38,669.00
23-	उत्तर पुस्तिका का मूल्य	32,554.00
24-	डाक तार व्यय	23,674.00
25-	लेखन सामग्री	19,161.00
26-	अन्य व्यय	2,640.00
27-	नियमावली तथा पाठ्यविधि छपाई	25,686.00
28-	एन० सी० सी०	100.00
29-	छात्रों की छात्रवृत्ति	27,659.00
30-	वाग्वर्धनी सभा	7,895.00
31-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	15,089.00
32-	सरस्वती यात्रा	10,417.00
33-	सांस्कृतिक कार्यक्रम	200.00
34-	खेल-कूद एवं क्रीड़ा	95,940.00
35-	सेमीनार	3,956.00
36-	रसायन प्रयोगशाला	83,890.00
37-	भौतिक प्रयोगशाला	52,778.00
38-	जन्तु विज्ञान प्रयोगशाला	57,669.00
39-	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	63,765.00
40-	गैस प्लान्ट	1,748.00
41-	जरनल ऑफ नेचुरल फिजीकल साइन्स	871.00
42-	पुस्तकें एवं पत्रिकाएं	62,727.00
43-	जिल्दबंदी एवं पुस्तक सुरक्षा	10,326.00
44-	केटेलॉग एण्ड कार्डस्	14,586.00
45-	पत्रिकाओं की छपाई	16.120.00

क्रम सं०	व्यय का मद	धनराशि
46-	निर्धन छात्र कोष	1,100.00
47-	समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं	81,898.00
48-	पढ़ते हुए कमाओ	4,670.00
49-	वाहन हेतु ऋण	88,575.00
50-	एल० टी० सी०	60,184.00
51-	वेद प्रयोगशाला	7,105.00
52-	योग	7,192.00
53-	इतिहास विभाग	5,480.00
54-	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	10,380.00
55-	अंग्रेजी लैब	3,698.00
56-	हिन्दी पत्रकारिता	10,251.00
57-	गणित विभाग	8,941.00
58-	कम्प्यूटर रखरखाव	55,994.00
59-	कम्प्यूटर मिश्रित व्यय	64,033.00
60-	कम्प्यूटर सामग्री	1,90,000.00
	कुल आकस्मिक व्यय	39,21,819.00
	कुल वेतन व्यय	1,25,37,067.00
	कुल व्यय	1,64,58,886.00

वित्ताधिकारी

दीक्षान्त समारोह १९९४ पर उपाधि पाने वाले छात्रों की सूची

विद्यालंकार—१९९३

क्र.सं.	अनुक्र.	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
1.	385	900271	कु० नम्रता	श्री दिवाकान्त पाण्डेय	प्रथम	वै.लौ सं.सा. अंग्रजी भा. संस्कृति	हिन्दी, इतिहास सगीत चित्रकला	कन्या गु. देहरादून
2.	386	900268	कु० नम्रता पाण्डेय	श्री गौरीशंकर पाण्डेय	प्रथम	,,	,,	,,
3.	387	900266	कु० प्रिया	श्री गिरिजाशंकर पाण्डेय	प्रथम	,,	,,	,,
4.	388	900267	कु० प्रीति	श्री पारसनाथ जैन	प्रथम	,,	,,	,,
5.	389	900270	कु० ऋचा पाण्डेय	श्री रमेशचन्द पाण्डेय	प्रथम	,,	,,	,,
6.	390	900269	कु० सविता	श्री राजकुमार	प्रथम	,,	,,	,,
7.	391	900272	कु० मीना सिंह	श्री रामनारायण प्रतापसिंह	प्रथम	,,	,,	,,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

क्र.सं.	अनुक्र.	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
8.	403	900210	आनन्द कुमार	श्री वीरेन्द्र कुमार	द्वितीय	,,	,,	गु.कां. वि.वि.
9.	404	900231	अमित कुमार	श्री श्रीचन्द	द्वितीय	,,	,,	,,
10.	405	900304	विद्युत कुमार जाना	श्री गुरुप्रसाद जाना	द्वितीय	,,	,,	,,

क्र.सं	अनुक्र.	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
11.	406	900211	चरण सिंह	श्री रघुवीर सिंह	प्रथम	वै.लौ.सं.सा. अंग्रेजी भा. संस्कृति	हिन्दी, इतिहास संगीत, चित्रकला	गु. कांगड़ी वि. वि.
12.	407	900175	जयकरण सिंह	श्री रामकुमार सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
13.	408	900174	कपिल कुमार	श्री शिवचरण	द्वितीय	,,	,,	,,
14.	409	900306	प्रियधर	श्री बालकृष्ण गैरोला	द्वितीय	,,	,,	,,
15.	410	900173	पुरवेन्द्र कुमार	श्री उदय सिंह	तृतीय	,,	,,	,,
16.	411	900009	सुरक्षितकुमार गोस्वामी	श्री नरेन्द्र गोस्वामी	प्रथम	,,	,,	,,
17.	412	900177	प्रदीप कुमार	श्री वेदपाल सिंह	प्रथम	,,	,,	,,
				वेदालंकार				
18.	413	900213	सदानन्द	श्री मगन बिहारी	द्वितीय			,,
				विद्यालंकार				
19.	392	910326	कु० अर्चना	श्री राजेश्वर सिंह	द्वितीय	वै.लौ.सं.सा. अंग्रेजी भा. संस्कृति	हिन्दी, इतिहास संगीत चित्रकला	कन्या गु. हाथरस
20.	393	910327	कु० अमृता	श्री बच्चन सिंह	प्रथम	,,	,,	,,
21.	394	910329	कु० निष्ठा	श्री जयराम सिंह	प्रथम	,,	,,	,,

क्र.सं.	अनुक्र.	पं०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	अनिवार्य विषय	ऐच्छिक विषय	शिक्षा केन्द्र
22.	395	910328	कु० नीलम	श्री जगतभूषण	द्वितीय	वै.लौ.सं.सा. अंग्रेजी भा. संस्कृति	हिन्दी, इतिहास संगीत, चित्रकला	कन्या गु. हाथरस
23.	396	910331	कु० प्रमिला	श्री रूप सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
24.	397	910330	कु० पवित्रा	श्री सुरेन्द्रपाल	प्रथम	,,	,,	,,
25.	398	910332	कु० प्रभा	श्री राजकुमार शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
26.	399	910333	कु० रजनी	श्री श्रीनिवास यादव	द्वितीय	,,	,,	,,
27.	400	910336	कु० सविता	श्री चरन सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
28.	401	910334	कु० सुमित्रा	श्री ओमप्रकाश शर्मा	द्वितीय	"	"	"
29.	402	910335	कु० सीमा	श्री स्व. राजकुमार	द्वितीय	"	"	"

स्नातकोत्तर डिप्लोमा पत्रकारिता

क्र.सं.	अनु क्र.	पं० सं०	छात्र का नाम	पिता का नाम	श्रेणी
1.	433		अनुराग शर्मा	श्री दयानन्द शर्मा	द्वितीय
2.	434	920442	चन्द्र कुमार	श्री नोतनदास	द्वितीय
3.	435	920640	धीर सिंह सैनी	श्री अतर सिंह सैनी	तृतीय
4.	436	920551	हेमचन्द्र जोशी	श्री इन्द्र प्रसाद जोशी	द्वितीय
5.	437	920419	कुशलपाल सिंह चौहान	श्री महेन्द्र सिंह चौहान	द्वितीय
6.	438	910441	निसार अहमद	श्री मौ० इब्राहीम	द्वितीय
7.	439	920326	श्रीनिवास	श्री लक्ष्मीदत्त	द्वितीय
8.	441	920433	राजेन्द्रनाथ	श्री शंकरनाथ	द्वितीय
9.	442	920619	राजीव कुमार वर्मा	श्री इलमचन्द्र वर्मा	द्वितीय
10.	444	920639	संजय वर्मा	श्री चन्द्र मनोहर वर्मा	प्रथम
11.	445	920444	सुशोल कुमार	श्री सुल्तान सिंह	प्रथम
12.	447	890045	विनय कुमार	श्री लोटन सिंह	प्रथम
13.	448	920614	विजय शंकर शुक्ल	श्री बूढ़ननाथ शुक्ल	प्रथम
14.	449	920139	नीरज मित्तल	श्री नरेश कुमार	द्वितीय
15.	450	920443	प्रदीप	श्री रामगोपाल अग्रवाल	द्वितीय
16.	451	890093	राजीव शर्मा	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	द्वितीय
17.	452	880084	विकास अग्रवाल	श्री विनोद कुमार अग्रवाल	तृतीय
18.	453	920608	विनय गोयल	श्री नाथूराम गोयल	द्वितीय

पी-एच० डी० उपाधि

क्र० सं०	पं० सं०	विभाग	मौखिकी	नाम	शोध विषय
1.	87009	संस्कृत	2-3-94	श्रीमती मनजीत कौर स्व० श्री हरी सिंह	''समुद्र'' संस्कृत महाकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में एक परिशीलन
2.	90013	संस्कृत	2-3-94	श्रीमती बिनेश कुमारी स्व० श्री मुरारी लाल	महाकवि श्री ओगेटि–परीक्षित शर्मा बिरचित श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य एक समीक्षात्मक अनुशीलन ।
3.	870114	हिन्दी	24-1-94	श्री नेतराम शर्मा श्री बलजोर	फीजी में हिन्दी प्रचार का इतिहास ।
4.	88012	प्रा.भा. इतिहास	4-8-93	कु० रजनी सेंगर डा० जबर सिंह सेंगर	प्राचीन भारत में कर व्यवस्था (300 ई० तक)
5.	89002	संस्कृत	27-8-93	सीताराम शर्मा श्री जयनारायण शर्मा	तत्वबोधिनी और बालमनोरमा के परिप्रेक्ष्य में सिद्धान्त कौमुदी के पदकृत्यों का समीक्षात्मक अध्ययन ।
6.	88004	संस्कृत	17-7-93	माधवप्रसाद उपाध्याय श्री शिवचन्द्र उपाध्याय	स्मृति साहित्य में दण्ड प्रक्रिया ।
7.	88008	संस्कृत	9 7-93	वेदवती श्री सूबे सिंह	काशिकावृत्ति के प्रथम–द्वितीय अध्यायस्थ पदकृत्यों का पदमंजरी के परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन ।

क्र० सं०	पं० स०	विभाग	मौखिकी	नाम	शोध विषय
8.	880140	संस्कृत	22-3-94	कु० मीना मदान श्री नानकचन्द्र	आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री विरचित "स्वराज्य विजयम् महाकाव्य"।
9.	870074	वैदिक सा०	29-3-94	कु० सत्यवती श्री रामस्वरूप	ऋग्वेद में ईश्वर का स्वरूप (महर्षि दयानन्द की वेदव्याख्या के परिप्रेक्ष्य में)
10.	880165	संस्कृत	2-4-94	जयेन्द्र कुमार श्री बलराज सिंह	स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत काव्यों में सामाजिक जागरण।
11.	91008	जन्तु विज्ञान	5-4-94	राकेशचन्द्र सिंह मेहरबान सिंह विष्ट	A Comparative study of some Physico-Chemical and Biological components of BHEL plant, sewage nala and western Ganga canal at Hardwar.
12.	860016	हिन्दी	4-4-94	प्रेमचन्द्र शर्मा श्री ब्रह्मानन्द शर्मा	साहित्य दर्पण की हिन्दी टीकाओं का तुलनात्मक अनुशीलन।
13.	680238	दर्शन	7-4-94	पुष्पशरण पौड्याल श्री प्रजापति पौड्याल	भारतीय दर्शनों में कर्मवाद एक तुलनात्मक अध्ययन।
14.	870075	संस्कृत	8-4-94	कु० मैत्रेयी श्री लल्लू सिंह	नलचम्पू में अलंकार-योजना।
15.	90014	सस्कृत	11-4-94	कु० तूफानजित् श्री राजेन्द्रदेव सिंह	वैदिक कोष निघण्टु के पृथिवी, दिशा, निशा उषा, वाक् तथा धेनु अर्थों में पठित शब्दों का परिशीलन।

क्र० सं०	पं० सं०	विभाग	मौखिकी	नाम	शोध विषय
16.	90007	दर्शन	11-4-94	कु० किरन शर्मा श्री रघुनन्दन शर्मा	ज्ञानमीमांसा (सांख्य, न्याय, जैन और बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में)
17.	90017	वनस्पति वि.	9-4-94	सुरेन्द्र कुमार श्री रणधीर सिंह	Studies on waste water, the irrigation potential and its effect on leguminous plants and associated Rhizobia.
18.	840137	अंग्रेजी	14-4-94	शम्भू प्रसाद सुन्दरियाल श्री विद्यादत्त सुन्दरियाल	The Bhagavadgita and the poetry of W. B. Yeats : A Study in Influence.
19.	870214	अंग्रेजी	14-4-94	शशीप्रभा मेहरोत्रा श्री एल एन. मेहरोत्रा	Human relationships in Anita Desai's novels.

पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (कम्प्यूटर साइंस एवं एनालेसिस)

क्र. सं.	अनु. क्र.	पं. सं.	छात्र का नाम	पिता का नाम	श्रेणी
1.	1137	920574	अजय कुमार	श्री रामचन्द्र	प्रथम
2.	1145	890083	हेमचन्द्र गौनियाल	श्री सुरेन्द्र दत्त गौनियाल	द्वितीय
3.	1147	920570	मुकेश बाली	श्री यशपाल बाली	प्रथम
4.	1150		राकेश कुमार गुप्ता	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	द्वितीय
5.	1158	920610	सन्दीप सक्सेनाः	श्री रमेशचन्द्र सक्सेना	प्रथम
6.	1545	910485	नीरज निशीथ	श्री सदाशिव भगत	प्रथम
7.	1546	880073	विजय कुमार	श्री नरेन्द्र कुमार	प्रथम
8.	1547	910474	रामकिशोर गुप्ता	श्री बाबूलाल गुप्ता	प्रथम
9.	1549	910481	राजीव कुमार गुप्ता	श्री घनश्यामलाल गुप्ता	प्रथम
10.	1552	890190	अबधेश कुमार	श्री जगदीश प्रसाद	द्वितीय
11.	1553	910469	संजय भटनागर	श्री आई. डी. भटनागर	प्रथम

बी० एस-सी० तृतीय खण्ड (गणित ग्रुप)

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
1.	952	900044	अजय पन्त	श्री भुवनचन्द्र पन्त	तृतीय	भौतिक विज्ञान, गणित, रसायन
2.	953	890108	अजय कुमार	श्री भगवत प्रसाद	द्वितीय	,,
3.	954	890098	अशोक कुमार बड़ोला	श्री खुशीराम बड़ोला	द्वितीय	,,
4.	955	900029	अर्जुन सिंह बिष्ट	श्री राजेन्द्र सिंह बिष्ट	द्वितीय	,,
5.	956	900136	अमित शर्मा	श्री एस० के० शर्मा	द्वितीय	,,
6.	957	890014	बिरेन्द्र सिंह	श्री रणजीत सिंह	द्वितीय	,,
7.	958	900099	देवेशचन्द्र प्रसाद	श्री उमेश चन्द्र प्रसाद	द्वितीय	,,
8.	959	900221	दिनेश कुमार श्रीवास्तव	श्री बीरबहादुर लाल	द्वितीय	,,
9.	961	900079	दिनेश कुमार गोयल	श्री सुरेशचन्द्र गोयल	द्वितीय	,,
10.	962	900036	फिरासत अली	श्री नासिर अली	प्रथम	,,
11.	963	900032	हरपाल सिंह	श्री बलवन्त सिंह	द्वितीय	,,
12.	964	890090	हरीशचन्द्र	श्री मदनलाल शर्मा	द्वितीय	,,
13.	965	900168	कुलवन्त सिंह	श्री मेजर सिंह	द्वितीय	,,
14.	966	900022	कपिल कुमार	श्री विजय कुमार	प्रथम	,,
15.	967	900098	कुँवर संजीव सिंह	श्री गिरीश कुमार राना	प्रथम	,,
16.	968	890088	मलखान सिंह	श्री उदयराज सिंह	द्वितीय	,,

क्र०सं०	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
17.	969	900055	मनोज कुमार	श्री जी० डी० अग्रवाल	प्रथम	गणित ग्रुप
18.	970	900103	मुदित कुमार जैन	श्री ए० के० जैन	प्रथम	,,
19.	971	900087	मुकेश कुमार गोयल	श्री जी० सी० गोयल	द्वितीय	,,
20.	972	900086	नवीन कुमार	श्री पारस कुमार	द्वितीय	,,
21.	973	900016	पंकज लाखन	श्री शेखर चन्द गुप्ता	द्वितीय	,,
22.	974	900085	पंकज गुप्ता	श्री सुरेश कुमार गुप्ता	द्वितीय	,,
23.	975	900218	पंकज त्यागी	श्री पीताम्बर सिंह त्यागी	द्वितीय	,,
24.	976	900008	प्रदीप कुमार धीमान	श्री सुखपाल धीमान	प्रथम	,,
25.	977	900018	रमेश चन्द्र जोशी	श्री चरण दत्त जोशी	द्वितीय	,,
26.	978	900196	रमन शर्मा	श्री क्यू० एल० शर्मा	द्वितीय	,,
27.	979	900124	राजेश राय	श्री मदन राय	द्वितीय	,,
28.	980	900043	राजीव कुमार सैनी	श्री सतीश कुमार सैनी	द्वितीय	,,
29.	981	900031	संजय शर्मा	श्री एन० पी० शर्मा	द्वितीय	,,
30.	983	900096	संजय राय	श्री बृजबिहारीलाल राय	द्वितीय	,,
31.	984	900039	संजीव कुमार शर्मा	श्री ज्ञानेन्द्र कुमार शर्मा	प्रथम	,,
32.	985	890100	शशिकान्त शुक्ल	श्री श्रद्धानन्द शुक्ल	द्वितीय	,,
33.	986	900048	सुभाष चन्द	श्री गिरधारी लाल	प्रथम	,,
34.	987	900097	उदय सिंह पंवार	श्री लक्ष्मण सिंह पंवार	द्वितीय	,,

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
35.	988	900137	विनीत कौशिक	श्री बृजमोहन कौशिक	प्रथम	गणित ग्रुप
36.	989	900046	विजय कुमार कश्यप	श्री रमेशचन्द	द्वितीय	,,
37.	990	900127	विनोद कुमार शर्मा	श्री पीताम्बरदत्त शर्मा	द्वितीय	,,
38.	991	900123	योगेन्द्र सिंह	श्री सुखबीर सिंह चौहान	प्रथम	,,
39.	992	890085	दिनेश सिंह	श्री ईसम सिंह वर्मा	द्वितीय	,,
40.	993	900121	राजीव कुमार त्यागी	श्री जगदीश सिंह त्यागी	द्वितीय	,,
41.	1218	900133	राकेश कुमार	श्री राजेन्द्र प्रसाद लखेड़ा	तृतीय	,,
42.	1223	900019	रामेन्द्र सिंह	श्री गुरुचरण सिंह	तृतीय	,,

बी-एस. सी. कम्प्यूटर तृतीय खण्ड

क्र सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
1.	994	900037	अरविन्द कुमार	श्री आत्माराम	प्रथम	कम्प्यूटर ग्रुप
2.	995	900082	अनुज कुमार जैन	श्री सी० पी० जैन	प्रथम	,,
3.	996	900184	अश्वनी कुमार केसरवानी	श्री गोपालदास केसरवानी	प्रथम	,,
4.	997	900146	बिपुल कुमार सक्सेना	श्री आर० सी० सक्सेना	प्रथम	,,
5.	998	900140	चारूशील कपूर	श्री एस० के० कपूर	प्रथम	,,
6.	999	900147	दीपक जैन	श्री बी० के० जैन	प्रथम	,,
7.	1000	900139	हरेन्द्रनाथ यादव	श्री पी० डी० यादव	द्वितीय	,,
8.	1001	900153	कमल कुमार	श्री बिशनलाल डाबरा	प्रथम	,,
9.	1002	900155	महावीर रावत	श्री श्याम सिंह रावत	प्रथम	,,
10.	1003	900143	नवीन कुमार गोयल	श्री सलेक चन्द्र गोयल	प्रथम	,,
11.	1004	900157	प्रकाश चन्द्र वर्मा	श्री एच० सी० प्रसाद	प्रथम	,,
12.	1005	900160	प्रबीन गोयल	श्री बी० वी० लाल गोयल	प्रथम	,,
13.	1006	900156	संजय भार्गव	श्री मनमोहस्वरूप भार्गव	प्रथम	,,
14.	1007	900162	सुबोध कुमार शर्मा	श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा	प्रथम	,,
15.	1008	900154	शरद कुमार अग्रवाल	श्री मोहनदास अग्रवाल	द्वितीय	,,
16.	1009	900251	सलिल गुप्ता	श्री आर० बी० गुप्ता	प्रथम	,,

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
17.	1010	900161	सतीशचन्द्र जोशी	श्री गोपालदत्त जोशी	प्रथम	कम्प्यूटर ग्रुप
18.	1011	900141	संदीप अरोड़ा	श्री राजेन्द्र कुमार अरोड़ा	प्रथम	,,
19.	1012	900145	संजीव कुमार	श्री वेद प्रकाश शास्त्री	प्रथम	,,
20.	1013	900150	उपदेश कुमार सिंह	श्री के० पी० सिंह	प्रथम	,,
21.	1014	900219	विवेक जैन	श्री प्रीतम भाई जैन	प्रथम	,,
22.	982	890050	संजय शर्मा	श्री उमाशंकर शर्मा	द्वितीय	,,
23.	1219	900163	अरविन्द कुमार अग्रवाल	श्री लक्ष्मीचन्द्र अग्रवाल	प्रथम	,,
				बी० एस-सी० बायो ग्रुप		
1.	1015	900068	अमित गोयल	श्री सुरेशचन्द्र गोयल	द्वितीय	जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन शास्त्र
2.	1016	900073	अमित सिंह	श्री श्याम नारायण सिंह	प्रथम	,,
3.	1017	900006	अनिल कुमार	श्री आशाराम	प्रथम	,,
4.	1018	890211	अमित रिखी	श्री रमेशचन्द्र रिखी	द्वितीय	,,
5.	1019	900189	अनिल सिंह बिष्ट	श्री त्रिलोक सिंह बिष्ट	द्वितीय	,,
6.	1020	900058	अश्वनी कुमार	श्री ओ० पी० वैद	प्रथम	,,
7.	1021	900112	अंशुमान शर्मा	श्री आनन्द प्रकाश शर्मा	प्रथम	,,
8.	1022	900119	अवनीश कुमार	श्री जगदीश प्रसाद सक्सैना	प्रथम	,,

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	बिषय
9.	1023	900057	आजाद बहादुर सैनी	श्री रामकृष्ण सैनी	प्रथम	बायो ग्रुप
10.	1024	900280	दीपक वत्स	श्री बिशनदयाल शर्मा	द्वितीय	,,
11.	1025	900069	देवेन्द्र कुमार	श्री आर० ए० यादव	द्वितीय	,,
12.	1026	900109	हेमन्त कुमार	श्री वासुदेव प्रसाद	प्रथम	,,
13.	1027	900111	जितेन्द्र कुमार शर्मा	श्री महीपाल शर्मा	प्रथम	,,
14.	1028	900113	जसवन्त सिंह राठौर	श्री हरलाल सिंह राठौर	द्वितीय	,,
15.	1029	900062	कुलजीत सिंह	श्री हरजीत सिंह	द्वितीय	,,
16.	1030	900072	कालिकाप्रसाद कोठारी	श्री हेमचन्द्र कोठारी	प्रथम	,,
17.	1031	890006	ललित सुधाकर	श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी	द्वितीय	,,
18.	1032	900120	महेन्द्र प्रताप सिंह	श्री रामचन्द्र सिंह	द्वितीय	,,
19.	1033	900070	मतिउल्ला	श्री अब्दुल मजीद	प्रथम	,,
20.	1034	900107	मोहित शर्मा	श्री रामकुमार पालीवाल	द्वितीय	,,
21.	1035	900074	महेशानन्द	श्री केशवानन्द	द्वितीय	,,
22.	1036	900104	मनीष कौशिक	श्री विजय कुमार कौशिक	द्वितीय	,,
23.	1037	900066	महेश कुमार जोशी	श्री दर्शनलाल जोशी	प्रथम	,,
24.	1038	900115	पुनीत कुलश्रेष्ठ	श्री वी० पी० कुलश्रेष्ठ	प्रथम	,,
25.	1039	900117	प्रमेश चन्द्र	श्री निरजन देव गुप्ता	द्वितीय	,,
26.	1040	890209	रोशनलाल	श्री रुद्रमणि	द्वितीय	,,

क्र०सं०	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
27.	1041	900059	राजकिशोर	श्री मिट्ठु राम	प्रथम	बायो ग्रुप
28.	1042	900060	राजेश कुमार	श्री चन्द्रभान	प्रथम	,,
29.	1043	900116	शैलेन्द्र कुमार	श्री रघुवीर सिंह सैनी	द्वितीय	,,
30.	1044	900110	संदीप कुमार गुप्ता	श्री पदम कुमार गुप्ता	प्रथम	,,
31.	1045	900195	सजय कुमार	श्री दयाराम	द्वितीय	,,
32.	1046	900106	विनोद कुमार	श्री शेर सिंह	द्वितीय	,,
				डुप्लीकेट		
	412	860163	ओमप्रकाश	श्री राधेश्याम	द्वितीय	गणित ग्रुप

———

एम० ए०

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	
			वैदिक साहित्य			
1.	1163	900308	मदन सिंह	श्री भारता	द्वितीय	
2.	1164	910444	योगेन्द्रपाल सिंह परमार	श्री महरम सिंह	द्वितीय	
			दर्शन शास्त्र			
1.	1166	910400	आनन्द नारायण ईश्वरान	श्री एम० एस० ईश्वरान	प्रथम	
2.	1168	900303	राजकिशोर	श्री गोबिन्द प्रसाद	प्रथम	
			संस्कृत साहित्य			
1.	1170	910249	बलभद्र	श्री डाह्या भाई	द्वितीय	
2.	1171	910134	चन्द्र शेखर	श्री जुगरुदास	द्वितीय	
3.	1172	910258	दयासागर	श्री दशरथ बिसी	प्रथम	
4.	1173	900276	राकेश कुमार शर्मा	श्री कृष्णदत्त शर्मा	प्रथम	
5.	1174	880015	सुभाष	श्री रामस्वरूप	द्वितीय	
6.	1176	890147	कु० पूनम कुमारी	श्री हवा सिंह	द्वितीय	श्रेणी सुधार
7.	1177	910369	कु० रूपा धीमान	श्री जय सिंह धीमान	द्वितीय	
8.	1178	900305	श्रीमती सन्तोष आर्या	श्री हुकम सिंह	प्रथम	
9.	1179	910285	कु० सुमित्रा देवी	श्री महिपाल	द्वितीय	

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	
10.	1180	910346	कु० उषा रानी	श्री घनश्याम लाल	द्वितीय	संस्कृत साहित्य
11.	1181	920126	कु० उर्मिला मान	श्री राजेन्द्र सिंह	द्वितीय	श्रेणी सुधार
12.	1182	900259	आजाद सिंह सैनी	श्री गोपाल सिंह सैनी	द्वितीय	
13.	1184	910431	इन्द्र कुमार	श्री ताराचन्द	द्वितीय	
14.	1185	870109	नारायण पंडित	श्री पलकधारी पण्डित	द्वितीय	
15.	1186	910046	नीलाम्बर झा	श्री देवेन्द्र झा	प्रथम	
16.	1265	900287	कु० सरस्वती आर्या	श्री चन्दन सिंह	प्रथम	श्रेणी सुधार
			प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व			
17.	1187	880043	देवेन्द्र कुमार	श्री जय सिंह गुप्ता	प्रथम	
18.	1188	870026	दिनेश कुमार	श्री रूपराम सिंह	द्वितीय	
19.	1189	880025	संजीव भल्ला	श्री सोमप्रकाश भल्ला	तृतीय	
20.	1190	910029	कु० अंजु पंजवानी	श्री मोतीलाल पंजवानी	प्रथम	
			हिन्दी साहित्य			
21.	1194	910137	अमिताभ शर्मा	श्री पुरुषोत्तम शरण शर्मा	प्रथम	
22.	1196	900003	सुभाषचन्द भाटी	श्री हातम सिंह	प्रथम	

क०सं०	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी
23.	1198	900254	श्रीमती कृष्णा गुप्ता	श्री मोहनलाल	प्रथम
24.	1201	910361	कु० राजन बाला	श्री कंवरभान	द्वितीय
25.	1202	900247	कु० शशि बाला	श्री भुल्लन सिंह	द्वितीय
26.	1203	890229	कु० विद्योत्तमा	श्री सुखलाल	द्वितीय
27.	1420	900200	कु० शशि सिंह	श्री बृजपाल सिंह	द्वितीय
28.	1423	890254	कु० सुधा बड़ोला	श्री वाचस्पति बड़ोला	तृतीय
29.	1424	900236	कु० सुमन नागर	श्री बालकराम नागर	तृतीय
				मनोविज्ञान	
30.	1206	880131	राकेशचन्द्र जुयाल	श्री भगवती प्रसाद जुयाल	द्वितीय
31.	1208	880012	तन्मय भट्टाचार्य	श्री एन० के० भट्टाचार्य	प्रथम
				अंग्रेजी साहित्य	
32.	1211	900279	कु० कविता अग्रवाल	श्री कृष्ण अवतार अग्रवाल	द्वितीय
33.	1212	910357	कु० नीलिमा वर्मा	श्री रमेशचन्द्र वर्मा	प्रथम
34.	1297	900012	कु० पुष्पा अग्रवाल	श्री श्रीराम अग्रवाल	तृतीय
35.	1213	910370	कु० सुधा श्रीवास्तव	श्री ब्रिजनाथ प्रसाद श्रीवास्तव	तृतीय
36.	1214	910433	श्रीमती वर्षा गुप्ता	श्री रघुनन्दन लाल	द्वितीय
37.	1215	910396	राजकुमार	श्री अचपल सिंह	तृतीय

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
			एम० एस-सी० गणित			
1.	1217	850141	जोगिन्दर लाल यादव	श्री सीताराम यादव	द्वितीय	गणित
2.	1572	860162	संजय गौड़	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	द्वितीय	,,
			माइक्रोबायोलोजी			
1.	1069	910414	देवेन्द्रनाथ यादव	श्री मधुबन यादव	प्रथम	
2.	1070	880057	कुशलपाल	श्री ओमप्रकाश	प्रथम	
3.	1071	880118	मनोजकुमार शर्मा	श्री माखनलाल शर्मा	प्रथम	
4.	1072	880065	नीरज कुमार शर्मा	श्री माखनलाल शर्मा	प्रथम	
5.	1073	880112	ओंकार सिंह	श्री आर० पी० दलाल	प्रथम	
6.	1075	910411	सरजीत सिंह ठाकुर	श्री शोभाराम	प्रथम	
7.	1076	880114	शरद भारद्वाज	श्री सुरेशचन्द भारद्वाज	प्रथम	
8.	1077	880003	संदीप कुमार सिंह	श्री धीरेन्द्र कुमार सिंह	प्रथम	
			एम० एस-सी० रसायन विज्ञान			
1.	1573	910455	अमरेन्द्र भट्टाचार्य	श्री अरुण भट्टाचार्य	प्रथम	रसायन विज्ञान
2.	1574	910452	अरुण कुमार शर्मा	श्री अमरनाथ शर्मा	प्रथम	,,

क्र.सं.	अनु.क्र.	पं.सं.	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
3.	1575	880071	दिनेश कुमार धंजल	श्री बलदेव चन्द धंजल	प्रथम	रसायन विज्ञान
4.	1576	880198	धर्मेन्द्र कुमार	श्री ठकरा सिंह	प्रथम	,,
5.	1577	870102	मनोज कुमार भटनागर	श्री श्याम बहादुर भटनागर	प्रथम	,,
6.	1578	880069	मौ० फरीद	श्री मौ० हबीब	प्रथम	,,
7.	1579	910454	राकेश कुमार	श्री बाल किशन	प्रथम	,,
8.	1580	880110	मौ० सईद बेग	श्री मौ० शरीफ बेग	प्रथम	,,
9.	1581	880201	संजय सिंह	श्री राज सिंह	प्रथम	,,
10.	1582	880179	श्री मोहन	श्री चन्द्र मोहन शर्मा	प्रथम	,,